नुज़ूलुल मसीह

(मसीह का अवतरण)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

नुज़ूलुल मसीह
(मसीह का अवतरण)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	:	नुज़ूलुल मसीह
लेखक	:	हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद-व-महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक	:	डॉ. अन्सार अहमद, एम. ए., एम.फिल, पी एच डी पी.जी.डी.टी., आनर्स इन अरबिक
टायप सैटिंग	:	महवश नाज़
संस्करण	:	प्रथम संस्करण (हिन्दी) अक्टूबर 2021 ई०
संख्या	:	500
प्रकाशक	:	नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक	:	फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)

Name of book	:	Nuzoolul Masih
Author	:	Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mouood & Mahdi Mahood Alahissalam
Translator	:	Ansar Ahmad, M.A., M.Phil, Ph. D P.G.D.T., Hons in Arabic
Type Setting	:	Mahwash Naaz
Edition	:	1st Edition (Hindi) October 2021
Quantity	:	500
Publisher	:	Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at	:	Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक "**नुज़ूलुल मसीह**" का प्रस्तुत हिन्दी अनुवाद आदरणीय डॉ० अन्सार अहमद ने किया है। तत्पश्चात आदरणीय शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), आदरणीय अली हसन एम. ए., आदरणीय नसीरुल हक़ आचार्य, आदरणीय इब्नुल मेहदी लईक़ एम. ए. और आदरणीय सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद एम.ए., ने इसका रिव्यू किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़्दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

नोट

पुस्तक के अंत में पारिभाषिक शब्दावाली दी गई है पाठकगण उसकी सहायता से पुस्तक में प्रयोग किए गए इस्लामिक शब्दों को सरलतापूर्वक समझ सकते हैं।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
(1835 ई० - 1908 ई०)
संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत

लेखक परिचय

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम का जन्म 1835 ई० में हिन्दुस्तान के एक कस्बे क़ादियान में हुआ। आप अपनी प्रारंभिक आयु से ही ख़ुदा की उपासना, दुआओं, पवित्र क़ुरआन और अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त रहते थे। इस्लाम जो कि उस समय चारों ओर से आक्रमणों का शिकार हो रहा था, उसकी दयनीय अवस्था को देख कर आप अलैहिस्सलाम को अत्यंत दुख होता था। इस्लाम की प्रतिरक्षा और फिर उसकी शिक्षाओं को अपने रूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए आपने 90 से अधिक पुस्तकें लिखीं और हज़ारों पत्र लिखे और बहुत से धार्मिक शास्त्रार्थ और मुनाज़रात किए। आपने बताया कि इस्लाम ही वह ज़िन्दा धर्म है जो मानवजाति का संबंध अपने वास्तविक सृष्टिकर्ता से स्थापित कर सकता है और उसी के अनुसरण से मनुष्य व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

छोटी आयु से ही आप सच्चे स्वप्न, कश्फ़ और इल्हाम से सुशोभित हुए। 1889 ई० में आपने ख़ुदा तआला के आदेशानुसार बैअत* लेने का सिलसिला प्रारंभ किया और एक पवित्र जमाअत की नींव रखी। इल्हाम व कलाम का सिलसिला दिन प्रति दिन बढ़ता गया और आपने ख़ुदा के आदेशानुसार यह घोषणा की कि आप अंतिम युग के वही सुधारक हैं जिस की भविष्यवाणियाँ संसार के समस्त धर्मों में भिन्न-भिन्न नामों से उपस्थित हैं।

आपने यह भी दावा किया कि आप वही मसीह मौऊद व महदी माहूद हैं जिसके आने की भविष्यवाणी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की थी। जमाअत अहमदिया अब तक संसार के 200 से अधिक देशों में स्थापित हो

* **बैअत**- किसी नबी, रसूल, अवतार या पीर के हाथ पर उसका मुरीद होना, दीक्षा लेना, निष्ठा की प्रतिज्ञा- अनुवादक

चुकी है।

1908 ई० में जब आप का स्वर्गवास हुआ तो उसके पश्चात पवित्र क़ुरआन तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आपके आध्यात्मिक मिशन की पूर्णता हेतु ख़िलाफ़त का सिलसिला स्थापित हुआ। अतः इस समय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ आप के पंचम ख़लीफ़ा और विश्वस्तरीय जमाअत अहमदिया के वर्तमान इमाम हैं।

पुस्तक परिचय
नुज़ूलुल मसीह
(मसीह का अवतरण)

पुस्तक दाफ़िउल बला में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ताऊन को अपनी सच्चाई की निशानी ठहराते हुए यह भविष्यवाणी की थी कि क़ादियान भयंकर ताऊन से सुरक्षित रहेगा। और विभिन्न धर्मावलम्बियों को चेलेन्ज किया था कि वे भी चाहें तो किसी शहर के ताऊन से सुरक्षित रहने के बारे में भविष्यवाणी कर सकते हैं। परन्तु जिस शहर के बारे में भी ऐसी भविष्यवाणी की जाएगी वह ताऊन का अवश्य शिकार होगा।

दाफ़िउल बला के प्रकाशन पर पैसा अख़बार लाहौर के एडीटर ने क़ादियान की सुरक्षा के संबंध में भविष्यवाणी को ग़लत सिद्ध करने के लिए झूठी और घटना के विरुद्ध रिपोर्ट प्रकाशित कीं और क़ादियान की सुरक्षा से संबंधित भविष्यवाणी को आरोपों का निशाना बनाया। तब हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम ने उनकी उन झूठी गढ़ी हुई बातों का उत्तर इस पुस्तक में दिया।

इसी प्रकार आपने दाफ़िउल बला में लिखा था कि मसीह मौऊद इमाम हुसैन[रज़ि॰] से श्रेष्ठ हैं। इस पर अली हाइरी लाहौरी शिया धर्मवाद ने एक पुस्तक लिखी जिसमें इमाम हुसैन[रज़ि॰] को समस्त नबियों से श्रेष्ठ ठहराया और लिखा कि -

"इमाम हुसैन की वह शान है कि समस्त नबी अपने संकटों के समय में इसी इमाम को अपना शफ़ीअ (सिफारिश करने वाला) ठहराते थे और उसी के कारण उनके संकट दूर होते थे। ऐसा ही आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी संकट के सामय में इमाम हुसैन पर ही आश्रित थे। और आप के संकट भी इमाम हुसैन की सिफारिश से दूर होते थे।"

उनके इस अनुचित और तर्करहित दावे का हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम

ने इस पुस्तक में बहुत ही उत्तम तौर पर खण्डन किया।

इसी बीच पीर महर अली शाह की ओर से एक पुस्तक सैफ़े चिश्तियाई प्रकाशित हुई। जिसमें उसने "ऐजाज़ुल मसीह" के मुकाबले पर तफ़सीर लिखने की बजाए ऐजाज़ुल मसीह पर व्यर्थ नुकत: चीनियां की थीं और ऐजाज़ुल मसीह के कुछ वाक्यों के सम्बंध में लिखा था कि वह कुछ मिसालें अरब और मकामाते हरीरी इत्यादि से चोरी की गई हैं। और लिखा था कि चूंकि आप की वह्यी, नुबुव्वत की वह्यी नहीं क्यों न इसे अज़्ग़ासे अहलाम✶ की वार्ता से समझा जाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनकी इन व्यर्थ नुक़्त: चीनियों का इस पुस्तक में विस्तृत, तार्किक और मुह बंद करने वाला उत्तर दिया है। और अपनी वह्यी को निश्चित और अटल रहमानी वह्यी सिद्ध किया है। और रहमानी इल्हाम की ग्यारह निर्णायक निशानियां लिखी हैं। (देखो पृष्ठ 492-493 यही पुस्तक) फिर अपने निश्चित इल्हामों में से जो विलक्षण निशानों और परोक्ष की ख़बरों पर आधारित थे उनमें से बतौर नमूना एक सौ तेईस भविष्यवाणियों का जो पूरी हुईं वर्णन किया है।

पीर मेहर अली शाह साहिब ने आप पर जो चोरी का आरोप लगाया था उसका ज्ञानात्मक और अनुसंधानात्मक उत्तर देते हुए हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि स्थान और अवसर के अनुकूल वक्तव्य भी अलंकारिकता की कला में गिना गया है। इसी प्रकार भावसाम्य भी साहित्यकारों और शायरों द्वारा मान्य है और इसे सर्क़ा (चोरी) नहीं कहा जाता अन्यथा नकल (चोरी) के आरोप से कोई नहीं बचा न ख़ुदा की किताबें और न मनुष्यों की पुस्तकें। परन्तु इस स्थान पर तो अल्लाह तआला ने अपने विशेष अधिकार से यह प्रकट कर दिया कि पीर मेहर अली शाह साहिब गोलड़वी जिसने सर्क़े का आरोप लगाया था वह स्वयं चोर सिद्ध हुआ। पीर मेहर अली शाह साहिब ने अपनी पुस्तक 'सैफ़ चिश्तियाई' में जो ऐजाज़ुल मसीह और शम्से बाज़िग़: पर नुक़्त: चीनियां और ऐतराज़ किए थे वे वास्तव में मौलवी मुहम्मद हसन फ़ैज़ी

✶ **अज़्ग़ास अहलाम -** अर्थहीन स्वप्न (अनुवादक)

के नोटों की हूबहू नक़ल थे जो उसने बतौर याद्दाश्त पुस्तक ऐजाज़ुल मसीह और शम्से बाज़िग़ः के हाशियों पर लिखे थे। जो पीर साहिब ने अपने ज्ञान को जताने के लिए उनकी ओर सम्बद्ध करने की बजाए अपनी ओर सम्बद्ध करके प्रकाशित कर दिये। और इसकी सूचना मियाँ शहाबुद्दीन और मौलवी करमदीन निवासी भैं ने पत्रों द्वारा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और मौलवी फ़ज़्लुद्दीन साहिब भैरवी को दी और अन्त में वे असल पुस्तकें जिन पर मुहम्मद हसन फ़ैज़ी ने नोट लिखे थे खरीद ली गईं। और इस प्रकार पीर मेहर अली शाह साहिब स्वयं चोर सिद्ध हुए और इस रंग में आप के इल्हाम -

انی مهين من اراد اهانتاک

(अर्थात- जो तुझे अपमानित करने का इरादा करेगा मैं उसे अपमानित कर दूंगा) में दर्ज भविष्यवाणी अत्यन्त शान से पूरी हुई।

हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम ने मियां शहाबुद्दीन और मौलवी करमदीन का वह पत्राचार जिसमें उन्होंने पीर मेहर अली शाह साहिब की चोरी का ज़िक्र किया था इस पुस्तक (नज़ूलुल मसीह) में प्रकाशित कर दिया। (देखो हाशिया पृष्ठ 75-85 इसी पुस्तक का) यह पुस्तक जुलाई और अगस्त 1902 ई. में लिखी जा रही थी। देखो पृष्ठ 160 जिसमें 10 अगस्त 1902 और पृष्ठ 180 जिसमें 20 अगस्त 1902 ई. की तिथि लिखी है। और साथ-साथ यह पुस्तक छप भी रही थी। इसी बीच वही पत्र जो हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम ने इस में प्रकाशित किये थे हज़रत शेख याकूब अली साहिब रजि. ने अपने अख़बार 'अलहकम' 17 सितम्बर 1902 में प्रकाशित कर दिए जिस पर मौलवी करमदीन बिगड़ गया। क्योंकि उसने अपने एक पत्र में यह लिखा था कि हित इसी में है कि प्रकाशित न किया जाए। क्योंकि वह वास्तव में पीर मेहर अली शाह के मुरीदों से बहुत भयभीत था।

'अलहकम' में उसके पत्र प्रकाशित होने पर सिराजुल अख़बार जेहलम दिनांक 6 अक्टूबर 1902 ई0 में एक पत्र और 13 अक्टूबर 1902 ई. में एक कसीदः मौलवी करमदीम के नाम से प्रकाशित हुआ जिसमें उसने यह प्रकट

किया कि ये पत्र जाली और झूठे हैं उसके लिखे हुए नहीं और लिखा कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद के इल्हामों की आज़मायश के लिए मैंने उन्हें धोखा दिया था इत्यादि।

इस पर हकीम फ़ज़लुद्दीन साहिब मालिक तथा प्रबंधक ज़ियाउल इस्लाम प्रेस क़ादियान ने (जिनके नाम मौलवी करमदीन ने आरम्भ में पत्र लिखे थे) 14 नवंबर 1902 ई. को गुरदासपुर की अदालत में उनके विरुद्ध दफ़ा 420 के अन्तर्गत इस्तिग़ासः दायर कर दिया। मुक़द्दमे के बीच 22 जून 1903 को मौलवी करमदीन ने प्रकाशन के अन्तर्गत पुस्तक नुज़ूलुल मसीह के पृष्ठ प्रस्तुत किए और वादी से पुष्टि कराना चाही। जिस पर हकीम फ़ज़लुद्दीन साहिब ने 29 जून 1903 को ज़ेरे दफ़ा 411 ताजीरात-ए-हिन्द के अन्तर्गत दूसरी नालिश दायर कर दी और बयान दिया कि यह पुस्तक ज़ियाउल इस्लाम प्रेस क़ादियान के प्रबंधक की हैसियत से मेरा स्वामित्व थी और चूंकि अभी तक नियमित रूप से प्रकाशित नहीं हुई इसलिए यह माल चोरी किया हुआ है। और दोषी करमदीन चोरी के माल को अपने कब्ज़े में रखने का अपराधी है। चूंकि सिराजुल अख़बार के निबंधों में मौलवी करमदीन ने हज़रत शेख याक़ूब अली साहिब एडीटर अलहकम के विरुद्ध भी व्यर्थ बात की थी। इसलिए शेख साहिब ने भी मौलवी करमदीन साहिब और फ़क़ीर मुहम्मद साहिब एडीटर और मालिक 'सिराजुल अख़बार' के विरुद्ध दफा 500, 501 और 502 के अन्तर्गत मानहानि का दावा दायर कर दिया।

इन परिस्थितियों में जबकि मौलवी करमदीन साहिब अपने पत्रों के इन्कारी हो चुके थे हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस पुस्तक का प्रकाशन उस समय तक उचित न समझा जब तक कि अदालत से यह फैसला न हो जाए कि ये पत्र मौलवी करमदीन साहिब के अपने लिखे हुए हैं या नहीं।

और इस बीच आप कुछ और दूसरी अहम पुस्तकों की ओर ध्यान देने लगे और यह पुस्तक छपी हुई पड़ी रही। जो टायटल पेज प्रकाशित करा कर 25 अगस्त 1909 ई. को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रजि. के पवित्र दौर

में पहली बार प्रकाशित हुई । (देखो पृष्ठ 345, 346 यही पुस्तक)

अल्लाह तआला से विनयपूर्वक दुआ है कि वह इन रूहानी ख़ज़ायन से हमें और हमारी सन्तानों को तथा संसार की समस्त क़ौमों को यथायोग्य लाभान्वित होने का सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन- अल्लाहुम्मा आमीन।

25 रमज़ान मुबारक ख़ाकसार
1385 हिज्री क़मरी जलालुद्दीन शम्स
18 जनवरी 1966 ई0 रब्वाह

उर्दू प्रथम संस्करण का टाइटल पृष्ठ

ٹائیٹل بار اول

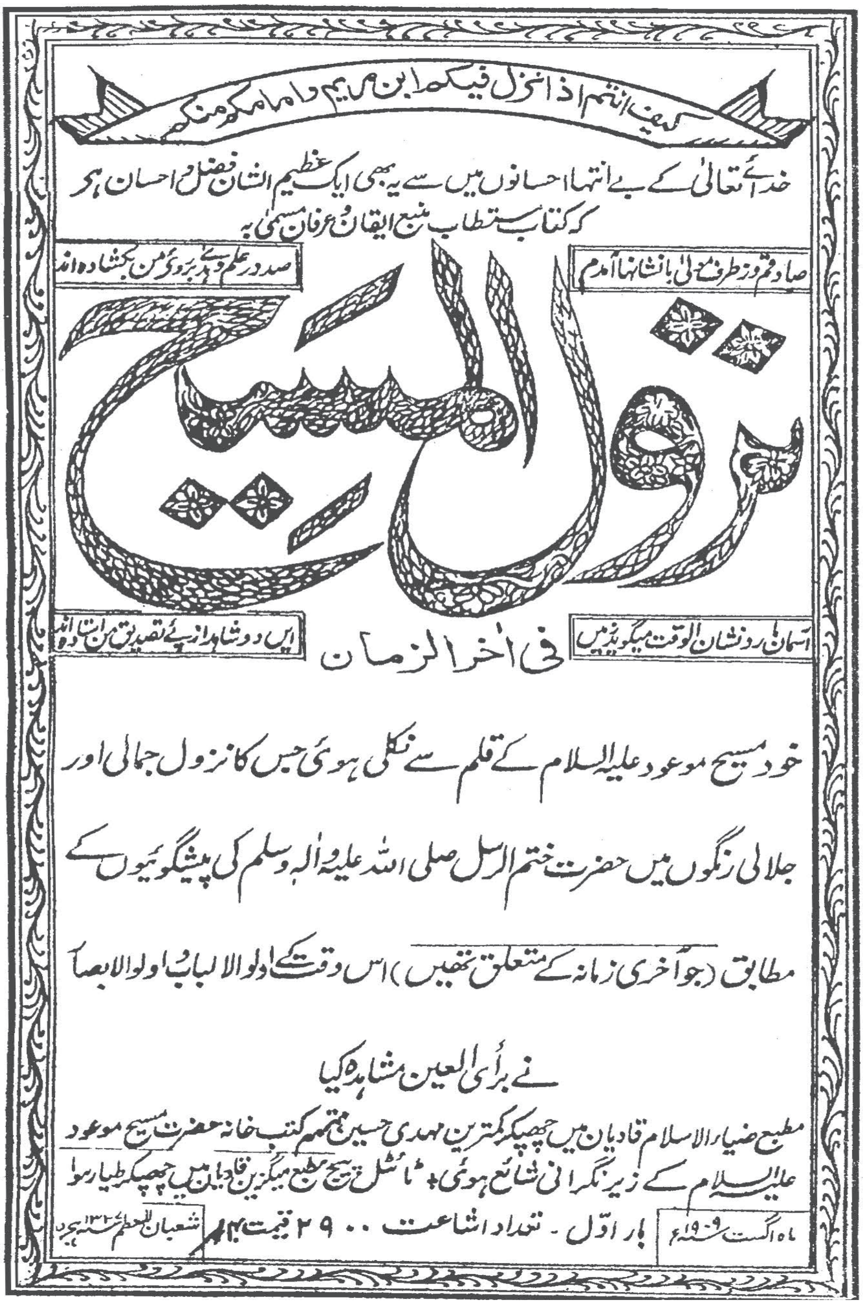

کیف انتم اذا نزل فیکم ابن مریم و امامکم منکم

خدائے تعالیٰ کے بے انتہا احسانوں میں سے یہ بھی ایک عظیم الشان فضل و احسان ہے
کہ کتاب مستطاب منبع ایقان و عرفان مسمّٰی بہ

صاد قم و زطرف معالی بانشانہا آمدم | صد در علم و ہدٰی بر روئے من بکشادہ اند

نزول المسیح

آسمان ہا ر دنشان الوقت میگوید زمیں | ایں دو شاہد از پئے تصدیق من استادہ اند

فی اٰخر الزمان

خود مسیح موعود علیہ السلام کے قلم سے نکلی ہوئی جس کا نزول جمالی اور
جلالی رنگوں میں حضرت ختم الرسل صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی پیشگوئیوں کے
مطابق (جو آخری زمانہ کے متعلق تھیں) اس وقت کے اولوالالباب و اولوالابصار
نے برأی العین مشاہدہ کیا

مطبع ضیاء الاسلام قادیان میں چھپکر کمترین مہدی حسین مہتمم کتب خانہ حضرت مسیح موعود
علیہ السلام کے زیر نگرانی شائع ہوئی + ٹائٹل ترتیب مطبع میگزین قادیان میں چھپکر طیار ہوا

۱۵ اگست سنہ ۱۹۰۹ء | بار اوّل ۔ تعداد اشاعت ۲۹۰۰ قیمت ۱۲ | شعبان المعظم ۱۳۲۷ سنہ ہجری

उर्दू प्रथम संस्करण के टाइटल का अनुवाद

كَيْفَ اَنْتُمْ اِذَا نَزَلَ فِيْكُمُ ابْنُ مَرْيَمَ وَاِمَامُكُمْ مِنْكُمْ

ख़ुदा तआला के असीम उपकारों में से यह भी एक महान कृपा और उपकार है कि विश्वास एवं अध्यात्म ज्ञान की उत्तम पुस्तक जिसका नाम

صادقم وزطرف مولٰی بانشانہا آمدم
صردرعلم وہدٰی بر روئے من بکشادہ اند

नुज़ूलुल मसीह

(अन्तिम युग में मसीह का अवतरण)

آسماں بارد نشاں الوقت میگوید زمیں
ایں دوشاہد از پئے تصدیق من استادہ اند

स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के क़लम से निकली हुई जिसका उतरना सौन्दर्य पूर्ण और तेजस्वी रंगों में हज़रत ख़तमुर्रुसुल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार (जो अन्तिम युग से सम्बन्धित थीं) उस समय के बुद्धिमान और विवेकवानों ने चश्मदीद तौर पर अवलोकन किया।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِئُوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ

(अत्तौबा-9/32)

وَ اللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَ لَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ

(अस्सफ़्फ़-61/9)

"ये लोग इरादा कर रहे हैं कि ख़ुदा के नूर को अपने मुंह की फूंकों (मनगढ़त बातों) से बुझा दें और ख़ुदा तो नहीं रुकेगा जब तक कि अपने नूर (प्रकाश) को पूरा न करे यद्यपि काफ़िर लोग नापसन्द करें।"

हम ने ताऊन के बारे में जो पुस्तक '**दाफ़िउल बला**' लिखी थी उसका उद्देश्य यह था ताकि लोग सतर्क हों और अपने दिलों को पवित्र करें और अपनी जीभों तथा आंखों, कानों और हाथों को अकथनीय, अदृश्यनीय, अश्रवणीय तथा अकर्णीय बातों से रोकें और ख़दा से डरें ताकि ख़ुदा तआला उन पर दया करे और वह भयानक महामारी जो उनके देश में प्रवेश कर गई है दूर करे। परन्तु खेद कि धृष्टताएं और भी अधिक हो गईं और जीभें और भी लम्बी हो गयीं। उन्होंने हमारे मुकाबले पर अपने विज्ञापनों में कष्ट और गालियाँ देने में कोई कसर नहीं छोड़ी तथा किसी प्रकार की पीड़ा पहुँचाने से नहीं रुके सिवाए उसके जो उनसे न हो सका जिस तक हाथ नहीं पहुँच सका। लानतान और गालियाँ देने में वह उन्नति की कि शिया धर्म के लोगों को भी पीछे छोड़ दिया। क्योंकि शिया ने तो अपने विचार में लानतबाज़ी की कला को 'अलिफ़' अक्षर से आरंभ करके 'य' अक्षर तक पहुंचा दिया था (कोई कसर न छोड़ी) अर्थात् अबू बक्र से यज़ीद तक। परन्तु ये लोग जो अहले हदीस और हनफ़ी कहलाते हैं उन्होंने इस कार्रवाई को अपूर्ण समझ कर लानत बाज़ी के दायरे को इस प्रकार पूरा किया कि जिस व्यक्ति को ख़ुदा ने आदम से लेकर यसू मसीह तक समस्त नबियों का द्योतक ठहराया था अर्थात् अलिफ अक्षर से 'य' तक और फिर दायरे को पूर्ण करने के उद्देश्य से अलिफ (अर्थात्) आदम से लेकर अलिफ अहमद तक द्योतक होने की विशेषता

का ख़ातम बनाया था उसी पर लानतों का अभ्यास किया।

وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ

(अश्शुअरा-228)

परन्तु स्मरण रखें कि ये गालियां जो उनके मुंह से निकलती हैं और यह तिरस्कार और यह अपमान की बातें जो उनके होठों पर चढ़ रही हैं और ये गन्दे काग़ज़ जो वे सच के मुकाबले पर प्रकाशित कर रहे हैं यह उनके लिये एक रूहानी अज़ाब का सामान है जिसको उन्होंने अपने हाथों से तैयार किया है। झूठ बोलने के जीवन जैसा कोई लानती जीवन नहीं। क्या वे समझते हैं कि अपनी योजनाओं से और अपने निराधार झूठों से तथा अपने **झूठ गढ़ने** से और अपने उपहास से ख़ुदा के इरादे को रोक देंगे? या दुनिया को धोखा देकर उस कार्य को रोक देंगे जिसका ख़ुदा ने आकाश पर इरादा किया है। यदि कभी पहले भी सच के विरोधियों को इन तरीकों से सफलता हुई है तो वे भी सफल हो जाएंगे। परन्तु यह प्रमाणित बात है कि ख़ुदा के विरोधी और उसके इरादे के विरोधी जो आकाश पर किया गया हो हमेशा अपमानित और पराजित होते हैं तो फिर इन लोगों के लिए भी एक दिन असफलता और बदनामी और रुस्वाई मुक़द्दर है। ख़ुदा का कथन कभी ग़लत नहीं हुआ और न होगा। वह फरमाता है-

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ

(अलमुजादलः - 22)

अर्थात् ख़ुदा ने प्रारंभ से लिख छोड़ा है और अपना क़ानून और अपनी सुन्नत ठहरा दिया है कि हमेशा वह और उसके रसूल विजयी रहेंगे। तो चूंकि **मैं उसका रसूल** अर्थात् भेजा हुआ हूँ परन्तु बिना किसी **नई शरीअत और नए दावे के अपितु उसी नबी करीम ख़ातमुलअंबिया** का★ नाम पाकर और उसी में लीन होकर तथा उसी का **द्योतक** बन कर आया हूँ। इसलिए मैं कहता

★**हाशिया :-** यह कथन उस हदीस के अनुसार है जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि आने वाला महदी और मसीह मौऊद **मेरा नाम पाएगा** और कोई नया नाम नहीं लाएगा। अर्थात् उस की ओर से कोई नया दावा नुबुव्वत या रिसालत का नहीं होगा अपितु जैसा कि आरंभ से निर्णय पा चुका है कि वह **मुहम्मदी नुबुव्वत** की चादर को

हूँ कि जैसा कि हमेशा से अर्थात् आदम के युग से लेकर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक हमेशा इस आयत का अर्थ सच्चा निकलता आया है, ऐसा ही अब भी मेरे पक्ष में सच्चा निकलेगा। क्या ये लोग नहीं देखते कि जिस युग में इन मौलवियों तथा उनके चेलों ने मुझ पर झुठलाने और गालियां देने के आक्रमण आरंभ किए उस युग में मेरी बैअत में एक आदमी भी नहीं था। यद्यपि कुछ दोस्त जो उंगलियों पर गिने जा सकते थे मेरे साथ थे और इस समय ख़ुदा तआला की कृपा से सत्तर हज़ार के लगभग बैअत करने वालों की संख्या पहुंच गई है जो

शेष हाशिया - ही **ज़िल्ली** (प्रतिबिम्ब के) तौर पर स्वयं पर लेगा और अपना जीवन उसी के नाम पर प्रकट करेगा और मर कर भी उसी की क़ब्र में जाएगा। ताकि यह न समझा जाए कि कोई पृथक अस्तित्व है और या पृथक रसूल आया। अपितु ज़िल्ली तौर पर वही आया जो **ख़ातमुल अंबिया** था। परन्तु ज़िल्ली (प्रतिबिम्ब) तौर पर। इसी रहस्य के लिए कहा गया कि मसीह मौऊद आंहज़रत सल्लल्लाहु आलैहि व सल्लम की क़ब्र में दफ़्न किया जाएगा क्योंकि उसमें किसी दूसरे का रंग नहीं आया फिर क्योंकर पृथक क़ब्र में कल्पना की जाए। दुनिया इस रहस्य को नहीं पहचानती। यदि दुनिया के लोग इस बात को जानते कि इसके क्या अर्थ हैं कि

اِسْمُہٗ کَاِسْمِیْ وَ یُدْفَنُ مَعِیَ فِیْ قَبْرِیْ

तो वे धृष्टताएं न करते और ईमान लाते। इस रहस्य को स्मरण रखो कि मैं रसूल और नबी **नहीं हूँ** अर्थात् नई शरीअत, नए दावे और नए नाम की दृष्टि से। और मैं **रसूल तथा नबी** हूँ, अर्थात् पूर्ण ज़िल्लियत की दृष्टि से, मैं वह दर्पण हूँ जिसमें मुहम्मदी रूप और मुहम्मदी नुबुव्वत का **पूर्ण प्रतिबिम्ब** है। यदि मैं कोई नुबुव्वत का दावा करने वाला पृथक व्यक्ति होता तो ख़ुदा तआला मेरा नाम मुहम्मद और अहमद और मुज्तबा और मुस्तफ़ा न रखता और न ख़ातमुल अंबिया की तरह मुझे ख़ातमुल औलिया की पदवी दी जाती अपितु मैं किसी पृथक नाम से आता परन्तु ख़ुदा तआला ने प्रत्येक बात में मुहम्मदी अस्तित्व में मुझे दाख़िल कर दिया, यहां तक कि यह भी न चाहा कि यह कहा जाए कि मेरा कोई अलग नाम हो या कोई अलग क़ब्र हो। क्योंकि ज़िल्ल (प्रतिबिम्ब) अपने असल से अलग हो ही नहीं सकता। और ऐसा क्यों कहा गया इसमें रहस्य यह है कि ख़ुदा तआला जानता था कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उसने **ख़ातमुल अंबिया** ठहराया है और दोनों सिलसिलों की समानता पूर्ण करने के लिए यह आवश्यक था कि मूसवी मसीह की तुलना पर मुहम्मदी मसीह भी नुबुव्वत की शान के साथ आए ताकि इस श्रेष्ठ नुबुव्वत की शान में

न मेरे प्रयास से अपितु उस हवा की प्रेरणा से जो आकाश से चली है मेरी ओर दौड़े हैं। अब ये लोग स्वयं सोच लें कि इस सिलसिले के बरबाद करने के लिए और क्या कुछ हज़ारों कठिन परिश्रम के साथ प्रत्येक प्रकार के छल किए यहां तक कि अधिकारियों तक झूठी जासूसियां भी कीं, ख़ून के झूठे मुकद्दमे के गवाह बन कर अदालतों में गए और समस्त मुसलमानों को मुझ पर एक सामान्य जोश दिलाया तथा हज़ारों विज्ञापन और पुस्तकें लिखीं और मेरे बारे में कुफ्र और क़त्ल के **फ़त्वे** दिये और विरोधात्मक योजनाओं के लिए **कमेटियां** गठित कीं। परन्तु

शेष हाशिया - कमी न आए इसलिए ख़ुदा तआला ने मेरे अस्तित्व को एक पूर्ण ज़िल्लियत के साथ पैदा किया और ज़िल्ली तौर पर उसमें मुहम्मदी नुबुव्वत रख दी। ताकि एक मायने से मुझ पर 'नबिय्युल्लाह' का शब्द चरितार्थ हो तथा दूसरे मायने से ख़त्मे नुबुव्वत सुरक्षित रहे।

इस स्थान पर यह भी स्मरण रहे कि दूरदर्शी और सर्वज्ञानी ख़ुदा ने दुनिया की बनावट दोरी रखी है अर्थात् कुछ लोग कुछ के समान होते हैं। नेक नेकों के समान और बुरे बुरों के समान। परन्तु इसके बावजूद यह बात गुप्त होती है और ज़ोर-शोर से प्रकट नहीं होती, परन्तु अन्तिम युग के लिए ख़ुदा ने निर्धारित किया हुआ था कि वह एक सामान्य लौटने का युग होगा ताकि यह दयनीय उम्मत दूसरी उम्मतों में किसी बात में कम न हो। अत: उसने मुझे पैदा करके प्रत्येक पहले नबी से उसने मुझे उपमा दी कि वही मेरा नाम रख दिया। अत: आदम, इब्राहीम, नूह, मूसा, दाऊद, सुलेमान, यूसुफ़, यह्या, ईसा इत्यादि ये समस्त नाम बराहीन अहमदिया में **मेरे** रखे गए। और इस रूप में मानो समस्त पहले अंबिया इस उम्मत में दोबारा पैदा हो गए यहां तक कि सब के अन्त में मसीह पैदा हो गया। और जो मेरे विरोधी थे उन का नाम ईसाई, यहूदी और मुश्रिक रखा गया। अत: पवित्र क़ुर्आन में इसी की ओर संकेत करता है और फ़रमाता है

اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ۔ (अलफ़ातिहा- 6-7)

अत: यह आयत स्पष्ट कह रही है कि इस उम्मत के कुछ लोगों को पहले नबियों की ख़ूबी दी जाएगी। और यह कि कुछ इन्कारियों को पहले काफ़िरों की आदतें भी दी जाएंगी और बड़े ज़ोर-शोर से भावी नस्लों की पहले लोगों से कुछ समानताएं प्रकट हो जाएंगी। अत: बिलकुल यहूदियों के समान यहूदी पैदा हो जाएंगे और ऐसा ही नबियों का पूर्ण नमूना भी प्रकट होगा। इसी की ओर सूरह अंबिया में संकेत है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है-

इन समस्त प्रयासों का परिणाम असफ़लता के अतिरिक्त और क्या हुआ। अत: यदि यह कारोबार मनुष्य का होता तो अवश्य उनके जान तोड़ प्रयासों से सम्पूर्ण सिलसिला तबाह हो जाता। क्या कोई उदाहरण दे सकता है कि इतने प्रयास किसी झूठे के बारे में किये गए और फिर वह तबाह न हुआ, अपितु पहले से हज़ार गुना उन्नति कर गया। तो क्या यह **महान** निशान नहीं है कि प्रयास तो इस उद्देश्य से किये गए कि बीज जो बोया गया है अन्दर ही अन्दर मिट जाए और समस्त संसार पर इसका नामोनिशान न रहे। **परन्तु वह बीज बढ़ा और फूला और एक**

शेष हाशिया -

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ۔ حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ۔ (अलअंबिया- 96,97)

इन आयतों का उद्देश्य यह है कि जो लोग मार दिए गए और दुनिया से उठाए गए उन पर हराम (अवैध) है कि फिर दुनिया में आएं अपितु जो गए सो गए। हां याजूज और माजूज के समय में एक प्रकार से वापसी होगी। अर्थात् पहले लोग जो मर चुके हैं उसके साथ इस युग के लोग ऐसी सर्वांगपूर्ण समानता पैदा कर लेंगे कि मानो वही आ गए। इसी आधार पर इस युग के उलेमा का नाम यहूदी रखा गया और मुहम्मदी मसीह का नाम **इब्ने मरयम** रखा गया और फिर इसी ख़ातमुल ख़ुलफ़ा का नाम स्पष्ट मुहम्मदी विशेषताओं की दृष्टि से मुहम्मद और अहमद रखा गया तथा अस्थायी तौर पर **रसूल और** नबी कहा गया और उसी को **आदम** से लेकर अन्त तक समस्त नबियों के नाम दिये गये ताकि वापसी का वादा पूरा हो जाए। यह अध्यात्मिक ज्ञान का एक **बारीक रहस्य** है और अभी हम लिख चुके हैं कि सूरह फ़ातिहा से भी निश्चित तौर पर यह बात निकलती है कि मुसलमानों में से इनाम प्राप्त भी पहले नबियों के समान होंगे और मग़ज़ूब अलैहिम (जिन पर प्रकोप हुआ) भी अर्थात् यहूदी होंगे। अत: समस्त नबियों के नज़दीक याजूज-माजूज का युग वापसी का युग कहलाता है। अर्थात् रजअत बुरूज़ी (प्रतिबिम्बित तौर पर वापसी) न कि हक़ीकी रजअत (वास्तविक वापसी)। यदि वास्तविक वापसी हो तो फिर सब में वास्तविक चाहिए न कि केवल ईसा में। क्या कारण है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वापसी तो बुरूज़ी तौर पर महदी के रूप में हो और ईसा की वापसी वास्तविक तौर पर। शिया को यह धोखा लगा है कि उन्होंने इस युग को वास्तविक वापसी का युग समझ लिया। परन्तु यह उनकी ग़लती है। हदीसों से स्पष्ट तौर पर यह बात निकलती है कि अन्तिम युग में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी दुनिया में प्रकट होंगे और हज़रत मसीह भी। परन्तु दोनों

वृक्ष बना तथा उसकी टहनियां दूर-दूर चली गईं। और अब वह वृक्ष इतना बढ़ गया है कि हज़ारों पक्षी उस पर आराम कर रहे हैं। और इस निशान के साथ एक महान निशान यह है कि आज से तेईस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में यह इल्हाम मौजूद है कि लोग प्रयास करेंगे कि इस सिलसिले को मिटा दें और प्रत्येक छल काम में लाएंगे, परन्तु मैं इस सिलसिले को बढ़ाऊंगा तथा पूर्ण करूंगा और वह एक फौज हो जाएगी और क़यामत तक उनकी विजय रहेगी और मैं तेरे नाम को दुनिया के किनारों तक ख्याति दूंगा और लोगों के समूह के समूह दूर से आएंगे और हर ओर से **आर्थिक सहायता** आएगी, मकानों को विशाल करो कि यह तैयारी आकाश पर हो रही है। अब देखो कि यह किस युग की भविष्यवाणी है जो **आज पूरी** हुई। ये ख़ुदा के निशान हैं परन्तु जो अंधे हैं जो आंखों वाले इन को देख रहे हैं उनके नज़दीक अभी तक कोई **निशान प्रकट** नहीं हुआ।

इस सदी में से बीसवां वर्ष भी आरंभ हो गया परन्तु उनका **मुजद्दिद अब तक न आया।** आकाश ने रमज़ान के **सूर्य एवं चन्द्र** ग्रहण के द्वारा गवाही दी और यह गवाही न केवल सुन्नियों की पुस्तक दारे क़ुत्नी में दर्ज है अपितु शियों की किताब 'इक्मालुद्दीन' में भी जो नितान्त विश्वसनीय समझी जाती है, यही सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण की महदी मौऊद की निशानी लिखी है। परन्तु फिर भी इन लोगों ने स्पष्ट बेईमानी से इस हदीस को भी अस्वीकार कर दिया। क्या दो फिर्क़ों की सहमति के बावजूद फिर भी यह हदीस सही नहीं? ऐसा ही ताऊन की हदीस पुस्तक 'इक्मालुद्दीन' में भी मौजूद है और सुन्नियों की पुस्तकों में भी कि मसीह के युग में ताऊन फैलेगी। परन्तु अफ़सोस कि इन लोगों के नज़दीक यह **निशान**

शेष हाशिया - बुरूज़ी तौर पर आएंगे न कि वास्तविक तौर। और यह भी लिखा है कि मसीह के मुकाबले पर यहूदी भी जोश-खरोश करेंगे परन्तु वे यहूदी भी बुरूज़ी हैं न कि वास्तविक। हमेशा से हदीसों में यह व्याख्या है कि इन्हीं मौलवियों का नाम उस समय यहूदी रखा जाएगा। और वास्तव में सूरह फ़ातिहा में पूर्ण स्पष्टता से यह भविष्यवाणी कर दी है क्योंकि सूरह फ़ातिहा में यह दुआ सिखाई गई कि ऐसा न हो कि हम वे यहूदी बन जाएं जो ईसा अलैहिस्सलाम के दुश्मन थे। तो मुसलमान लोग ऐसे यहूदी क्योंकर बन सकते हैं जब तक उन में बुरूज़ी तौर पर मसीह मौऊद पैदा न हो और उसका विरोध न करें। इसी से।

भी कुछ निशान नहीं। सलीबी जोश की वर्तमान हालत ने भी चाहा कि आकाश से **कोई ऐसा पैदा हो** कि जो इस फ़ित्ने को दूर करे। परन्तु उनके नज़दीक अभी कुछ हानि नहीं। ऐसा ही ख़ुदा तआला ने अपने इस बन्दे के **समर्थन में डेढ़ सौ के लगभग निशान दिखाए** जिस के देश में लाखों लोग **गवाह** हैं जो शीघ्र ही एक नक़्शे के रूप में प्रकाशित किए जाएंगे। परन्तु इन लोगों के नज़दीक अब तक कोई निशान प्रकट नहीं हुआ। अब न मालूम ये निशान किस को कहते हैं? इस का उत्तर शक्तिमान ख़ुदा स्वयं ही देगा। क्योंकि यदि वह **इरादा करे** तो बड़े-बड़े टेढ़े स्वभाव वालों को क़ाइल कर सकता है। चूंकि इस पुस्तक में संक्षेप अभीष्ट है इसलिए हम इससे अधिक लिखना नहीं चाहते। हमारा और इन लोगों का मुक़द्दमा आकाश पर दायर है। वह वास्तविक बादशाह जो आकाश तथा पृथ्वी का मालिक है वह एक दिन एक मुकद्दमे का फ़ैसला कर देगा। यह बात प्रत्येक सच्चे के नज़्दीक मान्य है कि दो गिरोह ख़ुदा तआला के नज़दीक अवश्य लानती जीवन रखते हैं-

(1)- प्रथम वह व्यक्ति और उसकी जमाअत जो ख़ुदा तआला पर झूठ बांधते हैं और झूठ तथा दज्जाली तरीक़े से दुनिया में उपद्रव और फूट डालना चाहते हैं।

(2)- दूसरे वह गिरोह जो ख़ुदा की ओर से आने वाले एक सच्चे को झुठलाते और तिरस्कार करते हैं। उसका युग पाते हैं, उसके निशान देखते हैं और उसके प्रमाण को अपने ऊपर से उठा नहीं सकते परन्तु फिर भी उसे कष्ट देने के लिए खड़े हो जाते हैं और प्रत्येक पहलू से कोशिश करते हैं कि किसी प्रकार उसे मिटा दें। अब इस बात का ख़ुदा से अधिक किसे ज्ञान है कि ये दो गिरोह जो इस समय मौजूद हैं अर्थात् मैं और मेरे वे विरोधी जो मुझे गालियां देते और हर प्रकार से दु:ख पहुंचाते हैं और मेरी मृत्यु चाहते हैं। इन दोनों गिरोहों में से वह गिरोह कौन है जिसका जीवन लानती है और वह गिरोह कौन है जिसको बहुत बरकतें दी जाएंगी इस रहस्य को ख़ुदा के अतिरिक्त कोई ज्योतिषी नहीं जानता न रम्माल और न कोई अनुमान से काम लेने वाला। यह रहस्य मेरे शक्तिमान ख़ुदा का गुप्त रहस्य है। इसी रहस्य के प्रकटन पर सब फैसले हो जाएंगे। दुनिया में एक नज़ीर (सतर्क करने वाला) आया पर दुनिया ने उसे स्वीकार न किया। परन्तु

यदि वह ख़ुदा की ओर से है तो क्या ख़ुदा उसे छोड़ देगा? नहीं अपितु, वे दिन निकट हैं कि ख़ुदा अपने शक्तिशाली आक्रमणों से उसकी सच्चाई सिद्ध कर देगा। नर्क के अज़ाबों में से कोई अज़ाब "हसरत" जैसा नहीं। वह हसरत जो सच्चे के अस्वीकार करने में होती है और समय गुज़र जाता है। परन्तु अब जिस बात के लिखने के लिए हमने इरादा किया है वह यह है कि हमारी पुस्तक 'दाफ़िउलबला' जो ताऊन के बारे में प्रकाशित हुई थी उसके मुकाबले पर हमारे अत्याचारी विरोधियों ने भिन्न-भिन्न प्रकार के झूठों से काम लिया है और झूठ की गन्दगी इतनी खाई है कि कोई गन्दगी खाने वाला जानवर उसका मुकाबला नहीं कर सकेगा। हमें आश्चर्य है कि इन लोगों की नौबत कहां तक पहुंच गई कि वे देखते हुए नहीं देखते और सुनते हुए नहीं सुनते और समझते हुए नहीं समझते। उन में से झूठ बोलने का सरग़ना 'पैसा अख़बार' का एडीटर है जो बहुत बार झूठ की बदनामी उठा चुका है और फिर नहीं रुकता। वह मेरे बारे में स्वयं ही इक़रार करता है कि उन्होंने क़ादियान के बारे में केवल इतना इल्हाम प्रकाशित किया है कि उसमें तबाही डालने वाली ताऊन नहीं आएगी। हां यदि कुछ केस हो जाएं जो खलबली का कारण न हों तो यह हो सकता है और फिर अपने दूसरे पर्चों में फरियाद पर फरियाद (आर्तनाद) कर रहा है कि क़ादियान में ताऊन आ गई। यदि उसकी प्रकृति को ईमानदारी, इन्साफ और शर्म में से कुछ भाग मिला होता तो इस व्यर्थ बहस का नाम ही न लेता। क्योंकि यदि क़ादियान में सामान्य ज्वर के कारण जो मौसमी था दो-तीन आदमी मर भी गए तो किस डॉक्टर ने पुष्टि की थी कि वह ताऊन है? क्या क़ादियान के मूर्ख, अनपढ़ और कमीना प्रकृति के कुछ आर्य या और कोई उनसे सहमत व्यक्ति जो सच और सच्चाई से हार्दिक बैर रखते हैं और उनकी खोपड़ी में यह बुद्धि ही नहीं कि ताऊन किस को कहते हैं। उनके बुराई पैदा करने वाले किसी लेख से यह सिद्ध हो गया कि क़ादियान में ताऊन फ़ूट पड़ी। उनके ईमान और ईमानदारी पर स्वयं ताऊन का फोड़ा निकला हुआ है जिस से बचना कठिन है। इसके अतिरिक्त यदि 'पैसा अख़बार' के एडीटर को ईमानदारी और सच्चाई से कुछ मतलब होता तो उसको सिद्ध करना चाहिए था कि किस विज्ञापन या पुस्तक में हमने यह भी लिखा है कि क़ादियान में ताऊन नहीं आएगी और कभी एक केस भी नहीं होगा। अपितु

'दाफ़िउल बला' पुस्तक जो पांच हज़ार प्रकाशित की गई हैं उसके पृष्ठ -5 के हाशिये में पूर्ण व्याख्या के साथ ये इबारतें लिखी गईं हैं और वे ये है:-

ताऊन के प्रकारों में से वह ताऊन बहुत बरबादी लाने वाली है जिसका नाम **ताऊन जारिफ़** है। अर्थात् झाड़ देने वाली जिससे लोग इधर-उधर भागते हैं और कुत्तों की तरह मरते हैं। यह मानवीय हालत सहन करने से अधिक हो जाती है (और कम से कम आबादी का 1/10 भाग खा जाती है अन्यथा आधे तक या तीन भाग पांच भागों में से खा जाती है) अत: इस ख़ुदा के कलाम में यह वादा है कि यह हालत कभी क़ादियान पर नहीं आएगी। इसी की व्याख्या दूसरा इल्हाम करता है-

لَوْ لَا الْاِکْرَامُ لَھَلَکَ الْمُقَامُ

अर्थात् यदि मुझे इस सिलसिले के सम्मान का पास न होता तो मैं क़ादियान को भी तबाह कर देता। इस इल्हाम से दो बातें समझी जाती हैं-

(1)- प्रथम यह कि कुछ हानि नहीं कि इन्सान की सहनशक्ति की सीमा तक क़ादियान में कभी कोई घटना दुर्लभ तौर पर हो जाए जो बरबादी लाने वाली न हो तथा **भागने** और परेशानी का कारण न हो क्योंकि कभी-कभी होना न होने के सामान होता है।

(2)- दूसरे यह बात आवश्यक है कि जिन देहातों और शहरों में क़ादियान की अपेक्षा अत्यन्त उद्दण्ड, बुरे, अत्याचारी, दुराचारी और उपद्रवी तथा इस सिलसिले के ख़तरनाक दुश्मन रहते हैं उनके शहरों और देहात में अवश्य बरबादी वाली ताऊन फूट पड़ेगी (यदि तौब: न करें) और यहां तक होगा कि लोग बेहवास होकर हर ओर भागेंगे। और **हम दावे** से लिखते हैं कि क़ादियान में कभी जारिफ़ ताऊन नहीं पड़ेगी जो गांवों को वीरान करने वाली और खा जाने वाली होती है। परन्तु इसकी तुलना में दूसरे शहरों तथा देहात में जो अत्याचारी और उपद्रवी हैं अवश्य भयानक हालतें **पैदा** होंगी (यदि तौब: न करें) **सम्पूर्ण विश्व** में एक क़ादियान ही है जिसके लिए "**अब यह वादा हुआ** कि पहले से रसूल के हरम (अर्थात् उसके वास्तविक अनुयायी तथा उसका निवास स्थल - अनुवादक) के लिए भी एक वादा है" यह इबारत है जो वर्णित पृष्ठ में दर्ज है जिसे हमने यहाँ

शब्दश: नक़ल कर दिया है। अब स्पष्ट है कि हमारा कदापि यह दावा न था कि क़ादियान ताऊन से बिलकुल सुरक्षित रहेगा। हमने सामान्य लोगों के सामने यह **इबारत जो** 'दाफ़िउल बला' में प्रकाशित हो चुकी है, रख दी है ताकि लोग स्वयं पढ़ लें और फिर न्याय पूर्वक बताएं कि हम पर यह आरोप कि जैसे हम ने इस पुस्तक में यह दावा किया है कि क़ादियान के निकट ताऊन नहीं आएगी और एक भी केस नहीं होगा क्या यह **ईमानदारी** है या बाईमानी? हम स्वयं प्रतीक्षक हैं कि अल्लाह की इस वह्यी के अनुसार क़ादियान में साफ और स्पष्ट तौर पर **ताऊन के कुछ केस हों।** परन्तु अब तक पैसा अख़बार तथा कुछ दूसरे जल्दबाज़ एडीटरों ने लिखा है कि क़ादियान में सात केस हो चुके हैं वह लेख केवल तीन प्रकार की घटनाओं का संग्रह हैं:-

(1)- प्रथम ऐसे लेख जो केवल झूठ और इफ़्तिरा हैं। अर्थात् ऐसे लोगों के बारे में अकारण मृत्यु की झूठी ख़बरें प्रकाशित की गईं **जो अब तक जीवित मौजूद हैं।** न वे बीमार हुए न उनको ताऊन हुई। यह प्रथम श्रेणी का झूठ है जिसे द्वारा पैसा अख़बार ने बेईमानी का बड़ा भाग लिया है और अकारण शरीफ़ और प्रिय लोगों का दिल दुखाया है। उसको सोचना चाहिये कि यदि वह वास्तविकता के विरुद्ध ख़बर उसके परिजनों तक पहुँचाई जाए कि महबूब आलम पैसा अख़बार का एडीटर ताऊन से मर गया तो क्या उनको अघात पहुँचेगा या नहीं तो फिर वह उत्तर दे कि उसने ऐसा झूठ क्यों बोला और किस उद्देश्य से बोला और क्यों विरुद्ध बोलने की गन्दगी खाकर शालीन और प्रतिष्ठित लोगों को दु:ख दिया? **क्या यह लानती जीवन नहीं** कि अकारण बैर के कारण झूठ बोला जाए? जिनको वह पूर्ण निर्लज्जता से मुर्दों में दाख़िल करता है वे तो एक दिन के लिए भी बीमार न हुए और न गांव से बाहर निकाले गए। उदाहरणतया जैसा कि पैसा अख़बार ने बिरादरम मुकर्रम मौलवी हकीम नूरदीन साहिब के बारे में प्रकाशित किया कि उनकी कोई रिश्तेदार औरत ताऊन से मर गई और कुछ ने यह प्रसिद्ध किया कि वह मौलवी साहिब की सास थीं और कुछ दुष्टों ने यह प्रसिद्ध किया कि वह आप की पत्नी थीं। हालांकि न सास न पत्नी तथा न कोई अन्य मौलवी साहिब का रिश्तेदार ताऊन से मरा और न गांव से बाहर निकाला गया। यह कितनी बड़ी

नीचता और बेईमानी है कि ऐसे स्पष्ट झूठ जिन की कुछ भी वास्तविकता नहीं ऐसे अख़बार में लिखे जाएं जिस के कई हज़ार पर्चे सप्ताहिक प्रकाशित होते हैं। अफ़सोस कि इस व्यक्ति ने अकारण मौलवी साहिब के परिजनों और रिश्तेदारों को दु:ख पहुँचाया और अकारण दिलों को अघात पहुँचाकर नितान्त दिल दुखाने का कारण हुआ। इसको क्या सूचना नहीं थी कि क़ादियान में अधिकतर आर्य इत्यादि इस्लाम धर्म से और विशेष तौर पर इस जमाअत से निपट बैर रखते हैं और इन लोगों के नज़दीक झूठ बोलना माँ के दूध समान है। शैतान हैं न कि इन्सान। फिर क्यों और किस कारण से उनकी ऐसी झूठी सूचनाओं को अख़बार में लिख कर प्रकाशित किया गया। अब उत्तर देने का कौन ज़िम्मेदार है कि इतने **गन्दे** झूठ से एक **जमाअत** का दिल दुखाया है। ऐसा व्यक्ति जो देश में अशांति फैलाना चाहता और जीवित लोगों को मार रहा है और अपने आंतरिक बैरों के कारण सार्वजनिक अमन का **दुश्मन है** नि:सन्देह वह इस योग्य है कि **क़ानून** की सीमा तक उसकी गिरफ़्त हो कि उसने ऐसा गन्दा और दिल दुखाने वाला झूठ देश में फैलाया। बिरादरम मौलवी नूरदीन के परिजनों के बारे में एक निराधार अघात पहुँचाने वाली बात को प्रसिद्धि दी और बहुत से दिलों को अघात पहुँचाया। और न केवल इतना ही अपितु पहले बनावटी तौर पर जीवित को मारा और फिर उसी बनावटी शव का अपमान किया।

क्या अख़बार का यही **कर्त्तव्य** होता है कि प्रत्येक **रिवायत** बिना जांच-पड़ताल प्रकाशित कर दी जाए। हमें तो अंग्रेज़ी क़ानून का हाल कुछ मालूम नहीं यदि सरकार ने अपने **क़ानून** में अख़बार लिखने वालों को यह अनुमति दे रखी है कि ऐसे बेबुनियाद झूठ जिनसे दिलों को दु:ख और अघात पहुँचता है बेधड़क प्रकाशित कर दिया करें तब तो चूंचरा करने का कोई अधिकार नहीं अन्यथा सरकार **पब्लिक पर उपकार** करेगी। यदि ऐसे गन्दे, अपवित्र और दिल दुखाने वाली झूठी बातों के प्रकाशित करने के कारण **पैसा अख़बार** से पूछताछ करे और ऐसी झूठी मौतों का उस से **सबूत मांगे** और क़ानून की सीमा तक उसे पूर्ण दण्ड का **स्वाद चखाए।**

विचार का स्थान है कि एक तो वास्तविक तौर पर देश में ताऊन ने

परेशानी फैला रखी है, दूसरे इस झूठी ताऊन के प्रकाशित करने का पैसा अख़बार ने ठेका ले लिया है। फिर यदि ऐसी स्थिति में यह सरकार जो प्रजा की हमदर्द है ऐसे खुले-खुले झूठ के समय में जिसे नितान्त निर्भयता से किया गया है ऐसे **मुंहफट** इन्सान की **गिरफ़्त** न करे तो न मालूम झूठ बोलने में किस सीमा तक इस व्यक्ति का हाल पहुँच जाएगा और किन-किन दिलों को अकारण दुखाएगा। अभी प्रारंभिक अवस्था है थोड़े **दण्ड** से भी सावधान हो सकता है। अत: कम से कम झूठ बोलने का यह दण्ड है कि अविलम्ब यह अख़बार बन्द कर दिया जाए या इसके अतिरिक्त अन्य कोई उचित दण्ड दिया जाए। और यदि सरकार को हमारे इस लेख में **सन्देह** हो तो अपने किसी अफ़सर को क़ादियान में भेजकर जांच पड़ताल कर लें कि क्या लेख **वास्तविक** है या अवास्तविक। अभागे एडीटर ने इस गन्दे झूठ से स्वयं को पब्लिक के सामने तथा सरकार के सामने एक झूठ बोलने वाला और झूठ गढ़ने वाले सिद्ध कर दिया है। अफ़सोस तो यह है कि इस झूठ से उसे कोई **लाभ नहीं हुआ** क्योंकि इस झूठ बोलने का असल मतलब तो उसका यह था कि ताकि इस बात को सिद्ध करे कि जैसे हमने अपनी पुस्तक **'दाफ़िउल बला'** में यह लिखा है कि क़ादियान में ताऊन कदापि नहीं आएगी और ताऊन आ गई। **काश!** यदि यह पुस्तक दाफ़िउल बला को ध्यानपूर्वक पढ़ लेता और उस के पृष्ठ 5 के हाशिये को देख लेता जिस को हम ने इस पुस्तक में नक़ल कर दिया है तो इस झूठ बोलने की लानत से बच जाता। उस का यह बहाना सही नहीं होगा कि अभागे, दुष्टों और झूठों ने क़ादियान से मुझे ख़बर दी इसलिए मैंने झूठ को प्रकाशित कर दिया, क्योंकि प्रकाशित करने का उत्तरदायी वह है न कि कोई और व्यक्ति, अपितु उसने तो साथ ही दूसरे कुछ अख़बारों को भी लिप्त किया। उसे भलि-भांति ज्ञात था कि क़ादियान के आर्य उस समय से जबकि **लेखराम** के बारे में **भविष्यवाणी पूरी हुई** इस सिलसिले के साथ हार्दिक बैर रखते हैं तथा कुछ अन्य धर्म भी इन के समरंग हैं फिर क्योंकर ऐसे ईमानदार ठहर सकते हैं कि उनके बयान की जांच-पड़ताल आवश्यक नहीं। इसके बावजूद पैसा अख़बार इस बात को भी गुप्त नहीं रख सकता कि वह आदम के सांप की तरह इस सिलसिले का पुराना दुश्मन और शत्रु है। तो इस में क्या सन्देह है कि उसी शत्रुता के कारण

यह झूठ का ढेर उसने अपने अख़बार में दर्ज कर दिया है।

फिर इसी अख़बार में वह लिखता है कि मौला चौकीदार की पत्नी भी ताऊन से मृत्यु पा गई। हालांकि वह इस समय तक क़ादियान में जीवित मौजूद है। प्रत्येक व्यक्ति विचार कर ले कि इस व्यक्ति ने क्या आचरण अपना रखा है कि जीवित लोगों को मार रहा है। क्या एक अख़बार के एडीटर की क़लम से ऐसे ख़तरनाक झूठ प्रकाशित होना और दिलों को दुखाना शांति भंग करने का कारण नहीं है? जिस व्यक्ति के अख़बार के सप्ताह में हज़ारों प्रतियां प्रकाशित होती हैं अनुमान लगाने का स्थान है कि वह कितनी घटना के विरुद्ध शोक की ख़बरों से निष्पाप दिलों को दुःख दे रहा है और दुनिया में अशान्ति फैला रहा है। एक तो अकाश से मनुष्य पर निश्चित तौर पर संकट है अब दूसरा संकट यह पैदा हो गया है जो पैसा अख़बार के माध्यम से देश में फैलता जाता है। न मालूम इस देश के लोग ऐसे गन्दे अख़बार से क्या लाभ प्राप्त करते हैं और कुछ मालूम नहीं होता कि क्यों महान सरकार इस दुष्ट अख़बार के बन्द करने में विलम्ब कर रही है। क्योंकि एक गन्दे अख़बार का बन्द होना लाखों इन्सानों को दुःख पहुँचाने से अच्छा है।

(2)- दूसरा तरीका **झूठ गढ़ने** जो पैसा अख़बार ने **अपनाया** है वह यह है कि केवल **काल्पनिक** नाम लिखकर प्रकट करता है कि ये लोग क़ादियान में ताऊन से मरे हैं। हालांकि इन नामों का कोई इन्सान क़ादियान में नहीं मरा। उदाहरणतया वह लिखता है कि मौला नामक व्यक्ति की लड़की ताऊन से मरी है। हालांकि कथित मौला के घर में कोई लड़की पैदा ही नहीं हुई। ऐसा ही वह लिखता है एक सद्रू बाफन्दा ताऊन से मरा है। हालांकि इस गांव में सद्रू नाम का कोई बाफन्दा ही नहीं जो ताऊन से मर गया हो। न मालूम उसे यह क्या सूझी कि काल्पनिक तौर पर नाम लिखकर उनको ताऊनी मौतों में सम्मिलित कर दिया। शायद ऐसा इसलिए किया गया ताकि कुछ पता न चल सके और अज्ञानी लोग समझ लें कि अवश्य इन नामों के कोई लोग होंगे जो मरे होंगे।

(3)- तीसरा तरीका **झूठ गढ़ने** का जो पैसा अख़बार ने अपनाया है वह यह है कि कुछ आदमी वास्तव में मरे तो हैं परन्तु वे किसी अन्य घटना से मरे हैं न कि ताऊन से। और उसने केवल चालाकी और चपलता से ताऊन की मौतों

में सम्मिलित कर दिया है। उदाहरण के तौर पर अपने अख़बार में बुड्ढा तेली के लड़के के बारे में लिखता है कि वह ताऊन से मरा है। **हालांकि** सारा गांव जानता है कि वह पागल कुत्ते के काटने से मरा था और जैसा कि नियम है कि सरकारी तौर पर उसकी मृत्यु का नक़्शा तैयार किया गया और कुत्ते के काटने की तिथि इत्यादि उसमें लिखी गई। फिर पैसा अख़बार की यह कैसी ईमानदारी है कि ऐसी झूठी बातों को जिन से सरकार पर भी **प्रहार** है अपने अख़बार में प्रकाशित किया मानो सरकार ने अपने कर्मचारियों के माध्यम से जान बूझ कर ताऊन के केस को **छुपाया** और अपने नक़्शों में पागल कुत्तों के काटने से मरना दर्ज किया परन्तु पैसा अख़बार ने सरकार का यह झूठ पकड़ लिया। अतः जब पैसा अख़बार की नौबत यहां तक पहुँच गई है कि वह बेधड़क सरकार के जाँच-पड़ताल किये हुए मामलों के विरुद्ध झूठ बोलता है तो उसका अस्तित्व कितना ख़तरनाक है। एडीटरों का यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि वे सच्चाई को दुनिया में फैलाएँ न कि झूठ को। इसलिए हम बार-बार कहते हैं कि ऐसे गन्दे और अपवित्र अख़बार दुनिया को लाभ पहुँचाने के स्थान पर हानि पहुँचाते हैं। और झूठ जो एक अत्यन्त गन्दी और अपवित्र चीज़ है उसे दुनिया में प्रचलित करते हैं। अभी हमें मालूम नहीं कि यह व्यक्ति हमारे विरोध में कहाँ तक झूठ से काम लेगा और कितना काल्पनिक तौर पर जीवित लोगों को ताऊन से मारेगा। इसी इफ़्तिरा के प्रकारों में से एक यह भी है कि वह नत्थू चौकीदार की मौत को भी ताऊन से लिखता है हालांकि एक लम्बा समय हुआ कि वह ग़रीब कुछ समय ज्वर से बीमार रहकर ख़ुदा की तक़दीर से मृत्यु पा चुका है। अतः सरकारी पुस्तक में उसकी मृत्यु और मौला चौकीदार की मृत्यु का कारण ज्वर ही लिखा है फिर क्या संभव है कि सरकार में झूठी ख़बर दी गई। हाँ इसमें सन्देह नहीं कि जैसा कि हमेशा गर्मी की तीव्रता के कारण ज्वर होता है। क़ादियान में भी ज्वर रहा है और अनुमान लगाया गया है कि एक सौ से अधिक लोगों को ज्वर हुआ होगा और स्वयं एक-दो दिन मुझे और हमारे बच्चों को भी ज्वर हुआ, मदरसे के कुछ लोगों को भी ज्वर हुआ और सामान्य तौर पर गांव में बहुत से लोगों को ज्वर हुआ। इस बुख़ार की अधिकता के सिलसिले में कुछ लोग ज्वर से मर भी गए जिन में से कुछ लोग कुछ माह के

बीमार थे और कुछ तीव्र ज्वर से मर गए तथा जहां तक हमें ज्ञान है ऐसे आदमी दो या तीन से अधिक नहीं जो लगभग सौ आदमियों में से जो ज्वर में ग्रस्त थे, न बच सके। अब क्या इसको **ताऊन कहना चाहिए?** शर्म करनी चाहिए क्या गर्मी के मौसम में इससे पहले ज्वर नहीं हुए अपितु कुछ वर्षों में जब कि ताऊन का दुनिया में नामोनिशान न था इसी मौसम में इसी गांव क़ादियान में कुछ लोग तीव्र ज्वर से तीस-तीस के लगभग मर गए थे अब तो ख़ुदा की कृपा है मौत बहुत कम है। अतः यह मामूली रोग हैं जो इस मौसम में आते हैं और अनपढ़ लोग जिन को चिकित्सा की कला की कुछ भी ख़बर नहीं प्रत्येक बीमारी को अकारण ताऊन बना देते हैं और ऐसे एडीटर जो मूर्खों में सबसे बड़े मूर्ख हैं, वे अनपढ़ों की बातों को ऐसा स्वीकार कर लेते हैं कि जैसे एक बड़े और अनुभवी डॉक्टर ने उनको सूचना दी है। हालांकि ताऊन का रोग ऐसा है कि इसको पहचानने में बड़े-बड़े डॉक्टरों की बुद्धि भी चक्कर खा जाती है। विचित्र यह है कि कभी रोगियों के फोड़े निकलते हैं फिर भी वह ताऊन नहीं होती। इसलिए यह मानना बड़ा कठिन है। गत दिनों में प्रसिद्ध हुआ था कि देहली में ताऊन फूट पड़ी है परन्तु जांच-पड़ताल के बाद यही सिद्ध हुआ कि वे एक प्रकार के तीव्र ज्वर हैं न कि ताऊन। और स्वयं ताऊन भी दो प्रकार की होती हैं। एक संक्रामक तथा एक असंक्रामक। संक्रामक वे होती हैं जो शीघ्र से शीघ्र फैलती हैं और असाध्य होती हैं और मौतें तेज़ी से बढ़ती जाती हैं और असंक्रामक ताऊनें भयानक तौर पर नहीं फैलतीं। वे ज़हरीली फुंसियां हैं जो कभी कान में निकलती हैं और कभी हथेली में और कभी छाती पर तथा कभी नाक पर और कभी कान के पीछे और कभी होंठ पर तथा कभी किसी उंगली पर और कभी शरीर के किसी अन्य स्थान पर, ये सब ताऊनें हैं। यदि ये मनुष्यों में ज़ोर के साथ न फैलें और मृत्यु की प्रचुरता का कारण न हों तो उस समय तक यह संक्रामक ताऊन नहीं कहलातीं। अतः इस रोग की पहचान बहुत कठिन है और स्वयं बड़े-बड़े वैद्य इसमें ग़लतियां कर सकते हैं कहां यह कि मूर्ख बाज़ारी जो इस कूचे से अपरिचित और मानवता से बहुत ही कम भाग रखते हैं। इस रोग में एक ओर विशेषता है कि तीव्रता के समय में जबकि मौतों का बाज़ार गर्म होता है इसके भयावह आक्रमण होते हैं और

फिर जब मौसम के परिवर्तन से और या आन्तरिक सामान से जिनका मनुष्य को पूर्ण ज्ञान नहीं इसकी तीव्रता कम होती जाती है तो कुछ इन्सानों पर इसका ऐसा हल्का प्रभाव होता है कि इसका फोड़ा एक मामूली फोड़ा और इसका ज्वर एक मामूली ज्वर होता है और वास्तव में इस अवस्था का नाम ताऊन नहीं अपितु वह ज़हरीला रोग एक मामूली रोग की ओर स्थानांतरित हो जाता है।

अब हम नसीहत के तौर कहते हैं कि भविष्य में पैसा अख़बार ऐसे झूठ गढ़ने तथा लज्जाजनक झूठों से रुक जाए अन्यथा हम नहीं समझ सकते कि ये झूठ हमेशा उसे हज़्म हो सकें। अफसोस कि अमृतसर के कुछ अधम प्रकृति लोग भी अपने विज्ञापनों में पैसा अख़बार के **पदचिन्हों** पर चले हैं। कुछ ने यहाँ तक झूठ बोला है कि जैसे हमारी जमाअत में ही ताऊन फूट पड़ी है और मानो क़ादियान में वह ताऊन पैदा हो गई है जो जारिफ़ (झाड़ू देने वाली) ताऊन कहलाती है। इनके उत्तर में इसके अतिरिक्त हम क्या कहें कि झूठों पर ख़ुदा की लानत। वे स्मरण रखें कि ख़ुदा तआला की यही अनादि सुन्नत है कि जिस गांव या शहर में ख़ुदा की ओर से कोई रसूल आता है वह स्थान अपेक्षाकृत **दारुल अमन** (शान्ति का स्थान) हो जाता है। और उसमें वह हवास खो देने वाली तथा दीवाना करने वाली तबाही (विनाश) **नहीं आती** जिसमें लोग पतिंगों के समान मरते हैं। हाँ मृत्यु का दरवाज़ा भी बन्द नहीं होता। यही कारण है कि पवित्र **मक्का और मदीना मुनव्वरा के दारुल अमान** होने के बारे में बहुत सी हदीसें आई हैं और पवित्र क़ुर्आन ने भी इसकी पुष्टि की है परन्तु फिर भी कभी-कभी मनुष्य की सहनशीलता तक पवित्र मक्का में **हैज़ा** फूट पड़ता है और ऐसा ही मदीना मुनव्वरा में भी कई घटनाएं हो जाती हैं। परन्तु इन दोनों घटनाओं से इन दोनों हरमैन शरीफ़ैन के दारुल अमान होने में अन्तर नहीं आता। इसी प्रकार हमें इस से इन्कार नहीं कि क़ादियान में भी कभी संक्रामक रोग फैले या किसी मामूली या किसी सीमा तक ताऊन से प्राणों की क्षति हो परन्तु यह कदापि नहीं होगा कि जैसा कि क़ादियान के आस-पास तबाही हुई यहां तक कि कुछ गांव मौत के कारण खाली हो गए यही हालत क़ादियान पर भी आए। क्योंकि वह ख़ुदा जो शक्तिमान ख़ुदा है अपने पवित्र कलाम में वादा कर चुका है कि क़ादियान में तबाह करने वाली ताऊन

नहीं पड़ेगी जैसा कि उसने फ़रमाया-

لَوْ لَا الْاِکْرَامُ لَھَلَکَ الْمُقَامُ

अर्थात् यदि मुझे तुम्हारा सम्मान प्रकट करना अभीष्ट न होता तो मैं इस स्थान अर्थात् क़ादियान को ताऊन से समाप्त कर देता। अर्थात इस गांव में भी बड़े-बड़े दुष्ट, बुरे, अपवित्र प्रकृति वाले, महा झूठे और झूठ गढ़ने वाले रहते हैं और वे इस योग्य थे कि ख़ुदा का कोप सब को मार दे परन्तु मैं ऐसा करना नहीं चाहता क्योंकि मध्य में तुम्हारा अस्तित्व बतौर शफ़ीअ (अनुशंसक) के है और तुम्हारा सम्मान मुझे अभीष्ट है इसलिए मैं इस बार दण्ड से क्षमा करता हूँ कि भयानक तबाही और मौत इन लोगों पर डाल दूँ तथापि पूर्णतया दण्ड के बिना नहीं छोड़ूंगा और किसी सीमा तक वे भी ताऊन के अज़ाब में से भाग लेंगे ताकि शरारत करने वालों की आंखें खुलें। इसके अतिरिक्त यदि क़ादियान में ऐसी ताऊन आए जैसा कि आस-पास के इलाक़े में कुछ स्थानों पर ऐसी हालतें पैदा हुईं कि देहात में सैकड़ों लोग मरे और कई देहात तबाह हो गए तथा बहुत से घर ऐसे हो गए कि उनमें दूध पीते बच्चों के अतिरिक्त कोई भी न रहा तो इस स्थिति में स्पष्ट है कि यह जमाअत जो क़ादियान में बैठी है वह सब इन के इमाम सहित तबाह होंगे और सब ताऊन से मरेंगे और यह ख़ुदा को स्वीकार नहीं, क्योंकि यह उसकी क़ौम है जो उसने तैयार की है तथा यह जो भेजा गया है यह उसके हाथ का लगाया हुआ पौधा है। तो कैसे वह अपने बाग़ को स्वयं काट दे जो उसने अपने हाथ से लगाया है। अतः इसलिए और इसी उद्देश्य से पूरे गांव को हल्के अज़ाब की सुविधा दी गई है यह ऐसा ही उदाहरण है कि जैसे एक जहाज़ में ख़ुदा का चुना हुआ सवार हो ताकि वह किसी देश में जाकर प्रचार करे और इस हालत में समुद्र में तूफान आए तो ख़ुदा की सुन्नत के अनुसार यह आवश्यक बात है कि उस जहाज़ में ऐसे बहुत से लोग सवार हों कि जो डुबाने के योग्य हों परन्तु वह उस व्यक्ति के लिए नहीं डुबोए जाएंगे, क्योंकि उनके डुबाने से उस चुने हुए को भी अघात पहुंचता है और यह ख़ुदा को भी स्वीकार नहीं। स्मरण रहे कि सामान्य सीमा तक मौतें एक सुरक्षित जहाज़ में भी हो जाती हैं परन्तु वह जहाज़ के यात्रियों की अशान्ति को इस सीमा तक नहीं बढ़ाती कि वे बद् हवास

हो कर जहाज़ पर से कूद पड़ें और सब एक जीभ से हाय-वाय के नारे निकालें। परन्तु ये भयानक मौतें जो जहाज़ किसी ठोकर से सहसा टुकड़े-टुकड़े हो जाए और उसमें बैठने वाले अकस्मात पानी में बह जाएं और समुद्र की लहरें उन को ढक लें यह बड़ी दुर्घटना है और ऐसी घातक दुर्घटना कभी इस हालत में नहीं होती जबकि ऐसे जहाज़ में ख़ुदा का कोई नबी, रसूल और चुना हुआ बैठा हो अपितु उसके कारण तथा उसकी सिफ़ारिश से दूसरे लोग भी किनारे पर सुरक्षित पहुँचाए जाते हैं ताकि ख़दा का एक कामिल बन्दा जो ख़ुदा के प्रताप के लिए यात्रा कर रहा है इस परेशानी और तबाही में सम्मिलित न हो और ताकि वह कार्य निलंबित न रह जाए जिस कार्य के लिए उसने यात्रा की है। ख़ुदा की इसी सुन्नत के अनुसार क़ादियान के लिए -

اِنَّہٗ اٰوَی الْقَرْیَۃَ

का इल्हाम जारी हुआ ताकि ख़ुदा के कार्यों में हानि न हो अन्यथा क़ादियान सबसे पहले नष्ट कर देने योग्य था। क्योंकि ये लोग निकट होकर फिर दूर हैं और बहुत से लोगों का ख़ुदा पर ईमान नहीं और न चाहते हैं कि अपना गन्दा चोला उतार कर सच को स्वीकार करें। अतः यह ख़ुदा की सुन्नत है कि जिस गांव या शहर में ख़ुदा का कोई भेजा हुआ उतरे तो वह गांव या शहर न तो ताऊन से तबाह और नष्ट होता है तथा न किसी अन्य संक्रामक रोग से और न किसी ज्वालामुखी पर्वत से तबाह किया जाता है। हाँ साधारण मौतें चाहे ताऊन से हों, चाहे हैज़े से, चाहे किसी अन्य कारण से। वे सब इन्सानी सहनशीलता की सीमा तक उसमें हो सकती हैं। क्योंकि वे इस मामूर की कार्यवाई को हानिप्रद नहीं हैं। अतः जिस इल्हाम को हम ने क़ादियान के बारे में प्रकाशित किया है उस का यही मतलब है इससे अधिक नहीं।

कुछ लोग यह ऐतराज़ प्रस्तुत करते हैं कि मसीह मौऊद के समय में अमन और आराम का युग होना चाहिए था न कि देश में ताऊन फैले और दुर्भिक्ष पड़े और विभिन्न प्रकार के सामानों से मृत्यु की प्रचुरता हो। इन मिथ्या भ्रमों का उत्तर यह है कि मनुष्य का अधिकार नहीं है कि अपनी ओर से आदेश जारी करे कि यों होना चाहिए था तथा इस प्रकार होना चाहिए था। ख़ुदा तआला की किताबों

में बड़ी स्पष्टतापूर्वक यह वर्णन किया गया है कि मसीह मौऊद के युग में ताऊन अवश्य पड़ेगी और इस संक्रामक **रोग** का इंजील में भी वर्णन है तथा पवित्र क़ुर्आन में भी अल्लाह तआला फ़रमाता है -

وَإِنْ مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا

(बनी इस्राईल-59)

अर्थात् कोई बस्ती ऐसी नहीं होगी जिसको हम क़यामत से कुछ समय पहले अर्थात् अन्तिम युग में जो मसीह मौऊद का युग है, तबाह न कर दें या अज़ाब में ग्रस्त न करें।

स्मरण रहे कि अहले सुन्नत की सही मुस्लिम और दूसरी पुस्तकों और शिया की पुस्तक 'इक्मालुद्दीन' में स्पष्ट तौर पर लिखा है कि मसीह मौऊद के समय में ताऊन पड़ेगी, अपितु इक्मालुद्दीन शियों की बहुत विश्वसनीय पुस्तक है उसके पृष्ठ 348 में प्रथम चार हदीसों में सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण के बारे में लाया है और इमाम बाक़िर से रिवायत करता है कि महदी की निशानियों में से यह है कि पूर्व इसके कि वह स्थापित हो अर्थात् सामान्य तौर पर स्वीकार किया जाए रमज़ान में सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण होगा।★

और फिर इसके बाद लिखा है कि यह भी उसके प्रदुर्भाव की एक निशानी है कि पूर्व इसके कि वह स्थापित हो अर्थात् व्यापक तौर पर स्वीकार किए जाए

★हाशिया :- हज़रत मसीह जुमअः के दिन अस्र (तीसरे पहर) के समय सलीब पर चढ़ाए गए थे। जब वह कुछ घंटे कीलों का कष्ट उठाकर बेहोश हो गए और समझा गया कि मर गए तो सहसा प्रचंड आंधी आई और उस से सूर्य और चन्द्रमा दोनों का प्रकाश जाता रहा और अंधकार हो गया। वह 10 मुहर्रम था, उस दिन यहूदियों का रोज़ा था और दूसरे दिन उनकी ईद फ़सह थी। उन बुज़ुर्गों ने ठीक रोज़े की हालत में अपनी समझ में यह पुण्य का कार्य किया। मतलब यह था कि हज़रत मसीह को किसी प्रकार लानती सिद्ध करें। ऐसा ही मसीह मौऊद पर जब कुफ्र और क़त्ल का फ़त्वा लगाया गया तो इसके बाद रमज़ान में सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण हुआ ताकि दोनों घटनाओं में समानता हो, क्योंकि जिस प्रकार ईसा मसीह रूपक के रंग में मुर्दों में से जी उठा उसी प्रकार इस मसीह को काफ़िर ठहराने की दो सौ मुहरों से अपनी समझ में मार दिया गया था परन्तु फिर वह **जी उठा** और खड़ा हो गया इसलिए इमाम **क़ायम कहलाया**। इसी से।

दुनिया में भयंकर ताऊन पड़ेगी यहां तक कि एक घर में जो सात आदमी होंगे उनमें से केवल दो रह जाएंगे और पांच मर जाएंगे। तो उसकी इस इबारत से प्रकट है कि ये दोनों निशान उस समय प्रकटन में आएंगे जबकि उसको दुनिया में **झुठलाया** जाएगा। क्योंकि मसीह के भी ये दोनों निशान थे जबकि ईसा अलैहिस्सलाम को झुठलाकर उनके लिए सलीब तैयार की गई थी तब सूर्य और चन्द्रमा दोनों अंधकारमय हो गए थे और ताऊन भी पड़ी थी। अतः इस पुस्तक में लिखा है कि रमज़ान में सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण का होना और देश में ताऊन का फैलना **महदी मौऊद** का एक **चमत्कार** होगा। तो निसन्देह यह बात निरन्तरता की श्रेणी तक पहुंच चुकी है कि मसीह मौऊद के निशानों में से एक यह भी है कि उसके समय में उसके ध्यान और दुआ से देश में ताऊन फैलेगी, **आकाश** उसके लिए चन्द्रमा और सूर्य को **रमज़ान** में अंधकारमय करेगा और पृथ्वी उसके लिए ताऊन का अंधकार और संकट फैलाएगी क्योंकि वह प्रारम्भ में स्वीकार नहीं किया जाएगा। अतः इसके लिए **डराने वाले निशान** प्रकट होंगे और उसके नफ़्स से अर्थात् ध्यान और दुआ और **समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने** से काफ़िर मरेंगे।★और वह मरना दो प्रकार का होगा

(1)- एक तो **आध्यात्मिक** तौर पर कि उसके समय में इस्लाम के अतिरिक्त समस्त धर्म मुर्दा हो जाएंगे।

(2)- दूसरे **भौतिक** तौर पर, चूँकि वह सताया जाएगा और दुःख दिया जाएगा इसलिए ख़ुदा का प्रकोप सृष्टि पर भड़केगा तब वह ऐसी मौतों का सिलसिला जारी कर देगा कि क़यामत का नमूना हो जाएंगी। तब अन्त में लोग सोचेंगे कि हम पर ये आपदाएं क्यों पड़ गईं और सदाचारियों का मार्ग दिखाया जाएगा। अतः सामान्यतः मौतों का होना मसीह मौऊद की विशिष्ट निशानियों में

★**हाशिया :-** यह विचित्र समानता है कि हज़रत ईसा के समय में भी प्रचंड आंधी के कारण सूर्य एवं चन्द्रमा का प्रकाश रोज़े के दिन में सहसा जाता रहा था और फिर पृथ्वी पर ताऊन भी पड़ी। ये दोनों बातें अब भी प्रकट हो गईं, अर्थात् रमज़ान के महीने में सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण द्वारा अंधकार भी हो गया जैसा कि यहूदियों के रोज़े के दिन अंधकार हो गया था और फिर ताऊन से भी दुनिया तबाह हो गई। इसी से।

से है और समस्त अंबिया अलैहिमुस्सलाम गवाही देते आए हैं।

और यदि कहो कि तुम ही मसीह मौऊद हो और तुम्हारे लिए ही यह ताऊन बतौर निशान प्रकट की गई है तो चाहिए था कि इससे पूर्व कि देश में ताऊन फैलती ख़ुदा तआला पहले ही तुम्हें सूचना दे देता कि ताऊन आएगी?

इसका उत्तर यह है कि वास्तव में ख़ुदा ने ताऊन की पहले से ही मुझे ख़बर दी है और यह ऐसी निश्चित ख़बर है कि जिस से किसी को मुसलमानों, ईसाइयों और हिन्दुओं में से इन्कार नहीं हो सकता। अपितु उसने न एक बार बल्कि कई बार ख़बर दी है और उसका विवरण यह है:-

(1)- प्रथम प्रतापी ख़ुदा ने आज से तेईस वर्ष पहले सामान्य मौत के निशान की मुझे बराहीन-ए-अहमदिया में ख़बर दी जैसा कि बराहीन-ए-अहमदिया के पृष्ठ 518 में ख़ुदा तआला का यह इल्हाम बतौर भविष्यवाणी है-

وقالوا انّٰی لك هٰذا ان هٰذا الا سحر يؤثر۔ لن نؤمن لك حتّٰى نرى الله جهرة۔ لا يصدق السفيه الاسيفة الهلاك۔ عدولى و عدولك۔ قل اَتٰى امر الله فلا تستعجلوه۔ اذاجاء نصر الله الست بربكم قالوا بلٰى

अनुवाद :- और कहेंगे कि यह पद तुझे कैसे मिल सकता है। यह तो एक धोखा है जो ग्रहण किया जाता है। हम तुझ पर कदापि ईमान नहीं लाएंगे जब तक ख़ुदा को प्रत्यक्ष रूप से न देख लें। मूर्ख आदमी मृत्यु के निशान के अतिरिक्त किसी निशान को स्वीकार न करेंगे क्योंकि वे मेरे दुश्मन और तुम्हारे भी दुश्मन हैं। इन्हें कह कि मृत्यु का निशान भी आने वाला है। अर्थात् ताऊन परन्तु कुछ देर से इसलिए तुम जल्दी मत करो। फिर इसके साथ ही पृष्ठ 519 में यह इल्हाम दर्ज है -

امراض الناس وبركاته

अर्थात् लोगों में रोग फैलेगा और उसके साथ ही ख़ुदा की बरकतें उतरेंगी और वह इस प्रकार से कि वह कुछ को निशान के तौर पर उस बला से सुरक्षित रखेगा और दूसरे यह कि ये रोग जो आयेंगे ये धार्मिक बरकतों का कारण हो जाएंगे और बहुत से लोग उन भयानक दिनों में धार्मिक बरकतों से हिस्सा लेंगे और सच्चे सिलसिले में सम्मिलित हो जाएंगे। अतः ऐसा ही हुआ और ताऊन

(प्लेग) का भयानक दृष्य देखकर बड़े-बड़े धार्मिक पक्षपाती लोग इस सिलसिले में सम्मिलित हो गए हैं तथा इस समय तक ताऊन (प्लेग) द्वारा दो हज़ार से भी अधिक विरोधी हमारे सिलसिले में सम्मिलित हो चुका है। तो यही वे बरकतें हैं जिन से भविष्यवाणी के अनुसार ताऊन (प्लेग) द्वारा लोगों ने हिस्सा लिया है।

और फिर पृष्ठ 557 में प्रतापी **ख़ुदा का यह इल्हाम है जो एक सामान्य अज़ाब के उतरने के बारे में है और वह यह है- मैं अपनी चमकार दिखाऊंगा। अपनी क़ुदरत के प्रदर्शन से तुझ को उठाऊंगा। दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने उसे स्वीकार न किया परन्तु ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।**

(देखो पृष्ट- 557 बराहीन अहमदिया)

इस पवित्र वह्यी में ख़ुदा तआला ने मेरा नाम 'नज़ीर' रखा जो क़ुर्आन की पारिभाषिक शब्दावली में उसे कहते हैं जिसके साथ अज़ाब भी आए। और फ़रमाया कि अपनी चमकार दिखाऊंगा अर्थात् विशेष प्रकोपी झलक प्रकट करूंगा। ख़ुदा की किताबों में चमकार दिखाने से अभिप्राय हमेशा अज़ाब हुआ करता है। और फिर फ़रमाया कि अपनी क़ुदरत के प्रदर्शन से तुझको उठाऊंगा। इस वाक्य के अर्थ के बारे में स्पष्ट हो कि यों तो ख़ुदा तआला की क़ुदरतें हमेशा प्रकट होती रहती हैं। कौन सा समय है कि कोई क़ुदरत प्रकट नहीं होती। परन्तु यहां क़ुदरत नुमाई (शक्ति प्रदर्शन) से अभिप्राय वे क़ुदरतें हैं जो विलक्षण हैं। अर्थात् सामान्य तौर पर उनका घटित होना नहीं। विशेष-विशेष समयों में उनका प्रकटन निशान के तौर पर होता है। इससे भी यही संकेत निकलता है कि वह एक प्रकोपी क़ुदरत होगी। और यह जो फ़रमाया कि तुझको उठाऊंगा इस से अभिप्राय यह नहीं कि जीवित पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठा लूंगा अपितु पहले लोगों की ग़लतियां हैं कि कुछ इन्सानों के बारे में ऐसे शब्दों से यह अर्थ निकालते रहे। ख़ुदा उनकी ग़लतियां क्षमा करे अपितु अभिप्राय यह है कि तेरे विरुद्ध बहुत शोर होगा और चाहेंगे कि तेरा स्थान पाताल में हो परन्तु मैं अन्त में सिद्ध कर दूंगा कि तेरा स्थान बुलन्द है और तू आकाशीय लोगों में से है न कि ज़मीनी कीड़ों में से और फिर फ़रमाया कि दुनिया ने उसे स्वीकार न किया अर्थात् अस्वीकार

कर दिया और उसका नाम काफ़िर तथा दज्जाल रखा और जो चाहा उसके बारे में कहा परन्तु मैं उनके विरुद्ध हो जाऊंगा। वे तेरा अपमान तलाश करेंगे और मैं सम्मान दूंगा और वे तुझे गुमनाम करना चाहेंगे और मैं पृथ्वी के किनारों तक तेरी प्रसिद्धि फैला दूंगा और वे तुझे अनपढ़ कहेंगे और मैं तेरा ज्ञान सिद्ध कर दूंगा और वे तुझ पर लानत करेंगे और मैं तुझ पर बरकतें उतारूंगा और वे तुझ पर आजीविका के द्वार तंग करना चाहेंगे और मैं तुझ पर समस्त नेमतों के दरवाज़े खोल दूंगा। फिर फ़रमाया कि बड़े शक्तिशाली आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट करूँगा। तो ख़ुदा के शक्तिशाली आक्रमणों में से यह ताऊन (प्लेग) है जो देश में फैल गई और न मालूम कि कब तक इसका दौर है। अत: बराहीन अहमदिया में आज से तेईस वर्ष पूर्व इस अज़ाब की ख़बर दी गई है अपितु बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 510 में यह भी ख़ुदा की वह्यी है-

وَلَا تُخَاطِبْنِی فِی الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا اِنَّھُمْ مُغْرَقُوْنَ

अर्थात् जब अज़ाब का समय आए तो अत्याचारियों की मेरे पास शफ़ाअत (अनुशंसा) न कर कि मैं उनको डुबोऊंगा। इस इल्हाम का दूसरा भाग यह है -

وَاصْنَعِ الْفُلْکَ بِاَعْیُنِنَا وَوَحْیِنَا

अर्थात् हमारे आदेश और हमारी आंखों के सामने नौका तैयार कर। नौका से अभिप्राय बैअत का सिलसिला है जो ख़ुदा की विशेष वह्यी और ख़ुदा के आदेश से स्थापित किया गया। और फिर बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 506 में ख़ुदा तआला की ओर से यह वह्यी है-

لَمْ یَکُنِ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا مِنْ اَھْلِ الْکِتٰبِ وَالْمُشْرِکِیْنَ مُنفکِّیْنَ حَتّٰی تَاتِیَھُمُ الْبَیِّنَۃ وَکَانَ کَیْدُھُمْ عَظِیْمًا

यदि ख़ुदा ऐसा न करता तो दुनिया में अंधेर पड़ जाता ख़ुदा की इस वह्यी से भी सिद्ध है कि दुनिया को शिर्क, कुफ्र और सृष्टि उपासना की आदत पड़ गई थी और वह किसी आकाशीय डांट-डपट की मोहताज थी और इसी वह्यी के साथ पृष्ठ-507 में ख़ुदा का यह कलाम है:-

تَلَطَّفْ بِالنَّاسِ وَتَرَحم عَلَیْھِمْ اَنْتَ فیھمْ بِمَنْزِلَۃِ مُوْسٰی وَاصْبِرْ عَلٰی

مَا يَقُوْلُوْنَ۔

अर्थात् लोगों के साथ हमदर्दी और नर्मी कर तथा उन पर दया कर। तू उनमें मूसा के स्थान पर है और उनकी बातों पर धैर्य कर। अतः यद्यपि मूसा संयम, शालीनता, और शिष्टाचार के निर्माण में इस्राईल के समस्त नबियों में प्रथम श्रेणी पर थे और तौरात स्वयं उनके उच्च कोटि के शिष्टाचार की प्रशंसा करती है और उनको इस्राईली नबियों में से अनुपम ठहराती है परन्तु उनकी शालीनता की विशेषता का परिणाम यह हुआ कि जब इस्राईल की क़ौम के उपद्रवी किसी प्रकार सही नहीं हुए तो ख़ुदा ने अन्ततः अपने बन्दे मूसा के जीवन में ही उनको ताऊन से मारा। जैसा कि तौरात में यह क़िस्सा मौजूद है। अतः इसी की ओर यह संकेत है कि तू मूसा के समान धैर्य कर और अन्त में हमारी ओर से **चेतावनी उतरेगी।**

और फिर बराहीन-ए-अहमदिया में यह इल्हाम है-

اَلَمْ نَجْعَلْ لَّكَ سُهُوْلَةً فِيْ كُلِّ اَمْرٍ ★ بَيْتَ الْفِكْرِ وَبَيْتَ الذِّكْرِ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا

अर्थात् हमने तेरे लिए बैतुलफ़िक्र और बैतुज़्ज़िक्र बनाया है और जो उनमें दाख़िल होगा अमन में आ जाएगा। चूंकि अल्लाह तआला जानता था कि देश में सामान्य ताऊन (प्लेग) पड़ेगी और किसी कम मात्रा की सीमा तक क़ादियान भी इससे सुरक्षित नहीं रहेगा। इसलिए उसने आज के दिनों से तेईस वर्ष पूर्व कह दिया कि जो व्यक्ति इस मस्जिद और इस घर में दाख़िल होगा अर्थात् श्रद्धा और निष्ठापूर्वक, वह ताऊन से बचाया जाएगा। इसी के अनुसार इन दिनों में ख़ुदा तआला ने मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया-

---

★**हाशिया :-** वास्तव में हमारे इस युग में दुनिया के प्रत्येक पहलू में सुविधा का एक नया रंग प्रकट कर दिया है। और प्रत्येक कार्य के लिए मशीनें तैयार हो गई हैं। जितनी शीघ्रता से हम पुस्तकें छाप सकते हैं और फिर हम उनको दूर-दूर स्थानों तक प्रकाशित कर सकते हैं और प्रकाशित पुस्तकों को देख सकते हैं और हज़ारों धार्मिक उद्देश्यों में नवीन कारिगरियों से लाभ उठा सकते हैं और सम्पूर्ण संसार का भ्रमण कर सकते हैं। यह पूर्ण **सुविधा** पहले किसी नबी या रसूल को कदापि नहीं हुई। परन्तु हमारे **नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम** इस से बाहर हैं। क्योंकि जो कुछ **मुझे दिया गया** वह उन्हीं का है। इसी से।

انی احافظ کل من فی الدار الّا الذین علوا من اسکتبار۔ وَ احافظک خاصۃ۔سلام قولاً من ربٍّ رَّحِیْم۔

अर्थात् मैं प्रत्येक ऐसे मनुष्य को ताऊन की मृत्यु से बचाऊंगा जो तेरे घर में होगा, सिवाए उन लोगों के जो अहंकार से स्वयं को ऊंचा करें। और मैं तुझे विशेष तौर पर बचाऊंगा। दयालु ख़ुदा की ओर से तुझे सलाम।

जानना चाहिए कि ख़ुदा की वह्यी ने इस इरादे को जो क़ादियान के बारे में है दो भागों में विभाजित कर दिया है-

(1)- एक वह इरादा जो सामान्य तौर पर गांव के बारे में और वह इरादा यह है कि यह गांव इस ताऊन की तीव्रता से जो अफ़रा तफ़री और तबाही डालने वाली तथा वीरान करने वाली और सम्पूर्ण गांव को **अस्त व्यस्त** करने वाली हो, सुरक्षित रहेगा।

(2)- दूसरे यह इरादा कि कृपालु ख़ुदा विशेष तौर पर इस घर की सुरक्षा करेगा और उस समस्त अज़ाब से बचाएगा जो गांव के दूसरे लोगों को पहुंचेगा। और अल्लाह की इस वह्यी का अन्तिम वाक्य उन लोगों के लिए डराने वाला है जिनके दिलों में अनुचित अभिमान है।

इसलिए मैं अपनी **जमाअत** को नसीहत करता हूँ कि अहंकार से बचो क्योंकि अहंकार हमारे ख़ुदा तआला की आंखों में अत्यन्त घृणित है। परन्तु तुम शायद नहीं समझोगे कि अहंकार क्या चीज़ है। इसलिए मुझ से समझ लो कि मैं ख़ुदा की रूह से बोलता हूँ।

प्रत्येक व्यक्ति जो अपने भाई को इसलिए तिरस्कृत जानता है कि वह उससे **अधिक ज्ञानी** या अधिक बुद्धिमान या अधिक कलाकार है। **वह अहंकारी** है, क्योंकि वह ख़ुदा को बुद्धि एवं ज्ञान का उद्गम नहीं समझता और स्वयं को कुछ चीज़ ठहराता है। क्या ख़ुदा सामर्थ्यवान नहीं कि उसे दीवाना कर दे और उसके उस भाई को जिसको वह झूठा समझता है उससे उत्तम बुद्धि, ज्ञान और कला दे दे। ऐसा ही वह व्यक्ति अपने किसी माल या धन तथा नौकरों की कल्पना करके अपने भाई को तिरस्कृत समझता है **वह भी अहंकारी** है क्योंकि वह इस बात को भूल गया है कि यह दौलत और नौकर ख़ुदा ने ही उसको दिए थे। और

वह अंधा है तथा नहीं जानता कि वह ख़ुदा सामर्थ्यवान है कि उस पर एक ऐसा कालचक्र चले कि वह एक क्षण में निकृष्टता में जा पड़े और उसके उस भाई को जिसको वह तुच्छ समझता है उससे उत्तम माल और दौलत प्रदान कर दे। ऐसा ही वह व्यक्ति जो अपने शारीरिक स्वास्थ्य पर घमंड करता है या अपनी सुन्दर एवं सौन्दर्य और शक्ति तथा ताक़त पर गौरावान्वित है और अपने भाई का हंसी ठटठे एवं उपहासपूर्वक **तिरस्कारपूर्ण नाम** रखता है और उसके शारीरिक दोष लोगों को सुनाता है **वह भी अहंकारी है** और वह उस ख़ुदा से अनभिज्ञ है कि एक क्षण में उस पर ऐसे शारीरिक दोष उतारे कि उस भाई से उसको अधिक बुरा कर दे और वह जिसका तिरस्कार किया गया है एक लम्बे समय तक उसकी शक्तियों में बरकत दे कि वे कम न हों और न खण्डित हों क्योंकि वह जो चाहता है करता है। ऐसा ही वह व्यक्ति भी जो अपनी शक्तियों पर भरोसा करके दुआ मांगने में सुस्त है वह भी **अहंकारी** है क्योंकि शक्तियों और क़ुदरतों के उद्‌गम को उसने नहीं पहचाना और स्वयं को कुछ चीज़ समझता है। अत: तुम हे प्रियजनो इन समस्त बातों को स्मरण रखो ऐसा न हो कि तुम किसी पहलू से ख़ुदा तआला की दृष्टि में अहंकारी ठहर जाओ और तुम्हें ख़बर न हो। एक व्यक्ति जो अपने भाई के एक ग़लत शब्द को अहंकार के साथ सही करता है उसने भी अहंकार से भाग लिया है। एक व्यक्ति जो अपने भाई की बात को सम्मान से सुनना नहीं चाहता और मुंह फेर लेता है उसने भी **अहंकार से भाग लिया** है। एक ग़रीब भाई जो उसके पास बैठा है और वह घृणा करता है उसने भी अहंकार से भाग लिया है। एक व्यक्ति जो दुआ करने वाले को हंसी-ठटठे से देखता है उसने भी अहंकार से एक भाग लिया है। और वह जो ख़ुदा के **मामूर** और **मुर्सल** (अर्थात् नबी, रसूल) का पूर्ण रूप से आज्ञा पालन करना नहीं चाहता उसने भी अहंकार से एक भाग लिया है और वह जो ख़ुदा के मामूर और मुर्सल (अर्थात् नबी, रसूल) की बातों को **ध्यानपूर्वक नहीं सुनता** और उसके लेखों को ध्यान से नहीं पढ़ता उसने भी अहंकार से एक भाग लिया है। इसलिए कोशिश करो कि अहंकार का कोई भाग तुम में न हो ताकि तबाह न हो जाओ और ताकि तुम अपने परिवार सहित मुक्ति पाओ ख़ुदा की ओर झुको और इन्सान जितना दुनिया में किसी से

प्रेम करता है तुम उस से करो और जितना दुनिया में इन्सान किसी से डर सकता है तुम अपने ख़ुदा से डरो। पवित्र हृदय हो जाओ और पवित्र इरादा, दरिद्र तथा बुराई रहित हो जाओ ताकि तुम **पर दया** हो।

अब हम पुनः अपने पहले वर्णन की ओर लौटते हुए लिखते हैं कि ताऊन (प्लेग) के बारे में भविष्यवाणी केवल बराहीन-ए-अहमदिया में ही नहीं अपितु बराहीन के युग से जिसको बीस वर्ष से अधिक समय गुज़र गया इस युग तक जितनी पुस्तकें लिखीं हैं या विज्ञापन प्रकाशित हुए हैं अधिकांश में यह भविष्यवाणी मौजूद है। अतः आज से आठ वर्ष पहले यही भविष्यवाणी पुस्तक 'नूरुलहक़' में जो अरबी पुस्तक है उसके पृष्ठ 35, 36, 37, 38 में की गई है और फिर आज से पांच वर्ष पूर्व यही भविष्यवाणी पुस्तक सिराजे मुनीर के पृष्ठ 59, 60 में की गई और फिर आज से चार वर्ष छः महीने पहले ताऊन का विज्ञापन 6 फरवरी 1898 ई. में यह भविष्यवाणी की गई जिसके शब्द ये थे कि मैंने स्वप्न देखा कि ख़ुदा तआला के फ़रिश्ते **मुल्क पंजाब** के विभिन्न स्थानों में काले रंग के पौधे लगा रहे हैं और वे वृक्ष अत्यंत कुरूप, काले, **भयानक** और छोटे क़द के हैं। कुछ वृक्ष लगाने वालों से मैंने पूछा कि ये **कैसे वृक्ष हैं** तो उन्होंने उत्तर दिया कि ये ताऊन के वृक्ष हैं जो **शीघ्र ही देश में** फैलने वाली है। **देखो ताऊन का विज्ञापन** 6 फरवरी 1898 ई.। और ये पुस्तकें और ये विज्ञापन लाखों लोगों में प्रसिद्ध हो चुके हैं और स्पष्ट है कि इतनी महान भविष्यवाणी कि ताऊन के अस्तित्व से एक लम्बे समय **पूर्व** की गई। यह मनुष्य का काम नहीं। इससे यह सिद्ध है कि यह ताऊन केवल इसलिए पंजाब में सब देशों से अधिक आक्रमणकारी है कि इसी (पंजाब) ने सब से अधिक **ख़ुदा की बातों पर आक्रमण किया** और इसी ने ख़ुदा के मामूर और मुर्सल के मुक़ाबले पर बटमार का तरीक़ा अपनाया। न स्वयं सच्चे सिलसिले में दाख़िल हुए न हिन्दुस्तान के लोगों को दाख़िल होने दिया। तो चूंकि ख़ुदा तआला की दृष्टि में प्रथम श्रेणी का विरोधी यही देश था इसलिए प्रथम श्रेणी की ताऊन से इसी देश ने भाग लिया और इसी देश के लिए वह दुआ थी जो ताऊन के लिए आज से एक लम्बी अवधि पूर्व मैंने मांगी थी जो स्वीकार की गई जिसके सैंकड़ों पर्चे देश में प्रकाशित किए गए थे। परन्तु अफ़सोस कि इस

देश के लोगों ने बड़ी निर्दयता व्यक्त की। ख़ुदा के खुले-खुले निशान देखे और इन्कार किया। वे निशान जो देश में प्रकट हुए जिनके हज़ारों अपितु लाखों लोग गवाह हैं। जिनमें से कुछ उदाहरण स्वरूप इसी पुस्तक में लिखे जाएंगे। वे डेढ़ सौ से भी कुछ अधिक हैं। परन्तु इस **देश के लोग** अभी तक कहे जाते हैं कि कोई निशान प्रकट नहीं हुआ। तो अब बताओ कि क्या अब भी देश में ताऊन प्रकट न हो। **निशानों को देखना और फिर झुठलाना** क्या इससे अधिक कोई और **शरारत** होगी? क्या सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण रमज़ान में नहीं हुआ? क्या शिया और सुन्नी दोनों फ़िर्क़ों की पुस्तकों में **ये हदीसें मौजूद नहीं!** क्या मेरे अतिरिक्त किसी **अन्य मुद्दई के समय हुआ**? तथा कौन है जिसने कहा **कि यह मेरे लिए हुआ**? और यह कहना कि यह हदीस सही नहीं यह दूसरा अन्याय है। हे मूर्खो! जबकि यह हदीस सुन्नियों और शियों दोनों फ़िर्क़ों की पुस्तकों में मौजूद है फिर इसके अतिरिक्त ख़ुदा ने हदीस के विषय को घटित करके उसका सही होना सिद्ध कर दिया तो यह हदीस तो अन्य समस्त हदीसों की अपेक्षा प्रथम श्रेणी की सुदृढ़ होगी। क्योंकि न केवल यह कि दो फ़िर्क़े इसके रक्षक बने चले आए हैं अपितु ख़ुदा ने इस हदीस की भविष्यवाणी को पूरा करके उसकी सच्चाई पर मुहर लगा दी और इसके अतिरिक्त यह कि पहली पुस्तकों में भी मसीह मौऊद की निशानी सूर्य और चन्द्र ग्रहण लिखी है। और यह हदीस दार-ए-क़ुत्नी पुस्तक तथा इक्मालुद्दीन में है जिस पर इन्होंने कोई जिरह नहीं की। और यह बात कि सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण को महदी मौऊद का निशाना क्यों ठहराया गया। यह इस बात की ओर संकेत है कि पृथ्वी पर जो उसका इन्कार हो रहा है यह **ख़ुदा के कोप** का कारण है। फिर इसके बाद पृथ्वी पर वह कोप ताऊन के द्वारा प्रकट हो गया। अत: अल्लाह तआला ने चाहा कि लोगों को चेतावनी और स्मरण कराने के लिए **यह उदाहरण आकाश पर स्थापित करे और उदाहरण के लिए सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण दोनों को ग्रहण** किया गया है क्योंकि सूर्य की हुकूमत दिन पर है और चन्द्रमा की हुकूमत रात पर। **इसी प्रकार यह इमाम मौऊद दोनों हुकूमतों का मालिक किया गया है।** अर्थात् इस्लाम धर्म जो बतौर दिन के है और दूसरे धर्म जो बतौर रात के हैं। **इन सब पर हुकूमत करने के लिए यह**

मौऊद आया है। तो ऐसे समय में कि उनके दिन की हुकूमत में भी रोकें और पर्दे हैं और रात की हुकूमत में भी रोकें हैं। अल्लाह तआला की दूरदर्शिता ने चाहा कि आकाश पर सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण का डराने वाला **उदाहरण प्रस्तुत करे**। और इस निशान में प्रकट किया गया है कि जैसा कि सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण कुछ थोड़े समय के पश्चात् उठ जाता और दूर हो जाता है और ये दोनों अपनी-अपनी हुकूमत पर स्थापित हो जाते हैं। ऐसा ही यहां भी होगा। **सुन्नी और शिया दोनों गिरोह इस सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण के तेरह सौ वर्ष से प्रतीक्षक थे परन्तु जब वह प्रकट हुआ तो उसको झुठलाया। क्या यहूदियत के कुछ और भी अर्थ हैं। फिर देखो कि क़ुर्आन और हदीस दोनों बता रहे हैं कि मसीह के युग में ऊंट बेकार हो जाएंगे।** अर्थात् उनके स्थानापन्न कोई अन्य सवारी पैदा हो जाएगी। यह हदीस मुस्लिम में मौजूद है। उसके शब्द ये है:-

وَ يُتْرَ كَنَّ الْقِلَاصُ فَلَا يُسْعٰى عَلَيْهَا

और क़ुर्आन के शब्द ये है:-

وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ (अत्तक्वीर-5)

शियों की पुस्तकों में भी यह हदीस मौजूद है परन्तु क्या किसी ने इस निशान की कुछ भी परवाह की। **अभी शीघ्र ही इस भविष्यवाणी का चित्ताकर्षक दृश्य मक्का और मदीना के मध्य प्रकट होने वाला है जबकि ऊंटों की एक लम्बी पंक्ति के स्थान पर रेल गाड़ियां दिखाई देंगी** और तेरह वर्ष की सवारियों में इन्किलाब होकर एक नई सवारी पैदा हो जाएगी। उस समय उन यात्रियों के सिर पर जब यह आयत

وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ

और यह हदीस

وَ يُتْرَ كَنَّ الْقِلَاصُ فَلَا يُسْعٰى عَلَيْهَا

पढ़ी जाएगी तो कैसे प्रफुल्लतापूर्वक उनको मानना पड़ेगा कि वास्तव में आज के दिन के लिए एक निशान था और एक महान भविष्यवाणी थी जो हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक होंठों से निकली और आज पूरी

हुई। परन्तु अफ़सोस हे झुठलाने वालो! तुम कब रुकोगे वह दिन कब आएगा जब तुम्हारी भी आंखें खुलेंगी। **ख़ुदा के निशान यों बरसे जैसे बरसात में मेंह बरसता है** परन्तु तुम्हारी ख़ुश्की दूर न हुई। देखते-देखते सदी का पांचवा भाग भी गुज़र गया परन्तु तुम्हारा **कोई मुजद्दिद प्रकट न हुआ**। ख़ुदा ने निशानों के दिखाने में कमी न रखी। सूर्य और चन्द्र ग्रहण रमज़ान में भी हुआ और हदीस के अनुसार **पुच्छल तारा** भी बहुत समय हुआ कि निकल चुका। और क़ुर्आन और पहली किताबों तथा सुन्नियों और शियों की हदीसों के अनुसार **ताऊन** भी देश में प्रकट हो गई और हज भी रोका गया। और ऊँटों के स्थान पर नई सवारियां भी पैदा हो गईं और सलीब तोड़ने की अवश्यकता भी बहुत महसूस होने लगी क्योंकि उन्तीस लाख नौ मुर्तद ईसाई पंजाब और हिन्दुस्तान में प्रकट हो गया और **आदम से छः हज़ार वर्ष भी गुज़र गया परन्तु अब तक तुम्हारा मसीह न आया। क्या ख़ुदा ने निशान दिखाने में कुछ कमी रखी।** क्या उसने भविष्यवाणी की शर्तों के अनुसार आथम के जीवन का अन्त न किया? क्या उस ने कतई मुद्दत और अवधि के अनुसार लेखराम के उपद्रव से ज़मीन को पाक न किया। क्या उस समय जबकि ऐतराज़ किया गया कि **बिरादरम मौलवी नूरदीन साहिब** का लड़का मृत्यु पा गया है ख़ुदा ने यह ख़बर न दी **कि एक और लड़का उन के घर में पैदा होगा देखो निशान यह है कि उसके शरीर** पर भयंकर फोड़े होंगे। अतः कितना खुला-खुला निशान था कि **वह लड़का पैदा हुआ जिसका नाम अब्दुल हयी है** और उसके शरीर पर भयंकर फोड़े थे जिनके निशान अब तक मौजूद हैं। और यह भविष्यवाणी सैकड़ों **विज्ञापनों द्वारा देश में प्रकाशित की गई** और यह भविष्यवाणी कि विनीत के घर में चार लड़के पैदा होंगे और अब्दुल हक़ ग़ज़नवी अभी जीवित होगा कि **चौथा लड़का पैदा हो जाएगा किस ज़ोर से विज्ञापनों द्वारा प्रकाशित की गई थी** और कैसी सफ़ाई से पूरी हुई परन्तु कौन उस पर ईमान लाया। और ये सब निशान केवल दो-चार नहीं अपितु डेढ़ सौ से भी अधिक हैं। यदि इन निशानों के **गवाह जिन्होंने ये निशान देखे जो अब तक जीवित मौजूद हैं पंक्ति बद्ध खड़े किए जाएं** तो सरकार की भारी सेना के समान उनकी संख्या होगी। अब कितना अन्याय है कि इतने निशानों को

देखकर फिर कहे जाते हैं कोई निशान प्रकट नहीं हुआ और मौलवियों के लिए तो स्वयं उनकी अज्ञानता का निशान पर्याप्त था। **क्योंकि हज़ारों रुपये के इनामी विज्ञापन दिए गए** कि यदि वे सामने बैठकर किसी क़ुरआन की सूरह की तफ़्सीर (व्याख्या) सरस-सुबोध अरबी भाषा में मेरे मुक़ाबले पर लिख सकें तो वे इनाम पाएं। परन्तु वे मुक़ाबला न कर सके तो क्या **यह निशान नहीं था कि ख़ुदा ने उनकी सम्पूर्ण ज्ञान-शक्ति समाप्त कर दी।** इसके बावजूद कि वे हज़ारों थे। तब भी किसी को साहस न हुआ कि सीधी नीयत से मेरे मुक़ाबले पर आए और देखे कि ख़ुदा तआला इस मुक़ाबले में किस की सहायता करता है। फिर उनके लिए एक ओर निशान था कि उन्होंने मुझे तबाह करने के लिए तन्मयता से प्रयास किए और कोई छल-प्रपंच शेष न छोड़ा कि जिसको प्रयोग न किया और विरोध की अभिव्यक्ति में **नाना प्रकार के माध्यमों से अपना सम्पूर्ण ज़ोर व्यय कर दिया** और नाख़ूनों तक ज़ोर लगाया और वैध-अवैध समस्त तरीक़े ग्रहण किएतथा गाली-गलौज, तिरस्कार और अपमान से पूर्णतया काम लिया। अधिकारियों तक मुक़द्दमें पहुँचाए, क़त्ल के आरोप लगाए। परन्तु अन्त में परिणाम यह हुआ जो जमाअत प्रारंभिक दिनों में चालीस आदमियों से भी कम थी आज सत्तर हज़ार के लगभग पहुंच गई और घोर विरोधपूर्ण रुकावटों के बावजूद बराहीन-ए-अहमदिया की वह भविष्यवाणी पूरी हुई जो आज से बीस वर्ष पूर्व दुनिया में प्रकाशित हो चुकी थी, जिस का सारंश यह था कि लोग रोकें डालेंगे और इस सिलसिले को मिटाना चाहेंगे परन्तु ख़ुदा उनके इरादों के विपरीत करेगा। और इस सिलसिले को एक बड़ी जमाअत बना देगा। यहाँ तक कि यह सिलसिला बहुत ही शीघ्र दुनिया में फैल जाएगा और उन लोगों के इरादों पर लानत का दाग़ प्रकट हो जाएगा जिन्होंने रोकना चाहा था। **अब बताओ कि क्या अब ये ख़ुदा की चमत्कारी सहायता सिद्ध न हुई?** यदि यह कारोबार किसी धोखेबाज़ का होता तो क्या उसका परिणाम यही होना चाहिए था। **उठो और दुनिया में इस बात की खोज करो** कि कौन सा **धोखेबाज़ इतिहास** के पृष्ठ से तुम बता सकते हो जिसको मारने के लिए ये कोशिशें की गईं और **फिर वह तबाह न हुआ।** हे निर्दयी क़ौम! तुम्हें किसने चन्द्रमा पर **थूकना सिखाया। क्या तुम उस से लड़ोगे जिसने पृथ्वी**

और आकाश को पैदा किया। अपने हृदयों में विचार करो कि कभी ख़ुदा ने किसी झूठे के साथ ऐसी दोस्ती की कि क़ौमों के इरादों और कोशिशों को उसके मुक़ाबले पर प्रत्येक मैदान में मिटा दिया और उनके प्रत्येक को उसके आक्रमण में असफ़ल रखा। रुक जाओ और **उसके प्रकोप से डरो** और निःसंदेह समझो कि तुम अपनी उपद्रव पूर्ण गतिविधियों पर मुहर लगा चुके। यदि ख़ुदा तुम्हारे साथ होता तो इतने छल करने की तुम्हें कुछ भी आवश्यकता न होती। तुम में से केवल एक व्यक्ति की **दुआ ही मुझे मिटा देती।** परन्तु **तुम में से** किसी की दुआ भी **आकाश पर न चढ़ सकी,** अपितु दुआओं का प्रभाव यह हुआ कि दिन-प्रतिदिन तुम्हारा ही **अन्त** होता जाता है। तुम ने मेरा नाम **मुसैलिमा कज़्ज़ाब** रखा। परन्तु मुसैलिमा तो वह था जिसका एक ही युद्ध में अन्त हो गया परन्तु तुम तो बीस वर्ष तक युद्ध करते रहे और हर युद्ध में असफ़ल रहे। **क्या सच्चों और मोमिनों के यही निशान हुआ करते हैं?** क्या तुम देखते नहीं कि तुम घटते जाते और हम बढ़ते जाते हैं। यदि तुम्हारा क़दम किसी सच्चाई पर होता तो क्या इस मुक़ाबले में तुम्हारा **अंजाम** ऐसा ही होना चाहिए था। तुम में से किसने **मुबाहलः किया कि अन्त में उसने अपमान या मौत का स्वाद न चखा।**

सर्वप्रथम तुम में से मौलवी इस्माईल अलीगढ़ ने मेरे मुक़ाबले पर कहा कि हम में से जो झूठा है वह **पहले मर जाएगा।** अतः तुम जानते हो कि शायद दस वर्ष के लगभग हो चुके कि वह मर गया और अब मिट्टी में उस की हड्डियां भी नहीं मिल सकतीं।

फिर पंजाब में मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी उठा और स्वयं को कुछ समझा तथा उसने अपनी पुस्तक में मेरे मुक़ाबले में यह लिखा कि **हम दोनों में से जो झूठा वह पहले मर जाएगा।** अतः कई वर्ष हो गए कि कि ग़ुलाम दस्तगीर भी मर गया। वह पुस्तक छपी हुई मौजूद है। इसी प्रकार **मौलवी रशीद अहमद** गंगोही उठा और मेरे मुक़ाबले पर एक विज्ञापन निकाला और झूठे पर लानत की और थोड़े दिनों के बाद **अंधा** हो गया। देखो और **नसीहत पकड़ो।**

इसके पश्चात् मौलवी ग़ुलाम मुहियुद्दीन लखूके वाला उठा। उसने भी ऐसे ही इल्हाम प्रकाशित किए। अन्ततः वह भी दुनिया से शीघ्र कूच कर गया।

फिर अब्दुल हक़ ग़ज़नवी उठा और मुक़ाबले पर मुबाहल: करके **दुआएं** कीं कि जो झूठा है उस पर ख़ुदा की लानत हो, **बरकतों से वंचित हो**। दुनिया में उसकी स्वीकारिता का नामोनिशान न रहे! अब तुम स्वयं देख लो कि उन दुआओं का क्या अंजाम हुआ और अब वह किस हालत में और हम किस हालत में हैं। देखो इस मुबाहल: के बाद हर एक बात में **ख़ुदा ने हमारी उन्नति की और बड़े-बड़े निशान प्रकट किए आकाश से भी तथा पृथ्वी से भी और एक दुनिया को मेरी ओर लौटा दिया।** और जब मुबाहल: हुआ तो शायद चालीस आदमी मेरे दोस्त★ थे और आज सत्तर हज़ार के लगभग उनकी संख्या है और आर्थिक सफ़लताएं अब तक **दो लाख रुपये से भी अधिक तथा एक दुनिया को दास के समान श्रद्धालु कर दिया** और पृथ्वी के किनारों तक मुझे प्रसिद्धि दे दी। मज़ा तब हो कि प्रथम क़ादियान में आओ और देखो कि श्रद्धालुओं की कितनी सेना तम्बू लगाए हुए है। और फिर अब्दुल हक़ गज़नवी को अमृतसर में किसी दुकान पर या बाज़ार में चलता हुआ देखो कि किस हालत में चल रहा है। बड़ा अफ़सोस है कि ख़ुदा की शक्ति खुले-खुले तौर पर मेरी सहायता में आकाश से उतर रही है परन्तु ये लोग पहचानते नहीं। **ट्रन्सवाल** और **बर्तानवी शासन** की संधि हो गई परन्तु इन लोगों का अब तक युद्ध शेष है। ट्रान्सवाल ने बुद्धिमत्ता से काम ले कर अंग्रेज़ी सरकार को शक्तिशाली पाया और अधीनता स्वीकार कर ली। परन्तु ये लोग अब तक आकाशीय सरकार के बाग़ी हैं। **ख़ुदा के निशानों को नहीं देखते।** कमज़ोर उम्मत की आवश्यकता पर दृष्टि नहीं डालते। सलीबी विजय का अवलोकन नहीं करते और प्रतिदिन मुर्तद होने का बाज़ार गर्म देख कर इनके दिल नहीं कांपते, और जब उनको कहा जाए कि

★**हाशिया :-** अब्दुल हक़ का यह मुबाहल: भी इस बात को सिद्ध करता था कि उस को ख़ुदा और रसूल की कुछ भी परवाह नहीं, क्योंकि जबकि अल्लाह तआला ने स्पष्ट कह दिया कि ईसा मृत्यु पा गया और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गवाही दे दी कि मैं उसको मुर्दा रूहों में देख आया हूँ और सहाबा ने इज्मा (सर्वसहमति) कर लिया कि सब नबी मृत्यु पा चुके हैं और इब्ने अब्बास ने बुख़ारी में تَوَفّٰی के अर्थ भी मौत कर दिए तो इस स्थिति में मुबाहले के अर्थ इसके अतिरिक्त क्या थे कि मैं ख़ुदा और रसूल को नहीं मानता। इसी से।

बिल्कुल आवश्यकता के समय बिल्कुल सदी के सिर पर बिल्कुल सलीब के प्रभुत्व के दिनों में यह **मुजद्दिद** आया। जिस का नाम इन अर्थों से **मसीह मौऊद** है कि जो इसी सलीबी उपद्रव के समय में प्रकट हुआ तो कहते हैं कि हदीसों में है कि इस उम्मत में तीस दज्जाल आएंगे ताकि उम्मत को अच्छी तरह समाप्त कर दें। **क्या ख़ूब अस्था है!!!** हे मूर्खों क्या इस उम्मत का ऐसा ही फूटा हुआ भाग्य और ऐसे ही बुरे नसीब हैं कि उनके हिस्से में **तीस दज्जाल ही रह गए।** दज्जाल तो तीस परन्तु सलीब के तूफान को कम करने के लिए एक भी मुजद्दिद न आ सका। **अहो भाग्य।** ख़ुदा ने पहली उम्मतों के लिए तो निरन्तर नबी और रसूल भेजे, परन्तु **इस उम्मत की बारी आई तो उसको तीस दज्जाल की ख़ुशख़बरी सुनाई गई।** फिर यह भी प्रमाणित भविष्यवाणी है कि अन्ततः इस उम्मत के उलेमा भी यहूदी बन जाएंगे। और यह भी स्पष्ट है कि अब तक लाखों लोग मुर्तद हो चुके जिन्होंने **इस्लाम धर्म को छोड़ दिया।** तो क्या इस श्रेणी की गुमराही तक अभी ख़ुदा प्रसन्न न हुआ और उसका हृदय तृप्त न हुआ जब तक उसने स्वयं इस उम्मत में से सदी के सिर पर एक दज्जाल न भेज दिया। **ख़ूब दयनीय उम्मत है** जिसके पक्ष में ये अनुकम्पाएं हैं। और फिर यह कि बावजूद इसके कि इस दज्जाल को मारने के लिए मोमिनों के सज्दों में नाकें घिस गईं उसको मारने और तबाह करने के लिए लाखों दुआएं और यत्न किए गए परन्तु ख़ुदा नहीं सुनता मुंह फेर लेता है। अपितु इसके विपरीत यह दज्जाल निरन्तर तीस वर्ष से उन्नति कर रहा है और दुनिया में आकाश के प्रकाश के समान फैलता जाता है। इस से तो सिद्ध होता है कि यह उम्मत **बहुत ही अभागी है** और **ख़ुदा का दृढ़ इरादा है कि इस को तबाह कर दे।** यह कैसी ख़ुदा के प्रकोप की पात्र है कि एक तो दज्जाल के कब्ज़े में दी गई और अब तक सच्चे मसीह और महदी का न आकाश पर कुछ पता मिलता है न पृथ्वी पर। हज़ार चीखें भी मारो वे दोनों खोए हुए उत्तर भी नहीं देते कि जीवित है या मुर्दा तथा कहां हैं और किधर हैं। नबियों द्वारा निर्धारित समय भी गुज़र गए और उम्मत को **ईसाई धर्म ने** खा लिया परन्तु न ख़ुदा को दया आई और न महदी और मसीह के हृदय नर्म हुए। कुछ मूर्ख कहते हैं कि निस्संदेह **क़ुर्आन से मसीह इब्ने मरयम की मृत्यु**

सिद्ध होती है और सूरह नूह और सूरह फातिहा इत्यादि सूरतों पर गहरी दृष्टि करने से यही ज्ञात होता है कि इस उम्मत के सब ख़लीफ़े इसी उम्मत में से होंगे। और हम मानते हैं कि सलीबी धर्म ने भी बहुत कुछ उपद्रव पैदा किया है और यह वह संकट है कि इस्लाम पर इस से पहले कभी नहीं आया। **समय और युग निःसन्देह ऐसे सुधारक को चाहता है** जो सलीबी तूफ़ान का मुक़ाबला करे और सदी का सिर भी इसी को चाहता था और सदी में से भी लगभग पांचवा भाग गुज़र गया। सब कुछ सच, परन्तु हम क्योंकर मान लें। क्योंकि इस व्यक्ति की आस्थाएं हमारे उलेमा की आस्थाओं से भिन्न हैं। यदि यह उनका समभावी होता तो हम स्वीकार कर सकते। अब देखो कि उनके ये विचार कितने पागलपन के हैं। जब आप ही इस बात के स्वीकारी हैं कि ईसा इब्ने मरयम के जीवित रहने और उतरने में उलेमा ग़लती पर हैं तो फिर ख़ुदा का मुर्सल इस ग़लती को क्योंकर मान ले। इसके अतिरिक्त जब मसीह मौऊद का नाम **'हकम'** है तो उसके लिए आवश्यक है कि इस्लाम के **बहत्तर फ़िर्क़ों** में फ़ैसला करे तथा कुछ विचारों को रद्द करे। और कुछ की पुष्टि करे। यह क्योंकर हो सके कि जो हकम कहलाता है वह तुम्हारा सब अच्छे बुरे का भण्डार मान ले। और फिर उसके अस्तित्व से **लाभ क्या** हुआ तथा किस कारण से उसका नाम **हकम** रखा गया। इसलिए आवश्यक था कि वह अच्छे बुरे के भण्डार में से कुछ अस्वीकार करे तथा कुछ स्वीकार करे। यदि सब कुछ स्वीकार करता जाए तो फिर हकम किस बात का हुआ। उदाहरणतया देखो तुम में एक फ़िर्क़ा तो इस बात को मानता है कि ईसा इब्ने मरयम **आकाश से दोबारा वापस आएगा।** परन्तु उसके मुक़ाबले पर मौतज़िलः तथा कुछ सूफ़ियों की यह आस्था है कि दोबारा आना **ग़लत है अपितु मसीह इब्ने मरयम मृत्यु पा चुका है** और आने वाला इसी उम्मत में से होगा। अब बताओ कि मैंने कौन सा अन्याय किया और इस्लाम का विरोध किया। केवल यह किया कि ख़ुदा से वह्यी पाकर मुसलमानों की दो आस्थाओं में से एक आस्था को अस्वीकार कर दिया और उसको **क़ुर्आन की विरोधी** और **सहाबा की सर्वसहमति**के विरुद्ध बताया और दूसरी आस्था का सत्यापन किया तथा उसके अनुसार स्वयं को प्रकट किया। क्या हकम के लिए आवश्यक था कि तुम्हारे कई

फ़िर्क़ों में से केवल **अहले हदीस** की बात मानता या केवल **हनफ़ियों** की बात स्वीकार करता और शेष समस्त फ़िर्क़ों की सब विवेचनात्मक आस्थाओं को **अस्वीकार** कर देता तो इस स्थिति में तो तुम ही हकम ठहरे न कि वह। हां सच है कि प्रत्येक आस्था जब आदत में दाखिल हो जाती है तो उसका छोड़ना कठिन हो जाता है। यही कारण है कि हज़रत मसीह जो काफी पहले मृत्यु पा चुके आप लोगों के विचारों में वह अब तक पार्थिव शरीर के साथ **आकाश** पर बैठे हैं। परंतु सच तो यह है कि आसमान पर नहीं बल्कि आप लोगों के दिल में बैठे हैं और पुरानी आस्थाओं के कारण हर दम ज़बान पर उतर रहे हैं। तुम से पूर्व यहूदियों को भी इसी बला (विपत्ति) का सामना करना पड़ा था कि उनके नज़दीक सही आस्था यही थी कि इल्यास आकाश से उतरेगा तब मसीह आएगा। परन्तु जब हज़रत मसीह आए और इल्यास आकाश से नहीं उतरा तो यहूदियों ने झुठलाने का वह शोर मचाया कि आप लोगों के शोर और उनके शोर में अन्तर करना कठिन है।★ और बड़े जोश से हज़रत ईसा से यहूदियों ने प्रश्न किया कि अभी इल्यास तो दोबारा दुनिया में आया नहीं तो तुम क्योंकर सच्चा मसीह ठहर सकते हो। तब उन्होंने उत्तर दिया कि इल्यास तुम में मौजूद है जो यूहन्ना नबी है। अर्थात् **यह्या**। परन्तु किसी ने यह उत्तर पसन्द नहीं किया। और आज तक हज़रत ईसा को इसी कारण काफ़िर कहा जाता है कि उन्होंने यहूदियों की सर्वसम्मत आस्था के विरुद्ध राय व्यक्त की। और विचित्र यह बात है कि हमारे विरोधी इस से दृष्टि हटाते हुए कि हमारी दावत को मान लें वे अपने भ्रमों एवं संदेहों का भण्डार हमसे स्वीकार कराना चाहते हैं हालांकि वे उस ख़ुदा से बिलकुल अनभिज्ञ हैं जिससे मुक्ति मिलती है। जिस हालत मे ख़ुदा ने हम पर कृपा करके हमें अपनी ओर से प्रकाश प्रदान किया, जिस प्रकाश से हमने उसको पहचाना और हमें निशान प्रदान किए जिन निशानों से हमने उसके अस्तित्व और पूर्ण विशेषताओं पर विश्वास कर लिया तो हम क्योंकर उस प्रकाश, **अध्यात्म ज्ञान** और **विश्वास** को स्वयं से दूर

★**हाशिया :-** यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों पर उनके किसी गुप्त गुनाह के कारण यह यातना आई कि जिन मार्गों से वे अपने मौऊद नबियों की प्रतीक्षा करते रहे उन मार्गों से वे नबी नहीं आए अपितु चोर की तरह किसी अन्य मार्ग से आ गए। इसी से।

कर दें। हम सच-सच कहते हैं और ख़ुदा हमारे इस कथन पर गवाह है कि यद्यपि ख़ुदा ताआला का अस्तित्व और इस्लाम की सच्चाई का विश्वास क़ुर्आन के द्वारा हमारे पास आया। परन्तु ख़ुदा ने अपनी ताज़ा वह्यी के माध्यम से हमें अपनी विशेष **चमकारें दिखाईं** यहाँ तक कि हमने उस ख़ुदा को देख लिया जिससे एक दुनिया लापरवाह है। उसके मनोहर निशानों ने जो मेरी जानकारी में हज़ारों तक पहुंच गए हैं यद्यपि दुनिया को अभी केवल **डेढ़ सौ** निशान से सूचना हुई। मुझ में वह विश्वास, प्रतिभा और अध्यात्म ज्ञान का प्रकाश पैदा किया जो मुझे इस अंधकारमय **दुनिया से हज़ारों** कोस दूर खींच कर ले गया। अब यद्यपि मैं दुनिया में हूँ परन्तु दुनिया में से नहीं हूँ। यदि दुनिया मुझे नहीं पहचानती तो कुछ आश्चर्य नहीं। क्योंकि प्रत्येक वस्तु जो बहुत दूर और बहुत ऊंची है उसका पहचानना कठिन है। मैं कभी आशा नहीं करता कि दुनिया मुझ से प्रेम करे क्योंकि दुनिया ने कभी किसी सच्चे से प्रेम नहीं किया। मुझे इस से **प्रसन्नता** है कि मुझे गालियां दी गईं, **दज्जाल** कहा गया, काफ़िर ठहराया गया क्योंकि सूरह फ़ातिहा में एक गुप्त भविष्यवाणी मौजूद है और वह यह कि जिस प्रकार **यहूदी** लोग हज़रत **ईसा को काफ़िर और दज्जाल कहकर** मग़ज़ूब अलैहिम (जिन पर अल्लाह तआला का प्रकोप हुआ) बन गए। कुछ मुसलमान भी ऐसे ही बनेंगे। इसीलिए नेक लोगों को यह दुआ सिखाई गई कि वे मुनइम अलैहिम (जिन पर ख़ुदा के इनाम हुए) में से हिस्सा लें और मग़ज़ूब अलैहिम न बनें। सूरह फ़ातिहा का उच्चतम उद्देश्य मसीह मौऊद और उसकी जमाअत तथा इस्लामी यहूदी और उनकी जमाअत तथा ज़ाल्लीन (पथभ्रष्ट) अर्थात् ईसाइयों की उन्नति के युग की ख़बर है। तो कितनी **प्रसन्नता** की बात है कि वे बातें आज पूरी हुईं।

अत: मैं एक और **स्वप्न** लिखता हूँ जो ताऊन के बारे में मैंने देखा। और वह यह कि मैंने एक जानवर देखा जिसका क़द हाथी के क़द के बराबर था परन्तु मुंह आदमी के मुंह से मिलता था और कुछ अवयव दूसरे जानवरों के समान थे। मैंने देखा कि वह यों ही क़ुदरत के हाथ से पैदा हो गया। और मैं एक ऐसे स्थान पर बैठा हूँ जहां चारों ओर वन हैं। जिन में बैल, गधे, घोड़े, कुत्ते, सुअर, भेड़िए और ऊंट इत्यादि **प्रत्येक प्रकार के** मौजूद हैं और मेरे

हृदय में डाला गया कि ये सब इन्सान हैं जो दुष्कर्मों से इन रूपों में हैं। और फिर मैंने देखा कि वह हाथी की मोटाई का जानवर जो विभिन्न रूपों का संग्रह है जो केवल क़ुदरत से पृथ्वी में से पैदा हो गया है वह मेरे पास आ बैठा है और ध्रुव की ओर उसका **मुंह** है। ख़ामोश शक्ल है और आंखों में बहुत शर्म है और बार-बार कुछ मिनट के बाद उन वनों में से किसी वन की ओर दौड़ता है और जब वन में प्रवेश करता है तो उसके प्रवेश करने के साथ ही **क़यामत** का शोर उठता है और उन जानवरों को खाना आरंभ करता है और हड्डियों के चबाने की आवाज़ आती है। तब वह निवृत्त होकर फिर मेरे पास आ बैठता है। और शायद दस मिनट के लगभग बैठा रहता है और फिर दूसरे वन की ओर जाता है और वही स्थिति सामने आती है जो पहले आई थी और फिर मेरे पास आ बैठता है। उसकी आंखें बहुत लम्बी हैं। और मैं उसको हर बार जो मेरे पास आता है ख़ूब नज़र लगाकर देखता हूँ और वह अपने चेहरे के अनुमान से यह बताता है कि मेरा इस में क्या दोष है मैं मामूर (चयनित) हूँ। और अत्यंत शरीफ़ और संयमी जानवर मालूम होता है और कुछ अपनी ओर से नहीं करता अपितु वही करता है जो उसे आदेश होता है। तब मेरे हृदय में डाला गया कि यही ताऊन है। और यही वह 'दाब्बतुलअर्ज़' है जिस के बारे में पवित्र क़ुर्आन में **वादा** था कि अन्तिम युग में हम उसको निकालेंगे और वह लोगों को इसलिए काटेगा कि वे हमारे निशानों पर **ईमान** नहीं लाते थे। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है-

وَ اِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ۔

(अन्नम्ल- 27/83)

और जब **मसीह मौऊद** के भेजने से ख़ुदा की हुज्जत उन पर पूरी हो जाएगी तो हम पृथ्वी में से एक जानवर निकाल कर खड़ा करेंगे। वह लोगों को काटेगा और ज़ख़्मी करेगा इसलिए कि लोग ख़ुदा के निशानों पर ईमान नहीं लाए थे। देखो सूरह अन्नम्ल पारा-20

और फिर आगे फ़रमाया है-

وَ يَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ۔ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ وَ لَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّا ذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ۔ وَ وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ۔

(अन्नम्ल- 27/84 से 86)

अनुवाद- उस दिन हम प्रत्येक उम्मत में से उस गिरोह को एकत्र करेंगे जो हमारे निशानों को झुठलाते थे और उनको हम अलग-अलग जमाअतें बना देंगे यहां तक कि जब वे अदालत में उपस्थित किए जाएंगे तो ख़ुदा तआला उन को कहेगा क्या तुमने मेरे निशानों को बिना छान-बीन किए झुठलाया। यह तुम ने क्या किया और उन पर उनके अत्याचारी होने के कारण समझाने का अन्तिम प्रयास पूरा हो जाएगा। तथा वे बोल न सकेंगे। (सूरह अन्नम्ल)

अब बात का सारांश यह है कि यही दाब्बतुल अर्ज़ जो इन आयतों में वर्णित है जिसका **मसीह मौऊद के युग में प्रकट होना प्रारंभ से निर्धारित है।** यही वह विभिन्न रूपों का जानवर है जो मुझे तंद्रावस्था में दिखाई दिया और हृदय में डाला गया कि यह **ताऊन का कीड़ा है** और ख़ुदा तआला ने उसका नाम **'दाब्बतुलअर्ज़'** रखा क्योंकि पृथ्वी के कीड़ों में से ही यह रोग पैदा होता है इसीलिए पहले चूहों पर इस का प्रभाव होता है और विभिन्न परिस्थितियों में प्रकट होता है और जैसा कि मनुष्य को ऐसा ही प्रत्येक जानवर को यह रोग हो सकता है। इसलिए तंद्रावास्था में उसके विभिन्न रूप दिखाई दिए। और इस वर्णन पर कि दाब्बतुल अर्ज़ वास्तव में प्लेग के तत्व का नाम है जिससे ताऊन (प्लेग) पैदा होती है। निम्नलिखित प्रसंग और तर्क हैं-

(1) प्रथम यह कि दाब्बतुल अर्ज़ के साथ अज़ाब का वर्णन किया गया है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है-

وَ اِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ

(अन्नम्ल-27/83)

अर्थात् जब उन पर आकाशीय निशानों तथा बौद्धिक तर्कों के साथ समझाने का प्रयास पूरा हो जाएगा तब दाब्बतुलअर्ज़ (अर्थात् ज़मीन का कीड़ा) ज़मीन में से निकाला जाएगा। अब स्पष्ट है कि दाब्बतुलअर्ज़ अज़ाब के अवसर पर

पृथ्वी से निकाला जाएगा, न यह कि यों ही व्यर्थ तौर पर प्रकट होगा जिसका न कुछ लाभ न हानि। और यदि कहो कि ताऊन तो एक रोग है परन्तु दाब्बतुलअर्ज़ शब्दकोशीय अर्थों की दृष्टि से एक कीड़ा होना चाहिए जो पृथ्वी में से निकले। इसका उत्तर यह है कि वर्तमान अन्वेषणों से यही सिद्ध हुआ है कि ताऊन को पैदा करने वाला वही एक कीड़ा (कीटाणु) है जो पृथ्वी में से निकलता है अपितु टीका लगाने के लिए वही कीटाणु जमा किए जाते हैं और उनका अर्क़ निकाला जाता है और सूक्ष्मदर्शी यंत्र से सिद्ध होता है कि उसका रूप ऐसा (..) है अर्थात् दो बिन्दुओं का रूप। जैसे आकाश पर भी सूर्य और चन्द्रग्रहण का निशान दो के रंग में प्रकट हुआ और ऐसा ही पृथ्वी में।

(2) दूसरा प्रसंग यह है कि पवित्र क़ुर्आन के कुछ स्थान कुछ **की व्याख्या** हैं। और हम देखते हैं कि पवित्र क़ुर्आन में जहाँ कहीं पर यह मिश्रित शब्द आया है उससे अभिप्राय कीटाणु लिया गया है। उदाहरणतया यह आयत

فَلَمَّا قَضَيۡنَا عَلَيۡهِ الۡمَوۡتَ مَا دَلَّهُمۡ عَلٰى مَوۡتِهٖۤ اِلَّا دَآبَّةُ الۡاَرۡضِ تَاۡكُلُ مِنۡسَاَتَهٗ (सबा- 34/15)

अर्थात् हम ने सुलेमान पर जब मौत का आदेश जारी किया तो जिन्नों को उनके मरने का किसी ने पता न दिया परन्तु घुन के कीटाणु ने कि जो सुलेमान के डंडे को खाता था।

अब देखो यहां भी एक कीटाणु का नाम दाब्बतुलअर्ज़ रखा गया। तो इस से अधिक दाब्बतुलअर्ज़ के असली अर्थों को मालूम करने के लिए और क्या गवाही होगी कि स्वयं पवित्र क़ुर्आन ने अपने दूसरे स्थान में दाब्बतुलअर्ज़ के अर्थ कीटाणु किया है। तो क़ुर्आन के विरुद्ध उसके अर्थ करना यही अक्षरांतरण, नास्तिकता और धोखा है।

(3) तीसरा प्रसंग यह है कि आयत में स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता है कि ख़ुदा के निशानों को झुठलाने के समय में कोई **समय का इमाम मौजूद होना** चाहिए क्योंकि وقع القول عليهم का वाक्य यह है कि हुज्जत पूर्ण होने के बाद यह अज़ाब हो और यह तो सर्वमान्य आस्था है कि दाब्बतुलअर्ज़ का निकलना अन्तिम युग में होगा जबकि मसीह मौऊद प्रकट होगा ताकि दुनिया पर ख़ुदा की

हुज्जत पूरी करे। अत: एक जज को यह बात शीघ्रतर समझ आ सकती है कि जब एक व्यक्ति मौजूद है जो मसीह मौऊद होने का दावा करता है तथा आकाश और पृथ्वी में उसके बहुत से निशान प्रकट हो चुके हैं तो अब निस्संदेह दाब्बतुलअर्ज़ यही ताऊन है जिसका मसीह के युग में प्रकट होना आवश्यक था। और चूँकि **याजूज-माजूज मौजूद है** और

مِّنۡ کُلِّ حَدَبٍ یَّنۡسِلُوۡنَ (अल अंबिया- 21/97)

की भविष्यवाणी सम्पूर्ण दुनिया में पूरी हो रही है तथा दज्जाली उपद्रव भी चरम सीमा तक पहुंच गए हैं और भविष्यवाणी

یُتۡرَکَنَّ الۡقِلَاصُ فَلَا یُسۡعٰی عَلَیۡهَا

भी भलीभांति प्रकट हो चुकी है और शराब, व्यभिचार और झूठ की भी प्रचुरता हो गई है तथा मुसलमानों में यहूदियत की प्रकृति भी जोश मार रही है तो केवल एक बात शेष थी कि दाब्बतुलअर्ज़ **पृथ्वी** से निकले तो वह भी निकल आया। इस बात पर झगड़ना मूर्खता है कि हदीस से मालूम होता है कि **अमुक जगह फटेगी और दाब्बतुलअर्ज़ वहां से सिर निकालेगा।** फिर समस्त संसार में चक्कर लगाएगा क्योंकि अधिकतर भविष्यवाणियों पर रूपकों का रंग विजयी होता है। जब एक बात की वास्तविकता खुल जाए तो ऐसे काल्पनिक विचारों के साथ वास्तविकता को छोड़ना पूर्ण मूर्खता है। इसी आदत से दुर्भाग्यशाली यहूदी सच स्वीकार करने से वंचित रह गए।

(4) चौथा प्रसंग दाब्बतुलअर्ज़ के ताऊन होने पर यह है कि सूरह फ़ातिहा में एक रंग में यह भविष्यवाणी की गई है कि किसी समय कुछ मुसलमान भी वह यहूदी बन जाएंगे जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के समय में थे जो अंततः ताऊन इत्यादि विपत्तियों से मार दिए गए थे। क्योंकि अल्लाह तआला की हमेशा से यह आदत है कि जब एक क़ौम को किसी कार्य से मना करता है तो उसके प्रारब्ध में यह अवश्य होता है कि कुछ उन में से उस कार्य को अवश्य करने वाले होंगे जैसा कि उसने तौरात में यहूदियों को मना किया था कि तुम तौरात और ख़ुदा की अन्य किताबों का **अक्षरांतरण** न करना। तो अन्ततः उनमें से कुछ ने अक्षरांतरण किया परन्तु क़ुर्आन में यह नहीं कहा गया कि तुम क़ुर्आन

का अक्षरांतरण न करना अपितु यह कहा गया

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ إِنَّا لَهُ لَحَافِظُوْنَ (अलहिज्र- 15/10)

तो सूरह फ़ातिहा में ख़ुदा ने मुसलामानों को यह दुआ सिखाई-

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ـ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ ـ (अलफातिहा-1/6,7)

इस स्थान पर सही हदीसों की दृष्टि से पूर्ण निरन्तरता के साथ यह सिद्ध हो चुका है कि اَلْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ से अभिप्राय दुराचारी और पापी यहूदी हैं जिन्होंने हज़रत मसीह को काफ़िर ठहराया और क़त्ल करने पर तत्पर रहे और उसका घोर अपमान एवं तिरस्कार किया और जिन पर हज़रत ईसा ने लानत भेजी जैसा कि क़ुर्आन में वर्णन किया है। और الضَّالِّيْنَ से अभिप्राय ईसाइयों का वह पथभ्रष्ट फ़िर्क़ा है जिन्होंने हज़रत ईसा को ख़ुदा समझ लिया और तस्लीस के स्वीकारी हुए और मसीह के क़त्ल पर **मुक्ति को सीमित** रखा और उनको ज़िन्दा ख़ुदा के अर्श पर बिठा दिया। अब इस दुआ का **मतलब यह** है कि हे ख़ुदा ऐसी कृपा कर कि हम न तो वे यहूदी बन जाएं जिन्होंने मसीह को काफ़िर ठहराया था और उनके क़त्ल करने पर तत्पर हुए थे और न हम मसीह को ख़ुदा ठहराएं और तस्लीस (तीन ख़ुदा) के क़ाइल हों। चूंकि ख़ुदा तआला जानता था कि **अन्तिम युग में** इसी उम्मत में से **मसीह मौऊद** आएगा। तथा कुछ यहूदी गुण मुसलमानों में से उसको **काफ़िर** ठहराएंगे और **क़त्ल** पर तत्पर होंगे और उसका घोर **अपमान** एवं तिरस्कार करेंगे तथा **जानता** था कि उस युग में तस्लीस का धर्म **उन्नति** पर होगा और बहुत से दुर्भाग्यशाली मनुष्य ईसाई हो जाएंगे। इसलिए उस ने मुसलमानों को यह दुआ सिखाई और इस दुआ में जो مَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ का शब्द है वह ऊँचे स्वर में कह रहा है कि वे लोग जो इस्लामी **मसीह** का विरोध करेंगे वे भी ख़ुदा तआला की दृष्टि में مَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ होंगे। जैसा कि इस्राईली मसीह के विरोधी مَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ थे। और हज़रत मसीह स्वयं इंजील में संकेत करते हैं कि मेरे इन्कार करने वालों पर मरी अर्थात् ताऊन पड़ेगी और इसके★ बाद दूसरे **अज़ाब**

★**हाशिया :-** ज़क़रिया अध्याय 14 में वर्णित है कि अन्तिम युग में मसीह मौऊद के काल में

भी उतरेंगे। इसलिए आवश्यक था कि इस्लामी मसीह के समर्थन में भी ये बातें प्रकटन में आतीं। इस बात पर और भी बहुत से तर्क हैं कि यही दाब्बतुलअर्ज़ जिसका पवित्र क़ुर्आन में वर्णन है ताऊन है और निःसंदेह यह पृथ्वी का रोग है और पृथ्वी में से ही निकलता है। इससे सुरक्षित रहने के लिए इसके बाद जो एक व्यक्ति इस जमाअत में दाख़िल हो और संयम ग्रहण करे, सूरह फ़ातिहा की पुनरावृत्ति का हार्दिक उपस्थिति से और उसके अर्थों पर स्थापित होने से बहुत प्रभावी है। जो व्यक्ति ताऊन की अचानक आने वाली आपदा से बचना चाहता है उसके लिए इससे अच्छा अन्य कोई माध्यम नहीं कि शक्तिमान प्रतापी ख़ुदा पर सच्चा ईमान लाए और अपने समस्त अवयवों को पापों से बचाए तथा धर्म एवं धार्मिक सेवाओं को दुनिया पर प्राथमिक रखे और इस सच्चे सिलसिले में श्रद्धा और निष्ठा के साथ सम्मिलित हो जाए तथा हार्दिक जोश के साथ दुआ में लगा रहे और अपनी स्त्रियों को जिनकी बुराई के दुष्प्रभाव में वह भी भागीदार हो सकता है लापरवाह जीवन से बचाए और कोशिश करे कि उसके घर में ख़ुदा का उपासना हो। फिर इसके साथ पवित्र क़ुर्आन के समस्त आदेशों का पाबन्द होकर बाह्य अपवित्रताओं और गन्दगियों से भी अपने घर को स्वच्छ रखे। जो व्यक्ति बाह्य गन्दगियों से घृणा नहीं रखता और उसका घर तथा उसके घर का आंगन अपवित्र रहते हैं वह आंतरिक पवित्रता में भी सुस्त हो सकता है। इसलिए तुम कोशिश करो कि तुम्हारे घर का कोई भी भाग गन्दा न हो और न अपवित्र पानी तथा कीचड़ नालियों में खड़ा रहे और न कपड़े मैले कुचैले रहें। यह ख़ुदा तआला का आदेश है जो पवित्र क़ुर्आन में आ चुका है ऐसे आदेश जो ख़ुदा तआला की किताब में आए हैं वे इसलिए आए हैं ताकि तुम समझो कि शारीरिक सिलसिले

भयंकर ताऊन पड़ेगी। उस युग में दुनिया के सब फ़िर्क़े सहमत होंगे कि यरोशलम को तबाह कर दें तब उन्हीं दिनों में ताऊन फूटेगी और उसी दिन यों होगा कि जीता पानी यरोशलम से जारी होगा अर्थात् ख़ुदा का मसीह प्रकट हो जाएगा। और यहां यरोशलम से अभिप्राय बैतुल मक़दस नहीं है अपितु वह स्थान है जिस से धर्म को जीवित करने के लिए ख़ुदा की शिक्षा का झरना जोश मारेगा और वह क़ादियान है जो ख़ुदा तआला की दृष्टि में दारुल अमान है। और जैसा कि ख़ुदा तआला ने इस उम्मत के ख़ातमुल ख़ुलफ़ा का नाम मसीह रखा ऐसा ही उसके निकलने के स्थान का नाम यरोशलम रख दिया और उसके विरोधियों का नाम यहूदी रख दिया। इसी से।

को रूहानी सिलसिले से एक संबंध है, इसलिए तुम न तो बाह्य तौर पर पृथ्वी के अपवित्र भागों की ओर झुको और न रूहानी तौर पर अपितु यदि संभव हो तो ऊपर के मकानों में रहो तथा हवादार और प्रकाशमान मकान ग्रहण करो। और न तुम आन्तरिक तौर पर पृथ्वी की ओर झुको अपितु आकाश में से भाग लो यह जो अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाया कि वह दाब्बतुलअर्ज़ अर्थात् ताऊन का कीटाणु पृथ्वी में से निकलेगा उसमें यही रहस्य है ताकि वह इस बात की ओर संकेत करे कि वह उस समय निकलेगा कि जब मुसलमान और उनके उलेमा पृथ्वी की ओर झुक कर स्वयं दाब्बतुलअर्ज़ बन जाएंगे। हम अपनी कुछ पुस्तकों में लिख आए हैं कि इस युग के ऐसे मौलवी और गद्दीनशीन जो संयमी (मुत्तकी) नहीं हैं और पृथ्वी की ओर झुके हुए हैं ये दाब्बतुलअर्ज़ हैं। अब हमने इस पुस्तक में लिखा है कि दाब्बतुलअर्ज़ ताऊन का कीटाणु है। इन दोनों वर्णनों में कोई व्यक्ति विरोधाभास न समझे पवित्र क़ुरआन **ज़ुलमआरिफ़** (अध्यात्म ज्ञानों वाला) है और कई कारणों से उसके अर्थ होते हैं।★जो एक दूसरे के विपरीत नहीं और जिस प्रकार पवित्र क़ुर्आन एक बार में नहीं उतरा इसी प्रकार उसके अध्यात्म ज्ञान भी हृदयों पर सहसा नहीं उतरे। इसी आधार पर अन्वेषकों का यही मत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अध्यात्म ज्ञान भी एक बार में आपको नहीं मिले अपितु धीरे-धीरे आप ने ज्ञान की उन्नतियों का दायरा पूरा किया है। ऐसा ही मैं हूँ जो बुरूज़ी तौर पर आप के अस्तित्व का द्योतक हूँ। आंहज़रत की धीरे-धीरे उन्नति में रहस्य यह था कि आप की उन्नति का माध्यम केवल क़ुर्आन था। तो जबकि पवित्र क़ुर्आन का उतरना धीरे-धीरे था इसी प्रकार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अध्यात्म ज्ञानों की पूर्ति भी तद्रीजी (शनैः-शनैः) थी और इसी क़दम पर मसीह मौऊद है जो इस समय तुम में प्रकट हुआ। ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान ख़ुदा तआला की विशेषता है जितना वह देता है उतना ही हम

★**हाशिया :-** जिस प्रकार अल्लाह तआला ने वनस्पतियों इत्यादि में कई प्रकार के गुण रखे हैं। उदाहरणतया एक बूटी मस्तिष्क को शक्ति देती है और साथ ही जिगर के लिए भी लाभप्रद है। इसी प्रकार पवित्र क़ुर्आन की प्रत्येक आयत विभिन्न प्रकार के अध्यात्म ज्ञानों को बताती है। इसी से।

लेते हैं। पहले उसी ने ग़ैब से मुझे यह समझ प्रदान की कि ऐसे सुस्त जीवन वाले जो ख़ुदा और उसके रसूल पर ईमान तो लाते हैं परन्तु व्यवहारिक हालत में बहुत कमज़ोर हैं। ये दाब्बतुलअर्ज़ हैं अर्थात् पृथ्वी के कीड़े हैं आकाश से इनको कुछ हिस्सा नहीं। और मुक़द्दर था कि अन्तिम युग में ये लोग अधिक हो जाएंगे और अपने होंठों से इस्लाम की गवाही देंगे, परन्तु उनके दिल अंधकार में होंगे। यह तो वह मायने हैं जो हमने पहले प्रकाशित किए और यह मायने अपने स्थान पर सही और दुरुस्त हैं। अब एक और मायने इस आयत के संबंध में खुदा तआला की ओर से खुले जिन को हमने वर्णन कर दिया है अर्थात् यह कि दाब्बतुलअर्ज़ से अभिप्राय वह कीड़ा भी है जो मुक़द्दर था कि मसीह मौऊद के समय में पृथ्वी से निकलेगा और दुनिया को उनके दुष्कर्मों के कारण तबाह करे। यह अच्छी तरह स्मरण रखने योग्य है कि जैसे यह आयत दो मायनों पर आधारित है ऐसे ही सैकड़ों नमूने इसी प्रकार के ख़ुदा के कलाम में पाए जाते हैं। इसी कारण से उसे चमत्कारिक कलाम कहा जाता है कि एक-एक आयत दस-दस पहलू पर आधारित है और वे समस्त पहलू सही होते हैं। अपितु पवित्र क़ुर्आन के अक्षर और उनके अदद (संख्या) भी गुप्त अध्यात्म ज्ञानों से रिक्त नहीं होते। उदाहरणतया सूरह वलअस्त्र की ओर देखो कि बाह्य अर्थों की दृष्टि से यह बताती है कि यह सांसारिक जीवन जिसको मनुष्य इतनी लापरवाही से गुज़ार रहा है अन्ततः यही जीवन अनश्वर घाटे और वबाल का कारण हो जाता है और इस घाटे से वही बचते हैं जो एक ख़ुदा पर सच्चे दिल से ईमान लाते हैं कि वह मौजूद है और फिर ईमान के बाद कोशिश करते हैं अच्छे-अच्छे कर्मों से उसको प्रसन्न करें और फिर इसी पर बस नहीं करते अपितु चाहते हैं कि इस मार्ग में हमारे जैसे और भी हों जो सच्चाई को पृथ्वी पर फैला दें और ख़ुदा के अधिकारों को अदा करें तथा मानव जाति पर भी दया करें। किन्तु इस सूरह के साथ यह एक अद्भुत् चमत्कार है कि उसमें आदम के युग से लेकर आंहज़रत के युग तक दुनिया का इतिहास अबजद के हिसाब से अर्थात् जमल के हिसाब से बताया गया है। अतः पवित्र क़ुर्आन में हज़ारों अध्यात्म ज्ञान और वास्तविकताएं हैं और वास्तव में गणना से बाहर हैं। इसी आधार पर पवित्र क़ुर्आन फ़रमाता है- कि अन्तिम युग में दो प्रकार के दाब्बतुल-अर्ज़ पैदा हो जाएंगे-

(1)- एक तो **बेअमल उलेमा** जिनके दिल पृथ्वी के साथ संलग्न होंगे, पृथ्वी की प्रसिद्धि चाहेंगे।

(2)- दूसरे ताऊन का कीड़ा जो दण्ड देने के तौर पर प्रकट होगा। तो **इस युग में** दोनों बातें प्रकटन में आ गईं और वास्तव में हदीसों में इन दोनों बातों की ओर संकेत है। सही मुस्लिम की एक हदीस में स्पष्ट लिखा है कि मसीह मौऊद के समय में देश में ताऊन फूटेगी और शियों की हदीसों की पुस्तकों में भी ताऊन की चर्चा है और उसके साथ यह भी चर्चा है कि उस समय अधिकतर उलेमा यहूदी गुण वाले हो जाएंगे। अर्थात् केवल पृथ्वी के कीड़े बन जाएंगे। देखो ये दोनों पहलू पवित्र क़ुर्आन में से निकलते हैं हदीस से सिद्ध हुए।

कुछ नादान शियों ने जिन्होंने हुसैन की उपासना को इस्लाम का सार समझ लिया है। हमारी पुस्तक 'दाफ़िउलबला' को देख कर से बहुत ज़हर उगला है और गालियां देकर यह ऐतराज़ किया है कि क्योंकर संभव है कि यह व्यक्ति इमाम हुसैन से श्रेष्ठ हो और जोश में आकर यह भी लिख दिया है कि इमाम हुसैन की वह शान है कि **समस्त नबी** अपने संकटों के समय में **उसी इमाम** को अपना शफ़ी ठहराते थे और उसके कारण ही उनके संकट दूर होते थे। ऐसा ही आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी संकट के समय में इमाम हुसैन★ के ही पराश्रय थे और आपके संकट भी इमाम हुसैन की शफ़ाअत (अनुशंसा) से ही दूर होते थे। अफ़सोस ये लोग नहीं समझते कि क़ुर्आन ने तो इमाम हुसैन को पुत्र होने का भी पद नहीं दिया अपितु नाम तक का ज़िक्र नहीं। उनसे तो ज़ैद ही अच्छा रहा जिस का नाम पवित्र क़ुर्आन में मौजूद है। उनको आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बेटा कहना पवित्र

★**हाशिया :-** हम इस हाशिये में एक शिया साहिब का विज्ञापन जो शरीफी प्रेस पेशावर से प्रकाशित हुआ, दर्ज करते हैं जिससे ज्ञात होगा कि अली हाइरी साहिब ने इमाम हुसैन के बारे में जो विचार व्यक्त किया है वह स्वयं उनके सहधर्मी लोगों की राय में सही नहीं है और उससे उनकी ग़लती का और क्या अधिक सबूत होगा कि उनका सहधर्मी ही सुदृढ़ तर्कों द्वारा अपने निम्नलिखित विज्ञापन में उनके विचार का खण्डन करता है और यह ख़ुदा की एक सहायता है कि ठीक उस पुस्तक के लिखने के समय हमें यह विज्ञापन मिल गया है जो अली हाइरी साहिब के लेख की वास्तविकता खोलने के लिए पर्याप्त है और वह यह है:-

क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश के विरुद्ध है। जैसा कि आयत

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ (अल अहज़ाब- 33/41)

से समझा जाता है और सपष्ट है कि हज़रत इमाम हुसैन रिजाल (मर्दों) में से थे औरतों में से तो नहीं थे। सच तो यह है कि इस आयत ने इस संबंध को जो इमाम हुसैन को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नवासा (नाती)

शेष हाशिया - बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

आज यह पुस्तक 'वसीलतुल मुबतिला' मेरी नज़र से गुज़री। यद्यपि मैंने स्वयं को बहुत रोका और दिल को समझाया कि ऐसे मामलों में क्यों हस्तक्षेप करते हो परन्तु दिल क़ाबू से निकल गया और यह सोचा कि अफ़सोस का स्थान है कि हमारे इमामिया उलेमा कैसे घटिया विचार के हैं वे अल्लाह की प्रदान की हुई (ईश्वर प्रदत्त) बुद्धि से काम नहीं लेते। अपने ज्ञान और सभ्यता का कोई चमत्कार नहीं दिखलाते। क्या एक ऐसे इमामत के दावेदार के मुक़ाबले में इस प्रकार के तर्कहीन उत्तर पर्याप्त हो सकते हैं तथा इस प्रकार की रिवायतें प्रतिद्वंदी को निरुत्तर कर सकती हैं। ख़ुदा की क़सम मैं इमामिया होकर न्यायपूर्वक कहता हूँ कि ये रिवायतें और तर्क ख़ुदा के कलाम के अतिरिक्त एक ऐसे शक्तिशाली दावेदार के मुक़ाबले पर पर्याप्त नहीं हो सकते। गालियां निकालना और किसी को अपवित्र और पापी तथा पथभ्रष्ट लिखना और शब्दकोश की पुस्तकों में जितने असभ्य शब्द दर्ज हैं अपने लेखों को उन से विभूषित करना, ज्ञान और सभ्यता को बट्टा लगाना है।

उलेमा-ए-रब्बानी का काम यह है कि तर्क एवं प्रमाण से अपने दृष्टिकोणों को शक्ति दें। फिर न्यायप्रिय स्वभावों पर उनका बुद्धिसंगत होना व्यक्त करें। दर्शकगण सत्य और असत्य में स्वयं अन्तर रखेंगे।

अब मैं जनाब मौलवी साहिब की सेवा में निवेदन करता हूँ। जनाब मन! आपका सम्बोधनकर्ता एक इमामत का दावेदार है। यद्यपि आप उसको झूठा और मुफ़तरी समझते हैं। इसलिए उसकी मान्यताओं से उसे खामोश करना अनिवार्य है। तफ़्सीर बग़ानी और तिब्रानी अबू नईम इत्यादि का हवाला देना या उनकी ग़लत रिवायतें प्रस्तुत करना एक इमामत के मुद्दई के सामने जिसका दावा हो कि मैं हकम होकर पवित्र क़ुर्आन और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए दुनिया में आया हूँ, अपने ऊपर मूर्खता का आरोप क़ायम करने से अधिक परिणामदायक नहीं हो सकता। वह न हनफ़ी है, न शाफ़िई, न मलिकी, न हंबली और न जाफ़री, न मुक़ल्लद, न अहले हदीस। फिर आप हनफ़ियों या शफ़िइयों या मालिकियों इत्यादि के उलेमा या मुफ़स्सिरों के कथनों को प्रस्तुत

होने के कारण था बहुत ही तुच्छ बना दिया है तो फिर उनको इतना आकाश पर चढ़ाना कि वह जनाब पैग़म्बर-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी श्रेष्ठ हैं, यह तो पवित्र क़ुर्आन पर भी प्रथमिकता है। हर एक बड़ाई वह देनी चाहिए जो क़ुर्आन से सिद्ध है। क़ुर्आन तो उनके पुत्र होने का भी इन्कार करता है। परन्तु यहां शिया महानुभाव समस्त नबियों का शफी उन्हीं को ठहराते हैं। यह कैसी व्यर्थ

शेष हाशिया - करके उसको दोषी कैसे कर सकते हैं। यदि वह उन कथनों का पाबन्द हो तो वास्तव में इमामत का पद उसके लिए योग्य नहीं है। वह दावा करता है कि मैं इस समय का हकम हूँ। बग़ानी हो या तिबरानी उनमें अपने मुफ़स्सिरों (व्याख्याकारों) को अपने दृष्टिकोणों का भण्डार होगा या कुछ और। यदि आप कहें कि क़ुर्आन की कफ़्सीर है तो हम कहेंगे कि फिर इतनी विभिन्न कथनों वाली तफ़्सीर जिनकी संख्या हज़ारों से बढ़ गई है क्यों प्रकाशित हुई हैं और उनमें मतभेद ही क्यों हुआ और हज़रत महदी आख़िरुज़्ज़मान (अन्तिम युग का महदी) के बारे में आपकी मान्यताओं में दर्ज नहीं कि वह **मतभेदों का निवारण** करने के लिए आएंगे और सब धर्मों को **एक धर्म** बना देंगे। क्या जब इमाम महदी पधारेंगे बिना उपदेश और बिना नसीहत और बिना परिवर्तन किए धर्म स्वयं एक हो जाएगा या कुछ संशोधन तथा निरस्त भी करेंगे या नहीं? क्या वह प्रकट होकर करबला के धर्मशास्त्रियों के फ़त्वे पर चलेंगे या नजफ या ईरान या लखनऊ तथा लाहौर के उलमा के फ़त्वों पर चलेंगे? बताएं वह किस आलिम का अनुकरण करेंगे और किसके फ़त्वे का पालन करेंगे। नहीं मैं भूल गया वह अवश्य आप के फ़त्वे पर चलेंगे। परन्तु अफ़सोस आप यह भी न मानेंगे। फिर जो इमाम होता है वह किसी का अनुयायी नहीं होता अपितु वह स्वयं हकम होता है उसके मुक़ाबले मे तफ़सीर बग़ानी और नबुव्वत के तर्कों का संदर्भ देना क्या कोई विवेकवान स्वभाव इसको वैध रख सकता है? हाँ उसकी मान्यताएँ पवित्र क़ुर्आन और सुन्नत हैं। मैं बहुत प्रसन्न होता कि जब आपने सूरह अन्आम⁕ की आयत -

يَاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا ۔۔۔ الخ

प्रस्तुत की थी उसकी तफ़्सीर में पवित्र क़ुर्आन से ही सिद्ध किया होता है कि वसील: शब्द से जो उपरोक्त कथित आयत में है हुसैन और उसके बाप-दादा अभिप्राय हैं और अपने दावे को दृढ़ करने के लिए बुख़ारी या मुस्लिम की कोई हदीस प्रस्तुत की होती जो इमामत के मुद्दई की मान्य पुस्तकों से हैं या थोड़े क्रोध को टाल कर अपनी ही तफ़्सीरों की ओर ध्यान किया होता कि वे क्या कहती हैं। जहाँ तक मैं अपनी तफ़्सीरों को देखता हूँ उनमें भी

⁕**हाशिए का हाशिया -** मौलवी साहिक के लेख के अनुसार हम ने सूरतुल अन्आम लिखा है अन्यथा कथित आयत सूरह माइद: में है। इसी से

बात है। यह कथन शर्म से कितना दूर है कि समस्त अंबिया अलैहिस्सलाम इमाम हुसैन के ही आश्रित हैं। यदि वह न होते तो समस्त नबियों का मुक्ति पाना दुष्कर अपितु असंभव था। हाय अफ़सोस! कहां है इन लोगों का इस्लाम जो ईसाइयों के समान हुसैन के लिए उस रसूल को भी गालियां दे रहे हैं जो सब नबियों से श्रेष्ठ हैं। क्या आश्चर्य नहीं कि क़ुर्आन अबू बक्र की प्रशंसा करे और उसकी

शेष हाशिया - इस आयत की तफ़्सीर में विभिन्न कथन हैं। एक व्यक्ति बैहकी, हाकिम और अबू नईम का हवाला देता है और एक रिवायत या घटना वर्णन करता है। दूसरा उसके मुक़ाबले पर पवित्र क़ुर्आन से निकालकर ख़ुदा का कलाम प्रस्तुत करता है तथा अपने दावे के लिए सही सुन्नत और हदीस प्रस्तुत करता है। हम किसको मानें तथा किस को जानें कि वह क़ुर्आन का आलिम और आमिल है। इसके आगे फ़रमाते हैं। प्रमाणित है कि हुसैन और उसके पवित्र बाप-दादों को अंबिया तथा औसिया ने बड़े कष्ट के समय ख़ुदा और अपन मध्य वसील: ठहराया है जिसके कारण उनकी आवश्यकताएं पूरी हुईं। आप अपने गुमान की बुनियाद मुजाहिद, तिबरानी और हाकिम इत्यादि का कथन ठहराते हैं और आयत-

فَتَلَقّٰۤی اٰدَمُ مِنۡ رَّبِّہٖ کَلِمٰتٍ (अल बक़र: - 2/38)

को अपने गुमान की तफ़्सीर बताते हैं जैसे आप का कथन संक्षिप्त था जो पहले से किसी आकाशीय किताब में दर्ज चला आता था। क़ुर्आन ने उसकी व्याख्या कर दी है।

بریں علم و دانش بباید گریست

(अनुवाद - ऐसे ज्ञान और समझ पर रोना आता है।)

इसी बारीक समझ के भरोसे पर अपने विरोधी पर कटाक्ष करते हैं। थोड़ा इन्साफ करें और अपनी ही पुस्तकों को देखें कि क्या उलेमा और इमामिया मुफस्सिरों ने क़लिमात की व्याख्या में केवल इन्हीं मुबारक नामों पर तफ़्सीर का आधार रखा है। मेरे पास इस समय इमामिया की तीन तफ़्सीरें मौजूद हैं- तफ़्सीर उम्दतुल बयान, ख़ुलासतुलमन्हज, मज्मउल बयान। इनसे बहुत से कथन दर्ज हैं। फिर हयातुलक़ुलूब निकाल कर जिल्द-1, पृष्ठ 56, 57 में विभिन्न रिवायतों का हाल देखें कि कितने कथन नक़ल किये गये हैं और प्रत्येक को मज्लिसी अल्लाम: ने लिखा है कि सही सनद के साथ इमाम मुहम्मद बाक़िर से नकल किया है और दूसरी विश्वसनीय हदीस सही सनद के साथ हज़रत सादिक़ से नक़ल की गई है इत्यादि इत्यादि करके लिखा है। फिर मौलाना साहिब जब आप के घर में ही बहुत सी विभिन्न रिवायतें हैं तो मेरे मेहरबान आप ने कलिमातिन की तफ़सीर में जज़्म किस प्रकार कर लिया कि इस से अभिप्राय पंचतन पाक हैं और फिर उस पर सर्वसम्मति (متفق علیہ) का वाक्य जड़ दिया। इसमें तो उलेमा तथा इमामिया मुफ़स्सिर ही सहमत नहीं औरों का तो ज़िक्र

ख़िलाफ़त की स्पष्ट शब्दों में ख़ुशख़बरी दे, परन्तु हुसैन जो सब नबियों का शफ़ी है उसका सम्पूर्ण क़ुर्आन में ज़िक्र नहीं। फिर विचित्र यह बात है कि हुसैन को यह सम्मान भी प्राप्त नहीं हुआ कि वह मृत्योपरान्त आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र के पास दफ़्न किया जाता परन्तु अबू बक्र और उमर जिनको शिया हज़रात काफ़िर कहते हैं अपितु समस्त काफ़िरों से अधिक बुरा समझते हैं

शेष हाशिया - क्या। इससे आगे आप लिखते हैं कि तिहत्तर फ़िर्क़ों की सर्वसम्मत हदीसों से यही सिद्ध है कि हज़रत नूह[अ०] ने तूफान के समय और हज़रत इब्राहीम ने........ अन्त तक। थोड़ी मेहरबानी करके तिहत्तर फ़िर्कों की सहमति का जो आप जनाब ने दावा किया है प्रत्येक धर्म वाले की एक-एक हदीस इस विषय के बारे में दर्ज करें और हम आप की उन प्रस्तुत की हुई हदीसों में हदीसों के नियमों के अनुसार जिरह भी न करेंगे चाहे वे कमज़ोर ही क्यों न हों। केवल फ़िर्के वाले का नाम और हदीस के वे अरबी शब्द जो रावियों के साथ लिखे गए हों। पुस्तकों के हवाले के साथ जिसमें वह हदीस नक़ल की गई है, प्रस्तुत करें। फिर मैं असल मतलब की ओर लौट कर आप से पूछता हूँ कि आप पुस्तक के सर पर यह इबारत दर्ज करते हैं जिसके शब्द ये है:- (इसके रद्द में और इमाम हुसैन की श्रेष्ठता मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त सब नबियों पर)

(1)- इन शब्दों के सबूत में आप ने ख़ुदा का कौन सा कथन ज़िक्र किया है जहां अल्लाह तआला ने फरमाया हो कि इमाम हुसैन अधिक श्रेष्ठ हैं समस्त नबियों से, संक्षिप्त तौर पर अलग-अलग नबियों के नाम का वर्णन करके।

(2)- किसी सही हदीस में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हो कि हुसैन समस्त नबियों से अधिक श्रेष्ठ हैं।

(3)- इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने स्वयं फ़रमाया हो कि मैं समस्त नबियों से अधिक श्रेष्ठ हूँ सिवाए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ।

(4)- शेष अहले बैत के इमामों में से किसी इमाम ने फ़रमाया हो कि इमाम हुसैन पहले नबियों से अधिक श्रेष्ठ हैं सिवाए रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के।

अब हम आप का तर्कशास्त्रीय सबूत देखते हैं कि आपने कहां तर्कशास्त्र का सुग़्रा और कुब्रा क़ाइम करके इसका सबूत दिया है। हां (बुद्धिमान के लिए इशारा काफी होता है) चूंकि समस्त नबियों ने हज़रत हुसैन अलैहिस्सलाम और उनके बाप-दादा को अपनी दुआओं का वसील: गिना है। नोट:- (इसका सबूत अभी आपके ज़िम्मे शेष है) और उसी के द्वारा उनकी दुआएं स्वीकार हुईं। इसलिए जिसका वसील: डाला जाता है और उसके कारण अंबिया अलैहिस्सलाम की दुआएं स्वीकार होती हैं वह वसील: ख़ुदा के नज़दीक

उनको यह पद मिला कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ऐसे संलग्न होकर दफ़्न किए गए कि मानो एक ही कब्र है। यदि वे काफ़िर थे तो ख़ुदा ने ऐसा क्यों किया काफ़िर से अधिक बुरा दुनिया में कोई नहीं होता। क्या कोई शिया सहमत हो सकता है कि उसकी पाकदामन मां एक व्यभिचारिणी वैश्या के साथ दफ़्न कर दी जाए और काफ़िर तो व्यभिचारी से निकृष्टतम है। फिर ख़ुदा ने ऐसा

शेष हाशिया - अवश्य अधिक श्रेष्ठ होता है अन्यथा अंबिया अलैहिस्सलाम उसको वसील: न गिनते। यह है आपकी अनोखी मन्तिक और घिसा-पिटा इल्म कलाम। उदाहरण के तौर पर यदि कोई हकीम एक रोगी को एक नुस्ख़ा बता दे कि यदि तुम यह नुस्ख़ा इस्तेमाल करो तो तुम अच्छे हो जाओगे और तुम्हारा रोग समाप्त हो जाएगा और ऐसा संयोग भी हो जाए कि वह रोगी अच्छा हो जाए तो कोई बुद्धिमान इससे यह परिणाम निकालेगा कि वह नुस्ख़ा अधिक श्रेष्ठ है रोगी से? आश्चर्य है कि जिस आरोप पर आपने अपने विरोधी को कोसा कि हुसैन से स्वयं को अधिक श्रेष्ठ बताते हैं स्वयं इसमें लिप्त हो गए कि स्वयं हुसैन की श्रेष्ठता समस्त नबियों पर सिद्ध करने लगे। फिर दावा तो इतना परन्तु प्रमाण नहीं। आपको चाहिए था कि श्रेष्ठता की वे श्रेणियां लिखते कि इन-इन बातों से हुसैन अलैहिस्सलाम की श्रेष्ठता सिद्ध होती है। जैसा कि उलेमा-ए-इमामिया ने हज़रत अली अलैहिस्सलाम की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए शेष सहाबा के मुकाबले पर श्रेष्ठता की श्रेणियां क़ायम की हैं। आपको चाहिए था कि (उदाहरणतया) लिखते कि मज़लूम हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम इबादत करने वाले थे और इसके मुक़ाबले पर हज़रत आदम या हज़रत नूह की इबादत उनसे बहुत कम थी या हज़रत हुसैन धैर्यवान और कृतज्ञ थे और इसके मुक़ाबले पर अन्य अमुक-अमुक नबियों में धैर्य और कृतज्ञता कम थी और इस कमी को उस तराज़ू में भी तोलते जो आपके पास है इत्यादि-इत्यादि। जब इस प्रकार या इस जैसे आपके विचार के अनुसार श्रेष्ठता का कारण ठहर सकते हों समस्त श्रेणियां तथा श्रेष्ठता के सिद्धांत शेष समस्त नबियों के मुक़ाबले में आप वर्णन करते और उनको (क़ुर्आन के) स्पष्ट आदेश या हदीस सही, निरन्तरता तथा क़ौमी आचार-व्यवहार से भी पुख़्ता करते तब अहले हक़ पर प्रकट हो जाता कि वास्तव में इमाम हुसैन अधिक श्रेष्ठ हैं अन्य नबियों से यह ख़ुश्क़ मन्तिक़ कि चूंकि पहले अंबिया ने हुसैन को अपनी दुआओं का वसील: गिना है। प्रथम तो आप क़ुर्आन से सिद्ध करें कि वास्तव में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने हुसैन का नाम लेकर उनको वसील: बनाया था। उस समय हुसैन कहाँ था, नाम लिखा हुआ देखा, कहां ज़िक्र है क़ुर्आन में? कि हज़रत आदम ने अर्श के पाए पर पंजतन के नाम लिखे हुए देखे। कहां ज़िक्र है कि आदम ने देखकर समझ भी लिया कि यह हुसैन या पंजतन पाक मुझ से छ: हज़ार वर्ष बाद पैदा होंगे, किसने उनके

क्यों किया? कोई बुद्धिमान और ख़ुदा से डरने वाला इसका उत्तर दे। इसलिए हुसैन को नबियों पर श्रेष्ठता देना व्यर्थ विचार है। हाँ यह सच है कि वह भी ख़ुदा के ईमानदार बन्दों में से थे। परन्तु ऐसे बन्दे तो दुनिया में करोड़ों गुज़र चुके हैं और ख़ुदा जाने आगे कितने होंगे। अत: अकारण उनको समस्त नबियों का सरदार बना देना ख़ुदा के पवित्र रसूलों का घोर अपमान करना है। ऐसा ही ख़ुदा ताआला ने

शेष हाशिया - हृदय में डाला और इल्हाम करने का ज़िक्र क़ुर्आन में कहां है? पवित्र क़ुर्आन में तो स्पष्ट है और अपने अन्दर एक उत्तम बयान अन्दर रखता है। देखो जहां नामों की शिक्षा का ज़िक्र है वहां अल्लाह तआला ने स्पष्ट फरमा दिया है कि

وَ عَلَّمَ اٰدَمَ الۡاَسۡمَآءَ کُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمۡ عَلَی الۡمَلٰٓئِکَةِ ۙ فَقَالَ اَنۡۢبِـُٔوۡنِیۡ بِاَسۡمَآءِ هٰۤؤُلَآءِ

(अलबक़रह- 2/32)

قَالَ یٰۤاٰدَمُ اَنۡۢبِئۡهُمۡ بِاَسۡمَآئِهِمۡ ۚ فَلَمَّاۤ اَنۡۢبَاَهُمۡ بِاَسۡمَآئِهِمۡ (अलबक़रह- 2/34)

परन्तु यहाँ तो -

فَتَلَقّٰۤی اٰدَمُ مِنۡ رَّبِّهٖ کَلِمٰتٍ (अलबक़रह- 2/38)

साफ़ है। दूसरे स्थान पर अर्थात् हज़रत आदम के क़िस्से में पवित्र क़ुर्आन ने कलिमात की व्याख्या कर दी है। सूरह आराफ़ -

رَبَّنَا ظَلَمۡنَاۤ اَنۡفُسَنَا (अल आराफ़- 24)

अब जिस की व्याख्या स्वयं क़ुर्आन ने कर दी हो न संकेत और इशारा के तौर पर अपितु साफ शब्दों में। और कुछ भ्रम और संदेह भी शेष न रहता हो। फिर ऐसे उचित क़ुर्आनी तर्क को त्याग कर आप के या बग़ानी के ग़ुमान का अनुकरण कौन बुद्धिमान कर सकता है?

(मियां) सय्यद अली हम्दानी और तिबरानी ने अपनी-अपनी पुस्तकों में लिखा है। हे ज्ञान और अनुसंधान के मुद्दई! क्या ये लोग मासूम थे कि जो कुछ उन्होंने अपनी-अपनी पुस्तकों में लिखा है ग्रहण करने के योग्य है या उन पर वह्यी उतरी थी या हज़रत आदम स्वप्न में आकर उन को बता गए थे कि इब्तिला के समय मैंने ये नाम लिए थे-

(اَ کُنۡتُمۡ شُهَدَآءَ اَمۡ عَلَی اللّٰهِ تَفۡتَرُوۡنَ)

वे सैकड़ों वर्षों के पश्चात् आने वाले युग में होकर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हदीस नक़ल करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा-ऐसा फ़रमाया है और उदाहृत रिवायत जिसके सही होने का कोई मापदण्ड उनके पास नहीं, अपनी-अपनी पुस्तकों में लिख दी। सुनिये ख़ुदा के रसूल ने तो यह भी फ़रमाया है कि मेरे बाद बहुत से कज़्ज़ाब (झूठे) पैदा होंगे और मेरे नाम से झूठी हदीसें रिवायत करेंगे अत: तुम पर

और उसके पवित्र रसूल ने भी मसीह मौऊद का नाम नबी और रसूल रखा है और ख़ुदा तआला के समस्त नबियों ने उसकी प्रशंसा की है और उसको **समस्त नबियों** की कामिल विशेषताओं का **द्योतक**✷ ठहराया है। अब विचार करने योग्य है कि इमाम हुसैन को इस से क्या निस्बत है यह और बात है कि सुन्नी या शिया मुझको गालियां दें या मेरा नाम कज़्ज़ाब, दज्जाल, बेईमान रखें परन्तु जिस व्यक्ति को ख़ुदा तआला प्रतिभा प्रदान करेगा वह मुझे पहचान लेगा कि मैं

शेष हाशिया - अनिवार्य है कि उस समय हदीस को अल्लाह की किताब (क़ुर्आन) की कसौटी पर परखो यदि अनुकूल हो तो ले लो अन्यथा छोड़ दो। फिर हम इस कसौटी के बिना किसी हदीस को कैसे सही समझ सकते हैं जब कि स्वयं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हदीस के सही होने का मापदण्ड बता दिया है और मौलाना साहिब ने भी इस हदीस को अपनी किसी पुस्तक में वर्णन किया हुआ है। अत: यह बात कि जो हदीस किसी पुस्तक में लिखी हो वह वास्तव में रसूल की हदीस होगी बात मान्य न रही, अपितु जो हदीस ख़ुदा की किताब के अनुसार होगी वही रसूल की हदीस होगी। देखें 'उसूले काफी' किताबुल इल्म इमाम जाफ़र अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

وماوافق کتاب اللہ فخذوہ وما خالف فدعوہ کل حدیث لا یوافق کتاب اللہ فھو زخرف

(अनुवाद -जो अल्लाह की किताब के अनुकूल हो उसको ले लो और जो विरुद्ध हो उसको छोड़ दो। हर वह हदीस जो अल्लाह की किताब के विरुद्ध हो वह झूठी है अनुवादक)

'उसूले काफ़ी' की प्रस्तावना में ही देखें कि हमारे शेखुल मुहद्दिसीन अपने शियों की हदीसों के बारे में क्या लिखते हैं। इस पर आश्चर्य यह कि आप तो उन उलेमा पर जितनी रिवायतें आपने प्रस्तुत की हैं, गालियाँ देते हैं फिर उनसे प्रमाण ग्रहण करना क्या मायने रखता है? दो हालतों से खाली नहीं। या तो आप मिर्ज़ा साहिब के सिद्धान्त से पूर्णतया अपरिचित हैं या पब्लिक को धोखा देते हैं। अब अन्तिम फैसला भी थोड़ा सुन लें। 'गायतुलमक़सूद' भाग प्रथम, पृष्ठ-10 पंक्ति-9 देखें। जनाब मौलाना साहिब ने स्वयं स्वीकार कर लिया है कि (नुबुव्वत निश्चित तौर पर इमामत से अफ़ज़ल है) इस स्थान पर इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम स्वयं वास्तव में इमाम थे उनके बारे में कोई अपवाद वर्णन नहीं किया गया। फिर यह बात किस प्रकार कही जाती है कि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम श्रेष्ठ हैं सब नबियों से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बग़ैर।

ख़ाकसार-नज़रअली पेशावर से 1902 ई. समाप्त

✷अली हायरी साहिब ने अपनी पुस्तक "तब्सिरतुलउक़ला" में इस बात पर भी ज़ोर दिया है कि अहले बैत के बराबर ग़ैर अहले बैत नहीं हो सकता। इसका संक्षिप्त उत्तर यह है कि सादात की जड़ ही है कि वे बनी फ़ातिमा हैं। अत: मैं यद्यपि अलवी तो नहीं हूँ परन्तु बनी फ़ातिमा में से हूँ।

मसीह मौऊद हूँ और वही हूँ जिसका नाम नबियों के सरदार ने '**नबिउल्लाह**' रखा है और उसको **सलाम** कहा है। और उसको अपना दूसरा बाज़ू ठहराया है तथा **ख़ातमुल ख़ुलफ़ा** कहा है। वह मुझे उसी प्रकार श्रेष्ठ समझेगा जिस प्रकार ख़ुदा और रसूल ने मुझे श्रेष्टता दी है। क्या ये सच नहीं है कि क़ुर्आन और हदीसों तथा समस्त नबियों की गवाही से मसीह मौऊद हुसैन से अधिक श्रेष्ठ हैं और विभिन्न ख़ूबियों का संग्रहीता हैं। फिर यदि वास्तव में मैं वही मसीह मौऊद हूँ तो स्वयं सोच लो कि हुसैन के मुक़ाबले पर मुझे क्या श्रेणी देना चाहिए और यदि मैं वह नहीं हूँ तो ख़ुदा ने सैकड़ों निशान क्यों दिखाए और क्यों वह हर दम मेरी सहायता में खड़ा है।

किताब सैफ़े चिश्तियाई

यह पुस्तक मुझ को प्रथम जुलाई 1902 ई. को डाक द्वारा मिली है जिसको

शेष हाशिया- मेरी कुछ दादियां प्रसिद्ध और सही नसब सादात में से थीं। हमारे ख़ानदान में यह पद्धति जारी रही है कि कभी सादात की लड़कियां हमारे ख़ानदान में आईं और कभी हमारे ख़ानदान की लड़कियां उनके गईं। इसके अतिरिक्त यह श्रेष्ठता की श्रेणी जो हमारे ख़ानदान को प्राप्त है केवल इन्सानी रिवायतों तक सीमित नहीं अपितु ख़ुदा ने अपनी पवित्र वह्यी से इसकी पुष्टि की है। अतः वह ख़ुदा अपनी एक वह्यी में जो हिकायतन अनिर्रसूल है मेरा नाम सलमान रखता है और फ़रमाता है

سَلْمَانُ مِنَّا اَهْلَ الْبَيْتِ عَلٰى مشرب الحسن

अर्थात् अल्लाह तआला खबर देता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि सलमान जो दो सलम का कारण होगा अर्थात् दो सुलह का कारण होगा वही व्यक्ति है और यह अहले बैत में से है हसन के मश्रब पर। फिर एक अन्य वह्यी में फ़रमाता है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الصِّهْرَ وَ النسب

उस ख़ुदा की प्रशंसा है जिसने तुम्हें सादात का दामाद बनाया और ऊंचा नस्ब भी प्रदान किया जिसमें फ़ातिमी ख़ून मिला हुआ है। और फ़िर एक कश्फ में जो बराहीन अहमदिया में दर्ज है मुझ पर प्रकट किया गया कि मेरा सर बेटों के समान हज़रत फ़ातिमा[रज़ि] की रान पर है। इसके अतिरिक्त जिस व्यक्ति को ख़ुदा ने मसीह मौऊद बनाया और सैंकड़ों निशान दिये और उसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अहले बैत के इमामों में से ठहराया तथा उसे समस्त नबियों की विशेषताओं का द्योतक ठहराया, उसके बारे में ये गालियां देना ख़ुदा और रसूल पर आक्रमण करना है। इसी से।

पीर मेहर अली शाह गोलड़वी ने शायद इस उद्देश्य से भेजा है ताकि वह इस बात से सूचित करें कि उन्होंने मेरी पुस्तक 'एजाज़ुल मसीह' और शम्स बाज़िग़ः का उत्तर **लिख** दिया है। और इस पुस्तक के पहुँचने से पहले ही मुझे यह सूचना पहुंच चुकी थी कि एजाज़ुल मसीह के मुक़ाबले पर वह एक पुस्तक लिख रहे हैं परन्तु मुझे यह आशा न थी कि वह मेरी अरबी पुस्तक का उत्तर उर्दू में लिखेंगे अपितु मुझे यह ख़याल था कि चूंकि अधिकतर समझदार लोगों ने पीर साहिब को इस छलपूर्ण कार्रवाई को पसन्द नहीं किया जो उन्होंने लाहौर में की थी।★ इसलिए उपरोक्त लज्जा का दाग़ धोने के लिए उन्होंने अवश्य यह इरादा किया होगा कि मेरे मुकाबले पर तफ़्सीर लिखने के लिए कुछ प्रयास करें और मेरी पुस्तक ऐजाज़ुल मसीह के समान सूरह फ़ातिहा की तफ़्सीर सरस, सुबोध अरबी में

★**हाशिया :-** लाहौर में जो एक लज्जाजनक कार्यवाई पीर मेहर अली शाह साहिब से हुई वह यह थी कि उन्होंने एक छलपूर्ण बहाने बाज़ी करके उस मुक़ाबले से इन्कार कर दिया जिस को वह पहले स्वीकार कर चुके थे। उसका विवरण यह है कि जब मेरी ओर से निरन्तर दुनिया में विज्ञापन प्रकाशित हुए कि ख़ुदा तआला की सहायता वाले निशानों में से एक यह निशान भी मुझे दिया गया है कि मैं सरस, सुबोध अरबी में पवित्र क़ुर्आन की किसी सूरह की तफ़्सीर लिख सकता हूँ और मुझे ख़ुदा तआला की ओर से ज्ञान दिया गया है कि मेरे मुक़ाबले पर आमने-सामने बैठ कर कोई दूसरा व्यक्ति चाहे वह कोई मौलवी या कोई फ़क़ीर गद्दी नशीन ऐसी तफ़्सीर कदापि नहीं लिख सकेगा और इस मुक़ाबले के लिए कथित मौलवी साहिब को भी बुलाया गया ताकि यदि वह सच पर हैं तो ऐसी तफ़्सीर सामने बैठकर लिखने से अपना चमत्कार दिखाएं या हमारे दावे को स्वीकार करें। तो पहले तो पीर जी ने दूर बैठे यह डींग मार दी कि इस निशान का मुक़ाबला मैं करूंगा, परन्तु इसके बाद उनको मेरे बारे में प्रचुर मात्रा में रिवायतें पहुंचीं कि इस व्यक्ति की क़लम अरबी लिखने में दरिया के समान चल रही है और पंजाब और हिन्दुस्तान के समस्त मौलवी डरकर मुक़ाबले से अलग हो गए हैं। तब उस समय पीर जी को सूझी कि हम बेमौक़ा फंस गए। अन्ततः मशहूर कहावत- मरता क्या न करता इन्कार के लिए यह योजना बनाई कि एक विज्ञापन प्रकाशित कर दिया कि हम सामने बैठकर तफ़्सीर लिखने के लिए तैयार तो हैं परन्तु हमारी ओर से यह शर्त आवश्यक है कि तफ़्सीर लिखने से पहले आस्थाओं पर बहस हो जाए कि किस की आस्थाएं सही, मान्य और तार्किक हैं। और मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी कि जो मसीह के नुज़ूल (उतरने) में उन्हीं के समान आस्था रखते हैं इस निर्णय के लिए जज नियुक्त किए जाएं। फिर यदि कथित मौलवी साहिब यह कह दें कि पीर जी की आस्थाएं सही हैं

प्रकाशित कर दें ताकि लोग विश्वास कर लें कि पीर जी अरबी भी जानते हैं और तफ़्सीर भी लिख सकते हैं परन्तु अफसोस कि मेरा यह विचार सही न निकला जब उनकी पुस्तक सैफ़े चिश्तियाई मुझे मिली तो पहले तो उस पुस्तक को हाथ में लेकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि अब हम उनकी अरबी तफ़्सीर देखेंगे और उसके मुक़ाबले पर हमारी तफ़्सीर की कद्र और महत्त्व लोगों पर और भी खुल जाएगा। परन्तु जब पुस्तक को देखा गया और उसको उर्दू भाषा में लिखा हुआ पाया और तफ़्सीर का नामोनिशान न था तब तो सहसा उनकी हालत पर रोना आया। यह पुस्तक यद्यपि इस योग्य न थी कि उसको एक नज़र भी देख सकें, क्योंकि पुस्तक के लेखक ने मुकाबले पर यथायोग्य अरबी तफ़्सीर लिख कर अपनी चमत्कारपूर्ण शक्ति का कुछ सबूत नहीं दिया और जिस कर्तव्य को अदा करना था वह इतनी लम्बी अवधि में भी उसे अदा नहीं कर सका। अपितु मुक़ाबले से मुंह फेर कर अपनी असमर्थता के बारे में अपने हाथ से **मुहर** लगा दी★ और स्वयं गवाही दे दी कि वास्तव में ऐजाज़ुल मसीह ख़ुदा की ओर से एक निशान है जिसके उदाहरण पर वह समर्थ न हो सका। तथापि मैंने उस उर्दू पुस्तक को ध्यानपूर्वक देखा तो मालूम हुआ कि व्यर्थ मीनमेख के अतिरिक्त कोई बात भी उसमें ध्यान देने योग्य नहीं और मीन-मेख भी ऐसी कमीनेपन और मूर्खता की कि यदि उसको एक वैध आरोप समझा जाए तो न उससे पवित्र क़ुर्आन बाहर रह

शेष हाशिया - और मसीह इब्ने मरयम के बारे में जो कुछ उन्होंने समझा है वही ठीक है तो तुरन्त उसी जल्से में यह लेखक उनकी बैअत करे और उनके सेवकों तथा मुरीदों में दाखिल हो जाए। और फिर तफ़्सीर लिखने में भी मुक़ाबला किया जाए। यह विज्ञापन ऐसा न था कि उसका छल और कपट लोगों पर खुल न सके। अन्ततः बुद्धिमान लोगों ने ताड़ लिया कि इस व्यक्ति ने एक लज्जाजनक योजना के द्वारा इन्कार कर दिया। इस का परिणाम यह हुआ कि इसके बाद बहुत से लोगों ने मेरी बैअत की और स्वयं उनके कुछ मुरीद भी उनसे विमुख होकर बैअत में दाखिल हुए। यहां तक कि सत्तर हज़ार के लगभग बैअत कर्ताओं की संख्या पहुंच गई। और मौलवियों, पीरज़ादों और गद्दीनशीनों की वास्तविकता लोगों पर खुल गई कि वे ऐसी कार्रवाइयों से सच को टालना चाहते हैं। इसी से।

★मानो उनका नाम मेहर नहीं है अपितु मुहर अली है क्योंकि वह अपने असमर्थ और निरुत्तर होने से पुस्तक ऐजाज़ुल मसीह के चमत्कार पर मुहर लगाते हैं। इसी से।

सकता है और न नबवी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) हदीसें और न साहित्यिक पुस्तकों में कोई पुस्तक।

अब मीन-मेख को ध्यानपूर्वक सुनो कि पीर साहिब फरमाते हैं कि इस पुस्तक ऐजाज़ुल मसीह में जो दो सौ पृष्ठ की पुस्तक है। कुछ वाक्य जो इकट्ठा करने की हालत में चार पंक्तियों से अधिक नहीं हैं, उनमें से कुछ स्थान हरीरी तथा कुछ पवित्र क़ुर्आन से और कुछ किसी अन्य पुस्तक से चोरी किए हैं और कुछ तफ़्सीर परिवर्तित करके लिखे गए हैं तथा कुछ अरब की प्रसिद्ध मिसालों में से हैं। यह हमारी चोरी हुई जो पीर साहिब ने पकड़ी कि "हज़ार वाक्यों में से दस-बारह वाक्य जिन में से कोई आयत पवित्र क़ुर्आन की और कोई अरब की मिसाल और कोई उनके कथनानुसार हरीरी या हम्दानी के किसी वाक्य से भावसौम्य था। अफ़सोस कि उनको यह ऐतराज़ करते हुए थोड़ी सी शर्म नहीं आई और तनिक नहीं सोचा कि यदि इन थोड़े और दो-चार वाक्यों को भावसाम्य न समझा जाए जैसा कि साहित्यकारों के क़लम में हुआ करता है। और यह सोचा जाए कि कुछ वाक्य बतौर वक्तव्य के लिए लिखे गए हैं तो इसमें कौन सा ऐतराज़ पैदा हो सकता है। स्वयं हरीरी की पुस्तक में कुछ क़ुर्आन की आयतें बतौर वक्तव्य मौजूद हैं। ऐसा ही कुछ इबारतें और अश्आर दूसरों के बिना परिवर्तन किए उसमें पाए जाते हैं और उसमें कुछ इबारतें अबुलफ़ज़्ल बदीउज़्ज़मान की हूबहू मिलती हैं तो क्या अब यह राय व्यक्त की जाए कि मक़ामाते हरीरी सब की सब चुराई हुई है। अपितु कुछ ने तो अबुल क़ासिम हरीरी पर यहां तक कुधारण की है कि उसकी सम्पूर्ण पुस्तक ही किसी अन्य की लिखी हुई ठहराई है। और कुछ कहते हैं कि वह एक बार गद्य की कला में कामिल समझ कर एक अमीर के पास प्रस्तुत किया गया और परीक्षा के तौर पर आदेश हुआ कि एक अभिव्यक्ति को सरस-सबोध अरबी में लिखें। परन्तु वह लिख न सका और यह बात उसके लिए बड़ी लज्जा का कारण हुई। परन्तु फिर भी उसकी साहित्यकारों में बड़ी श्रेष्ठता के साथ गणना की गई। और उसकी मक़ामाते हरीरी बड़े सम्मान के साथ देखी जाती है हालांकि वह किसी धार्मिक या ज्ञान संबंधी सेवा के लिए काम नहीं आ सकती क्योंकि हरीरी इस बात पर समर्थ नहीं हो सका कि किसी सच्चे और वास्तविक क़िस्से या आत्मज्ञानों एवं वास्तविकताओं के रहस्यों

को सरस, सुबोध इबारत में लिख कर यह सिद्ध करता कि वह शब्दों को अर्थों के अधीन कर सकता। अपितु उसने प्रारंभ से अन्त तक अर्थों को शब्दों के अधीन किया है जिस से सिद्ध हुआ कि वह इस बात पर कदापि समर्थ न था कि सही घटना का सरस-सुबोध अरबी में चित्रण कर सके। इसलिए ऐसा व्यक्ति जिस को अर्थों से मतलब है और आत्म ज्ञानों एवं वास्तविकताओं का वर्णन करना उसका उद्देश्य है वह हरीरी की संकलित की हुई हड्डियों से कोई गूदा प्राप्त नहीं कर सकता। यह और बात है कि किसी के कलाम का संयोग से ख़ुदा तआला की ओर से कुछ वाक्यों में किसी से भाव-साम्य हो जाए। क्योंकि कुछ साहित्यिक मुहावरों का कूचा ऐसा संकीर्ण है कि या तो उसमें कुछ साहित्यकारों का कुछ से भावसाम्य होगा और या एक व्यक्ति एक ऐसे मुहावरे को छोड़ देगा जो प्रयोग करने योग्य है। स्पष्ट है कि जिस स्थान पर सरसता की दृष्टि से उदाहरणतया اقتحم (इक्तहमा) का शब्द ग्रहण करना है न कि कोई अन्य शब्द, तो उस शब्द पर समस्त साहित्यकारों का अवश्य ही भावसाम्य हो जाएगा और प्रत्येक के मुंह से यही शब्द निकलेगा। हां एक अनपढ़ मूर्ख जो बलाग़त की पद्धतियों से अपरिचित और मुफ़रदों के अन्तरों से अनभिज्ञ है वह उसके स्थान पर कोई और शब्द बोल जाएगा और साहित्यकारों के नज़दीक आपत्तिजनक ठहरेगा। ऐसा ही साहित्यकारों को यह संयोग भी हो जाता है कि यद्यपि बीस व्यक्ति एक निबन्ध के ही लिखने वाले हों, जो बीस ही साहित्यकार और सुबोध हों परन्तु कछ परिस्थितियों की अदायगी के वर्णन में एक ही शब्दों और तरकीब के वाक्य पर उनका भावसाम्य हो जाएगा और ये बातें साहित्यकारों के नज़दीक मान्यताओं में से हैं जिन में किसी को आपत्ति नहीं, और यदि ध्यानपूर्वक देखो तो प्रत्येक भाषा का यही हाल है। यदि उर्दू में भी उदारहण के तौर पर एक कुशल वक्ता भाषण देता है और उसमें कहीं उदाहरण लाता है, कहीं दिलचस्प वाक्य वर्णन करता है तो दूसरा वक्ता भी उसी रंग में कह देता है और एक पागल आदमी के अतिरिक्त कोई भी नहीं सोचता कि यह चोरी है। इन्सान तो इन्सान ख़ुदा के कलाम में भी यही पाया जाता है। यदि कुछ सरस वाक्य और उदाहरण जो पवित्र क़ुर्आन में मौजूद हैं असभ्यता के शायरों के क़सीदों में देखे जाएं तो एक लम्बी सूची तैयार होगी और इन बातों को अन्वेषकों ने आपत्तिजनक नहीं समझा, अपितु इसी

उद्देश्य से राशिदीन उलेमा ने जाहिलियत के हज़ारों अश्आर को कंठस्थ कर रखा था और पवित्र क़ुर्आन के सरस-सुबोध होने के लिए उनको बतौर सनद लाते थे।

यहां यह बात भी उल्लेखनीय है कि मैं विशेष तौर पर ख़ुदा तआला के चमत्कार प्रदर्शन को गद्य लेखन के समय भी अपने बारे में देखता हूँ। क्योंकि जब मैं अरबी में या उर्दू में कोई इबारत लिखता हूँ तो मैं महसूस करता हूँ कि कोई अन्दर से मुझे सिखा रहा है। और हमेशा मेरा लेख यद्यपि अरबी हो या उर्दू हो अथवा फारसी दो भागों में विभाजित होता है-

(1)- एक तो यह कि बड़ी आसानी से शब्दों तथा अर्थों का सिलसिला मेरे सामने आता जाता है और मैं उसको लिखता जाता हूँ और यद्यपि उस लेख में मुझे कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती। परन्तु वास्तव में वह सिलसिला मेरी मानसिक शक्ति से कुछ अधिक नहीं होता। अर्थात् शब्द और अर्थ ऐसे होते हैं कि यदि ख़ुदा तआला की एक विशेष रंग में सहायता न होती तब भी उसकी कृपा के साथ संभव था कि उसकी मामूली सहायता की बरकत से जो मानवीय प्रकृति की विशेषताओं का भाग है कुछ कष्ट उठाकर और बहुत सा समय लेकर उन निबंधों को मैं लिख सकता। अल्लाह बेहतर जानता है।

(2)- मेरे लेख का दूसरा भाग केवल विलक्षण★ तौर पर है (अर्थात ख़ुदाई इल्हाम से) और वह यह है कि जब मैं उदाहरणतया एक अरबी इबारत लिखता हूँ और इबारत के सिलसिले में कुछ ऐसे शब्दों की आवश्यकता होती है कि वे मुझे मालूम नहीं है तब उनके बारे में ख़ुदा तआला की वह्यी मार्ग-दर्शन करती है और वह शब्द पढ़ी जाने वाली वह्यी की तरह रूहुल क़ुदूस मेरे हृदय में डालता

★जैसा कि कई बार कुछ रोगों के लिए मुझे कुछ औषधियां वह्यी द्वारा ज्ञात हुई हैं इस के अतिरिक्त कि वे मुझ से पहले जालीनूस की पुस्तक में लिखी गई हैं या बुक़रात की पुस्तक में। ऐसा ही मेरा गद्य लेखन का हाल है। जो इबारतें सहायता के तौर पर मुझे जो ख़ुदा तआला से ज्ञात होती हैं मुझे उनमें कुछ भी परवाह नहीं कि वे किसी अन्य पुस्तक में होंगी, अपितु वे मेरे लिए और प्रत्येक के लिए जो मेरे हाल से परिचित हो, चमत्कार है और यदि किसी के नज़दीक चमत्कार न हो तो उस पर पानी पीना हराम है जब तक सामने बैठकर प्रकाशित शर्तों की पाबन्दी के साथ मुक़ाबला न करे। इसी से।

है और जीभ पर जारी करता है और उस समय मैं अपनी हिस्स (ज्ञानेन्द्रियां) से रहित होता हूँ। उदाहरणतया अरबी के लिखने के सिलसिले में मुझे एक शब्द की आवश्यकता पड़ी जो ठीक-ठीक बिसियारी अयाल (बाल-बच्चों की कसरत) का अनुवाद है और वह मुझे मालूम नहीं और इबारत के सिलसिले में उसकी आवश्यकता है तो तुरन्त हृदय में वह्यी मत्लू की तरह शब्द ضفف (ज़फ़फ़) डाला गया जिसके मायने हैं बिसियारी अयाल या उदाहरणतया लिखने के सिलसिले में मुझे ऐसे शब्द की आवश्यकता हुई जिसके मायने हैं ग़म और ग़ुस्से से चुप हो जाना। और मुझे वह शब्द मालूम नहीं तो तुरन्त दिल पर वह्यी हुई कि وجوم (वजूम) ऐसा ही अरबी वाक्यों का हाल है। अरबी लेखों के समय में सैकड़ों बने बनाए वाक्य वह्यी मत्लू की तरह दिल पर पड़ते हैं और या यह कि कोई फ़रिश्ता एक काग़ज़ पर लिखे हुए वाक्य दिखा देता है और कुछ वाक्य क़ुर्आन की आयत होते हैं या कुछ थोड़े परिवर्तन के साथ उनके समान से। और कभी कुछ समय के पश्चात् पता लगता है कि अमुक अरबी वाक्य जो ख़ुदा तआला की ओर से वह्यी मत्लू के रंग में इल्क़ा हुआ था वह अमुक पुस्तक में मौजूद है। चूंकि प्रत्येक चीज़ का मालिक ख़ुदा है इसलिए वह यह भी अधिकार रखता है कि कोई उत्तम वाक्य किसी पुस्तक का या कोई उत्तम शेर किसी दीवान का बतौर वह्यी मेरे हृदय पर उतारे। यह तो अरबी भाषा के बारे में वर्णन है। किन्तु इससे अधिक आश्चर्य की बात यह है कि मुझे कुछ इल्हाम उन भाषाओं में भी होते हैं जिन से मुझे कुछ भी परिचय नहीं। जैसे अंग्रेज़ी या संस्कृत या इब्रानी इत्यादि। जैसा कि बराहीन अहमदिया में उनका कुछ नमूना लिखा गया है और मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है कि यह आदत अल्लाह तआला की मेरे साथ है और यह निशानों के प्रकार में से एक निशान है जो मुझे दिया गया है जो विभिन्न पद्धतियों में ग़ैबी मामले मुझ पर प्रकट होते रहते हैं तथा मेरे ख़ुदा को इस की कुछ भी परवाह नहीं कि कोई कलिमः जो मुझ पर बतौर वह्यी इल्क़ा हो वह किसी अरबी या अंग्रेज़ी अथवा संस्कृत की पुस्तक में दर्ज हो क्योंकि मेरे लिए वह मात्र ग़ैब (परोक्ष) है जैसा कि अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुर्आन में तौरात के बहुत से क़िस्से वर्णन करके उनको ग़ैब के ज्ञान

में सम्मिलित किया है। क्योंकि वे क़िस्से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए ग़ैब का ज्ञान था यद्यपि यहूदियों के लिये वह ग़ैब न था। अतः यही राज़ है जिसके कारण मैं एक दुनिया को सरस-सुबोध अरबी में तफ़्सीर लिखने के चमत्कार में सामने बुलाता हूँ अन्यथा इन्सान क्या चीज़ और इब्ने आदम की क्या वास्तविकता कि अभिमान और अहंकार से एक दुनिया को अपने मुक़ाबले पर बुलाए। यह विचित्र बात है कि कभी कुछ वाक्यों में ख़ुदा तआला की वह्यी मनुष्यों द्वारा निर्मित व्याकरण के नियमों का बाह्य तौर पर अनुकरण नहीं करती परन्तु मामूली ध्यान देने से अनुकूलता हो सकती है। इसी कारण से कुछ मूर्खों ने पवित्र क़ुर्आन पर भी अपनी कृत्रिम व्याकरण को दृष्टिगत रखकर ऐतराज़ किए हैं। परन्तु ये समस्त ऐतराज़ व्यर्थ हैं। भाषा का व्यापक ज्ञान ख़ुदा को है न कि किसी और को, और भाषा जैसा कि स्थान के परिवर्तन से कुछ परिवर्तित होती है ऐसा ही समय के परिवर्तन से भी परिवर्तित होती रहती हैं। आज कल की अरबी भाषा के यदि मुहावरे देखा जाए जो मिस्र, मक्का, मदीना और शाम देशों इत्यादि में बोले जाते हैं तो जैसा वह मुहावरा व्याकरण के समस्त नियमों का उन्मूलन कर रहा है और संभव है कि इसी प्रकार का मुहावरा किसी युग में पहले भी गुज़र चुका हो। अतः ख़ुदा तआला की वह्यी को इस बात से कोई रोक नहीं है कि कुछ वाक्यों से गत मुहावरा वर्तमान मुहावरे के अनुकूल वर्णन करे। इसी कारण क़ुर्आन में कुछ विशेषताएं हैं। इसके अतिरिक्त इस देश में व्याकरण के नियमों से भी लोगों को भली भांति जानकारी नहीं। मूल बात यह है कि जब तक अरबी भाषा में पूरी-पूरी महारत न हो और जाहिलियत के समस्त अश्आर नज़र से न गुज़र जाएं और शब्दकोश की प्राचीन विस्तृत शब्दकोश जो अरब के मुहावरों पर आधारित हैं ध्यानपूर्वक न पढ़े जाएं और ज्ञान की विशालता का दायरा पूर्णता तक न पहुंच जाए तब तक अरबी मुहावरों का कुछ भी पता नहीं लगता और न उनकी व्याकरण का पूर्ण रूप से ज्ञान हो सकता है। एक मूर्ख मीन-मेख करता है कि अमुक संबंध कारक सही नहीं या तरकीब ग़लत है और इसी प्रकार का सिला तथा इसी प्रकार की तरकीब और इसी प्रकार का सीग़ः (विभक्ति) प्रचीन जाहिलियत के किसी शेर में निकल आता है तथा इस देश में जो लोग उलेमा

कहलाते हैं बड़ी दौड़ उनकी क़ामूस तक है। हालांकि क़ामूस के अनुसंधान पर बहुत जिरह हुई हैं तथा कई स्थानों में उसने धोखा खाया है। ये बेचारे उलेमा या मौलवी कहलाते हैं उनको तो प्राचीन विश्वसनीय पुस्तकों के नाम भी याद नहीं और न उनको अनुसंधान तथा अरबी भाषा में महारत से कुछ दिलचस्पी है। मिश्कात या हिदाय: पढ़ ली तो मौलवी कहलाए और फिर दहबदिह पेट के लिए उपदेश देना आरंभ कर दिया। यदि उपदेश से कोई औरत जाल में फंस गई तो उस से निकाह कर लिया या किसी गद्दी पर बैठ कर तावीज़-गण्डों से अपनी जीविका चलाई। अत: कामवासना संबंधी उद्देश्यों के साथ भाषा पर कैसे घेरा किया जाए और क़ुर्आन के अध्यात्म ज्ञान क्योंकर प्राप्त हो सकें तथा अरबी शब्द कोश में जो व्याकरण की असल कुंजी है वह एक ऐसा अपार दरिया है कि इसके बारे में इमाम शफ़िई रह. की यह कहावत बिल्कुल सही है कि-

لا یعلمہ الّا نبی

कि उस भाषा को और उसके विभिन्न मुहावरों को नबी के अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति पूर्ण रूप से मालूम ही नहीं कर सकता। इस कथन से भी सिद्ध हुआ कि इस भाषा पर प्रत्येक पहलू से क़ुदरत प्राप्त करना प्रत्येक का कार्य नहीं अपितु इस पर पूरा इहाता करना नबियों के चमत्कारों में से है।

यह बात स्मरण रखने योग्य है कि यह उपरोक्त मीन-मेख एक मुल्हम के मुक़ाबले पर जो अरबी लिखने में बहुत से वाक्य ख़ुदा तआला की ओर से बतौर इल्हाम पाता है, बिल्कुल बेमहल है। क्योंकि यदि ख़ुदा तआला अपने बन्दों को इस प्रकार से भी सहायता दे कि कभी एक निरन्तर भाषण में किसी पुस्तक का कोई उत्तम वाक्य बतौर वह्यी उसके दिल पर इल्क़ा कर दे तो ऐसा इल्क़ा उस इबारत को चमत्कारी शक्ति से बाहर नहीं कर सकता, बाहर तब हो कि जब दूसरा व्यक्ति उसके समान प्रस्तुत करने पर समर्थ हो सके परन्तु अब तक कौन समर्थ हुआ? और किसने मुक़ाबला किया। और स्वयं साहित्यकारों के नज़ीदक इतना कम भावसाम्य न ऐतराज़ का स्थान है न सन्देह का स्थान, अपितु अच्छा है क्योंकि इबारत का तरीक़ा भी साहित्यिक शक्ति में गिना गया है और एक हिस्सा बलाग़त का समझा गया है। जो लोग इस कला के आदमी हैं

वही इबारत की भी क़ुदरत रखते हैं और प्रत्येक असभ्य और मूर्ख का यह काम नहीं है। इसके अतिरिक्त हमारा तो यह दावा है कि चमत्कार के तौर पर ख़ुदा तआला की सहायता से इस गद्य लिखने की हमें शक्ति मिली है ताकि क़ुर्आन के अध्यात्मज्ञानों और वास्तविकताओं को इस पद्धति पर भी दुनिया पर प्रकट करें और वह बलाग़त जो एक व्यर्थ और निर्रथक तौर पर इस्लाम में जारी हो गई थी। उसे ख़ुदा के कलाम का सेवक बनाया जाए और जबकि ऐसा दावा है तो केवल इन्कार से क्या हो सकता है जब तक कि उसके समान प्रस्तुत न करें। यों तो कुछ दुष्ट और नीच इन्सानों ने पवित्र क़ुर्आन पर भी यह आरोप लगाया है कि उसके विषय तौरात और इंजील में से चुराए हैं और उस के उदाहरण प्राचीन अरब के उदाहरण हैं जो उसके शब्दों में चोरी के तौर पर पवित्र क़ुर्आन में दाखिल किए गए हैं। ऐसा ही यहूदी भी कहते हैं कि इंजील की इबारतें तालमूद में से शब्दश: चुराई गई हैं। अत: एक यहूदी ने वर्तमान में एक पुस्तक बताई है जो इस समय मेरे पास मौजूद है तथा बहुत सी इबारतें तालमूद की प्रस्तुत की हैं जो वैसी ही बिना किसी परिवर्तन के इंजील में मौजूद हैं और ये इबारतें एक दो वाक्य नहीं हैं अपितु इंजील का एक बड़ा भाग है और वही वाक्य और वही इबारतें हैं जो इंजील में मौजूद हैं और वे इबारतें इस प्रचुरता से हैं जिन के देखने से एक सचेत आदमी भी संदेह में पड़ेगा कि यह क्या मामला है और दिल में अवश्य कहेगा कि इसको कहां तक भावसाम्य पर चरितार्थ करता जाऊं और उस यहूदी विद्वान ने इसी पर बस नहीं की अपितु इंजील के शेष भाग के बारे में उसने सिद्ध किया है कि ये इबारतें दूसरे नबियों की पुस्तकों में से ली गई हैं और बिल्कुल वैसी ही इबारतें बाइबल में से निकाल कर प्रस्तुत की हैं और साबित किया है कि इंजील सब की सब चुराई हुई है और यह व्यक्ति ख़ुदा का नबी नहीं है अपितु इधर-उधर से वाक्यों को चुरा कर एक किताब बना ली और उसका नाम इंजील रख लिया है। इस यहूदी विद्वान की ओर से यह इतना विकट आक्रमण किया गया है कि अब तक कोई पादरी इसका उत्तर नहीं दे सका। यह पुस्तक हमारे पास मौजूद है जो अभी मिली है। अब चूंकि यह प्रमाणित बात है कि हज़रत मसीह ने एक यहूदी उस्ताद से पाठ-पाठ करके तौरात पढ़ी थी और तालमूद को भी पढ़ा था।

इसलिए एक संदेह प्रकृति वाले इन्सान को इस संदेह से निकलना कठिन है कि क्यों पहली किताबों की इतनी इबारतें उसके शब्दों के साथ दाख़िल हो गईं। और न केवल वही इबारतें जो ख़ुदा के कलाम में थीं बल्कि वह इबारतें भी जो इन्सानों के कलाम में थीं परन्तु ख़ुदा की इस सुन्नत पर दृष्टि डालने से जिसका अभी हम उल्लेख कर चुके हैं यह सन्देह तुच्छ है क्योंकि ख़ुदा तआला अपने स्वामित्व के कारण अधिकार रखता है कि दूसरी किताबों की कुछ इबारतें अपनी नवीन वह्यी में दाखिल करे इस पर कोई ऐतराज़ नहीं। अतः बराहीन अहमदिया के देखने से प्रत्येक पर स्पष्ट होगा कि अधिकतर क़ुर्आनी आयतें तथा कुछ इंजील की आयतें और किसी ग़ैर मुल्हम के कुछ अश्आर उस वह्यी में दाख़िल किए गए हैं जो ज़बरदस्त भविष्यवाणियों से भरी हुई है जिस के ख़ुदा की ओर से होने पर यह शक्तिशाली गवाही है कि उसकी समस्त भविष्यवाणियां आज पूरी हो गईं और पूरी हो रही हैं। अतः ख़ुदा तआला की यह हमेशा से आदत है कि वह अपनी वह्यी की इबारतों और निबंधों को दूसरे स्थान से भी ले लेता है। और फिर मूर्ख ऐतराज़ करते हैं। फिर इन दिनों में एक अन्य व्यक्ति ने पुस्तक लिखी है जिससे वह सिद्ध करना चाहता है कि तौरात की अध्याय 'पैदायश' जो मानो तौरात के फ़लसफे की एक जड़ मानी गई है एक अन्य किताब से चुराई गई है जो मूसा के समय में मौजूद थी तो मानो इन लोगों के विचार में मूसा और ईसा सब चोर ही थे। ये तो अंबिया[अ॰] पर संदेह किए गए हैं परन्तु दूसरे साहित्यकारों तथा कवियों पर अत्यन्त लज्जाजनक आरोप लगाए गए हैं। मुतनब्बी जो एक प्रसिद्ध शायर है उसके दीवान के हर एक शेर के बारे में एक व्यक्ति ने सिद्ध किया है कि वह दूसरे शाइरों के शेरों की चोरी है। तो चोरी के आरोप से कोई बचा नहीं। न ख़ुदा की किताबें और न इन्सानों की पुस्तकें। अब सफाई योग्य बात यह है कि क्या वास्तव में इन लोगों के आरोप सही हैं? इसका उत्तर यही है कि ख़ुदा के मुल्हमों और वह्यी प्राप्त लोगों के बारे में ऐसे सन्देह दिल में लाना स्पष्ट तौर पर बेईमानी है तथा लानतियों का कार्य क्योंकि ख़ुदा तआला के लिए कोई शर्म का स्थान नहीं कि कुछ किताबों की कुछ इबारतें या कुछ वाक्य अपने मुल्हमों के दिल पर उतारे अपितु हमेशा से ख़ुदा की सुन्नत इसी प्रकार जारी है।

रही यह बात कि दूसरे शाइरों और साहित्यकारों की पुस्तकों पर भी यही ऐतराज़ आता है कि कुछ की इबारतें या अश्आर अक्षरश: परिवर्तन के साथ कुछ के लेखों में पाए जाते हैं। तो इसका उत्तर जो एक पूर्ण अनुभव के प्रकाश से मिलता है, यही है कि ऐसी स्थितियों को भावसाम्य के अतिरिक्त हम कुछ नहीं कह सकते। क्योंकि जिन लोगों ने अपनी बलीग़ इबारत के हज़ारों भाग प्रस्तुत कर दिए उनके बारे में यह अन्याय होगा कि यदि पांच-सात या दस-बीस वाक्य उनकी पुस्तकों में ऐसे पाए जाएं कि वे या उनके समान किसी अन्य पुस्तक में भी मिलते हैं तो उनकी प्रमाणित योग्यताओं से इन्कार कर दिया जाए। इसी प्रकार उन लोगों को इन्साफ़ से देखना चाहिए कि अब तक हमारी ओर से बाईस पुस्तकें सरस, सुबोध अरबी में मुक़ाबले के लिए लिखी और प्रकाशित हो चुकी हैं और अरबी के विज्ञापन इसके अतिरिक्त हैं और पुस्तकों के नाम ये हैं :- 1.तब्लीग़, 2.नूरुलहक़ भाग प्रथम, 3.नूरुलहक़ भाग द्वितीय, 4.इत्मामुल हुज्जत, 5.ख़ुत्बा इल्हामिया, 6.अलहुदा, 7.ऐजाज़ुल मसीह, 8.करामातुस्सादिक़ीन, 9.सिर्रुल ख़िलाफ़त, 10.अंजाम आथम, 11.नज्मुल हुदा, 12.मिननुर्रहमान, 13.हमामतुल बुश्रा, 14.तुहफ़ा बग़दाद, 15.अलबलाग़, 16.तर्ग़ीबुलमोमिनीन, 17.लुज्जतुन्नूर।★

इतनी अरबी पुस्तकें जो बारीक ज्ञान और दार्शनिकता संबंधी निबंधों पर आधारित हैं एक पूर्ण ज्ञान संबंधी महारत के बिना उनको एक मनुष्य कैसे अंजाम दे सकता है। क्या ये समस्त ज्ञान संबंधी पुस्तकें हरीरी या हम्दानी की चोरी करने से तैयार हो गईं और हज़ारों धार्मिक एवं क़ुर्आनी आध्यात्म ज्ञान और वास्तविकताएं जो इन पुस्तकों में लिखी गई हैं वे हरीरी और हम्दानी में कहां हैं? इतनी बेशर्मी से मुंह खोलना क्या इन्सानियत है ये लोग यदि कुछ शर्म रखते हों तो इस शर्मिन्दगी से जीते जी मर जाएं कि जिस व्यक्ति को अनपढ़ और अरबी के ज्ञान से बिल्कुल अनभिज्ञ कहते उसने तो इतनी पुस्तकें सरस, सुबोध अरबी में लिख दीं परन्तु स्वयं उनकी योग्यता का यह हाल है कि लगभग दस वर्ष होने

★ शेष अरबी पुस्तकें : 18. हक़ीक़तुल महदी, 19. रिसाला अत्ताऊन, 20. अलक़साइद, 21. इस पुस्तक (नुज़ूलुल मसीह) का क़सीद:, 22.एक अरबी पुस्तक बतौर पत्र, उर्दू कविता तथा जिहाद के निषेध सहित दिनांक 7 जून, सन् 1900 ई.

लगे उनसे निरंतर मांग हो रही है कि इन पुस्तकों के मुक़ाबले पर एक पुस्तक ही लिख कर दिखलाएं परन्तु कुछ नहीं कर सके, केवल मक्का के काफ़िरों की तरह यही कहते रहे कि

لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَا

कि यदि हम चाहें तो इसके समान कह दें। परन्तु जिस हालत में उनको गालियां देने के लिए तो ख़ूब फ़ुर्सत है तो फिर क्या कारण कि एक अरबी पुस्तक के लिखने के लिए इनके पास कुछ समय नहीं है। और जिस हालत में हज़ारों विज्ञापन गालियों के छपवाकर प्रकाशित कर रहे हैं फिर क्या कारण कि अरबी पुस्तक के छापने के लिए इनके पास कुछ नहीं है। मैं नहीं सोचता कि कोई बुद्धिमान इनके ऐसे बहाने स्वीकार कर सके और केवल कुछ वाक्य बीस हज़ार वाक्यों में से प्रस्तुत करके यह कहना कि ये चुराए हुए हैं यह इस श्रेणी की निर्लज्जता है कि पीर मेहर अली शाह के अतिरिक्त कौन ऐसा कमाल दिखा सकता है?

हे मूर्ख ! यदि ज्ञान और धर्म संबंधी पुस्तकें जो हज़ारों अध्यात्म ज्ञानों और वास्तविकताओं पर लिखी होती हैं केवल काल्पनिक इबारतों की चोरी से लिखी जा सकती हैं। तो इस समय तक किसने आप लोगों का मुंह बंद कर रखा है क्या ऐसी पुस्तकें बाज़ारों में मिलती नहीं हैं जिन से चोरी कर सको। उन लानतों को आप लोगों ने क्यों हज़्म किया जो ख़ामोशी की अवस्था में हमारी ओर से आप को भेंट हुईं और क्यों एक सूरह की भी तफ़्सीर सरस, सुबोध अरबी में लिख कर प्रकाशित न कर सके ताकि दुनिया देखती कि आप कितनी अरबी जानने वाले हैं। यदि आप की नीयत सही होती तो मेरे मुक़ाबले पर तफ़्सीर लिखने के लिए एक मज्लिस में बैठ जाते ताकि झूठ बोलने वाले निर्लज्ज का मुंह एक ही घंटे में काला हो जाता। ख़ैर समस्त दुनिया अंधी नहीं है अन्ततः सोचने वाले भी मौजूद हैं। हमने कई बार यह भी विज्ञापन दिया कि तुम हमारे मुक़ाबले पर कोई अरबी पुस्तक लिखो फिर अरबी भाषा जानने वाले उसके जज ठहराए जाएंगे। फिर यदि तुम्हारी पुस्तक सरस-सुबोध साबित हुई तो मेरा समस्त दावा झूठा हो जाएगा और मैं अब भी इक़रार करता हूँ कि मुक़ाबले तफ़्सीर लिखने के बाद यदि

तुम्हारी तफ़्सीर शब्दों और अर्थों की दृष्टि से उच्चतम सिद्ध हुई तो उस समय तक यदि तुम मेरी तफ़्सीर की ग़लतियां निकालो तो प्रति ग़लती पांच रुपये इनाम दूंगा इसलिए व्यर्थ मीन-मेख से पहले यह आवश्यक है अरबी तफ़्सीर के द्वारा अपनी अरबी जानना सिद्ध करो। क्योंकि जिस कला में कोई व्यक्ति ज्ञान नहीं रखता, उस कला में उसकी मीन-मेख स्वीकार करने योग्य नहीं होती। राजगीर, राजगीर की मीन-मेख (या आलोचना) कर सकता है और लोहार, लोहार की परन्तु एक झाड़ू लगाने वाले को अधिकार नहीं पहुंचता कि एक दक्ष भवन निर्माता की आलोचना करे। आपकी व्यक्तिगत योग्यता तो यह है कि अरबी की एक पंक्ति भी नहीं लिख सकते। फर सैफ़ेचिश्तियाई में भी आपने चोरी के माल को अपना माल ठहराया। तो फिर इस योग्यता के साथ आपको क्यों शर्म नहीं आती। हे भले आदमी पहले अपनी अरबी दानी सिद्ध कर फिर मेरी पुस्तक की ग़लतियां निकाल और प्रति ग़लती पर हम से पांच रुपये ले और मुक़ाबले पर अरबी पुस्तक लिखकर मेरे इस कलाम के चमत्कार का झूठा होना दिखला। अफ़सोस कि दस वर्ष का समय गुज़र गया किसी ने सभ्यतापूर्ण तरीक़े से मेरा मुक़ाबला नहीं किया। अन्ततः यदि किया तो यह किया कि तुम्हारे अमुक शब्द में अमुक ग़लती है और अमुक वाक्य अमुक पुस्तक का चुराया हुआ मालूम होता है। परन्तु साफ प्रकट है कि जब तक स्वयं मनुष्य का ज्ञानी होना सिद्ध न हो उसकी आलोचना क्योंकर सही मान ली जाए। क्या संभव नहीं कि वह स्वयं ग़लती करता हो और जो व्यक्ति मुक़ाबले पर लिखने पर सामर्थयवान नहीं वह क्यों कहता है कि पुस्तक में कुछ वाक्य बतौर चोरी है। यदि चोरी से यह बात संभव है तो क्यों वह मुक़ाबले पर नहीं आता और लोमड़ी की तरह भागा फिरता है। हे मूर्ख! पहले किसी तफ़्सीर को सरस-सुबोध अरबी में लिखने से अपना अरबी जानना सिद्ध कर फिर तेरी आलेचना भी ध्याननीय हो जाएगी। अन्यथा बिना सबूत अरबी जानने के मेरी आलोचना करना और कभी चोरी का आरोप लगाना और कभी व्याकरण की ग़लती का यह केवल गू (विष्ठा) खाना है। हे जाहिल बेहया! पहले सरस-सुबोध अरबी में किसी सूरह की तफ़्सीर प्रकाशित कर फिर तुझे प्रत्येक के नज़दीक हक़ प्राप्त होगा कि मेरी पुस्तक की ग़लतियां निकाले या चोरी का ठहराए। जो व्यक्ति सरस-सुबोध अरबी

में हज़ारों भाग लिख चुका है न केवल व्यर्थ तौर पर अपितु वास्तविक अध्यात्म ज्ञानों का वर्णन करने में तो क्या केवल इन्कार से उसका उत्तर हो सकता है या जब तक काम के मुकाबले पर काम न दिखाया जाए केवल जीभ की बक-बक प्रमाण हो सकता है? और इस बात से कौन सी योग्यता सिद्ध हो सकती है कि केवल मुंह से कह दें कि यह पुस्तक ग़लत है या अमुक पुस्तक से कुछ वाक्य चुराए गए हैं? भला इससे अपनी ख़ूबी क्या सिद्ध हुई और यदि ख़ूबी सिद्ध नहीं तो क्योंकर स्वीकार किया जाए कि आलोचना सही होगी? अपितु जो व्यक्ति ऐसे योग्य और कामिल इन्सानों पर ऐतराज़ करता है कि जो लोग अपनी ख़ूबी का कुछ नमूना दिखा देते हैं उससे अधिक कोई दीवाना और पागल नहीं होता। यदि इन्सान ऐसा क़लम का बादशाह हो जाए कि ज्ञान और दर्शन शास्त्र संबंधी बातों को नाना प्रकार की रंगीन इबारतों और सरस-सुबोध रूपकों के पैराये अदा कर सके और उसे ख़ुदाई ज्ञान से पद्य और गद्य में एक महारत हो जाए और तकल्लुफ एवं असमर्थता शेष न रहे तो फिर ऐसे पूर्णतम कलाम की हालत में यदि उसकी इबारतों में उचित स्थानों और मुक़ामों में कुछ क़ुर्आनी आयतें आ जाएं या पहले लोगों के कुछ उदाहरण या वाक्य आ जाएं तो आपत्तिजनक न होगा। क्योंकि उसकी भाषा में अलंकारिकता और वाग्मियता का कमाल एक प्रमाणित बात है जो दरिया के समान बहता और वायु की तरह चलता है वह लानती कीड़ा है न कि आदमी, जो स्वयं कलाविहीन होकर ऐसे व्यक्ति की सरसता और सुबोधता पर ऐतराज़ करे जिसने बहुत सी अरबी पुस्तकें लिख कर सरस सुबोध इबारत का चमत्कार सिद्ध कर दिखाया और प्रकट कर दिया कि उसको बलीग़ इबारत के आने का चमत्कार ठाठें मारते सागर की तरह दिया गया है। इस प्रकार दुष्ट प्रकृति लोग हमेशा होते रहे हैं जो ख़ुदा के कलाम पर भी ऐतराज़ करते हुए नहीं डरते और ख़ाली मस्तिष्क होने के बावजूद मीन-मेख से नहीं रुके। उदाहरणतया जिन दुष्ट लोगों ने ऐतराज़ किया कि पवित्र क़ुर्आन की सूरह -

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ (अलक़मर-2)

के कुछ वाक्य दीवान इमरउल क़ैस के एक क़सीदे का वक्तव्य है। अर्थात् वे वाक्य उस से लिए गए हैं। उनको यह सोचना चाहिए था कि पवित्र क़ुर्आन के

पहली पुस्तकों के सब क़िस्से जो नितांत रंगीन इबारत में वर्णन किए गए हैं और जो दर्शन शास्त्र के अध्यात्म ज्ञान, वास्तविकताएं जो उसमें चमत्कारपूर्ण इबारत में वर्णन किए गए हैं वह अरब के किस शाइर का वक्तव्य है। तो ऐसे व्यक्ति अंधे हैं न कि सुजाखे जो उस ख़ूबी को नहीं देखते जो एक दरिया के समान बहती है। और एक-दो वाक्यों में भावसाम्य पाकर कुधारणा पैदा करते हैं। ये लोग इसी तत्व के आदमी हैं जैसा कि वह व्यक्ति था जिसके मुंह से

فَتَبَارَكَ اللّٰهُ أَحۡسَنُ الۡخَالِقِيۡنَ (अलमोमिनून-15)

निकला था और संयोग से वही आयत उतर गई तब वह मुर्तद हो गया कि मेरा ही वाक्य क़ुर्आन में दाख़िल किया गया। अब पीर मेहर अली शाह साहिब की करतूत को देखना चाहिए कि स्वयं तो साढ़े बारह खंडों की पुस्तक के मुक़ाबले में एक खंड भी न लिख सके और इतनी मोटी पुस्तक में से दो-चार वाक्य प्रस्तुत कर दिए कि ये अमुक पुस्तक में मौजूद हैं। अब सोचो कि यह कितनी कमीनगी है। क्या कोई साहित्यकार इसको पसन्द करेगा। साहित्यकार जानते हैं कि हज़ारों वाक्यों में से यदि दो-चार वाक्य बतौर वक्तव्य हों तो उन से बलाग़त की शक्ति में कुछ अन्तर नहीं आता अपितु इस प्रकार के परिवर्तन भी एक शक्ति है। देखो सबअ: मुअल्लक़ा के दो शाइरों का एक चरण पर भावसाम्य है और वह यह है-

एक शाइर कहता है:

يقولون لا تهلك اسًى و تجمل

दूसरा शाइर कहता है:

يقولون لا تهلك اسًى و تجلّد

अब बताओ इन दोनों में से चोर किसे ठहराया जाए मूर्ख इन्सान को यदि यह भी अनुमति दे दी जाए कि वह चुरा कर ही कुछ लिखे तब भी वह लिखने पर समर्थ नहीं हो सकता क्योंकि असली शक्ति उसके अन्दर नहीं। परन्तु वह व्यक्ति जो निरंतर और बेरोक आमद पर समर्थ है उसका तो बहरहाल यह चमत्कार है कि ज्ञान, दर्शन संबंधी बातों और मआरिफ एवं वास्तविकताओं को अविलम्ब रंगीन और सरस-सुबोध इबारतों में वर्णन कर दे यद्यपि यथा स्थान चरितार्थ होकर दस हज़ार वाक्य भी किसी

अन्य की इबारतों के उसके निबंध में आ जाएं। क्या प्रत्येक मूर्ख, धूर्त धृष्ट ऐसा कर सकता है? और यदि कर सकता है तो क्या कारण कि इतना लम्बा समय गुज़रने के बावजूद पीर मेहर अली शाह साहिब पुस्तक ऐजाज़ुल मसीह के समान बनाने पर समर्थ न हो सके और अन्तत: काम यह किया कि दो सौ पृष्ठों की पुस्तक में से कि जो चार हज़ार पंक्तियों और साढ़े बारह खण्ड है ऐसे दो-चार वाक्य प्रस्तुत कर दिए कि वे★ कुछ प्रसिद्ध उदाहरणों से या मुक़ामात इत्यादि के कुछ वाक्यों से भावसाम्य रखते हैं या समान हैं। भला बताओ कि इसमें उन्होंने अपनी क्या खूबी दिखाई या एक इन्साफ करने वाला इन्सान समझ सकता है कि जिस व्यक्ति ने इतने लम्बे समय तक अवसर पाकर अपने अकेले कोने में दो-चार पृष्ठ भी ऐजाज़ुल मसीह का नमूना प्रस्तुत नहीं किया वह लाहौर के मुकाबले पर यदि होता तो क्या लिख सकता था। वह पीर फ़र्तूत जो इतने सहारे के साथ भी उठ न सका वह सहारे के बिना क्योंकर उठ सकता था। नि:संदेह समझो कि पीर मेहर अली शाह साहिब केवल झूठ के सहारे अपनी मंद बुद्धि पर पर्दा डाल रहे हैं और वह न केवल झूठ बोलते हैं अपितु महा झूठे हैं। उनका यह अन्तिम झूठ भी हमें कभी न भूलेगा जिस पर उन्होंने दोबारा भी इस पुस्तक पर आग्रह किया कि मैं लाहौर में वादे के अनुसार आया था परन्तु तुम क़ादियान से बाहर न निकले। परन्तु जिन लोगों ने उनका विज्ञापन देखा होगा वे यदि चाहें तो गवाही दे सकते हैं कि उन्होंने पूर्ण चालबाज़ी से मुक़ाबले से इन्कार किया था। क्या यह ईमानदारी का तरीक़ा था कि पीर मेहर अली साहिब ने अपने विज्ञापन में लिखा कि मैं मुक़ाबले में सरस, सुबोध अरबी में तफ़्सीर लिखने के लिए लाहौर पहुंच गया हूँ परन्तु मेरी तरफ से यह शर्त है कि पहले विवादित आस्थाओं में मौखिक बात हो और मौलवी मुहम्मद हुसैन जज हों फिर यदि कथित जज यह बात कह दे कि आस्थाएं पीर मेहर अली शाह की दुरुस्त और सही हैं और उन्होंने अपनी आस्थाओं का ख़ूब सबूत दे दिया है तो विरोधी सदस्य अर्थात् मुझ पर अनिवार्य होगा कि अविलम्ब पीर मेहर अली शाह की बैअत करूं। फिर इसके बाद तफ़्सीर लिखने का भी मुक़ाबला

★ये कुछ वाक्य भी बतौर नुक़्त: चीनी स्वयं प्रस्तुत नहीं कर सका अपितु दुर्भाग्यशाली मुहम्मद हसन के नोट्स को चुरा कर लिख दिया जो मुबाहल: करके ऐसी नुक़्त: चीनी की हालत में मर गया। विस्तृत वर्णन उसका शीघ्र आएगा। इसी से।

हो जाएगा। अब देखो यह कितनी मक्कारी है जबकि मौलवी मुहम्मद हुसैन और पीर मेहर अली शाह साहिब नुज़ूल मसीह (मसीह का आसमान से उतरना) और सऊदे मसीह (मसीह का चढ़ना) की आस्था में सहमति रखते हैं तो फिर क्योंकर संभव था कि मौलवी मुहम्मद हुसैन के मुंह से यह निकलता कि मेहर अली की आस्थाएं सही नहीं हैं या उसके तर्क झूठे हैं जबकि दोनों की आस्थाएं एक हैं तो फिर वह पीर मेहर अली को कैसे झुठला सकता था। हां सरस सुबोध बातों में जिसके मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम जांच सकते हैं किसी दुश्मन से भी दिलेरी नहीं हो सकती कि ऐसे सदस्य को उच्च कोटि का सर्टिफिकेट प्रदान करे। जिसकी इबारत गंदी और बोदी और नह्वी और सर्फ़ी (व्याकरण की) ग़लतियों से भरी हुई हो। अत: 'ऐजाज़ुलमसीह' पुस्तक के प्रकाशन से पीर मेहर अली साहिब को दोबारा अवसर दिया गया था कि वह यदि संभव हो तो अब भी अपनी ज्ञान की योग्यता से मेरी उस प्रतिष्ठा को समाप्त कर दें। जिस से सैकड़ों लोग बैअत के सिलसिले में दाख़िल हो रहे हैं। परन्तु वे बिल्कुल उस गूंगे की तरह रह गए जिस पर इशारे से बात करना भी कठिन होता है। और यदि किया तो यह किया कि दो-चार वाक्य दो सौ पृष्ठों की पुस्तक में से प्रस्तुत कर दिए कि ये मुक़ामात हरीरी इत्यादि के कुछ वाक्यों की चोरी है और केवल एक या दो कातिब की भूल को सर्फ़ी नह्वी (व्याकरण की) ग़लती ठहरा दिया और अपनी अनभिज्ञता से कुछ सरस, सुबोध तर्कीबों को यों ही ग़ैर फ़सीह तथा ग़लत समझ लिया है। यह हैं गद्दी नशीन इस देश के जिन्होंने अकारण मौलवी होने का दम भरकर हमेशा के लिए एक काला दाग़ अपने चेहरे पर लगा लिया★। परन्तु चूंकि पीर मेहर अली साहिब ने मुझे मुफ़्तरी ठहराया और चोर कहा है और बार-बार बतौर मुबाहल: मुझ पर लानत भेजी है। इसलिए मैं अपना बरी होना पब्लिक पर प्रकट करने के लिए तीसरी बार पीर मेहर अली साहिब को अवसर देता हूँ और वह यह कि हमने इरादा किया है कि हम इस पुस्तक के अन्त में यदि ख़ुदा तआला ने चाहा तो कुछ अरबी अश्आर लिखेंगे और पीर मेहर अली साहिब से तथा एक अन्य व्यक्ति से जो शिया है और अली हाइरी के नाम

★**हाशिया :-** मैंने अभी इतना ही निबंध लिखा था कि मुझे आज 26 जुलाई 1902 को मौज़ाभीं से मियाँ शहाबुद्दीन दोस्त मौलवी मुहम्मद हसन का पत्र मिला जिसमें उन्होंने लिखा है कि मैं पीर मेहर अली शाह की पुस्तक देख रहा था कि इतने में संयोग से एक आदमी मुझे मिला जिस

से जाना जाता है इन अश्आर के समान अशआर लिखने की मांग करेंगे और निवेदन यह है कि अश्आर की संख्या तथा निबंध की पाबन्दी का ध्यान रखते हुए उदाहरण प्रस्तुत करके पीर साहिब अपना चमत्कार दिखाएं और अली हाइरी साहिब इमाम हुसैन का चमत्कार। यदि ऐसा कर दिखाएं और जितनी संख्या में हमने ये शेर लिखे हैं और

शेष हाशिया - के पास कुछ पुस्तकें थीं और वह मौलवी मुहम्मद हसन के घर का पता पूछता था और पूछने पर उसने वर्णन किया कि मुहम्मद हसन की पुस्तकें पीर साहिब ने मंगवाई थीं और अब वापस करने आया हूँ। मैंने जब वे पुस्तकें देखीं तो एक उनमें 'ऐजाज़ुलमसीह' थी जिस पर स्वर्गीय मुहम्मद हसन ने अपने हाथ से नोट लिखे हुए थे। और एक शम्सेबाज़िग़ थी और उस पर भी कथित मुहम्मद हसन ने नोट लिखे हुए थे। और संयोग से उस समय 'सैफ़े चिश्तियाई' पुस्तक मेरे पास मौजूद थी। जब मैंने उन नोटों की उस पुस्तक से तुलना की तो जो कुछ मुहम्मद हसन ने लिखा था अक्षरश: बिना किसी परिवर्तन के पीर मेहर अली शाह ने बतौर चोरी अपनी पुस्तक में उसे नक़ल कर लिया था अपितु शब्दों को परिवर्तित करके यों कहना चाहिए कि पीर मेहर अली शाह की पुस्तक वही चुराए हुए नोट हैं इससे अधिक कुछ नहीं। तो मुझे इस बेईमानी और चोरी से बहुत आश्चर्य हुआ कि उसने किस प्रकार इन समस्त नोटों को अपनी ओर सम्बद्ध कर दिया। यह ऐसी कार्रवाई थी कि यदि मेहर अली को कुछ शर्म होती तो इस प्रकार के चोरी का भेद खुलने से मर जाता न कि धृष्टता और निर्लज्जता से अब तक दूसरे व्यक्ति के लेख को जिसमें उसकी जान गई अपनी ओर सम्बद्ध करता और उस दुर्भाग्यशाली मुर्दे के लेख की ओर थोड़ा भी संकेत न करता। और फिर इसके बाद मियाँ शहाबुद्दीन लिखता है कि मैं प्रत्येक व्यक्ति को जो मेहर अली की इस बेईमानी को देखना चाहे उसकी यह लज्जाजनक चोरी दिखा सकता हूँ। अपितु मैंने स्वयं पीर मेहर अली शाह का हस्ताक्षर किया हुआ एक कार्ड भेज दिया है जिसमें वह इस चोरी का इक़रार करता है परन्तु इसके बाद यह निरर्थक उत्तर देता है कि उसने अपने जीवन में मुझे अनुमति दे दी थी कि अपने नाम पर इस पुस्तक को छाप दें। परन्तु यह बहाना गुनाह से अधिक बुरा है। क्योंकि यदि उसकी ओर से यह अनुमति थी कि उसके मरने के बाद मेहर अली स्वयं उस पुस्तक का लेखक व्यक्त करो तो क्यों मेहर अली ने इस पुस्तक में इस अनुमति की चर्चा नहीं की तथा क्यों दावा कर दिया कि मैंने ही इस पुस्तक को लिखा है। साफ़ प्रकट है कि यह तो बेईमानी का तरीक़ा है कि एक मृत्युप्राप्त व्यक्ति की पूरी पुस्तक को अपनी ओर सम्बद्ध कर लिया और उसका नाम तक न लिया। जिस हालत में मुहम्मद हसन ने ख़ुदा तआला का मुक़ाबला करके स्वयं को ऐजाज़ुल मसीह के टायटल पेज की निम्नलिखित भविष्यवाणी -

انّہ تندّم و تذمّر

जिन विषयों के सम्बन्धों में ये अश्आर हैं यदि इन दोनों शर्तों को सरसता सुबोधता की शैली में ये दोनो बुज़ुर्ग या उनमें से कोई पूरा कर दिखाएंगे तो हम स्वीकार कर लेंगे कि इस बारे में हमारा चमत्कार का दावा झूठा है। परन्तु शर्त यह है कि उस तिथि से कि यह पुस्तक प्रकाशित हो ठीक-ठीक बीस दिन की समय सीमा तक इसी मात्रा तथा

शेष हाशिया - के अनुसार ऐसा असफल बनाया कि जान ही दे दी और फिर **ऐजाज़ुल मसीह** पृष्ठ-199 की मुबाहले की दुआ का पात्र बन कर स्वयं को तबाही में डाल लिया तो ऐसे मलियामेट कर देने वाले मुक़ाबले के उपकार का ज़िक्र करना बहुत आवश्यक था और ईमानदारी की यह मांग थी कि पीर मेहर अली शाह साफ शब्दों में लिख देता कि यह पुस्तक मेरी लिखी हुई नहीं है अपितु मुहम्मद हसन की लिखी है और मैं केवल चोर हूँ न यह कि झूठ बोलकर पुस्तक के सम्बोधन में इस किताब को अपनी ओर सम्बद्ध करता, अपितु चाहिए था कि उस दुर्भाग्यशाली मृत्युप्राप्त की विधवा की जीविका के लिए उस पुस्तक में हिस्सा रख देता जिस हालत केवल में डींगे मारने के तौर पर उसने यह प्रसिद्ध किया है कि मैंने यह पुस्तक मुफ़्त बांटी है तो कितना आवश्यक था कि वह पुस्तक के प्रारंभ में लिख देता कि मैं अपना अधिकार तो इस पुस्तक के बारे में छोड़ता हूँ। परन्तु चूंकि वास्तव में यह पुस्तक मुहम्मद हसन की रचना है जिसको मैंने बतौर चोरी अपनी ओर सम्बद्ध किया है। इसलिए मैं उसकी विधवा के गुज़ारे के लिए चार आना प्रति जिल्द ख़रीदारों से मांगता हूँ ताकि वह चक्की पीसने के कष्ट से बचे। यदि वह ऐसा तरीक़ा ग्रहण करता और प्रति जिल्द चार आना वुसूल करके कष्ट ग्रस्त विधवा को देता तो इस मुंह काला होने से कितना बच जाता। परन्तु अवश्य था कि वह इस लज्जाजनक चोरी को करता ताकि ख़ुदा तआला का वह कलाम पूरा हो जाता जो आज से कई वर्ष पूर्व मुझ पर उतारा। और वह यही है-

اِنِّی مُھِیْنٌ مَنْ اَرَادَ اِھَانَتَکَ

अर्थात् मैं उसका अपमान करूंगा जो तेरे अपमान का इरादा करेगा। इस आदमी ने पुस्तक 'सैफे-ए-चिश्तियाई' में मुझ पर चोरी का आरोप लगाया था और चोरी यह कि पुस्तक 'ऐजाज़ुल मसीह' के लगभग बीस हज़ार वाक्यों में से दो-चार वाक्य ऐसे हैं जो अरब के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण या मक़ामात हरीरी के कुछ वाक्य हैं जो इल्हाम के भावसाम्य से लिखे गए।

अब उसकी अपनी करतूत यह सिद्ध हुई कि मुहम्मद हसन मुर्दे का सम्पूर्ण मसौदा अपने नाम से सम्बद्ध कर लिया और अभागे की चर्चा तक न की। अब देखो यह ख़ुदा तआला का निशान है या नहीं कि दो-चार वाक्यों की चोरी मेरी ओर सम्बद्ध करने के साथ ही स्वयं एक पूर्ण पुस्तक का चोर सिद्ध हो गया। यदि उसका ऐतराज़ सही था तो क्यों ख़ुदा तआला ने उसको बदनाम किया। और जब लोगों में प्रसिद्ध हो गया कि मेहर अली ने एक मुर्दे का

इसी सरलता, सुबोधता के अनुसार और इन्हीं निबंधों के मुक़ाबले पर अश्आर बनाकर और छपवा कर देश में प्रसारित कर दें अन्यथा अख़बार के द्वारा उनकी असमर्थता प्रकाशित कर दी जाएगी तथा हम दोबारा इक़रार करते हैं कि यदि इन अश्आर में निर्धारित तिथि के अन्दर वे हमारा मुक़ाबला कर सकेंगे और ज्ञानी लोगों की गवाही से उनके अश्आर हमारे अश्आर के समान श्रेणी वाले होंगे और संख्या में भी बराबर

शेष हाशिया - निबंध चुराकर कफ़न चोरी की तरह शर्म योग्य चोरी की है तथा उसके कुछ दोस्तों ने उसकी ओर पत्र लिखे कि ऐसा करना उचित न था तो यह उत्तर दिया कि मैंने मुहम्मद हसन मुर्दा से अनुमति ले ली थी। साफ ज़ाहिर है कि यदि मुहम्मद हसन मुर्दा अनुमति देता तो अपने जीवन में ही देता। मसौदा उसके पास भेजता न यह कि उसके मरने के पश्चात् उसकी विधवा के पास से मंगवाया जाता। और फिर बहरहाल यह ज़िक्र तो करना चाहिए था कि मैं स्वयं अरबी और साहित्य से वंचित हूँ और ये मसौदे मुहम्मद हसन मुर्दा के मुझे मिले हैं, परन्तु कहां चर्चा की। अपितु बड़े गर्व से दावा किया कि यह पुस्तक मैंने स्वयं बनाई है। देखो ख़ुदा के वलियों पर आक्रमण करने का यह प्रभाव होता है कि मुझे कुछ वाक्यों का चोर ठहराने से एक सर्वांगपूर्ण पुस्तक का स्वयं चोर सिद्ध हो गया और **न केवल चोर अपितु झूठा भी,** कि एक गन्दा झूठ अपना पुस्तक में प्रकाशित किया और पुस्तक में लिख मारा कि यह मेरी लिखी है हालांकि यह उसकी लिखी हुई नहीं। क्यों पीर जी अब इजाज़त है कि इस समय हम भी कुछ कह दें कि झूठों पर ख़ुदा की लानत। रहा मुहम्मद हसन तो चूंकि वह मर चुका है इसलिए उसके बारे में लम्बी बहस की आवश्यकता नहीं। वह अपने दण्ड को पहुंच गया। उसने झूठ की गन्दगी खाकर **वही गन्दगी पीर साहिब के मुंह में** रख दी। मैंने पुस्तक ऐजाज़ुल मसीह के आरम्भ में बतौर भविष्यवाणी वर्णन कर दिया था कि जो व्यक्ति इस पुस्तक के उत्तर का इरादा करेगा वही असफल रहेगा। फिर इस से अधिक क्या असफलता है कि अपनी व्यर्थ पुस्तक को छाप ही न सका और मर गया और फिर उसके मुर्दार को चुराकर पीर मेहर अली ने अपनी पुस्तक में खाया और वहाँ भी असफल रहा। क्योंकि मेहर अली का उद्देश्य यह था कि इस पुस्तक के लिखने से अपना शेख होना प्रकट करे कि मैं भी अरबी जानता हूँ और साहित्यकार हूँ। परन्तु नामवरी होने की बजाए उसका चोर होना सिद्ध हुआ। कौन इस से आश्चर्य नहीं करेगा कि चोर भी ऐसा दिलेर चोर नकला कि मुर्दे की पूरी पुस्तक को निगल गया और डकार न ली और अभागे मुहम्मद हसन का एक बार भी ज़िक्र न किया। एक दूसरा निशान यह है कि इसी पुस्तक ऐजाज़ुल मसीह के पृष्ठ-199 में मैंने यह दुआ की थी

ربّ ان کنت تعلم انّ اعدائی هم الصادقون المخلصون فاهلکنی کما نهلك
الکذّابون۔ و ان کنت تعلم انی منك و من حضرتك فقم لنصرتی

अनुवाद- हे मेरे ख़ुदा! यदि तू जानता है कि मेरे दुश्मन सच्चे हैं, मुख़लिस हैं तो तू

होंगे तो फिर नि:संदेह हमारा यह दावा झूठा हो जाएगा कि ऐजाज़ी (चमत्कारी) शक्ति निबंध लिखने, पद्य और गद्य में है यह भी ख़ुदा का एक निशान है जो हमारे मसीह मौऊद होने पर एक गवाह है। अपितु हम ख़ुदा तआला की क़सम खा कर वादा करते हैं कि यदि इस अवधि में इसी संख्या की दृष्टि से उन्हीं विषयों की पाबन्दी से उनके अश्आर नियुक्त किए जजों की गवाही से जो विद्वान

शेष हाशिया - मुझे नष्ट कर दे जैसा कि तू झूठों को नष्ट करता है और यदि तू जानता है कि मैं तेरी ओर से हूँ तो दुश्मन के मुक़ाबले पर तू मेरी सहायता करने के लिए खड़ा हो जा।

अत: बिल्कुल स्पष्ट है कि इस पुस्तक ऐजाज़ुल मसीह के प्रकाशित होने के बाद मुहम्मद हसन मुकाबले के लिए मैदान में निकला। इसलिए इस मुबाहले की दुआ के कारण मारा गया। अब हम इस बात के सिद्ध करने के लिए कि वास्तव में पीर मेहर अली साहिब ने अपनी पुस्तक 'सैफ़े चिश्तियाई' में जिस को वास्तव में तंबूर चिश्तियाई कहना चाहिए अपनी ओर से तथा अपने मस्तिष्क से काम ले कर कुछ नहीं लिखा अपितु उसमें पूर्ण रूप से चोरी की पूंजी जमा कर दी और चोरी भी उस मुर्दे के माल की जो हर प्रकार से दया योग्य था निम्नलिखित सबूत प्रस्तुत करते है:-

नकल पत्र मियां शहाबुद्दीन निवासी भैं

पहले हम बयान की सफ़ाई के लिए लिखना चाहते हैं कि मियां शहाबुद्दीन जिनका नाम शीर्षक में दर्ज है। यह मुतवफ़्फ़ी मुहम्मद हसन के मित्र हैं इसके अतिरिक्त यह उस दुर्भाग्यशाली मृत्यु प्राप्त के पड़ोसी भी हैं तथा उसके रहस्यों से परिचित और इन्हीं की कोशिश से पीर मेहर अली शाह के चोरी करने का मुक़दमा प्राप्त हुआ और बड़ी सफाई से सिद्ध हो गया कि उसकी पुस्तक 'सौफ़ेचिश्तियाई' चोरी का माल है और उसमें मेहर अली की बुद्धि और ज्ञान का कुछ दख़ल नहीं और इसके अतिरिक्त कि वह इस कार्रवाई से न केवल चोरी का अपराधी हुआ अपितु उसने शेख़ी प्राप्त करने के लिए बहुत लज्जाजनक झूठ बोला और अपनी पुस्तक सैफ़ेचिश्तियाई में उस मुर्दा दुर्भाग्यशाली का नाम तक न लिया और बड़े ज़ोर और दावे से कहा कि इस पुस्तक का लेखक मैं हूँ। अत: पत्रों की नक़ल यह है:-

प्रथम पत्र की नक़ल

मुर्सल यज़्दानी-व-मामूरे रहमानी हज़रत अक़्दस जनाब मिर्ज़ा जी साहिब दाम बरकातुकुम व फ़ुयुज़ुकुम

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु। तत्पश्चात् आप का रजिस्टर्ड पत्र आया। ग़मनाक हृदय को ताज़ा किया। समाचार मालूम हुआ। हाल यह है कि मुहम्मद हसन का मसौदा अलग से तो ख़ाकसार को नहीं दिखाया गया। क्योंकि उसके मरने के बाद उसकी

होंगे, हमारे अश्आर से सरस, सुबोध होने की दृष्टि से उत्तम सिद्ध हों तो दोनो संबोधितों को एक एक सौ रुपया इनाम दिया जाएगा। उनका अधिकार है कि यह इनाम किसी बैंक में पहले जमा करा दें। अब विशेष तौर पर मियां मेहर अली साहिब को इस मुक़ाबले से बिल्कुल डरना नहीं चाहिए क्योंकि उनको मालूम हो गया है कि चोरी के द्वारा पद्य और गद्य तैयार हो सकती है। तो मानो अब उनको इस कार्य की कला हाथ आ गई है। तो अब विश्वास है इस कला के

शेष हाशिया - पुस्तकें और सब काग़ज़ जमा करके ताले में रखे गए हैं। शम्सेबाज़िग़ः और ऐजाज़ुल मसीह पर जो मुहम्मद हसन के नोट किए थे वे देखे हैं और वही नोट गोलड़ी अन्यायी ने पुस्तकें मंगवाकर दर्ज कर दिए हैं। और अपनी योग्यता से कुछ नहीं लिखा। अब मुहम्मद हसन के पिता आदि मेरे तो जान के दुश्मन बन गए हैं पुस्तकें तो स्वयं एक पृष्ठ तक नहीं दिखाते। पहले भी देखने का माध्यम यह हुआ था कि जब गोलड़ी ने पुस्तकें अर्थात् शम्सेबाज़िग़ः और ऐजाज़ुल मसीह मुहम्मद हसन के पिता से मंगवाई और निवृत्त होकर वापस भेजी तो चूंकि वह पुस्तकें लाने वाला अजनबी था। इसलिए भूल कर मेरे पास मस्जिद में आया और कहने लगा कि मौलवी मुहम्मद हसन का घर किधर है। मैंने पूछा कि क्या काम? कहने लगा कि मेहर अली शाह ने मुझे पुस्तकें देकर भेजा है कि मौलवी मुहम्मद हसन के पिता को ये पुस्तकें शम्स-ए-बाज़िग़ः और ऐजाज़ुल मसीह दे आ। फिर मैंने पुस्तकें लेकर देखीं तो हर पृष्ठ पर हर पंक्ति पर नोट लिखे हुए देखे। मेरे पास सैफ़ेचिश्तियाई भी थी इबारत को मिलाया तो बिल्कुल वही इबारत थी। आप का आदेश स्वीकार, परन्तु मुहम्मद हसन का पिता पुस्तकें नहीं देता और कहता है कि मेरे सामने निःसन्देह देख लो परन्तु मोहलत के लिए नहीं देता। ख़ाकसार असमर्थ है क्या करे।* दूसरी मुझ से एक ग़लती हो गई कि एक पत्र गोलड़ी को भी लिखा कि तुम ने ख़ाक लिखा कि जो कुछ मुहम्मद हसन के नोट थे वही दर्ज कर दिए। इसलिए गोलड़ी ने मुहम्मद हसन के पिता को लिखा है कि उनको पुस्तकें

***हाशिए का हाशिया -** फिर इसके बाद मुहम्मद हसन के बेटे ने जो असल वारिस है छः रुपये लेकर वे दोनों पुस्तकें जिन पर मुहम्मद हसन मृत्यु प्राप्त के नोट हैं मेरे विश्वसनीय को दे दीं और अब वे मेरे पास मौजूद हैं जिनसे पीर मेहर अली की चोरी ऐसी खुलती है जैसे कि कोई चोर बिल्कुल सेंध लगाते समय पकड़ा जाए। इस पर सब प्रशंसा अल्लाह के लिए। सच कहा अल्लाह तआला ने

انی مهین من ارادا هانتك

(लेखक की ओर से)

कारण उनकी सम्पूर्ण कायरता दूर हो जाएगी बल्कि वह योग्य भी हो जाएंगे कि मुक़ाबले पर हौसला करके किसी सूरह की तफ़्सीर भी लिख सकें। क्योंकि अब तो बहुत आसान हो गई। दूसरे लोगों की इबारतें चुरा लीं और तफ़्सीर लिख मारी। परन्तु पहले हम उन अश्आर के मुक़ाबले पर इन बुज़ुर्गों की ज्ञान की योग्यता का नमूना देखना चाहते हैं। यदि इस नमूने में पीर मेहर अली साहिब ने अपना चमत्कार दिखा दिया तो फिर विश्वास है कि वह तफ़्सीर लिखने में भी पहली

शेष हाशिया - मत दिखाओ क्योंकि यह व्यक्ति हमारा विरोधी है अब कठिनाई बनी कि मुहम्मद हसन का पिता गोलड़ी का मुरीद है और उसके कहने पर चलता है। मुझे बहुत अफसोस है कि मैंने गोलड़ी को क्यों पत्र लिखा। जिसके कारण सब मेरे दुश्मन बन गए। बराहे करम ख़ाकसार को क्षमा करें क्योंकि मेरा ख़ाली आना मुफ़्त का खर्च है और वह पुस्तकें नहीं देते। इति. विनीत शहाबुद्दीन, स्थान-भीं, तहसील चकवाल

दूसरे पत्र की नक़ल

आदरणीय, सम्माननीय, मौलाई जनाब मौलवी अब्दुल करीम साहिब।

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। विनीत कुशलता से है आपकी कुशलता चाहता हूँ। मैं आने से कुछ इन्कार न करता परन्तु पुस्तकें नहीं देते जिन पर नोट हैं अर्थात् शम्से बाज़िग़: और ऐजाज़ुल मसीह। सैफ़ेचिश्तियाई में जितनी गालियां हैं अधिकतर मुहम्मद हसन की हैं। इसी कारण से उसकी मौत का ----------नमूना हुआ---------अब मेरे पत्र लिखने से गोलड़ी स्वयं इक़रारी है। अत: यह कार्ड गोलड़ी के हाथ का लिखा हुआ है जो उसने मौलवी करमुद्दीन साहिब को लिखा है। अत: गोलड़ी ने मुहम्मद हसन के पिता को बहुत ज़ोर देकर कहा है कि इनको पुस्तकें मत दिखाओ अर्थात् इस लेखक ख़ाकसार को। गोलड़ी कार्ड में लिखता है कि मुहम्मद हसन की अनुमति से लिखा गया परन्तु यह इक़रार सच्चाई की मांग से नहीं अपितु इसलिए कि यह भेद हम पर खुल गया। अत: विवश और शर्मिंदा होकर इक़रारी हुआ। दूसरे पत्र में गोलड़ी का कार्ड है जो उसने अपने हाथ से लिखकर भेजा है। देखिए। विनीत: शहाबुद्दीन, स्थान- भीं।

मौलवी करमुद्दीन के पत्र की नक़ल

हमारे मुकर्रम हज़रत अक़दस मिर्ज़ा साहिब जी मद्द:ज़िल्लहुलआली

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु

मैं एक लम्बे समय से आपकी पुस्तकें देखा करता हूँ। मुझे आपके कलाम से इश्क़

कायरता को दूर करके सीधी नीयत से मेरे मुक़ाबले पर आ जाएंगे परन्तु कल के दिन जबकि हमें मौज़ा भीं नामक स्थान से पीर मेहर अली की उस करतूत की सूचना मिली जिस का विवरण हाशिए में दर्ज है तब से हम ऐसा समझते हैं कि जैसे पीर साहिब की मृत्यु हो गई और अब उनको सम्बोधित करना भी उनको वह सम्मान देना है जिस के वह कदापि योग्य नहीं परन्तु हमने उचित समझा कि एक प्रारंभ किए हुए निबंध को सम्पन्न कर दें और हाशिये के पढ़ने से पाठकों

शेष हाशिया - है। मैंने कई बार स्वप्न में भी आपके बारे में अच्छी घटनाएं देखी हैं। प्राय: आपके विरोधियों से भी झगड़ा करता हूँ। यद्यपि मुझे अभी तक जनाब से सिलसिला पीरी मुरीदी का सम्बन्ध नहीं है क्योंकि मेरे विचार से बहुत सावधानी की आवश्यकता है जब तक आमने-सामने मिलकर सन्तुष्टि न की जाए बैअत करना उचित नहीं होता। परन्तु फिर भी मुझे जनाब से बिना देखे प्रेम है। मुझे चार-पांच दिन का समय हुआ है कि मैंने आप को स्वप्न में देखा है। आपने मुझे मुबारकबाद दी है और कुछ मिठाई भी प्रदान की है और उस समय मेरे दिल में दो बातें थीं जिनको आप ने वर्णन कर दिया है और उसी स्वप्नावस्था में यह कहता था कि आपके कश्फ़ का तो मैं क़ायल हो गया हूँ। और ख़ुदा तआला सब जानने वाला और इसका प्रतिफल देने वाला है। कुछ बातों की समझ भी नहीं आती है। इसलिए मेरा विचार अभी तक जनाब के बारे में एक तरफ़ा नहीं है। यद्यपि आप के सुधार और संयम का मैं काइल हूँ। मैंने अगले दिन आपकी पुस्तक 'सुरमाचश्म आर्य' के प्रारंभ में कुछ अश्आर फ़ारसी और कुछ उर्दू के पढ़े हैं और वह पढ़कर मुझे रोना आता था और कहता था कि झूठों के कलाम में कभी ऐसा दर्द नहीं होता।

कल मेरे प्रिय मित्र मियाँ शहाबुद्दीन विद्यार्थी के द्वारा मुझे जनाब मौलवी अब्दुल करीम साहिब की ओर से एक रजिस्टर्ड पत्र मिला। जिसमें पीर साहिब गोलड़ी की सैफ़े चिश्तियाई के बारे में चर्चा थी। यहां शहाबुद्दीन को ख़ाकसार ने भी इस बात की सूचना दी थी कि पीर साहिब की पुस्तक में अधिकतर हिस्सा मौलवी मुहम्मद हसन साहिब (मरहूम) के उन नोटों का है जो मर्हूम ने पुस्तक ऐजाज़ुल मसीह और शम्से बाज़िग़: के हाशियों पर अपने विचार लिखे थे। और दोनों पुस्तकें पीर साहिब ने मुझ से मंगवाई थीं और अब वापस आ गई हैं। मुक़ाबला करने से वे नोट असल रूप में पुस्तक में दर्ज पाए गए। यह एक अत्यन्त चोरों जैसी कार्रवाई है कि एक मृत्यु प्राप्त व्यक्ति के विचार लिखकर अपनी ओर सम्बद्ध कर लिए और उसका नाम तक न लिया। और विचित्र यह कि कुछ वे दोष जो आप के कलाम के बारे में वह पकड़ते हैं पीर साहिब की पुस्तक में स्वयं उसके उदाहरण मौजूद हैं। वे दोनो पुस्तकें चूंकि मौलवी मुहम्मद हसन साहिब के पिता के कब्ज़े

को भली भांति ज्ञात हो जाएगा कि पीर मेहर अली ने ऐजाज़ुल मसीह पर जितनी नुक़्तः चीनी की है या जो शम्से बाज़िग़ पर नुक़्तः चीनी है यह उसकी ओर से नुक़्तः चीनी नहीं है अपितु असल नुक़्तः चीनी करने वाला मुहम्मद हसन भीं है। और जब वह दोनों पुस्तकों पर नुक़्तः चीनी कर चुका तो उसने मेरी पुस्तक के हाशिये पर मुबाहले की दुआ लिखी अर्थात् यह कि जो व्यक्ति हम दोनों में से

शेष हाशिया - में हैं इसलिए जनाब की सेवा में वे पुस्तकें भेजना कठिन है क्योंकि उन का विचार आप के विरोध में है और वह कभी भी इस बात की इजाज़त नहीं दे सकते। हाँ यह हो सकेगा कि उन नोटों को बिल्कुल वैसी ही नक़ल करके आपके पास भेजा जाए और यह भी हो सकता है कि कोई विशेष आदमी आप की जमाअत से यहाँ आकर स्वयं देख जाए। परन्तु शीघ्र आने पर देखा जा सकेगा। पीर साहिब का एक कार्ड जो मुझे परसों ही पहुंचा है अपने असल रूप के साथ आप के देखने के लिए भेजा जाता है जिसमें उन्होंने स्वयं इस बात का इक़रार किया है कि उन्होंने मौलवी मुहम्मद हसन के नोट चुराकर सैफ़ेचिश्तियाई की शोभा बढ़ाई है। परन्तु इन सब बातों को मेरी ओर से व्यक्त किया जाना हित के विरुद्ध है।⁂ हां यदि मियां शहाबुद्दीन का नाम प्रकट भी कर दिया जाए तो कुछ हानि न होगी। क्योंकि मैं नहीं चाहता कि पीर साहिब की जमाअत मुझ पर सख़्त नाराज़ हो। आप दुआ करें कि आपके बारे में मेरा विश्वास बिल्कुल साफ़ हो जाए और मुझे समझ आ जाए कि वास्तव में आप मुल्हम और ख़ुदा की ओर से मामूर (आदेशित) हैं। जनाब मौलवी अब्दुल करीम साहिब व मौलाना मौलवी नूरुद्दीन साहिब की सेवा में हाथ जोड़ कर अस्सलामोअलैकुम। अधिक लिखने में समय की तंगी रोक है। मियाँ शहाबुद्दीन की ओर से सलाम अलैकुम के बाद लेख एक है। वस्सलाम

विनीत

मुहम्मद करमुद्दीन उफ़िया अन्हु, भीं से, तहसील-चकवाल

तिथि 21 जुलाई 1902 ई.

⁂**हाशिए का हाशिया -** मौलवी करमदीम साहिब को भूल से इस बात का विचार नहीं आया कि गवाही का छुपाना बड़ा गुनाह है जिसके बारे में آثم قلبه पवित्र क़ुर्आन में अज़ाब का वादा मौजूद है। इसलिए संयम यही है कि किसी निन्दा करने वाले की निन्दा की परवाह न करें और अपने पास जो गवाही हो अदा करें। अत: हम इस बात से असमर्थ हैं कि अपराध को छुपाने के सहायक और सहयोगी बनें और मौलवी करमुद्दीन साहिब का छुपाना ख़ुदा के आदेश से नहीं है केवल हार्दिक कमज़ोरी है। ख़ुदा उन को शक्ति दे।

झूठा है उसके लिए ख़ुदा तआला की लानत★ और उसका कोप मांगा और अब तक वह मुबाहले की दुआ पुस्तक के हाशिये पर उसकी विशेष क़लम से दर्ज है। अत: तुरन्त दुआ स्वीकार हो गई। और इसके बाद वह एक बड़े रोग और सरसाम में ग्रस्त होकर कुछ दिनों में ही कब्र में जा पड़ा और पुस्तक के छपने की नौबत न आई। उसका वही निबंध पीर मेहर अली ने अपने नाम से छपवाया

शेष हाशिया -

दूसरा पत्र मौलवी करमुद्दीन साहिब का बनाम हकीम फ़ज़्लदीन साहिब इस ख़ाकसार के विश्वासपात्र

मुकर्रम मुअज़्ज़म जनाब हकीम साहिब मद्द: ज़िल्लहुल आली

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

31 जुलाई को लड़का घर पहुंच गया।⁕ उसी समय से ज्ञात कार्य के बारे में उस से कोशिश आरंभ की गई। पहले तो उसने पुस्तकें देने से बहुत इन्कार किया और कहा कि पुस्तकें जाफ़र ज़टल्ली की हैं और वह मौलवी मुहम्मद हसन का ख़त पहचानता है और उसने मुझ से ज़ोर देकर कहा है कि पुस्तकें तुरन्त ज़टल्ली के पास लाहौर पहुंचा दूं। परन्तु बहुत सी कूटनीतियां और लालच देने के बाद उसे स्वीकार कराया गया। अन्त में छ: रुपये बदले में लेकर राज़ी हुआ और पुस्तक ऐजाज़ुल मसीह के नोटों की नक़ल दूसरी प्रति पर करके असल पुस्तक जिस पर मौलवी मुतवफ्फी की अपनी क़लम के नोट हैं पत्र ले जाने वाले के

⁕**हाशिए का हाशिया -** लड़के से अभिप्राय मुहम्मद हसन (मुतवफ़्फी) का लड़का है जो उस का वारिस है। उसी ने मौलवी करमदीन साहिब के कहने के अनुसार छ: रुपये नकद लेकर दोनों पुस्तकें अर्थात् ऐजाज़ुल मसीह और शम्से बाज़िग़: जिन पर कथित मुहम्मद हसन के हस्ताक्षरित नोट थे, हमें दे दीं और मेहर अली के छिद्रान्वेषण का यही कारण हुआ।

लेखक की ओर से।

★**हाशिया :-** इस्लाम में 'लानतुल्लाहि अलल काज़िबीन' कहना एक बद्-दुआ है जिसके यह अर्थ हैं कि जो व्यक्ति झूठा है वह ख़ुदा की दया से निराश हो और उसके कोप के नीचे आ जाए। इसलिए पवित्र क़ुर्आन में ऐसे पुरुषों या ऐसी स्त्रियों के लिए जिन पर अपराधी होने का सन्देह हो तथा उन पर अन्य कोई गवाह न हो जिसकी गवाही से दण्ड दिया जाए, ऐसी क़सम रखी है जो लानत के साथ सुदृढ़ की गई हो ताकि उसका परिणाम वह हो जो गवाह के बयान का परिणाम है अर्थात् दण्ड और ख़ुदा का कोप। इसी से

जिस पर उसके निवेदन के अनुसार जो मुबाहले के रंग में था, ख़ुदा का कोप गिरा अर्थात् अपने प्रिय जीवन से अपनी इच्छा के विरुद्ध मर गया उसी के निबंध की चोरी की। अफ़सोस कि इतने महान चमत्कार के प्रकट होने के बाद भी पीर मेहर अली अपनी धृष्टता से न रुका और वह व्यक्ति जो अपने मुबाहले के प्रभाव से मर गया उसी के अपवित्र माल की चोरी की।

अब हम कुछ दूसरे आरोप और सन्देह पीर मेहर अली शाह साहिब के

शेष हाशिया - हाथ सेवा में प्रस्तुत हैं। पुस्तक वसूल करके उसकी रसीद पत्रवाहक को देने की कृपा करें और यदि मौजूद हों तो छः रुपये भी पत्रवाहक को दे दीजिएगा ताकि लड़के को दे दिये जाएं और ताकि दूसरी पुस्तक शम्से बाज़िग़ः को प्राप्त करने में परेशानी न हो। आप पुस्तक शम्से बाज़िग़ः की बिना जिल्द प्रति जिस समय रवाना करेंगे तुरन्त असल प्रति जिस पर नोट हैं इसी प्रकार सेवा में भेजी जाएगी। आप बिल्कुल तसल्ली रखें इन्शा अल्लाह तआला वादे के विरुद्ध कदापि नहीं होगा। उस लड़के ने कहा है कि मुतवफ़्फ़ी के हाथ के लिखे और भी कई एक नोट हैं जो तलाश करने पर मिल सकते हैं। जिस समय हाथ लगे तो उसका बदला उस से अलग निर्धारित करके कलमी फ़ैज़ी (मर्हूम) आवश्यकता पड़ने पर लेकर सेवा में प्रेषित होंगे। आप शम्से बाज़िग़ः की प्रति बहुत शीघ्र मंगा कर भेज दें। क्योंकि लड़का केवल एक माह के अवकाश पर घर आया है। यह समय पूर्ण हो जाने पर वह पुस्तक लाहौर ले जाएगा और फिर पुस्तक का मिलना कठिन हो जाएगा। चकवाल से तलाश करें शायद प्रति मिल जाए तो पत्र वाहक के हाथ भेज दें और अपना आदमी भी साथ भेज दें ताकि पुस्तक ले जाए। आशा है कि मेरी यह तुच्छ सेवा हज़रत मिर्ज़ा साहिब और आप की जमाअत स्वीकार करके मेरे लिए ख़ैर की दुआ करेंगे। किन्तु मेरी विनती है कि मेरा नाम क्रियात्मक तौर पर क़दापि प्रकट न किया जाए। ताकि मुझ से फिर भी ऐसी सहायता मिल सके। मौलवी शहाबुद्दीन की ओर से अस्सलामो अलैकुम। वस्सलाम

ख़ाकसार- मुहम्मद करमुद्दीन उफ़िया अन्हु

स्थान- भैं, तहसील-चकवाल, 3 अगस्त 1902 ई.

पीर मेहर अली शाह के कार्ड की नक़्ल जिसमें वह इक़रार करता है कि पुस्तक सैफ़ेचिश्तियाई वास्तव में मुहम्मद हसन का निबंध है।

कार्ड:-मुहिब्बी-व-मुख़लिसी मौलवी करमुद्दीन साहिब सलामत बाशिद व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू तत्पश्चात् एक प्रति डाक द्वारा या किसी विश्वसनीय आदमी के हाथ भेजना चाहता हूँ। आपको स्पष्ट हो कि इस पुस्तक (सैफ़ेचिश्तियाई) में फ़ातिहा की

जो वास्तव में मुतवफ्फी मुहम्मद हसन के हैं उत्तर सहित नीचे लिखते हैं। और पाठकगणों के आशावान हैं कि वे न्यायपूर्वक दें कि क्या ये ऐतराज़ ईमानदारी, संयम और सच्चाई से किए गए हैं या बेईमानी, संयम को छोड़कर तथा धोखा देने, अन्याय और पक्षपात के तरीक़े से लिखे गए हैं और हम उनके समस्त ऐतराज़ों को इस जगह बिल्कुल उनकी मूल इबारत में ही नक़ल कर देते हैं

शेष हाशिया - तफ्सीर के बारे में खण्डन अर्थात् (ऐजाज़ुल मसीह) जो फैज़ी साहिब मर्हूम-व-मग़फूर की है उनकी इजाज़त ⁕ से लिखी है। अतः इस बीच लिखित तौर पर आमने सामने जेहलम में तय हो चुका था अपितु फ़ैज़ी साहिब (स्वर्गीय) के निवेदन पर मैंने उत्तर लिख कर शम्से बाज़िग़ः पर आवश्यक निबंध उनके पास लाहौर में भेज दिए थे और उनको इजाज़त दी थी कि वह अपने नाम पर छपवा दें। अफसोस कि जीवन ने वफ़ा न की और न वह मेरे लाहौर में भेजे निबंध मुझे मिले। अन्तः मुझे ही यह काम करना पड़ा। इसलिए आप से उनकी इस्तेमाल की हुई पुस्तकें मंगवाकर लिखित तफ़्सीर का खण्डन पहली इजाज़त के अनुसार परिवर्तित की गई। भविष्य में शायद आपको या मौलवी ग़ुलाम मुहम्मद साहिब को कष्ट उठाना होगा। वस्सलाम

नक़ल उन नोटों की जो मुहम्मद हसन ने ऐजाज़ुल मसीह और शम्से बाज़िग़ः पर लिखे थे

यह सम्पूर्ण नक़ल हूबहू हमारे पास आ गई है जिसे मुहम्मद हसन मुतवफ़्फ़ी ने अपने हाथ से लिखा है और चूंकि ये सब नोट वही हैं जो पुस्तक सैफ़ेचिश्तियाई में लिखे गए हैं। इसलिए उनका यहां नक़ल करना लम्बाई से ख़ाली नहीं। परन्तु इस बात के गवाह, कि यही वे नोट हैं जो मुहम्मद हसन ने पुस्तक ऐजाज़ुल मसीह और शम्से बाज़िग़ः पर लिखे थे पांच आदमी हैं-

(1)- पहले मियां शहाबुद्दीन भैं। जैसा कि उनके दोनों पत्र हम नक़ल कर चुके हैं।

(2)- दूसरे मौलवी करमुद्दीन साहिब दोस्त पीर मेहर अली साहिब जिनका हम से कुछ भी संबंध नहीं। जिन्होंने अपने हाथ से ऐजाज़ुल मसीह और शम्से बाज़िग़ः के हाशिए

⁕**हाशिए का हाशिया -** यदि इजाज़त से यह काम था चोरी से नहीं था तो पुस्तक में क्यों मुहम्मद हसन का ज़िक्र नहीं किया गया कि उसकी इजाज़त से मैंने उसके निबंध लिखे हैं और क्यों झूठ बोला गया कि यह मैंने लिखी है और क्यों अपनी पुस्तक में उसका कोई लेख (पत्र) नहीं छापा जिसमें ऐसी इजाज़त थी और क्यों उस समय तक ख़ामोश रहा जब तक कि ख़ुदा ने छिद्रान्वेषण कर दिया और चोरी पकड़ी गई। लेखक की ओर से।

ताकि ख़ुलासा करने की हालत में सन्देह पैदा न हों और वे ये हैं :- **नक़ल मुताबिक़ असल (सैफ़े चिश्तियाई पृष्ठ 6,7,8)**

असली नुबुव्वत के मुद्दई होने का सबूत और उसका खण्डन

देखो कथित विज्ञापन (5 नवम्बर 1901 ई. जिसका शीर्षक है 'एक ग़लती का निवारण') पृष्ठ-1 पंक्ति-13 अतः वे ख़ुदा के वार्तालाप जो बराहीन अहमदिया

शेष हाशिया - पर से ये नोट नक़ल किए हैं जिनका पत्र अभी हम नक़ल कर चुके हैं।

(3)- मेहर अली शाह का अपने हाथ का कार्ड मौलवी करमदीन साहिब के नाम जो अभी नक़ल हो चुका है।

(4)- मुहम्मद हसन मुतवफ़्फ़ी का पिता जिसने वे दोनों पुस्तकें मियां शहाबुद्दीन और मौलवी करमुद्दीन साहिब के सुपुर्द कीं जिन पर मुहम्मद हसन मुतवफ़्फ़ी के नोट लिखे हुए थे और अपने सामने ये नोट नक़ल कराए।

(5)- मुहम्मद हसन मुतवफ़्फ़ी का लड़का जिसने वे दोनों पुस्तकें देने के लिए निकालीं ताकि अपने ससुर को दे ताकि वह बिकवा दे और विस्तृत उत्तर हाशिये में आ गया है। इन नोटों में उसने अपनी अनभिज्ञता, पक्षपात और जल्दबाज़ी के कारण बहुत सी लज्जाजनक ग़लतियां की हैं। परन्तु अब मुर्दे की निन्दा करना लाभप्रद नहीं है। उसके नोटों में इतनी भारी ग़लतियां हैं कि यदि उसे जल्दी से मृत्यु न पकड़ लेती तो वह अवश्य दृष्टि डालकर अपनी ग़लतियों का यथाशक्ति सुधार करता। परन्तु यह प्रश्न कि इतनी शीघ्र मौत क्यों आ गई। उसका उत्तर यही है कि उस मौत के तीन कारण हैं- प्रथम तो यही कि उसने इन नोटों में अपने मुंह से मौत मांगी और अपने हाथ से पुस्तक पर लिखा कि लानतुल्लाहि अलल काज़िबीन। अतः जिन नोटों में उसने झूठे सदस्य पर हम दोनों सदस्यों में से लानत की है वे इस समय हमारे सामने रखे हैं जो पांच गवाहों की गवाही से वही नोट हैं जो उसने अपनी क़लम से पुस्तक ऐजाज़ुल मसीह और शम्से बाज़िग़ः पर लिखे थे और स्वयं असल नोट जिनकी यह नक़ल उसके पिता ने उन गवाहों के सुपुर्द की उसके घर में मौजूद है जो उसके मुबाहले की एक पुख़्ता निशानी है।* जो बाबा नानक के चोले की तरह लम्बे समय तक यादगार रहेगी और यह मुबाहला जिसके बाद वह दो सप्ताह भी जीवित न रह सका उन लोगों के लिए ख़ुदा ताआला की ओर से उत्तर है जो कहा करते हैं कि हम इस मुबाहले को मानेंगे जिसके अन्तिम परिणाम पर दो, तीन सप्ताह से अधिक समय न लगे। तो अब हम प्रतीक्षक

***हाशिए का हाशिया -** इसके बाद वे पुस्तकें मुहम्मद हसन के बेटे से हमें मिल गईं जिन पर असल नोट हैं अर्थात् मुहम्मद हसन के स्वयं हस्ताक्षर किए लिखे वे नोट हैं।

में प्रकाशित हो चुके हैं उनमें से एक ख़ुदा की यह वह्यी है-

هو الذی ارسل رسوله با لهدی و دین الحق لیظهره علی الدین کله

(देखो पृष्ठ 490 बराहीन अहमदिया) इसमें स्पष्ट तौर पर इस खाकसार को रसूल कह पुकारा गया है।

मेरा कथन- यह आयत सूरह फ़तह के अन्तिम रुकू में मौजूद है जिसमें आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबु और आप के पवित्र धर्म के विजयी कर देने का वर्णन है कोई बुद्धिमान कह सकता है कि यदि किसी व्यक्ति को स्वप्न में या जागने में कथित आयत सुनाई दे जैसा कि प्राय: हाफ़िज़ों (क़ुर्आन कंठ करने वालों) और शाग़िलीन को बार बार पढ़ने तथा विचार करने के कारण ऐसा हुआ करता है। मान लिया कि इल्हाम द्वारा ही सही। तो क्या

शेष हाशिया - हैं कि वे इस निशान को मानते हैं या नहीं और विचित्रतर यह कि मुहम्मद हसन मुबाहले के बाद मरा। इसी प्रकार ग़ुलाम दस्तगीर कसूरी का हाल हुआ था कि उसने भी मुहम्मद हसन की तरह मेरे खण्डन में एक पुस्तक बनाई और उसका नाम 'फत्ह रहमानी' रखा और उसके पृष्ठ 27 में जोश में आकर दुआ कर दी जिसका ख़ुलासा यह है कि - हे ख़ुदा ! जो व्यक्ति झूठा है और झूठ बोल रहा है और सच को छोड़ रहा है उसको मार दे। आमीन। तब इस पुस्तक के लिखने पर एक महीना भी न गुज़रने पाया था कि स्वयं मर गया। उसकी यह पुस्तक अर्थात् फत्ह रहमानी छपी हुई मौजूद है। देखो पृष्ठ-26,27 और ख़ुदा से डरो। ये दोनों पंजाब के आदमी हैं जो अपने मुंह से मुबाहला करके स्वयं ही मर गए। यदि यह निशान नहीं तो मालूम नहीं हमारे विरोधियों के नज़दीक निशान किस चीज़ का नाम है।* दूसरा मुहम्मद हसन की मृत्यु का कारण वह भविष्यवाणी है जो ऐजाज़ुल मसीह

***हाशिए का हाशिया -**इसी प्रकार मुहियुद्दीन लखूके वाले का हाल हुआ जब उसने यह इल्हाम छपवाया कि "मिर्ज़ा साहिब फ़िरऔन"। तब उसकी मृत्यु से पहले मैंने उसे एक पत्र द्वारा जो अगस्त 1894 ई. को लिखा गया था सूचना दी कि अब वह फ़िरऔन की तरह इस मूसा के सामने अपने दण्ड को पहुंचेगा। अत: उन्हीं दिनों तथा उसके जीवन में वह पत्र 'अलहक़' सियालकोट में छपा और फिर उसके मरने के पश्चात् इस निशान को अभिव्यक्त करने के लिए वही पत्र उसकी मृत्यु की तिथि सहित अख़बार अलहकम क़ादियान तिथि 24 जुलाई 1901 में छापा गया। देखो अलहकम 24 जुलाई 1901 पृष्ठ 5, कालम-2, इसी से।

वह व्यक्ति इस आयत की गवाही के साथ रसूल कहलवाने का अधिकारी हो सकता है? कदापि नहीं। अन्यथा आयत-

مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ ؕ وَ الَّذِیۡنَ مَعَہٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَی الۡکُفَّارِ رُحَمَآءُ بَیۡنَہُمۡ

(अलफ़त्ह- 48/30)

को सुनने से प्रत्येक सुनने वाला मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी तथा बुज़ुर्ग सहाबा भी क्यों न हो जबकि (رَسُوله) रसूलिही के सुनने से रसूल बन गया तो (मुहम्मद रसूलुल्लाह) के सुनने मुहम्मद रसूलुल्लाह और (وَالَّذِیۡنَ مَعَہٗ) वल्लज़ीना माअहु के सुनने से बुज़ुर्ग सहाबा और (कुफ़्फ़ार) के सुनने से कुफ़्फ़ार क्यों नहीं बन सकता? ऐसा ही-

اَقِیۡمُوا الصَّلٰوۃَ وَ اٰتُوا الزَّکٰوۃَ (अलमुज़्ज़म्मिल- 73/21)

के सुनने से कोई दावा कर सकता है कि मैं नबी और रसूल हूँ और नई नमाज़ और ज़कात का आदेश मुझ पर उतरा है। कदापि नहीं। यदि यह नहीं कर सकता

शेष हाशिया - के टायटल पेज पर लिखी गई और वह यह है-

من قام للجواب وتنمّر ۔فسوف یری انہ تندّم وتذمّر

अर्थात् जो व्यक्ति इस पुस्तक के उत्तर लिखने पर तैयार होगा और चीता होना दिखाएगा वह शीघ्र ही देखेगा कि इस काम से असफल रहा और अपने नफ़्स की निन्दा करने वाला हुआ। और इस से अधिक और क्या असफलता हो सकती है कि मुहम्मद हसन हस्रत को साथ ही ले गया और मर गया और इस इरादे को कि वह अरबी पुस्तक का अरबी में उत्तर लिखे पूरा न कर सका और न कुछ प्रकाशित कर सका। तीसरा मुहम्मद हसन की मृत्यु का कारण वह मुबाहले की दुआ है जो ऐजाज़ुल मसीह के पृष्ठ 199 में की गई थी। चौथा मुहम्मद हसन की मृत्यु का कारण ख़ुदा की वह वह्यी है जो काफ़ी समय हुआ कि दुनिया में प्रकाशित हो चुकी थी। अर्थात् यह कि

انی مھین من اراد اھانتك

अर्थात् मैं उसको अपमानित करूंगा जो तेरा अपमान चाहता है। अतएव चूंकि उसने ऐजाज़ुल मसीह पर क़लम उठाकर मेरे अपमान का इरादा किया इसलिए ख़ुदा ने उसे अपमानित कर दिया अपने मुंह से मौत मांग कर कुछ दिनों में ही मर गया और अपनी मौत को हमारे लिए एक निशान छोड़ गया। इस पर ख़ुदा की हर प्रकार की प्रशंसा। इसी से।

तो फिर आयत -
اَرۡسَلَ رَسُوۡلَہٗ بِالۡھُدٰی (अलफ़त्ह- 48/29)

के इल्हाम होने से बुरूज़ी रिसालत को (रसूलिही) के शब्द से किस प्रकार अभिप्राय ले सकता है। विचार-विमर्श करो और न्याय से काम लो। अतः कथित आयत को इल्हाम स्वीकार करने के अनुसार क़ादियानी को (रसूल) कहलवाने का अधिकार कदापि नहीं पहुंचता। कष्ट कल्पना के तौर पर यदि कथित आयत के सुनने से (रसूल) कहलाने के योग्य बनें तो उसी मायने से रसूल होंगे जो मायने कथित आयत में अभिप्राय है अर्थात् असली रसूल अन्यथा दलील दावे पर चरितार्थ न होगी। क्योंकि दावे में रसूल ज़िल्ली और तर्क अर्थात् (اَرۡسَلَ رَسُوۡلَہٗ) में रसूल असली।

ببیں تفاوت راہ از کجاست تا بہ کجا★

(देखो मार्ग का अंतर कहाँ से कहाँ तक है।)

और रसूलुहू से ज़िल्ली रसूल अभिप्राय लेने के अनुमान पर ख़ुदा के कलाम में अर्थों का अक्षरान्तरण अनिवार्य आएगा। इसलिए लिखित आयत का मार्गदर्शन बुलन्द आवाज़ से पुकार रहा है कि क़ादियानी रसूल असली होने का दावेदार है। अतः उसका ललकार कर कहलवाना भी इस पर गवाह है। क्योंकि केवल अर्रसूल में फ़ना होना इस की मांग नहीं करता। फिर इसी विज्ञापन में उपरोक्त नक़ल की हुई इबारत से मिलाकर लिखते हैं। फिर इसके बाद इसी पुस्तक में मेरे बारे में ख़ुदा की यह वह्यी है-

جری اللہ فی حلل الانبیاء

अर्थात् ख़ुदा का रसूल नबियों के लिबास में। देखो बारहीन अहमदिया पृष्ठ 504"

★ख़ुदा की वह्यी पर यह तर्क प्रस्तुत करना कियास माअल फ़ारिक़ (अर्थात् दो अन्तर्विरोधी चीज़ों को एक समझना- अनुवादक) है। वह अपने कलाम में प्रत्येक अधिकार रखता है। उसने रसूल का शब्द उन रसूलों के लिए भी प्रयोग किया है जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बहुत कमतर थे और आपके लिए भी जो सर्वश्रेष्ठ है अपितु सबके लिए सरर्वोत्तम व्यावहारिक आदर्श कर्मठ में हैं वही रसूल का शब्द प्रयोग हुआ और आयतों के अर्थों में अक्षरांतरण वह है जो इन्सान करे, न कि जो स्वयं ख़ुदा एक आयत के दूसरे अर्थ करे वह भी अक्षरांतरण है। लेखक की ओर से।

उत्तर

सर्वप्रथम पीर जी का यह भ्रम कि क्यों तुम्हारी यह वह्यी परेशान (अस्त-व्यस्त) स्वप्नों के प्रकारों और दिल में आई हुई बात नहीं है, उसका उत्तर यही है कि जैसा कि वह्यी समस्त अंबिया अलैहिस्सलाम की हज़रत आदम से लेकर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक अस्त व्यस्त स्वप्नों के प्रकारों और हृदय में आई बात नहीं है, ऐसा ही यह वह्यी भी उन संदेहों से पवित्र और शुद्ध है और कहो कि उस वह्यी के साथ जो इस से पहले अंबिया अलैहिस्सलाम को हुई थी चमत्कार और भविष्यवाणियां हैं तो इसका उत्तर यह है कि यहां प्राय: पहले नबियों की अपेक्षा बहुत अधिक चमत्कार और भविष्यवाणियां मौजूद हैं अपितु कुछ पहले नबियों के चमत्कार और भविष्यवणियों को इन चमत्कार और भविष्यवाणियों से कुछ तुलना ही नहीं और उनकी भविष्यवाणियां और चमत्कार इस समय केवल बतौर क़िस्सों और कहानियों के हैं, परन्तु ये चमत्कार और भविष्यवाणियां हज़ारों लोगों के लिए चश्मदीद घटनाएं हैं और इस प्रतिष्ठा और शान की हैं कि इस से बढ़कर कल्पना नहीं की जा सकती अर्थात् संसार में हज़ारों लोग इन के गवाह हैं। परन्तु पहले नबियों के चमत्कार तथा भविष्यवाणियों का एक भी ज़िन्दा गवाह पैदा नहीं हो सकता, अपवाद हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कि आप के चमत्कारों और भविष्यवाणियों का मैं ज़िन्दा गवाह मौजूद हूँ और पवित्र क़ुर्आन ज़िन्दा गवाह मौजूद है और मैं वह हूँ जिसके कुछ चमत्कार और भविष्यवाणियों के करोड़ों लोग गवाह हैं। फिर यदि मध्य में द्वेष न हो तो कौन ईमानदार है जो घटनाओं पर सूचना पाने के बाद इस बात की गवाही न दे कि वास्तव में प्राय: पहले नबियों के चमत्कारों के बारे में ये चमत्कार और भविष्यवाणियां प्रत्येक पहलू से बहुत शक्तिशाली तथा बहुत अधिक हैं। और यदि कोई **अंधा इन्कार** करे तो हम मौजूद हैं और हमारे गवाह मौजूद हैं-

وليس الخبر كالمعائنة

फिर जिस हालत में सैकड़ों नबियों के बारे में हमारे चमत्कार और भविष्यवाणियां अग्रसर हो गई हैं तो अब स्वयं सोच लो कि इस ख़ुदा की वह्यी को अस्त-वयस्त स्वप्न और मनगढ़त कहना वास्तव में समस्त नबियों की नुबुव्वत

से इन्कार करना है। और यदि संदेह हो तो ख़ुदा तआला का भय करके एक जल्सा करो और हमारे चमत्कार तथा भविष्यवाणियां सुनो और हमारे चश्मदीद गवाहों की गवाही जो हल्फ़ी गवाही होगी लिखते जाओ और फिर यदि आप लोगों के लिए संभव हो तो हमारे नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम को छोड़कर दुनिया में किसी नबी के चमत्कारों को उनकी तुलना में प्रस्तुत करो परन्तु न क़िस्सों के रंग में अपितु चश्मदीद को प्रस्तुत करो। क्योंकि क़िस्से तो हिन्दुओं के पास भी कुछ कम नहीं। क़िस्सों को प्रस्तुत करना तो ऐसा है जैसा कि एक गोबर का ढ़ेर कस्तूरी और अंबर के मुक़ाबले पर। परन्तु स्मरण रखो कि इन चमत्कार और भविष्यवाणियों के उदाहरण जो मेरे हाथ पर प्रकट हुए और हो रहे हैं मात्रा, गुणवत्ता और प्रतिष्ठा की दृष्टि से कदापि प्रस्तुत न कर सकोगे चाहे तलाश करते-करते मर भी जाओ। फिर यदि यह वह्यी जिस के समर्थन में ये निशान प्रकट हुए ख़ुदा का कलाम नहीं है तो फिर तो तुम पर अनिवार्य है कि नास्तिक बन जाओ और ख़ुदा तआला के समस्त नबियों का इन्कार कर दो। क्योंकि नुबुव्वत की इमारत की टूट-फूट जितनी हो चुकी है अब ख़ुदा तआला इन ताज़ा चमत्कारों और भविष्यवाणियों से सब की मरम्मत कर रहा है और अब वह पहले क़िस्सों को घटनाओं के रूप में दिखा रहा है और पुस्तकीय (बातों) को मौजूद का लिबास पहना रहा है ताकि जो लोग सन्देहों के गढ़े में गिर गए हैं दोबारा उन को विश्वास का लिबास पहनाए। इसलिए जो व्यक्ति मुझे स्वीकार करता है वह समस्त नबियों तथा उनके चमत्कारों को भी नए सिरे से स्वीकार करता है और जो व्यक्ति मुझे स्वीकार नहीं करता उसका पहला ईमान भी कभी स्थापित नहीं रहेगा। क्योंकि उसके पास केवल क़िस्से हैं न कि अवलोकन। ख़ुदा तआला को दिखाने का दर्पण मैं हूँ, जो व्यक्ति मेरे पास आएगा और मुझे स्वीकार करेगा वह नए सिरे से उस ख़ुदा को देख लेगा जिसके बारे में दूसरे लोगों के हाथ में मात्र क़िस्से शेष हैं। मैं उस ख़ुदा पर ईमान लाया हूँ जिसको मेरे इन्कारी नहीं पहचानते। और मैं सच-सच कहता हूँ कि जिस पर वे ईमान लाते हैं उनके वे विचार मूर्तियां हैं न कि ख़ुदा। इसी कारण से वे मूर्तियां उनकी कुछ सहायता नहीं कर सकतीं, उनको कुछ शक्ति नहीं दे सकतीं, उनमें कोई एक परिवर्तन पैदा नहीं कर सकतीं, उनके लिए कोई समर्थन

वाले निशान नहीं दिखा सकतीं। और स्मरण रहे कि ये अंधों के व्यर्थ संदेह और आशंकाएं हैं जो इस ख़ुदा की वह्यी के बारे में उनके दिलों को पकड़ती हैं जो मुझ पर उतर रही है और वे सोचते हैं कि संभव है कि यह ख़ुदा का कलाम न हो बल्कि मनुष्य के अपने हृदय के ही भ्रम हों। परन्तु उनको स्मरण रहे कि ख़ुदा अपनी क़ुदरतों में कमज़ोर नहीं। वह विश्वास दिलाने के लिए ऐसे विलक्षण तरीक़े अपनाता है कि मनुष्य जैसे सूर्य को देखकर पहचान लेता है कि यह सूर्य है ऐसा ही ख़ुदा के कलाम को पहचान लेता है। क्या उनका यह विचार है कि आदम से लेकर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक ख़ुदा तआला इस बात पर समर्थ था कि अपनी पवित्र वह्यी के माध्यम से सत्याभिलाषियों को विश्वास के उद्गम तक पहुंचा दे। परन्तु फिर इसके पश्चात् उस दानशीलता पर सामर्थ्यवान न रहा या समर्थ तो था परन्तु जान बूझ कर इस उम्मते मर्हूमा के साथ कृपणता की और उस दुआ को भूल गया जो स्वयं ही सिखाई थी-

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ۔

यदि मुझ से प्रश्न किया जाए कि तुमने क्योंकर पहचाना और विश्वास किया कि वे वाक्य जो तुम्हारी जीभ पर जारी किए जाते हैं वह ख़ुदा का कलाम है मानसिक विचार और शैतानी इल्क़ा नहीं? तो मेरी रूह इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर देती है:-

(1)- प्रथम जो कलाम मुझ पर उतरता है उसके साथ एक वैभव, आनन्द और प्रभाव है। वह एक फ़ौलादी कील की तरह मेरे दिल के अंदर धंस जाता है और अंधकार को दूर करता है और उसके उतरने से मुझे एक नितान्त उत्तम आनंद आता है। काश यदि मैं समर्थ हो सकता तो मैं उसे वर्णन करता। परन्तु रूहानी आनंद हों चाहे भौतिक, उनकी हालतों का पूर्ण नक़्शा खींचकर दिखलाना मानवीय शक्ति से बढ़कर है। एक व्यक्ति एक प्रियतम को देखता है और उसकी सुन्दर की निशानी से आनन्द उठाता है परन्तु वह वर्णन नहीं कर सकता कि वह आनन्द क्या चीज़ है। इसी प्रकार वह ख़ुदा जो समस्त अस्तित्वों का मुख्य कारण है जैसा कि उसका दर्शन उच्च कोटि के आनन्द का उद्गम है ऐसा ही उसकी बात-चीत भी आनन्द का उद्गम है। यदि एक कलाम मनुष्य सुने अर्थात् एक आवाज़ उसके

दिल पर पहुंचे और उसकी जीभ पर जारी हो और उसको सन्देह शेष रह जाए कि शायद यह शैतानी आवाज़ है या दिल में आया विचार है तो वास्तव में वह शैतानी आवाज़ होगी या दिल में आया हुआ विचार होगा। क्योंकि ख़ुदा का कलाम जिस शक्ति, बरकत, प्रभाव, आनन्द, ख़ुदाई शक्ति और चमकते हुए चेहरे के साथ दिल पर उतरता है, स्वयं विश्वास दिला देता है कि मैं ख़ुदा की ओर से हूँ और मुर्दा आवाज़ों से कदापि समानता नहीं रखता अपितु उसके अन्दर एक जान होती है और उसके अन्दर एक शक्ति होती है और उसके अन्दर एक आकर्षण होता है और उसके अन्दर विश्वास प्रदान करने की एक विशेषता होती है और उसके अन्दर एक आनन्द होता है और उसके अन्दर एक प्रकाश होता है और उसके अन्दर एक विलक्षण चमकार होती है और उसके साथ कण-कण पर अधिकार करने वाले फ़रिश्ते होते हैं। इसके अतिरिक्त उसके साथ ख़ुदाई विशेषताओं के और बहुत सी विलक्षणताएं होती हैं। इसलिए संभव ही नहीं होता कि ऐसी वह्यी के उतरने वाले के दिल में सन्देह पैदा हो सके अपितु वह सन्देह को कुफ्र समझता है। और यदि उसे कोई अन्य चमत्कार न दिया जाए तो वह उस वह्यी को जो इन विशेषताओं पर आधारित है, स्वयं एक चमत्कार ठहराता है। ऐसी वह्यी जिस व्यक्ति पर उतरती है उस व्यक्ति को ख़ुदा के मार्ग में तथा ख़ुदा के प्रेम में एक ऐसे अशक्त प्रेमी के समान बना देती है जो स्वयं को श्रद्धा और दृढ़ता की ख़ूबी के कारण दीवाने के समान बना देता है। उसका विश्वास उसके हृदय को शहंशाह बना देता है। वह मैदान का बहादुर और निस्पृह ता के तख़्त का **मालिक बन जाता है।** यही मेरा हाल है जिसको दुनिया नहीं जानती। इस से पूर्व कि जो मैं चमत्कार देखूं और आकाशीय समर्थनों का अवलोकन करूं मैं उसके कलाम से ही उसके कलाम से ही उसकी ओर ऐसा खींचा गया कि कुछ समझ नहीं आती कि मुझे क्या हो गया। तेज़ तलवारें मेरे **इस पैबन्द (जोड़)** को छुड़ा नहीं सकतीं। कोई आग मुझे डरा नहीं सकती। वह आकर्षण जिसने मेरे हृदय पर काम किया वह तर्कों से बाहर है और वर्णन करने से उच्चतर और प्रमाणों से श्रेष्ठतर। प्रारंभ में कलाम था। उस कलाम ने जो कुछ किया वह किया। वह ख़ुदा जो गुप्त से गुप्त है उसने मेरी रूह पर प्रारंभ में केवल कलाम के साथ झलक

दिखाई और मुझ पर अपने वार्तालाप का दरवाज़ा खोला। अतः वही एक बात थी जो विशेष तौर पर मेरे लिए पर्याप्त आकर्षण हुई और ख़ुदा तआला की ओर मुझे खींचकर ले गई और यह कि कलाम की शक्ति ने मेरे हृदय पर क्या-क्या प्रभाव डाले और मुझे कहां तक पहुंचा दिया और क्या-क्या **परिवर्तन** किए और क्या मेरे दिल में से **ले लिया** और क्या दे दिया। इन बातों को मैं किन शब्दों में अदा करूं और किस शैली में हृदयों पर बिठा दूं। जिन विलक्षण अनुकम्पाओं के साथ वह मुझ से निकट हुआ **कोई नहीं जानता** सिवाए मेरे, और जिस प्रेम के स्थान पर **मेरा क़दम है** कोई नहीं जानता सिवाए उसके। मैं सच-सच कहता हूँ कि इस उन्नति एवं संबंध का आरम्भ ख़ुदा का कलाम है जिसके अचानक आकर्षण ने मुझे ऐसा उठाया जैसा कि एक शक्तिशाली हवा का झोंका एक तिनके को एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर फेंक देता है। तो मेरे पास यह चर्चा करना कि क्यों वह कलाम जो तुम पर उतरा हृदय में उत्पन्न पैशाचिक विचार तो नहीं। यह बात ऐसी ही है जैसे कि कोई कहे कि क्यों संभव नहीं कि तुम्हारा यह विचार कि तुम आंखों से देखते हो और जीभ से बोलते हो और कानों से सुनते हो यह ग़लत विचार हो। अतः प्रियजनो! तुम सोचो और समझ लो कि क्या वह व्यक्ति जिसको मालूम है कि आंख बन्द करने से फिर कुछ देख नहीं सकता और कानों के बन्द करने से फिर कुछ सुन नहीं सकता और जीभ के काटे जाने के बाद फिर कुछ बोल नहीं सकता वह ऐसी इन्कार करने वाला जिरह (प्रति प्रश्न) को कुछ चीज़ नहीं समझेगा। या सन्देह में पड़ेगा कि शायद मैं आंख से नहीं देखता और कान से नहीं सुनता और जीभ से नहीं बोलता। अतः इसी प्रकार से मेरा हाल है ख़ुदा का कलाम जो मुझ पर उतरा और उतरता है वह मेरी रूहानी माँ है जिस से मैं पैदा हुआ उसने मुझे एक अस्तित्व प्रदान किया है जो पहले न था और एक रूह प्रदान की है जो पहले न थी। मैंने एक बच्चे के समान उसके आंचल में पोषण पाया और उसने मुझे प्रत्येक ठोकर से संभाला और प्रत्येक गिरने के स्थान से बचा लिया। वह कलाम एक दीपक के समान मेरे आगे-आगे चला, यहां तक कि मैं अभीष्ट मंज़िल तक पहुंच गया। इससे अधिक कोई नीचता नहीं होगी कि मैं यह कहूं कि वह ख़ुदा का कलाम नहीं। मैं उसे

उसी प्रकार ख़ुदा का कलाम जानता हूँ जिस प्रकार मैं विश्वास रखता हूँ कि मैं जीभ से बोलता हूँ और कानों से सुनता हूँ। और मैं उस से कैसे इन्कार करूँ उसने तो मुझे ख़ुदा दिखाया और मधुर झरने की तरह अध्यात्म ज्ञानों का पानी मुझे पिलाता रहा। और एक शीतल समीर के समान प्रत्येक गरमी के समय में मुझे आरामद दिया हुआ। वह उन भाषाओं में भी मुझ पर उतरा जिन भाषाओं को मैं नहीं जानता था। जैसा कि अंग्रेज़ी, संस्कृत और इब्रानी भाषा। उसने बड़ी-बड़ी भविष्यवाणियों और बड़ी प्रतिष्ठा वाले निशानों से सिद्ध कर दिया कि वह ख़ुदा का कलाम है। और उसने वास्तविकताओं और अध्यात्म ज्ञानों का एक ख़जाना मुझ पर खोल दिया। जिस से मैं और मेरी समस्त क़ौम अपरिचित थी। वह कभी-कभी अरबी, अंग्रेज़ी या किसी अन्य भाषा के उन बारीक और नामालूम शब्दों में मुझ पर उतारा जिनसे मैं अनभिज्ञ था। तो क्या इन प्रकाशमान सबूतों के बावजूद कोई सन्देह का स्थान हो सकता है? क्या ये बातें फेंक देने योग्य हैं कि एक कलाम जिस ने चमत्कार की शक्ति दिखाई और अपना दृढ़ आकर्षण सिद्ध किया★ और ग़ैब के वर्णन करने में वह कंजूस नहीं निकला अपितु उसने हज़ारों ग़ैबी ज्ञान प्रकट किए और एक आन्तरिक कमन्द से मुझे अपनी ओर खींचा और एक और कमन्द दुनिया के नेक दिलों पर डाली और उनको मेरी ओर लाया तथा उनको आंखें दीं जिनसे वे देखने लगे और कान दिए जिनसे वे सुनने लगे और श्रद्धा एवं दृढ़ता प्रदान की जिस से वे उस मार्ग में क़ुर्बान होने के लिए उपस्थित हो गए तो क्या यह समस्त कारोबार शैतानी या नफ्स का भ्रम है? क्या शैतान ख़ुदा के बराबर हो सकता है तो वह क्यों तुम्हारी सहायता नहीं

★मेरे कुछ चमत्कारों के प्रकटन का कारण मेरे दुश्मन स्वयं हो गए कि उन्होंने मुझे मुक़ाबले पर रख कर स्वयं दुआ कर दी कि जो हम दोनों में से झूठा है वह पहले मर जाए। जैसा कि मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर कसूरी और मौलवी इस्माईल अलीगढ़ी और जैसा कि झूठे पर लानत की दुआ मुहम्मद हसन मुतवफ़्फ़ी ने की और फिर इसके बाद वे सब के सब मर गए। नि:संदेह समझो कि उनमें से हज़ार मौलवी भी मुझे सामने रख कर ऐसी दुआ करता कि जो हम में झूठा है वह पहले मर जाए तो वह अवश्य समस्त उलेमा का गिरोह मर जाता जैसा कि ये लोग मर गए। क्या किसी फ़रार मौलवी को इस चमत्कार में भी सन्देह है? इसी से।

करता। सुनो जिसने यह कलाम उतारा वह क्या कहता है। उसने मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया- मैं अपनी चमकार दिखलाऊंगा, अपनी शक्ति प्रदर्शन से तुझ को उठाऊंगा **दुनिया में एक नज़ीर (सचेत करने वाला) आया पर दुनिया ने उसको स्वीकार न किया किन्तु ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।** तो अवश्य है कि यह युग गुज़र न जाए और हम इस दुनिया से कूच न करें जब तक ख़ुदा के वे समस्त वादे पूरे न हों। जो व्यक्ति अंधकार में पड़ा हुआ है और इससे अपरिचित है कि ख़ुदा का निश्चित और अटल कलाम भी उसके बन्दों पर उतरता है और वह ख़ुदा के अस्तित्व से ही अनभिज्ञ है। इसलिए वह अपने समान सम्पूर्ण संसार को भ्रमों तले कुचला हुआ देखता है और उसकी यही अवस्था होती है कि भ्रमों, अस्त-व्यस्त स्वप्नों और हृदय में आए विचार के अतिरिक्त और कुछ नहीं और अन्ततः वह काल्पनिक तौर पर न कि निश्चित एवं ठोस तौर पर ख़ुदा के इल्हाम का विचार दिल में लाता है। परन्तु अभी हम लिख चुके हैं कि जिस हृदय पर वास्तव में ख़ुदा की वह्यी का सूर्य झलक दिखलाता है उसके साथ भ्रम और सन्देह का अंधकार कदापि नहीं रहता। क्या शुद्ध प्रकाश के साथ अंधकार रह सकता है? फिर जिस हालत में मूसा की माँ को भी निश्चित इल्हाम हुआ जिस पर पूर्ण विश्वास रख कर उसने अपने बच्चे को मरने के स्थान (नहर) में डाल दिया और ख़ुदा तआला के नज़दीक क़त्ल के इरादे के अपराध में अपराधी न हुई तो क्या यह इस्राईल की उम्मत के ख़ानदान की स्त्रियों से भी गई गुज़री है? और फिर इसी प्रकार मरयम को भी निश्चित तौर पर इल्हाम हुआ जिस पर भरोसा करके उसने क़ौम की कुछ परवाह नहीं की। तो अफ़सोस है इस तिरस्कृत उम्मत पर कि जो इन औरतों से भी निकृष्टतर है तो इस स्थिति में यह उम्मत समस्त उम्मतों से अच्छी कैसे हुई बल्कि शर्रुल उम्मत (समस्त उम्मतों से बुरी) और सब उम्मतों से अधिक जाहिल हुई। इसी प्रकार ख़िज्र जो नबी नहीं था और उसे लदुन्नी ज्ञान अर्थात् ख़ुदा की ओर से ज्ञान दिया गया तो क्या यदि उसका इल्म काल्पनिक था निश्चित नहीं था तो उसने क्यों एक बच्चे को अकारण क़त्ल कर दिया? और यदि सहाबा रज़ि. का यह इल्हाम कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को स्नान

कराना चाहिए निश्चित और अटल न था तो क्यों उन्होंने इस पर अमल किया। अत: यदि एक व्यक्ति अपने अंधेपन से मेरी वह्यी का इन्कारी है तथापि यदि वह मुसलमान कहलाता है और गुप्त नास्तिक नहीं तो उसके ईमान में यह बात दाख़िल होनी चाहिए कि निश्चित और अटल ख़ुदाई वार्तालाप हो सकता है जैसा कि ख़ुदा तआला की वह्यी निश्चित् पहली उम्मतों में अधिकतर पुरुषों और स्त्रियों को होती रही है और वे नबी भी न थे, इस उम्मत में भी निश्चित और अटल वह्यी का अस्तित्व है ताकि यह उम्मत सर्वश्रेष्ठ उम्मत होने की बजाए निकृष्टतम न ठहर जाए। तो ख़ुदा ने अन्तिम युग में सर्वांगपूर्ण तौर पर यह नमूना दिखाया। इन घटनाओं से आश्चर्य नहीं करना चाहिए अपितु वास्तव में मनुष्य की मुक्ति इसी पर निर्भर है कि या तो वह स्वयं ऐसा व्यक्ति हो जो सीधे तौर पर ख़ुदा तआला से वार्तालाप और संबोधन से सम्मानित हो परन्तु ऐसा वार्तालाप और सम्बोधन न हो कि जिसमें निश्चित फैसला न हो कि वह रहमानी (ख़ुदाई) है या शैतानी है और या वह व्यक्ति मुक्ति पा सकता है जो ऐसे व्यक्ति के साथ बैठने वाला और उसके दामन से सम्बद्ध है। क्योंकि स्पष्ट है कि दुनिया में जितने पाप पैदा हुए हैं उनका यही कारण है कि मनुष्य को जितना दुनिया के आनंद और दुनिया का सम्मान और दुनिया के माल और सामान पर विश्वास है यह विश्वास आख़िरत (परलोक) पर नहीं है। और जैसा कि वह एक ऐसे सन्दूक पर भरोसा कर सकता है जो बहुमूल्य जवाहिरात और शुद्ध सोने से भरा हुआ है वह उसके कब्ज़े में है ऐसा वह ख़ुदा पर भरोसा नहीं कर सकता और जैसा कि दुनिया की सरकार तथा दुनिया के शासकों से लोग डरते हैं और चापलूसी से जीवन व्यतीत करते हैं ऐसा ख़ुदा तआला से नहीं डरते, इसका क्या कारण है? यही कारण है कि दुनिया की गिरी-पड़ी वस्तुएं और माध्यम उनकी दृष्टि में ऐसे निश्चित हैं कि धार्मिक आस्थाएं उनके सामने कुछ भी चीज़ नहीं। अब इस स्थान पर स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि चूंकि मुक्ति अटल विश्वास के बिना संभव नहीं जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है-

وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا

(बनी इस्राईल- 17/73)

अर्थात् जो व्यक्ति इस संसार में अंधा है वह दूसरे संसार में भी अंधा ही होगा अपितु उससे भी निकृष्टतम। तो पूर्ण विश्वास के बिना मुक्ति क्योंकर हो और यदि एक धर्म का पालन करने से मुक्ति नहीं तो उस धर्म से क्या लाभ। सहाबा रज़ि. के युग में तो विश्वास के झरने जारी थे और वे ख़ुदा के निशानों को अपनी आंखों से देखते थे और उन्हीं निशानों के माध्यम से उन्हें ख़ुदा के कलाम पर विश्वास हो गया था। इसलिए उनका जीवन अत्यन्त पवित्र हो गया था। परन्तु बाद में जब वह युग जाता रहा और उस युग पर सैकड़ों वर्ष गुज़र गए तो फिर विश्वास का कौन सा माध्यम था। सच है कि पवित्र क़ुर्आन उनके पास था और पवित्र क़ुर्आन उस ज़ुलफ़िक़ार तलवार के समान है जिसके दो ओर धारें हैं। एक ओर की धार मोमिनों की आन्तरिक गन्दगी को काटती है तथा दूसरी ओर की धार दुश्मनों का काम तमाम करती है। परन्तु फिर भी वह तलवार इस कार्य के लिए एक बहादुर के हाथ और बाज़ू की मुहताज है जैसा कि ख़ुदा तआला ने फ़रमाया-

يَتۡلُوۡا عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتِهٖ وَ يُزَكِّيۡهِمۡ وَ يُعَلِّمُهُمُ الۡكِتٰبَ

(आले इमरान- 3/165)

अतः क़ुर्आन से जो शुद्धता प्राप्त होती है उसे अकेला वर्णन नहीं किया अपितु वह नबी की विशेषता में सम्मिलित करके वर्णन किया। यही कारण है कि ख़ुदा तआला का कलाम यों ही आकाश से कभी नहीं उतरा अपितु उस तलवार को चलाने वाला बहादुर हमेशा साथ आया है जो उस तलवार का असल जौहर पहचानने वाला है। इसलिए पवित्र क़ुर्आन पर सच्चा और ताज़ा विश्वास दिलाने के लिए और उसके जौहर दिखाने के लिए तथा उसके माध्यम से समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए एक बहादुर के हाथ और बाज़ू की हमेशा आवश्यकता होती रही है और अन्तिम युग में यह आवश्यकता सब से अधिक पड़ी क्योंकि दज्जाली युग है और **पृथ्वी तथा आकाश की परस्पर लड़ाई है।** अतः जब ख़ुदा तआला ने फ़रमा दिया कि जो व्यक्ति इस संसार में अंधा है वह दूसरे संसार में भी अंधा ही होगा, तो प्रत्येक सत्याभिलाषी के लिए आवश्यक हुआ कि इसी संसार में आंखों का प्रकाश तलाश करे और उस जीवित धर्म का प्रत्याशी हो **जिसमें जीवित ख़ुदा के प्रकाश प्रकट हों।** वह धर्म मुर्दार है जिसमें

हमेशा के लिए निश्चित वह्यी का सिलसिला जारी नहीं, क्योंकि वह मनुष्यों पर विश्वास का मार्ग बन्द करता है और उनको क़िस्सों, कहानियों पर छोड़ता है और उनको ख़ुदा से निराश करता और अंधकार में डालता है। और कैसे कोई धर्म ख़ुदा को दिखाने वाला हो सकता है और कैसे पापों से छुड़ा सकता है जब तक कोई विश्वास का माध्यम अपने पास नहीं रखता। और जब तक सूर्य न चढ़े कैसे दिन चढ़ करता है। अतः दुनिया में सच्चा धर्म वही है जो जीवित निशानों द्वारा विश्वास का मार्ग दिखाता है। शेष लोग इसी जीवन में नर्क में गिरे हुए हैं। भला बताओ कि गुमान भी कुछ चीज़ है जिसके दूसरे शब्दों में ये मायने हैं कि शायद यह बात सही है या ग़लत। स्मरण रखो कि पाप से पवित्र होना विश्वास के बिना संभव नहीं। फ़रिश्तों का सा जीवन विश्वास के बिना कभी संभव नहीं। दुनिया के अनुचित भोग-विलास को छोड़ना विश्वास के बिना कभी संभव नहीं। अपने अन्दर एक पवित्र परिवर्तन पैदा कर लेना और ख़ुदा की ओर एक विलक्षण आकर्षण से खींचे जाना विश्वास के बिना कभी संभव नहीं। पृथ्वी को छोड़ना और आकाश पर चढ़ जाना विश्वास के अतिरिक्त कभी संभव नहीं। ख़ुदा से पूर्ण रूप से डरना विश्वास के अतिरिक्त कभी संभव नहीं। संयम के बारीक मार्गों पर क़दम मारना (चलना) और अपने कर्म को दिखावे की मिलावट से पवित्र कर देना विश्वास के अतिरिक्त कभी संभव नहीं। ऐसा ही दुनिया की दौलत, नौकर-चाकर और उसकी कीमिया पर लानत भेजना और बादशाहों के सानिध्य से लापरवाह हो जाना और केवल ख़ुदा को अपना एक ख़ज़ाना समझना विश्वास के बिना कदापि संभव नहीं। हे मुसलमान कहलाने वालो! अब बताओ कि तुम संदेह के अंधकारों से विश्वास के प्रकाश की ओर कैसे पहुंच सकते हो। विश्वास का माध्यम तो ख़ुदा तआला का कलाम है जो-

يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ (अलबक़रह- 2/258)

का चरितार्थ है। तो चूंकि नुबुव्वत के काल पर तेरह सौ वर्ष गुज़र गए और तुम ने वह युग नहीं पाया जबकि सैकड़ों निशानों तथा चमकते हुए प्रकाशों के साथ क़ुर्आन उतरता था और वह युग पाया जिसमें ख़ुदा की किताब, उसके रसूल तथा उसके धर्म पर ईसाई, नास्तिक और आर्य इत्यादि हज़ारों ऐतराज़ कर रहे हैं

और तुम्हारे पास लिखे हुए कुछ पृष्ठों के अतिरिक्त जिन की चमत्कारिक शक्ति की तुम्हें ख़बर नहीं और कोई सबूत नहीं। और जो चमत्कार प्रस्तुत करते हो वे मात्र क़िस्सों के रंग में हैं। अतः अब बताओ कि तुम किस मार्ग से स्वयं को विश्वास के बुलन्द मीनार तक पहुंचा सकते हो और किस तरीक़े से दुश्मन को बता सकते हो कि तुम्हारे पास ख़ुदा पर विश्वास लाने के लिए तथा पाप से बचने के लिए एक ऐसी चीज़ है जो दुश्मन के पास नहीं ताकि वह इन्साफ करके तुम्हारे धर्म का अभिलाषी हो जाए। इस हरकत से एक बुद्धिमान को क्या लाभ कि एक गोबर को छोड़ दे और दूसरे गोबर को खा ले। सच्चाई को प्रत्येक नेक दिल लेने को तैयार है बशर्ते कि सच्चाई अपने प्रकाश को सिद्ध कर के दिखा दे। जिस इस्लाम को आज ये विरोधी मौलवी और उनका गिरोह ग़ैर धर्म के लोगों के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं वह केवल खाल है न के सार और केवल अफ़साना है न कि वास्तविकता। फिर उसे क्योंकर कोई स्वीकार करे और जिस रोग से मुक्ति प्राप्त करने के लिए एक व्यक्ति धर्म को परिवर्तन करना चाहता है यदि वही रोग उस दूसरे धर्म में भी हो तो इस परिवर्तन से भी क्या फायदा। यों तो ब्राह्मण भी दावा करते हैं कि हम एक ख़ुदा के क़ाइल हैं। परन्तु ख़ुदा का क़ाइल वही है जिसकी विश्वास की आंखें खुल गईं हैं और वही पाप से बच सकता है कि जो विश्वास की आंख से ख़ुदा को देखता है। शेष सब क़िस्से झूठ हैं और सब कफ़्फ़ारे झूठ हैं। अतः वही जीवित ख़ुदा इस अन्तिम युग में स्वयं को प्रस्तुत करता है ताकि लोग ईमान लाएं और न मरें। पवित्र क़ुर्आन ख़ुदा का कलाम तो है अपितु सबसे बड़ा कलाम परन्तु वह तुमसे बहुत दूर है तुम्हारी आंखें उसे देख नहीं सकतीं। अब वह तुम्हारे हाथ में ऐसा ही है जैसा कि तौरात यहूदियों के हाथ में। इसी कारण यदि तुम इन्साफ़ करो तो गवाही दे सकते हो कि इस कारण से कि उस पवित्र कलाम के निश्चित प्रकाश तुम्हारी आंखों से छुपे हुए हैं तुम इससे आंतरिक पवित्रता का कुछ भी लाभ प्राप्त नहीं कर सकते। और यदि बाह्य घटनाओं की गवाही कुछ चीज़ है तो तुम न्यायपूर्वक स्वयं गवाही दे सकते हो कि इस वर्तमान युग में तुम्हारी क्या हालते हैं। सच कहो कि क्या तुम पापों से और उन समस्त गतिविधियों से जो संयम के विरुद्ध हैं ऐसे डरते हो जैसा कि

तीव्र एवं प्रचंड विष के सेवन से मनुष्य डरता है? सच कहो कि क्या तुम उस संयम पर स्थापित हो जिस संयम के लिए पवित्र क़ुर्आन में हिदायत की गई थी? सच कहो कि वे लक्षण जो सच्चे विश्वास के बाद प्रकट होते हैं वे तुम में प्रकट हैं। तुम इस समय झूठ न बोलो और बिल्कुल सच कहो कि क्या वह प्रेम जो ख़ुदा से करना चाहिए और वह सच्चाई तथा दृढ़ता जो उसके मार्ग में दिखानी चाहिए वह तुम में मौजूद है? तुम ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहो कि इस मुर्दार दुनिया को जिस सफाई से छोड़ देना चाहिए, क्या तुम उसी सफाई से छोड़ चुके हो और जिस निष्कपटता, एकेश्वरवाद और एकत्व से भागीदार रहित एक ख़ुदा की ओर दौड़ना चाहिए, क्या तुम उसी निष्कपटता से उसके मार्ग में दौड़ रहे हो। दिखावे से बात मत करो और डींगें मार कर लोगों को प्रसन्न करना मत चाहो कि वह ख़ुदा वास्तव में मौजूद है जो तुम्हारे प्रत्येक कथन और कर्म को देख रहा है? तुम बात करते समय उस सामर्थ्यवान को सोच लो जिसका प्रकोप खा जाने वाली अग्नि है वह झूठी शेखियों को एक पल में नर्क का ईंधन कर सकता है। इसलिए तुम सच-सच कहो कि तुम्हारे क़दम दुनिया की इच्छाओं या दुनिया की अभिलाषाओं या दुनिया के माल और सामान में फंसे हुए हैं या नहीं? तो यदि तुम्हें ख़ुदा पर विश्वास प्राप्त होता तो तुम उस विष को कदापि न खाते और निकट था कि दुनिया उस विष से मर जाती, यदि ख़ुदा यह आकाशीय सिलसिला अपने हाथ से स्थापित न करता। और यदि तुम चालाकी से कहो कि हम ऐसे ही हैं जैसा कि वर्णन किया गया और हम में पाप का कोई अंधकार नहीं और पूर्ण विश्वास के इंजन से हम खिंचे जा रहे हैं तो तुम ने झूठ बोला है और आकाश एवं पृथ्वी के बनाने वाले पर आरोप लगाया है। इसलिए इस से पूर्व कि जो तुम मरो ख़ुदा की लानत तुम्हारा छिद्रान्वेषण करेगी। विश्वास अपने प्रकाशों सहित आता है कोई आकाश तक नहीं पहुंचा सकता है परन्तु वही जो आकाश से आता है। यदि तुम जानते कि ख़ुदा का ताज़ा से ताज़ा निश्चित और अटल कलाम तुम्हारे रोगों का उपचार है तो तुम इस से इन्कार न करते जो बिल्कुल सदी के सर पर तुम्हारे लिए आया। हे लापरवाहो! विश्वास के बिना कोई कर्म आकाश पर नहीं जा सकता और न आंतरिक मलिनताएं तथा हृदय के जानलेवा

रोग विश्वास के बिना दूर नहीं हो सकते। जिस इस्लाम पर तुम गर्व करते हो यह इस्लाम की रस्म है न कि वास्तविक इस्लाम। वास्तविक इस्लाम से शक्ल परिवर्तित हो जाती है और हृदय में एक प्रकाश पैदा हो जाता है और घटिया जीवन मर जाता है तथा एक अन्य जीवन पैदा हो जाता है जिसको तुम नहीं जानते। यह सब कुछ विश्वास के बाद आता है और विश्वास उस निश्चित कलाम के बाद जो आकाश से उतरता है। ख़ुदा, ख़ुदा के माध्यम से ही पहचाना जाता है, न कि किसी अन्य माध्यम से। तुम में से कौन है जो अपने परस्पर बात करने वाले को नहीं पहचान सकता। तो इसी प्रकार ख़ुदाई इल्हाम व कलाम की हालत में अध्यात्म ज्ञान में उन्नति होती जाती है। बन्दे का दुआ करना और ख़ुदा तआला की कृपा और दया से उस दुआ का उत्तर देना न एक बार, न दो बार अपितु कुछ अवसर पर बीस-बीस बार या तीस-तीस बार या पचास-पचास बार या लगभग पूरी रात या लगभग पूरे दिन इसी प्रकार प्रत्येक दुआ का उत्तर पाना और उत्तर भी सरस वर्णन में। और कभी विभिन्न भाषाओं में तथा कभी ऐसी भाषाओं में जिनका ज्ञान भी नहीं और फिर इसके साथ निशानों की वर्षा चमत्कारों और सहायताओं का सिलसिला। क्या यह ऐसी बात है कि इतने निरन्तर वार्तालाप और सम्बोधन और स्पष्ट आयतों के बाद फिर ख़ुदा के कलाम में सन्देह रहे? नहीं-नहीं बल्कि यह ऐसी बात है कि इसके माध्यम से बन्दा इसी संसार में अपने ख़ुदा को देख लेता है और दोनों संसार (लोक) उसके लिए बिना विरोधाभास एक समान हो जाते हैं। और जिस प्रकार चूने के प्रयोग से सहसा बाल गिर जाते हैं ऐसा ही उस प्रकाश के प्रतापी उतरने से वहशियों जैसे जीवन के बाल जिससे अभिप्राय अपराध और पाप हैं समाप्त हो जाते हैं और मनुष्य मुर्दों से विमुख होकर हृदय को आराम देने वाले ज़िन्दा का प्रेमी हो जाता है जिसको दुनिया नहीं जानती और जैसा कि तुम दुनिया की चीज़ों से बेख़बर हो वैसा ही वह ख़ुदा की दूरी पर धैर्य नहीं कर सकता। अत: समस्त बरकतों तथा विश्वास की कुंजी वह अटल और निश्चित कलाम है जो ख़ुदा तआला की ओर से बन्दे पर उतरता है। जब प्रतापवान ख़ुदा अपने किसी बन्दे को अपनी ओर खींचना चाहता है तो उस पर अपना कलाम उतारता है और अपने वार्तालापों से उसे सम्मानित करता है और अपने विलक्षण

निशानों से उसे सांत्वना देता है और उस पर से हर प्रकार सिद्ध कर देता है कि वह उसका कलाम है तब वह कलाम दर्शन करने का स्थानापन्न हो जाता है। उस दिन मनुष्य समझता है कि ख़ुदा है क्योंकि اَنَا الْمَوْجُوْد (मैं उपस्थित हूँ) की आवाज़ सुनता है। ख़ुदा तआला के कलाम से पूर्व यदि मनुष्य का ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर ईमान होता है तो केवल इतना कि वह सृष्टि पर दृष्टि डालकर यह सोच लेता है कि इस सुदृढ़ और अति उत्तम रचना (अर्थात् सांसारिक वस्तुओं-अनुवादक) का कोई रचयिता होना चाहिए परन्तु यह कि वास्तव में वह रचयिता मौजूद भी है, यह मर्तबा ख़ुदा के वार्तालापों के अतिरिक्त कदापि प्राप्त नहीं हो सकता और अपवित्र जीवन जो पाताल की ओर हर पल खींच रहा है वह कदापि दूर नहीं होता। इसी स्थान से ईसाइयों के विचारों का भी झूठा होना सिद्ध होता है। क्योंकि वे विचार करते हैं कि इब्ने मरयम की आत्महत्या ने उन को मुक्ति दे दी है। हालांकि वे जानते हैं कि वे तंग और अंधकारमय नर्क में पड़े हुए हैं, जो लज्जा, सन्देह एवं शंकाओं और पापों का नर्क है। फिर मुक्ति कहां है? मुक्ति का उद्गम विश्वास से आरंभ हो जाता है। सबसे बड़ी नेअमत यह है कि मनुष्य को इस बात का विश्वास दिया जाए कि उसका ख़ुदा वास्तव में मौजूद है जो अपराधी और उद्दण्ड को दण्ड दिये बिना नहीं छोड़ता और रुजू करने वाले की ओर रुजू करता है। यही विश्वास समस्त पापों का उपचार है। इसके अतिरिक्त दुनिया में न कोई कफ़्फ़ार: है न कोई ख़ून है जो पाप से बचाए। क्या तुम देखते नहीं कि प्रत्येक स्थान तुम्हें 'विश्वास' ही न करने वाली बातों को रोक देता है। तुम आग में हाथ नहीं डाल सकते कि वह मुझे जला देगी। तुम शेर के आगे स्वयं को खड़ा नहीं करते, क्योंकि तुम विश्वास रखते हो कि वह मुझे खा जाएगा। तुम कोई ज़हर नहीं खाते क्योंकि तुम विश्वास रखते हो कि वह मुझे मार डालेगा। तो इसमें क्या संदेह है कि असंख्य अनुभवों से तुम पर सिद्ध हो चुका है कि जिस स्थान पर तुम्हें विश्वास हो जाता है कि यह कार्य या हरकत नि:संदेह मुझे विनाश तक पहुंचाएगी तुम तुरन्त उस से रुक जाते हो। तो फिर वह पाप तुम से घटित नहीं होता। फिर ख़ुदा तआला के मुक़ाबले पर तुम क्यों उस प्रमाणित फ़लसफ़े से काम नहीं लेते। क्या अनुभव ने अब तक गवाही नहीं दी कि विश्वास के बिना

मनुष्य पाप से रुक नहीं सकता। एक बकरी विश्वास की हालत में उस चरागाह में चर नहीं सकती जिसमें शेर सामने खड़ा है। तो जबकि विश्वास निर्बुद्ध जानवरों पर प्रभाव डालता है और तुम तो मनुष्य हो। यदि किसी हृदय में ख़ुदा का अस्तित्व और उसका रोब, प्रतिष्ठा तथा श्रेष्ठता का विश्वास है तो वह विश्वास उसे पाप से अवश्य बचा लेगा और यदि वह नहीं बच सका तो उसे विश्वास नहीं। क्या ख़ुदा पर विश्वास लाना उस विश्वास से बहुत कम है कि जो शेर और सांप तथा विष के अस्तित्व का विश्वास होता है। काश मैं किस ढपली से साथ उसकी मुनादी करूं कि पाप से छुड़ाना विश्वास का कार्य है। झूठी फ़कीरी और शेख़ी से तौब: कराना विश्वास का कार्य है। ख़ुदा को दिखाना विश्वास का कार्य है। वह धर्म कुछ भी नहीं तथा गन्दा है और मुर्दार है, अपवित्र है तथा नारकी है और स्वयं नर्क है जो विश्वास के झरने तक नहीं पहुंचा सकता। जीवन का झरना विश्वास से ही निकलता है और वह उस पर जो आकाश की ओर उड़ाते हैं वह विश्वास ही है। कोशिश करो कि उस ख़ुदा को तुम देख लो जिसकी ओर तुम ने जाना है और वह मिश्रित विश्वास हो जो तुम्हें ख़ुदा तक पहुंचाएगा। उसकी रफ़्तार कितनी तीव्र है कि वह प्रकाश जो सूर्य से आता है और पृथ्वी पर फैलता है वह भी उसकी तीव्र गति के साथ मुक़ाबला नहीं कर सकता। हे पवित्रता के ढूंढ़ने वालो ! यदि तुम चाहते हो कि पवित्र हृदय बनकर पृथ्वी पर चलो और फ़रिश्ते तुम से हाथ मिलाएं तो तुम विश्वास के मार्गों को ढूंढ़ो। और यदि तुम्हें इस मंज़िल तक अभी पहुंच नहीं तो उस व्यक्ति का दामन पकड़ो जिसने विश्वास की आंख से अपने ख़ुदा को देख लिया है और यह कि क्योंकर विश्वास की आंख से ख़ुदा को देखा जाए। इसका उत्तर कोई मुझ से सुने या न सुने परन्तु मैं यही कहूंगा कि उस विश्वास को प्राप्त करने का माध्यम ख़ुदा का ज़िन्दा कलाम है जो अपने अन्दर ज़िन्दा निशान साथ रखता है। जब वह आकाश पर से उतरता है तो नए सिरे से मुर्दों को क़ब्रों में से निकालता है। तुम देखते हो कि आंखों से सुजाखा होने के बावजूद तुम आकाशीय सूर्य के मुहताज हो। इसी प्रकार ख़ुदा को पहचानने की दृष्टि केवल अपनी अटकलों से प्राप्त नहीं हो सकती। वह भी एक सूर्य की मुहताज है और वह सूर्य भी आकाश पर से अपना प्रकाश पृथ्वी पर उतारता है

अर्थात् ख़ुदा का कलाम। कोई अध्यात्म ज्ञान ख़ुदा के कलाम के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। ख़ुदा का कलाम बन्दे और ख़ुदा में एक आढ़ती है वह उतरता है और ख़ुदा का प्रकाश उसके साथ होता है और जिस पर वह अपने पूर्ण करिश्मे और पूर्ण झलक तथा पूरी ख़ुदाई श्रेष्ठता, क़ुदरत और खुले करिश्मे के साथ उतरना है उसको वह आसमान पर ले जाता है। निष्कर्ष यह कि ख़ुदा तक पहुंचने के लिए ख़ुदा तआला के कलाम के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं।

नज़्म

کے شوی عاشق رُخِ یارے تانہ بردل رخش کند کارے

तू क्योंकर किसी माशूक़ (प्रियतम) का आशिक़ हो सकता है जब तक उसका चेहरा तेरे हृदय में बस न जाए।

ہم چنیں زان لبے دوگفتارے آں کند کارہا کہ دیدارے

इसी प्रकार उन होठों के दो बोल वही प्रभाव रखते हैं जैसे (महबूब) का दीदार (दर्शन)।

لا جرم عشقِ دلبرِ خوشِ خو خیز داز گفتگو چو دیدن رُو

नि:संदेह सत्प्रकृति यार का प्रेम उसकी बातचीत से भी पैदा हो जाता है जैसा कि उसके देखने से।

گفتگو راکشش بود بسیار بے سُخن کم اثر کند دیدار

कलाम में बड़ा आकर्षण हुआ करता है। कलाम के बिना दर्शन का प्रभाव कम ही होता है।

ہر کہ ذوق کلام یافتہ است راز این رہ تمام یا فتہ است

जिसको बातचीत का शौक़ प्राप्त हो गया उसने प्रेम के मार्ग का समस्त रहस्य मालूम कर लिया।

زِیر لب گفتگوئے جانانے زندگی بخشدت بیک آنے

प्रियतम की मधुर बातचीत तुझे पल भर में जीवन प्रदान कर देगी।

دوزخی کزعذاب پُر چوں خُم اصل آں ہست لا یکلمھم

वह नर्क जो शराब के मटके की तरह अज़ाब से भरा है उसका कारण भी यही

है कि ख़ुदा तआला उनसे कलाम नहीं करेगा।

دل نہ گردد صفا نہ خیزد بیم   تاچو موسیٰ نہ شوی تو کلیم

न दिल साफ़ होता है न भय दूर होता है जब तक तू मूसा के समान वार्तालाप करने वाला न बन जाए।

ہست داروئے دل کلام خدا   کے شوی مست جز بجام خدا

दिल की दवा ख़ुदा का कलाम है। तू ख़ुदा के इस जाम के बिना तृप्त कैसे हो सकता है?

تانہ او گفت خود انا الموجود   عقدہ ہستیش کسے نہ کشود

जब तक उसने स्वयं अनल मौजूद (मैं मौजूद हूँ) न कहा तब तक उसके अस्तित्व की गुत्थी कोई खोल सका?

تا نشد مشعلے ز غیب پدید   از شب تار جہل کس نرہید

जब तक ग़ैब की मशाल प्रकट न हुई तब तक जहालत की अंधेरी रात से किसी ने छुटकारा न पाया।

تانہ خود را نمود خود دادار   کس ندانست کوئے آن دلدار

जब तक ख़ुदा ने स्वयं अपने आप को प्रकट न किया तब तक किसी को उस यार की गली का पता न लगा।

تانہ خود از سخن یقین بخشید   کس ز زندانِ ریب و شک نرہید

जब तक उसने स्वयं अपने कलाम के द्वारा विश्वास प्रदान न किया तब तक कोई सन्देह तथा शंका से आज़ाद न हुआ।

ہر چہ باشد ز زہد و صدق و سداد   بے یقین ست باشدش بنیاد

संयम और सच्चाई तथा सद्मार्ग की जो बात भी हो विश्वास के बिना उसकी बुनियाद कमज़ोर होती है।

گر یقین نیست بر خدائے یگان   از محالات قوتِ ایمان

यदि एक ख़ुदा पर विश्वास नहीं है तो ईमान की शक्ति असंभव है।

بے یقین دین و کیش بیہودہ است   بے یقین ہیچ دل نیاسودہ ست

दीन व धर्म विश्वास के बिना बिल्कुल व्यर्थ हैं कोई दिल विश्वास के बिना आराम नहीं पा सकता।

بے یقین و تجلیاتِ یقین   کس نہ رستہ زدام دیولعین

बिना विश्वास के तथा विश्वास के प्रकाशों के बिना कोई व्यक्ति लानती शैतान के फन्दे से आज़ाद न हो सका।

بے یقین از گنہ نہ رست کسے   دانم احوال شیخ و شاب بسے

विश्वास के बिना कोई व्यक्ति भी पाप से नहीं छूटता। मैं बहुत से बूढ़ों और जवानों के हाल से अवगत हूँ।

آن خدائے کہ ذات اوست نہاں   دُور تر از دو چشم علمیاں

वह ख़ुदा जिस का अस्तित्व छुपा हुआ है और दुनिया वालों की आंखों से बहुत दूर है।

بر وجودش یقین چساں آید   گر نظر نیست گفتگو باید

उसके अस्तित्व पर किस प्रकार विश्वास प्राप्त हो यदि दर्शन नहीं तो बातचीत तो आवश्यक है।

زیں سبب ہست حاجت گفتار   گر میسر نے شود دیدار

इसलिए इल्हाम की आवश्यकता है क्योंकि ख़ुदा तआला भौतिक आंखों से दिखाई नहीं देता।

بے کلام و شہادت آیات   کے یقیں میشود کہ ہست آں ذات

कलाम और निशानों की गवाही के बिना किस प्रकार विश्वास आए कि वह अस्तित्व मौजूद है।

بے یقین کے ہمیں شود دل پاک   مردہ چوں سر برآرداز تہِ خاک

विश्वास के बिना दिल भी कब पवित्र हो सकता है ख़ाक के नीचे से मुर्दा कब सिर उठा सकता है।

گر یقیں نیست نیز ایماں نیست   زہد و صدق و ثبات و عرفان نیست

यदि विश्वास नहीं तो ईमान भी नहीं है इस प्रकार विश्वास के बिना संयम, श्रद्धा, स्थायित्व और विवेक भी प्राप्त नहीं होता।

جز یقین مشکل مت صدق و ثبات   سخت دشوار ترک منہیات

विश्वास के बिना वफ़ादारी और दृढ़ता कठिन है तथा पापों का त्यागना भी बहुत दुष्कर है।

زیں سبب خلق شد چو مردارے سر تہی گشت از سرِ یارے

इसी कारण से प्रजा मुर्दार की तरह हो गई है और यार के प्रेम से दिल ख़ाली हो गया।

روزو شب کاروبار فسق و فجور حاصل عمر کفر وکبر و غرور

लोग दिन-रात पापों और दुराचारों में लिप्त हैं जीवन का ख़ुलासा कुफ़्र, अहंकार और अभिमान हो गया है।

دین و مذہب برائے آن باشد کز یقین سوئے حق کشاں باشد

दीन अर्थात् धर्म तो इसलिए होता है कि विश्वास पैदा करके वह ख़ुदा की ओर खींचे।

ایں چہ دینے کہ می کشد ہر آن سوئے شیطان و سیرت شیطان

यह धर्म कैसा है जो हर पल शैतान और शैतानी हरकतों की ओर खींचता है।

ازریاعیب خویش مے پوشند ہر دم از حرص و آزمی جوشند

ये लोग दिखावे से अपने दोषों को छुपाते हैं और हर समय उनमें लालच और लोभ जोश मार रहे हैं।

چوں یقین نیست بر خدائے وحید لا جرم نفس شد خبیث و پلید

चूंकि एक ख़ुदा पर विश्वास ही नहीं है। इसलिए नि:संदेह नफ़्स गन्दा और अपवित्र हो गया है।

نفس دوں تانہ بیند آن انوار کے شود سرد خواہش مردار

जब तक अधम नफ़्स वे प्रकाश न देखे तब तक मुर्दार की इच्छा कब ठण्डी हो सकती है।

ہست واللہ کلامِ ربّانی از خدا آلہ خدا دانی!

ख़ुदा की क़सम यह ख़ुदा का कलाम ही है जो ख़ुदा की ओर से स्वंय को पहचानने का उपकरण है।

اژدہائے دمان کہ نفش نام بے کلامِ خدا نہ گردد رام

वह ख़ून पीने वाला अजगर जिसका नाम नफ़्स है ख़ुदा के कलाम के बिना फ़र्माबरदार नहीं होता।

ایں فسون است بہر این مارے کز لبِ یاریک دو گفتارے

इस सांप का यही मंत्र है कि प्रत्येक के मुंह से एक-दो बातें सुन ली जाएं।

وہ چہ دارد اثر کلام خدا　　دیو بگریزد از پیامِ خدا

वाह-वाह ख़ुदा का कलाम क्या प्रभाव रखता है कि उसके पैग़ाम से शैतान भागता है।

دُزد را کار ہست باشب تار　　چوں سحر شد گریزد آن غدار

चोर का संबंध अंधेरी रात के साथ है जहां सुबह हुई और वह ग़द्दार भागा।

ہمچو قول خدا کدام سحر　　کہ رود تیرگی ازو یکسر

ख़ुदा के कलाम जैसी और कौन सी सुबह है जिसके कारण अंधेरा बिल्कुल दूर हो जाए।

ہر کہ ایں دربرو خدا بکشاد　　بے توقف خدائش آمدیاد

जिस व्यक्ति पर ख़ुदा ने इल्हाम का दरवाज़ा खोल दिया उसे हमेशा ख़ुदा याद रहता है।

آنچناں دور شد زخبث و فساد　　کہ نماندہ اثر ز استعداد

वह उपद्रव और फ़साद से इतना दूर हो जाता है कि इन बातों की योग्यता उसमें नहीं रहती।

وان کہ در عمر خود ندیدآں نور　　کورماند و ز نورِ حق مہجور

परन्तु जिसने उम्र भर वह प्रकाश नहीं देखा वह अंधा और ख़ुदा के नूर से दूर ही रहा।

کس نیابد ازان یگان اسرار　　جز سعیدے کہ یا بدآں گفتار

कोई भी उस अद्वितीय माबूद से रहस्य प्राप्त नहीं करता सिवाए उस सौभाग्यशाली के जिसे इल्हाम प्राप्त हो जाए।

ہر کہ ایں مہر برسرِ او تافت　　ذوق مہر خدا ہماں کس یافت

जिस के सिर पर यह सूर्य चमका वही ख़ुदा के प्रेम का स्वाद चखाता है।

ہیچ دانی کلامِ رحمان چیست　　واں کہ آں خور بیافت آں مہ کیست

तुझे ख़बर भी है? कि रहमान का कलाम क्या चीज़ है और वह चन्द्रमा कौन सा है जिस के पास रहमान के कलाम का सूर्य है।

آن کلامش کہ نورہا دارد　　شک وریب از قلوب بردارد

उसका वह कलाम जो अपने अन्दर प्रकाश रखता है दिलों से सन्देह और शंका को दूर कर देता है।

نوردر ذات خویش و نوردہد　　　رگِ ہر شک و ہر گمان ببرد

वह स्वयं भी नूर (प्रकाश) है और दूसरों को भी प्रकाश प्रदान करता है और हर सन्देह एवं गुमान की जड़ काट देता है।

دل کہ باشد گرفتۂ اوہام　　　یا بداز وے سکینت و آرام

वह हृदय जो भ्रम में गिरफ़्तार हो उसी से सांत्वना और आराम पाता है।

ہمچو میخے کہ ہست فولادی!　　　در دل آید فزائدت شادی

वह एक फ़ौलादी मेख (कील) की तरह हृदय में गड़ जाता है और प्रसन्नता में वृद्धि करता है।

زو رہد عادت فساد و شقاق　　　چارۂ زہر نفس چوں تریاق

उसकी बरकत से फ़साद और झगड़े की आदत दूर होती है और वह विषनाशक (तिर्याक़) की तरह नफ़्स के ज़हर का उपचार है।

کارہا میکند بانسانی　　　ہمچو باد صبا بہ بستانی

इल्हाम इन्सान के साथ वही काम करता है जो सुबह की समीर बाग़ के साथ करती है।

مے کشاید دو چشم انساں را　　　مے نماید جمال رحماں را

इल्हाम आदमी की दोनों आंखों को खोल देता है और रहमान की सुन्दरता दिखला देता है।

درِ وحی خدا چو گردد باز　　　بستہ گردد بر آدمی درِ آز

जब ख़ुदा की वह्यी का दरवाज़ा खुलता है तो आदमी पर लालच का दरवाज़ा बन्द हो जाता है।

یک کشش کار میکند بدروں　　　در دل آید فرو رُخ بیچوں

उसका एक आकर्षण मनुष्य के अन्त:करण को दुरुस्त कर देता है और उस अद्वितीय ख़ुदा का चेहरा हृदय के अन्दर उतर जाता है।

زان کشش دل ہمی شود بیدار　　　متنفّر ز غیر و طالبِ یار

उस आकर्षण से हृदय जागरूक हो जाता है और वह ग़ैर से घृणा करने वाला

और ख़ुदा का अभिलाषी बन जाता है।

روز ہر حرص و آز تابندہ　　سوئے یارِ ازل شتابندہ

वह हर लालच और लोभ से मुख फेर लेता है और अनादि यार की ओर दौड़ता है।

میوہ از روضۂ فنا خوردہ　　و از خود و آرزوئے خود مردہ

ख़ुदा के बाग़ का मेवा खाता है। अहंकार और कामवासना संबंधी इच्छा की ओर से मर जाता है।

سیلِ عشقش زِجائے خود بُردہ　　رخت در جائے دیگر آوردہ

ख़ुदा के प्रेम का सैलाब (बाढ़) उसे अपनी जगह से बहा ले जाता है और वह किसी और जगह अपना डेरा डाल देता है।

پاک و طیب بچشم بیچونی　　پیش کوراں خبیث و ملعونی

वह अद्वितीय ख़ुदा की नज़र में पवित्र और शुद्ध हो जाता है यद्यपि अंधों के नज़दीक ख़बीस और मलऊन (लानती) होता है।

از یقین پُر چو شیشہ عطّار　　لا اُبالی زِ لعنت اغیار

वह विश्वास से ऐसा भरा होता है जैसे इत्र बेचने वाले की बोतल और अपात्र लोगों की लानत से लापरवाह हो जाता है।

دست غیبی کشیدہ دامنِ دل　　بر کشیدہ دو دست یار زِگل

एक ग़ैब का हाथ उसके दामन के दिल को खींच लेता है और यार के दोनों हाथ उसे कीचड़ से निकाल लेते हैं।

پاک دل پاک جان و پاک ضمیر　　دور تر از مکائد و تزویر

वह पवित्र हृदय पवित्र रूह और पवित्र विचार हो जाता है चालाकियों और झूठ से बहुत दूर।

آنچنان عشق تیز مرکب راند　　کہ ازاں مشت خاک ہیچ نماند

इश्क़ ने घोड़े को इतना तेज़ दौड़ाया कि उस मुट्ठी भर ख़ाक का कुछ भी शेष न रहा।

کشتۂ دلبر و دلآرامے　　رُستہ یکسر زننگ وازنامے

दिलबर और दिलआराम पर क़ुर्बान और मर्यादा से लापरवाह हो जाता है।

پُرزِ عشق و تہی زِ ہر آزے   قصہ کوتاہ کرد آوازے

वह इश्क़ से भरपूर और लालच से ख़ाली होता है एक ही आवाज़ ने उसका काम पूरा कर दिया है।

آں ندائے یقین کہ گوش شنید   کرد کار و زغیر حق ببرید

उसी निश्चित आवाज़ ने जो उसके कानों में पड़ी बड़ा काम किया और उसे ग़ैरुल्लाह से अलग कर दिया।

رفتہ بیروں ز حلقہء اغیار   دل بریدہ ز غیرآں دلدار

वह ग़ैरों के दायरे से बाहर निकल गया और अल्लाह के अतिरिक्त से असम्बन्धित हो गया।

پاک گشتہ زلوث ہستی خویش   رستہ از بند خود پرستی خویش

वह अपने अस्तित्व की गन्दगी से पवित्र हो गया और आत्म पूजा की क़ैद से आज़ाद।

آنچناں یار در کمند انداخت   کہ نداند بدیگرے پرد اخت

यार ने इस प्रकार उसे अपनी कमन्द में ले लिया कि वह दूसरो से कोई वास्ता (संबंध) ही नहीं रखता।

قدم خود زدہ براہ عدم   گم بیادش ز فرق تا بقدم

फ़ना के मार्ग पर चल पड़ा अपितु समस्त दिलबर उसके लिए हो गया ।

ذکرِ دلبر غذائے او گشتہ   ہمہ دلبر برائے او گشتہ

दिलबर की चर्चा उसकी खुराक हो गया बल्कि सम्पूर्ण दिलबर उसके लिए हो गया।

سوختہ ہر غرض بجزدلدار   دوختہ چشم دل زغیر نگار

उसने दिलदार के अतिरिक्त अपनी हर इच्छा को जला दिया और प्रियतम के अतिरिक्त प्रत्येक चीज़ की ओर से आंख बन्द कर ली।

دل و جان بر رُخے فدا کردہ   وصل او اصل مدعا کردہ

उसके चेहरे पर जान-व-दिल फ़िदा कर दिया और उसके मिलन को अपना विशेष उद्देश्य बना लिया।

مردہ و خویشتن فنا کردہ   عشق جوشید و کارہا کردہ

वह मर गया और उसने स्वयं को फ़ना कर दिया इश्क़ जोश में आया और उसने सब काम कर दिए।

از خودی ہائے خود فتاد جُدا سیل پُر زور بود بُرد از جا

अपने अहंकार से पृथक हो गया। सैलाब बहुत ज़ोर का था उसे बहा कर ले गया।

تن چو فرسود دلستان آمد دل چو از دست رفت جان آمد

जब शरीर कमज़ोर हो गया तो प्रियतम आ गया। जब दिल हाथ से चला गया तो प्रियतम आ गया।

عشق دلبر بروئے او بارید ابر رحمت بکوئے او بارید

प्रियतम का इश्क़ उसके चेहरे से प्रकट होने लगा और दया-वृष्टि उसके कूचे में होने लगी।

از یقینے کہ شد ز گفتارے در دلِ او برست گلزارے

उस विश्वास के कारण जो इल्हाम ने पैदा किया था उसके हृदय में एक गुलज़ार (बाटिका) खिल गया

ہر ظہورے یکے سبب دارد داندآں کو بدل طلب دارد

हर नई बात का एक कारण हुआ करता है उसे वही समझता है जिसके हृदय को तलब लगी हुई हो।

پس چنیں شورش محبت یار کہ بشوئد ہم از خودی آثار

अत: दोस्त की मुहब्बत का ऐसा विद्रोह जो अहंकार के लक्षणों को मिटा डाले।

این میسر نے شود ز نہار جز سخن ہائے دلبر و دلدار

कदापि प्राप्त नहीं हो सकती केवल दिलबर और दिलदार की बातों के।

عشق کور و نمائد از دیدار نیز گہ گہ بہ خیزد از گفتار

इश्क़ जो दीदार (दर्शन) से पैदा हुआ करता है कभी-कभी गुफ़्तार (वार्तालाप) से भी पैदा होता है।

بالخصوص آں سخن کہ از دلدار خاصیت دار داندر ایں اسرار

विशेष तौर पर दिलदार की वे बातें जो रहस्यों के तौर पर इश्क़ पैदा करने

वाली विशिष्टता अपने अन्दर रखती है।

کشتہ او نہ یک نہ دونہ ہزار   ایں قتیلان او برون زِ شمار

इन बातों के फ़िदाई केवल एक दो या हज़ार इन्सान ही नहीं हैं अपितु उसके प्रेमी असंख्य हैं।

ہر زمانے قتیل تازہ بخواست   غازۂ روئے اودمِ شہد است

हर समय वह एक नया क़ातिल (वधित) चाहता है उसके चेहरे की चमक शहीदों का ख़ून होता है।

این سعادت چو بود قسمت ما   رفتہ رفتہ رسید نوبت ما

यह सौभाग्य चूंकि हमारे भाग्य में था। धीरे-धीरे हमारी नौबत भी आ पहुंची।

کربلائے است سَیرِ ہر آنم   صد حسین است در گریبا نم

करबला मेरी हर आन (समय) की सैरगाह है सैकड़ों हुसैन मेरे गरेबान के अन्दर हैं।

آدمم نیز احمدِ مختار   در برم جامۂ ہمہ ابرار

मैं आदम भी हूँ और अहमद मुख़्तार भी। मेरे शरीर पर समस्त नेकों के कुर्ता हैं।

کار ہائے کہ کرد بامن یار   برتر آن دفتر است از اظہار

वह काम जो ख़ुदा तआला ने मेरे साथ किए वे इतने अधिक हैं कि गिनती में नहीं आ सकते।

آنچہ داداست ہر نبی را جام   داد آن جام را مرا بتمام

जो जाम उसने हर नबी को प्रदान किया था वही जाम उसने पूर्ण रूप से मुझे भी दिया है।

دل من بردو اُلفتِ خود دار   خود مرا شد بوحی خود اُستاد

वह मेरा दिल ले गया और अपना प्रेम मुझे दे दिया और वह्यी के द्वारा स्वयं मेरा उस्ताद बन गया ।

وحی او را عجب اثر دیدم   روئے آن مہر زان قمر دیدم

मैंने उसकी वह्यी में अद्‌भुत प्रभाव देखा अर्थात् उस सूर्य का चेहरा उस चन्द्रमा के कारण नज़र आ गया।

دیدم از خلق رنج و مکروہات — و آنچہ چیز است پیش این لذات

मैंने सृष्टि से जो रंज और कष्ट देखे वे इन आनन्दों के आगे क्या चीज़ हैं।

دیدم از ہجر خلق جلوۂ یار — کار دیگر برامد ازیک کار

मैंने लोगों से पृथक होकर यार का जलवा देखा एक काम से दूसरा काम निकल आया।

آنچہ من بشنوم زوحی خدا — بخدا پاک دانمش زخطا

जो कुछ मैं ख़ुदा की वह्यी से सुनता हूँ ख़ुदा की क़सम मैं उसे ग़लती से पवित्र समझता हूँ।

ہمچو قرآن منزّہ اش دانم — از خطاہا ہمین است ایمانم

मैं उसे क़ुर्आन के समान त्रुटियों से पवित्र समझता हूँ और यही मेरा ईमान है।

من خدا را بدو شناختہ ام — دل بدین آتشش گداختہ ام

ख़ुदा की क़स्म यह ख़ुदा तआला का वचन है और वह क़ुद्दूस (पुनीत) ख़ुदा के मुंह से निकला हुआ है।

بخدا ہست این کلام مجید — از دہان خدائے پاک و وحید

मुझ पर जो कुछ ख़ुदा की ओर से प्रकट हुआ है वह एक सूर्य है जो सैकड़ों प्रकाश अपने साथ रखता है।

آنچہ برمن عیان شداز دادار — آفتا بے است بادو صد انوار

जो कुछ मुझ पर ख़ुदा की ओर से प्रकट हुआ है वह एक सूर्य है जो सैकड़ों नूर (प्रकाश) अपने साथ रखता है।

این خدائیست ربّ اربابم — بکہ رو آرم ار ازوتابم

यह है मेरा ख़ुदा जो रब्बुलअर्बाब है यदि मैं उससे विमुख हो जाऊं तो फिर किस की ओर मुख करूं।

انبیاء گرچہ بودہ اندبسے — من بعرفان نہ کمترم ز کسے

यद्यपि नबी बहुत हुए हैं परन्तु मैं स्वयं की मारिफ़त में किसी से कम नहीं हूँ।

وارث مصطفیٰ شدم بہ یقین — شدہ رنگین برنگ یار حسین

मैं नि:सन्देह मुस्तफा का वारिस हूँ और उस सुन्दर प्रियतम के रंग में रंगीन हूँ।

آن یقینے کہ بود عیسیٰ را — بر کلامے کہ شد برو القاء

वह विश्वास जो ईसा को उस कलाम पर था जो उस पर उतरा था।

وان یقین کلیم بر تورات　　　وان یقین ہائے سید السادات

और वह विश्वास जो मूसा को तौरात पर था और वह विश्वास जो सय्यिदुल मुर्सलीन को प्राप्त था।

کم نیم زان ہمہ بروئے یقین　　　ہر کہ گوید دروغ ہست لعین

मैं विश्वास के मामले में उनमें से किसी से कम नहीं हूँ जो झूठ बोलता हो वह लानती है।

لیک آئینہ ام زربِّ غنی　　　از پئے صورتِ مہِ مدنی

परन्तु मैं निस्पृह रब्ब की ओर से दर्पण के समान हूँ उस मदीने के चन्द्रमा की सूरत दुनिया को दिखाने के लिए।

ہرچہ آن یاربر دلِ من ریخت　　　نہ شیاطین بدونہ نفس آمیخت

जो कुछ (इल्हाम) उस यार ने मेरे दिल में डाला उसमें न शैतान ने मिलावट की न नफ़्स ने।

خالص آمد کلام آن دادار　　　زیں سبب شددِ لم پُراز انوار

उस ख़ुदा की ओर से शुद्ध कलाम उतरा इसलिए मेरा दिल प्रकाशों से भर गया।

ہست آن وحی تیرہ سو ختنی　　　کہ نبود است بر یقین مبنی

वही अंधकारमय वह्यी जला देने के योग्य है जो विश्वास पर आधारित न हो।

لیکن این وحی بالیقین زخدا ست　　　ہمہ کارم ازان یقین شدہ ر است

परन्तु मेरी यह वह्यी निःसन्देह ख़ुदा की ओर से है मेरा सब काम विश्वास के कारण ही ठीक हो गया।

آمدم آن زمان کہ باد خزان　　　کر دیکسر ریاض دین ویران

मैं ऐसे युग में आया हूँ जब पतझड़ की हवा ने धर्म के बाग़ को बिल्कुल उजाड़ दिया था।

در مشائخ نماند جز تزویر　　　عالمان ہم نشستہ ہم چو ضریر

मशाइख (विद्वानों) में झूठ के अतिरिक्त और कुछ न रहा था और आलिम विद्वान भी अंधों की तरह असमर्थ हो गए थे।

عاشق زر شدند و دولت و جاہ دل تہی از محبت آن شاہ

वे माल, दौलत और सम्मान के आशिक़ हो गए थे और दिल उस बादशाह के प्रेम में ख़ाली था।

اندرین روز ہائے چون شب تار قوم را دید حق بحالتِ زار

इन दिनों में जो अंधेरी रात की तरह थे ख़ुदा ने हमारी क़ौम को दुखी हालत में देखा।

پس مرا از جہانیان بگزید در دلم روح پاک خویش دمید

अतः मुझे दुनिया वालों में से चुन लिया और मेरे दिल में अपनी पवित्र वह्यी फूंकी।

در دل من زعشق شور افگند خود مراشد گسست ہر پیوند

मेरे दिल में इश्क़ का जोश डाल दिया वह आप मेरा बन गया और ग़ैर का हर संबंध तोड़ डाला।

کرد دیوانہ و خردہا داد بست یک در ہزار در بکشاد

मुझे दीवाना करके अक़्लें दीं और एक दरवाज़ा बन्द करके हज़ारों दरवाज़े खोल दिए।

خلق و مردم نصیحتم بکنند تا ببرم ز یار خود پیوند

मख़्लूक़ और लोग मुझे नसीहत करते हैं कि मैं दोस्त से संबंध विच्छेद कर लूं।

من نیم کور تا چو کورانی بگزنیم چہے ز بستانی

मैं अंधा नहीं हूँ कि अंधों की तरह बाग़ छोड़कर कुंए को ग्रहण करूं।

آن بر تازہ کان عطیہ یار چون زدست افگنم پئے مردار

वह ताज़ा मेवा जो प्रियतम का दान है मैं उसे इस मुर्दार दुनिया के लिए क्योंकर फेंक दूँ।

گر جہانے بدشمنی خیزد تیغ گیرد کہ خون من ریزد

यदि एक संसार मेरी दुश्मनी पर खड़ा हो जाए और तलवार पकड़ ले कि मेरा ख़ून गिरा दे।

من نہ آنم کہ ترک او گوئم جان من ہست یار مہ روئم

तब भी मैं ऐसा नहीं हूँ कि उसे छोड़ दूं, मेरा वह चन्द्रमुख वाला यार तो मेरी

जान है।

رخت ہرگز ز کوچہ اش نبرم   بزدلاں دیگر اند و من دگرم

मैं उसकी गली से अपना डेरा कदापि न उठाऊंगा बुज़दिल लोग और होते हैं और मैं और हूँ।

فارغم کرد عشق صورت یار   از غم حملہ ہائے این اغیار

प्रियतम के इश्क़ ने मुझे बेपरवाह कर दिया है इन दुश्मनों के आक्रमणों के ग़म से।

شورش عشق ہست ہر آنے   تابکے خیر این گریبانے

मेरे अन्दर हर समय इश्क़ का एक जोश है देखिये यह गिरेबान कब तक सलामत रहता है!

ناصحان را خبر ز حالم نیست   گذرے سوئے آن زلالم نیست

नसीहत करने वालों को मेरे हाल की कुछ ख़बर नहीं मेरे शुद्ध पानी की ओर उनका गुज़र नहीं हुआ।

آمدم چون سحر بلجّۂ نور   تا شود تیرگی ز نورم دور

मैं प्रकाश का एक तूफ़ान लेकर सुबह की तरह आया हूँ ताकि यह अंधकार मेरे प्रकाश के कारण दूर हो जाए।

شور ا فگندہ ام کہ تا زین کار   خلق گرد د ز خواب خود بیدار

मैंने शोर मचा रखा है ताकि उसके कारण जनता अपनी नींद से जाग जाए।

غافلان من ز یار آمدہ ام   ہمچو بادِ بہار آمدہ ام

हे लापरवाहो! मैं प्रियतम के पास से आया हूँ और बहार की हवा की तरह आया हूँ।

این زمانم زمانۂ گلزار   موسمِ لالہ زار و وقت بہار

यह मेरा युग गुलज़ार का युग है। अर्थात् लालाज़ार (अफ़ीम का खेत) का मौसम और बहार का समय है।

آمدم تا نگار باز آید   بے دلان را قرار باز آید

मैं इसलिए आया हूँ ताकि प्रियतम लौट आए और बद्-दिल लोगों को फिर आराम प्राप्त हो।

دست غیبم بپر ورد ہر دم   کرد وحیش بمن ظہور اتم

एक ग़ैबी हाथ हर दम मेरा पोषण करता है और उसकी वह्यी ने पूर्ण रूप से मुझ पर प्रकटन किया है।

نور الہام ہمچو باد صبا   نزدم آرد ز غیب خوشبوہا

ख़ुदा के इल्हाम का प्रकाश प्रात:काल की समीर की तरह ग़ैब से मेरे पास सुगन्धें ला रहा है।

زندہ شد ہر نبی بآمدنم   ہر رسولے نہان بہ پیر ہنم

हर नबी मेरे आने से ज़िन्दा हो गया और हर रसूल मेरी वजूद में छुपा हुआ है।

پُر شد از نور من زمان و زمین   سر ہنوزت بر آسمان از کین

मेरे प्रकाश के कारण ज़मीन और युग रोशन हो गई परन्तु अभी तेरा सिर शत्रुता से आकाश पर है।

با خدا جنگہا کنی ہیہات   این چہ جوروجفا کنی ہیہات

अफ़सोस कि तू ख़ुदा से युद्ध कर रहा है। यह क्या अत्याचार और राजनीति कर रहा है तुझ पर अफ़सोस।

از تورّع برون نہادی پا   ہوش کن اے بریدہ زاں یکتا

तूने संयम के मार्ग को त्याग दिया। हे ख़ुदा से संबंध न रखने वाले व्यक्ति होश कर।

از پئے خلق و ننگ و نام ورسوم   تافتی رو ز حضرتِ قیوم

तूने सृष्टियों की मर्यादा और रस्मों के लिए अपना मुंह उस हमेशा क़ायम रहने वाले के दरबार से फेर रखा है।

رو بدوکن کہ رورخِ یار است   ہمہ روہا فدائے دلدار است

अपना मुंह उस ओर कर कि उसी का चेहरा तो असल चेहरा है। समस्त चेहरे उस दिलदार पर क़ुर्बान हैं।

وحی حق را چو بشنوی از ما   این مگو ما نیافتیم چرا

जब तू हम से ख़ुदा की वह्यी सुने तो यह न कह कि वह हमको क्यों न मिली।

تانہ کارِ دلت بجان برسد   چون پیامت زدلستان برسد

जब तक तेरे दिल का काम पूरा न हो जाए प्रियतम का सन्देश किस प्रकार तेरे पास पहुँचे।

تانہ از خود روی جُدا گردی　　　تانہ قربان آشنا گردی

जब तक स्वेच्छाचार से पृथक न हो और जब तक तू दोस्त पर फिदा न हो।

تانیائی ز نفس خود بیرون　　　تانہ گردی بروئے اومجنون

जब तक तू अपनी कामवासना से बाहर न आए और जब तक उसके चेहरे का दीवाना न बन जाए

تانہ خاکت شود بسان غبار　　　تانہ گردد غبار تو خونبار

जब तक तेरी मिट्टी ग़ुबार की तरह न हो जाए और जब तक तेरे ग़ुबार (धूल) में से ख़ून न टपके।

تانہ خونت چکد برائے کسے　　　تانہ جانت شود فدائے کسے

जब तक तेरा ख़ून किसी के लिए न बहे और जब तक तेरी जान (प्राण) किसी पर क़ुर्बान न हो जाए।

چون دہندت بکوئے جاناں راہ　　　چوں نداآیدت ازاں درگاہ

जब तक तुझे प्रियतम के कूचे का मार्ग क्योंकर मिले और उस दरगाह की ओर से तुझे आवाज़ क्योंकर आए

تو حریص دراہم و دینار　　　روزوشب چون سگاں بران مردار

तू तो रुपये पैसे का लालची है और दिन-रात उसी मुर्दार पर कुत्तों की तरह गिरा हुआ है।

با چنیں حرص و آزو کبر و غرور　　　چوں نمانی زکوئے جاناں دُور

इतना लालच, लोभ, अहंकार और अभिमान के साथ क्या कारण है कि तू प्रियतम के कूचे से दूर न रहे।

گر بجوئی سوار این رہ راست　　　اندر آنجا بجوکہ گرد بخاست

यदि तू इस सीधे मार्ग के सवार को ढूंढता है तो वहां ढूंढ जहां से धूल उठी है। (अर्थात् ख़ाकसारों के बीच)

اندر آنجا بجوکہ زور نماند　　　خود نمائی و کبر و شور نماند

वहां ढूंढ जहां ज़ोर शेष नहीं रहा। स्वार्थ प्रायणता अहंकार और जोश नहीं

रहा।

اندر آنجا بجو کہ مرگ آمد　　　چون خزاں رفت بارو برگ آمد

वहाँ ढूंढ जहां मौत आ गई है। जब पतझड़ चला जाता है तो फल और पत्तों का मौसम आता है।

فانیان را جہانیاں نرسند　　　جانیان را ز بانیان نرسند

सांसारिक लोग ख़ुदा वोलों के बराबर नहीं हो सकते। बातें बनाने वाले जान देने वालों के बराबर नहीं हो सकते।

لاف ہائے زبان بود مردار　　　جز سگان کس نجویدش زنہار

मौखिक दावे मुर्दार की तरह होते हैं कुत्तों के अतिरिक्त कोई उनको नहीं ढूंढता।

در د لے چوں بروئد آں گلزار　　　بُلبلش اہلِ دل شوند ہزار

जब किसी दिल में वह गुलज़ार पैदा हो जाता है तो हज़ारों दिल वाले उसके बुलबुल बन जाते हैं।

این قبولیت از خدا آید　　　نہ بتزویر و افترا آید

परन्तु यह मान्यता भी ख़ुदा ही की ओर से आती है छल और झूठ से नहीं आती।

چادرے کاند رو خدا باشد　　　صد عزیزے برو فدا باشد

वह चादर जिसके अन्दर ख़ुदा हो सैकड़ों प्रतिष्ठावान लोग उस पर क़ुर्बान होते हैं।

در بود زیر جامہ شیطانے　　　زود بینی تباہ و ویرانے

और यदि कपड़े के नीचे शैतान हो तो शीघ्र ही तू उसे तबाह और वीरान होते देख लेगा।

میخوری زہر گر تو بخل و حسد　　　میکنی با عباد ربّ احد

यदि तू एक ख़ुदा के बन्दों से कंजूसी और ईर्ष्या करता है तो तू ज़हर खाता है।

تانہ میری بترز مردارے　　　دور از فضل حضرت بارے

जब तक तू फ़ना नहीं होता तब तक मुर्दे से भी तुच्छ है और ख़ुदा की रहमत से दूर है।

تانہ گردد سرت نگون ز نیاز　　　پردہ از نفس تو نہ گردد باز

जब तक तेरा सिर विनयपूर्वक नीचा न होगा तब तक तेरे नफ़्स के सामने से पर्दा न हटेगा।

تا نہ ریزد ترا ہمہ پر و بال اندر این جا پریدن است محال

जब तक तेरे बाल और पर न झड जाएँगे तब तक इस मार्ग में तेरा उड़ना महाल है।

پردۂ نیست بر رخ دلدار تو ز خود پردۂ خودی بردار

दिलदार के चहरे पर तो कोई पर्दा नहीं है परन्तु तू अपने आगे से अहंकार का पर्दा उठा।

ہر کہ را دولتِ ازل شد یار کار او شد تذلّل اندر کار

जिसे अनंत दौलत मिल जाती है उसका काम हर बात में विनम्रता को धारण करना है।

آن سعیداں لقائے او دیدند کہ بلاہا برائے او دیدند

उन सौभाग्यशालियों ने उसके मुख को देख़ लिया, बहुतों ने उसके मार्ग में कठिनाइयाँ उठाईं।

آبرو ریختہ پئے آن شاہ دل زکف واز سر اوفتادہ کلاہ

उस बादशाह के लिए उन्होंने अपना सम्मान क़ुर्बान कर दिया दिल हाथ से गया और टोपी सिर से उतरी।

گر نیابند سوئے یار گذر از غمش جان کنند زیرو زبر

यदि वे महबूब की ओर आनंद नहीं पाते तो उसके ग़म में अपनी जान को तबाह कर देते हैं।

کردہ بنیاد خود ہمہ ویران ہم ملایک ز صدق شان حیران

उन्होंने अपने अस्तित्व कि बुनियाद उखाड़ दी यहाँ तक कि फ़रिश्ते भी उनकी वफादारी पर हैरान हैं।

چوں دلے سوئے دل رہے دارد یار چوں یا ر خویش بگذارد

चूंकि दिल को दिल की ओर राह होती है तो यार अपने यार को क्योंकर छोड़ दे।

لا جرم ایں چنیں وفا دارے جام عزت خورد ازاں یارے

तो ऐसा वफ़ादार दोस्त उस दोस्त के हाथ से सम्मान का जाम पीता है।

ہمچو دیوانہ یک جہان خیزد　　　تا بیک لحظہ خون او ریزد

एक जगत दीवानों की तरह उठ खड़ा होता है ताकि थोड़ी सी देर में उसका काम समाप्त कर दे।

لیکن آن یار خود فرود آید　　　تا عدو را دو دست بنماید

परन्तु वह यार स्वयं उतरता है ताकि दुश्मनों को दो-दो हाथ दिखाए।

ہمچنیں صادقان نشان دارند　　　قدسیان بہر شان بہ پیکاراند

सच्चों के यही निशान होते हैं उनके लिए फरिश्ते युद्ध करते हैं।

این نہاں جنگ گر بشر دیدے　　　راہ مردان راہ بگزیدے

यदि मनुष्य इस गुप्त युद्ध को देखता तो ख़ुदा के मार्ग पर चलने वालों का मार्ग ग्रहण कर लेता।

ہر عدوے کہ خیز داز سرِکین　　　خود بکو بد سرش خدائے معین

हर दुश्मन जो वैर के मार्ग से उठता है तो मददगार ख़ुदा स्वयं उसका सिर कुचल देता है।

چوں شود بندہ یار آں جاناں　　　برکابش دوند سلطاناں

जब बन्दा उस प्रियतम का दोस्त बन जाता है तो बादशाह उसकी रकाव के साथ दौड़ते हैं।

ہر کہ جان بہر یار باختہ است　　　یارِ ما قدر او شناختہ است

जिसने भी अपनी जान ख़ुदा के लिए क़ुर्बान की, हमारे ख़ुदा ने भी उसकी क़द्र खूब पहचानी।

از سگان کمتر است دشمن او　　　بد گہر کوفتہ ز ہاون او

उसका दुश्मन कुत्तों से भी अधिक बुरा है। वह अकुलीन ख़ुदा की ओखली में कूटा जाता है।

ہست از عادت خدائے علیم　　　مے کند فرق در سعید و لییٔم

सर्वज्ञ ख़ुदा की यह आदत है कि वह भाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली में अन्तर कर देता है।

ہیچ دانی لئیم را چہ نشان　　　آنکہ او دشمن امام زماں

क्या तुझे ख़बर है कि दुर्भाग्यशाली की क्या निशानी है वह युग के इमाम का दुश्मन हुआ करता है।

آنکہ او آمداز خدائے یگان   پیش چشمش زخیل مفتریاں

जो एक ख़ुदा की ओर से आता है उस कमीने की दृष्टि में वह मुफ़्तरी लोगों में से होता है।

گر نبودے شقی و کرمِ زمین   توبہ کر دی زگفتگوئے چنین

यदि वह दुर्भाग्यशाली और पृथ्वी का कीड़ा न होता तो ऐसे वार्तालाप से तौबः करता।

آنچہ بامن کند عنایتِ یار   کے بغیرے شنیدی اے مردار

वह यार जो मुझ पर कृपा करता है। हे मुर्दार क्या तूने वैसी किसी और पर भी सुनी है।

گر شعارِ تو اِتّقا بودے   مشعلِ غیب رہنما بودے

यदि संयम (तक़्वा) तेरा आचरण होता तो ग़ैब का दीपक तेरा मार्गदर्शक होता।

اتقا را بود ز صدق آثار   اے سیہ دل ترا بصدق چہ کار

संयम की निशानी सच्चाई है। हे बेरहम इन्सान तुझे सच्चाई से क्या मतलब?

نیستی از خدا توراز شناس   ہمہ برظن و وہم ہست اساس

तू ख़ुदा के रहस्यों को नहीं पहचानता। तेरी समस्त बुनियाद खयाल और भ्रम पर है।

آنچہ گوئی زراہ کبروجحود   پیش ازین گفتہ اندقوم یہود

अहंकार और इन्कार के कारण जो कुछ तू कहता है इससे पहले यहूदियों ने भी यही कहा था।

نفسِ تو فربہ روحِ تو خستہ   ہمہ ابواب آسمان بستہ

तेरा नफ़्स मोटा है और रूह बीमार और आकाश के सब दरवाज़े तुझ पर बन्द हैं।

این چہ غفلت کہ خود بدین کیشے   داز خدا ہیچ گہ نیند یشے

यह क्या लापरवाही कि तू इस आचरण पर प्रसन्न है और ख़ुदा तआला से बिल्कुल नहीं डरता।

اے بسا راز ہاکہ عین صواب پیش کوران مقام استعجاب

बहुत से रहस्य हैं जो उच्च सच्चाइयां हैं परन्तु अंधों के लिए वह आश्चर्य का स्थान हैं।

راہ طلب کن بگریہ و زاری تا بجو شد ترحم باری

रो-रो कर रास्ता ढूंढ ताकि ख़ुदा की दया जोश में आए।

یک شب از صدق نعرہ ہا بردار پیش آن عالمِ حقیقت کار

हाल से परिचित उस ख़ुदा के सामने एक रात निष्कपटता के साथ रोना-गिड़गिड़ाना कर।

از ادب نے براہ استکبار زومددخواہ اندرایں اسرار

अहंकार से नहीं अपितु सम्मान पूर्वक और उन रहस्यों के खुलने के लिए उससे सहायता मांग।

ترکن زاشک خویش بستر خویش باز لب را کشائے بادل ریش

अपने आंसुओं के साथ अपने बिस्तर को तर कर फिर ज़ख़्मी दिल के साथ यों निवेदन कर।

کائے خدائے علیم راز نہان کے بعلمت رسددل انسان

हे सर्वज्ञ ख़ुदा गुप्त रहस्यों के परिचित! तेरे ज्ञान तक इन्सानों का विचार कहां पहुंच सकता है।

چوں ملائک ندیدہ اند آن نور کان در آدم تو داشتی مستور

जब फ़रिश्तों को भी वह प्रकाश नज़र न आया जो तूने आदम में छुपा रखा था।

ما چہ چیزیم و علم ما است چہ چیز بے تو در صد خطر قیاس و تمیز

तो हम क्या हैं और हमारा ज्ञान क्या चीज़ है। तेरे बिना बुद्धि और विवेचकों को भी बहुत बड़ा ख़तरा है।

ما خطا کارو کار ماست خطا شدتبہ کار ما ز عجلت ہا

हम ग़लती करने वाले हैं और हमारा काम ग़लत है और हमारा सब काम हमारी जल्दबाज़ी के कारण तबाह हो गया।

گر زتُست این کہ سوئے تو خواند وز تو بہترکدام کس داند

यदि यह व्यक्ति जो हमें तेरी ओर बुलाता है तेरी ओर से ही है और तुझ से उत्तम कौन हाल की वास्तविकता को जानता है।

گنہِ ما بہ بخش و چشم کشا　　تانہ میریم از خلاف و اِبا

तू तो हमारे गुनाह माफ़ कर और हमारी आंखें खोल ताकि हम विरोध और इन्कार की हालत में न मरें।

ورنہ این ابتلا ز ما بردار　　کہ رحیمی و قادر و غفّار

वरना हम से इस इब्तिला को दूर कर कि तू दयालु शक्तिमान और क्षमा करने वाला है।

اہل اخلاص چون کنند دُعا　　از سر صدق و ابتہال و بکا

जब इख़्लास वाले लोग दुआ करते हैं श्रद्धा, निष्ठा और रोने-धोने के साथ।

شور افتدازان در اہل سما　　زان رسد حکم نصرت و ایوا

तो उस दुआ से आकाश वालों में शोर मच जाता है और वहाँ से सहायता और शरण का आदेश पहुंच जाता है।

پس کجائی چرا نے آئی　　اندر این بارگاہِ یکتائی

अत: हे अभिलाषी तू कहां है और क्यों नहीं आता उस एक ख़ुदा की चौखट के सामने।

تو دعا کن بصدق و سوز و گداز　　شود بر دلت درِ حق باز

तू श्रद्धा और जलन, पिघलन से दुआ कर ताकि तुझ पर ख़ुदा का दरवाज़ा खुले।

از خودی حالِ خود خراب مکن　　شب پری کار آفتاب مکن

अभिमान से अपना हाल ख़राब न कर तू तो चमगादड़ है सूर्य का काम न कर।

چون رسد عجز کس بحد مقام　　نصرۃ یار را رسد ہنگام

जब किसी का विनय चरम सीमा को पहुंच जाता है तो यार की सहायता का समय आ जाता है।

پس چرا نُصرتش نے خواہی　　دور رفتی بگام گمراہی

फिर तू इसकी सहायता क्यों नहीं मांगता, तू गुमराही के क़दम के साथ दूर

चला गया है।

نہ زمان بینی و نہ حالت قوم — دل چو کوران زبان کشادہ بلوم

न तू युग का हाल देखता है न क़ौम की हालत, तेरा दिल अंधों की तरह है और जीभ निन्दा के लिए खुली हुई है।

ایکہ چشمت ز کبر پوشیدہ — چہ کنم تاکشایدت دیدہ

हे वह व्यक्ति कि तेरी आंख घमण्ड से ढकी हुई है मैं क्या करूं कि तेरी आंखें खुलें।

گر ترا در دلست صدق و طلب — خودروی ہامکن زترک ادب

यदि तेरे दिल में सच्ची तलब है तो अनादर के कारण स्वेच्छाचार न कर।

راز راہِ خدا بجو ز خدا — تونہء چون خدا بجائے خود آ

ख़ुदा के मार्ग का भेद स्वयं ख़ुदा से ही मांग, तू खुदा की तरह नहीं है अपने स्थान पर रह।

ہوش دار اے بشر کہ عقل بشر — دراد اندر نظر ہزار خطر

हे इन्सान होश कर कि इन्सानी बुद्धि अपनी नज़र में हज़ारों दोष रखती है।

سر کشیدن طریق شیطانی است — بر خلاف سرشت انسانی است

उद्दण्डता तो शैतानी तरीक़ा है और इन्सानी प्रकृति के विपरीत।

تانہ فضلش درِ تو بکشائد — صد فضولی بکن چہ کار آید

जब तक उसकी कृपा तेरे लिए दरवाज़ा न खोले तो तू यदि सैकड़ों बेकार काम भी करता रहे सब व्यर्थ हैं।

آن خدائے کہ وعدئہ حَکَمے — داد از راہ رحم ولطف ہمے

वह ख़ुदा जिसने एक हकम का वादा अपनी कृपा है दया के मार्ग से किया था।

او بدا نست از ازل کہ انام — راہ خود گم کنند از اوہام

वह आनादि काल से यह जानता था कि सृष्टि सन्देहों में पड़कर अपना रास्ता भूल जाएगी।

ورنہ کارِ حَکَم چہ خواہد بود — رہ نمائی بمرد راہ چہ سود

वरना फिर हकम का काम क्या होगा। ठीक रास्ते पर चलने वाले इन्सान को

राह दिखाने का क्या लाभ।

راہ گم کردہ را حکم باید تابد و راہ راست بنماید

हकम तो गुमराह के लिए अनिवार्य होता है ताकि वह उसे सीधा रास्ता दिखाए।

این مگو ما خودیم عالم دین توبہ کن از مکالمات چنین

तू यह न कह कि हम स्वयं धर्म के विद्वान हैं ऐसी बातों से तौबः कर।

کور را کور کے نماید راہ ہر کہ آگاہ از خدا آگاہ

अंधे को अंधा किस प्रकार रास्ता दिखा सकता है जो भी रास्ते का जानकार है वह ख़ुदा की ओर से सूचित किया गया है।

دین نیاید بغیر دیندارے سگ نداند بغیر مردارے

धर्म बिना किसी धार्मिक व्यक्ति के प्राप्त नहीं होता दुनिया का कुत्ता तो मुरदार के बिना कुछ नहीं जानता।

سخنِ یارو سینہء افسردہ جامہء زندہ است بر مردہ

मुंह पर यार की बातें हैं परन्तु दिल बुझा हुआ है जैसे मुर्दे पर ज़िन्दा के कपड़े हैं।

گر بَری ریگ را رفیع وبلند جنبشِ بادِ خواہدش افگند

यदि तू रेत को बहुत ऊंचे स्थान पर भी ले जाए तो हवा की थोड़ी सी हरकत उसे गिरा देगी।

خانہ آنست کان زمعمارے ورنہ افتد ز سیل دیوارے

घर वही है जिसे मिस्त्री ने बनाया हो नहीं तो सैलाब से दीवारें गिर पड़ेंगी।

این زمانِ ہزار طوفان است خانہ از پائے بست ویران است

यह युग तो हज़ारों तूफानों का युग है और घर की बुनियाद खोखली है।

این عجب قوم ہست نا ہنجار با چنین خانہ فارغ از معمار

यह विचित्र अयोग्य क़ौम है कि ऐसे घर के बावजूद मकान बनाने वाले से लापरवाह है।

آنچہ بادین نمود قوم پلید با اما مان نہ کردہ است یزید

जो कुछ इस अपवित्र क़ौम ने धर्म के साथ मामला किया वह यज़ीद ने इमामों के साथ भी नहीं किया।

باز گوئی کہ من نمے بینم حاجت دیگرے پئے دینم

फिर भी तू कहता है कि धर्म के लिए मुझे किसी और इन्सान की आवश्यकता दिखाई नहीं देती।

ایکہ راضی شدی بنقص و زِیان این نہ دین است بلکہ دشمن آن

हे वह व्यक्ति जो घाटे और हानि पर प्रसन्न है यह धर्म, धर्म नहीं अपितु उसका दुश्मन है।

دین بیا موزدت خدائے قدیر ورنہ رسمے است خام وزشت و حقیر

धर्म तो कृपालु ख़ुदा ही तुझे सिखाता है अन्यथा वह एक रस्म है, कच्ची, कुरूप और नीच।

مسلمت مسلمی نہ کرد اے دون واز بخاری بخارِ سرافزون

हे कमीने तुझे सही मुस्लिम ने मुसलमान न किया और सही बुख़ारी ने तेरे सिर का बुख़ार और अधिक कर दिया।

این ہمہ استخوان بد امانت نیست یک ذرہ مغز در جانت

ये बहुत सी हड्डियां तेरी झोली में पड़ी हुई हैं और तेरी जान में एक कण भी मग़ज़ नहीं है।

کوریؔ و باز در دلت ہوسے کہ بخواند ترا بصیر کسے

तू तो अंधा है फिर भी तेरे दिल में यह लालच है कि कोई तुझे आंखों वाला कहे।

زین خیال تو مردنت بہتر زین غذا ز ہر خوردنت بہتر

इस विचार से तो तेरा मर जाना अच्छा है और ऐसे भोजन से तेरा ज़हर खा लेना अच्छा है।

اے نشستہ بصدر سجادہ این چہ سودات در سر افتادہ

हे वह व्यक्ति जो सज्जाद: पर बैठा हुआ है यह क्या उन्माद है जो तेरे सर में घुस गया है।

ناید اندر قیاس و فہم کسے کہ شود کارپیل از مگسے

यह बात किसी की बुद्धि और समझ में कभी नहीं आ सकती कि हाथी का काम मक्खी से हो सकता है।

از خدا چون رسید پیغامت — چون نترسی زخبث انجامت

जब तुझे ख़ुदा का सन्देश पहुंच गया तो फिर तू अपने बुरे अंजाम से क्यों नहीं डरता।

بس ہمین است طاعتت اے غول — کہ دلت حکم حق نہ کرد قبول

हे भुतने क्या यही तेरा आज्ञापालन है कि तेरे दिल ने ख़ुदा का आदेश स्वीकार नहीं किया।

حجت لغو درمیان آری — خبث نفس است اصل بیزاری

तू निरर्थक तर्क प्रस्तुत करता है। सच से विमुखता का असल कारण तेरे नफ़्स की बुराई है।

ہر چہ ثابت شد است از قرآن — تو ازو سر بہ پیچی اے نادان

जो बात क़ुर्आन से सिद्ध है, हे मूर्ख तू इस से सर फेरता है।

صد نشان شد عیان چو مہرِ منیر — نزد تُست این دروغ یا تزویر

चमकते हुए सूर्य के समान सैकड़ों निशान प्रकट हो गए परन्तु तेरे नज़दीक यह झूठ या छल हैं।

دیدہ آخر برائے آن باشد — کہ بدو مرد راہ دان باشد

अत: आंखें इसलिए होती हैं कि उनकी सहायता से इन्सान रास्ते का परिचित हो जाए।

وہ چہ این چشم ہست و این دیدہ — کہ برو آفتاب پوشیدہ

वाह-वाह ये विचित्र आंखें हैं कि इन से सूर्य भी दिखाई नहीं देता।

گر بدل با شدت خیال خدا — این چنین ناید از تو استغنا

यदि तेरे दिल में ख़ुदा का विचार होता तो तुझसे इतनी लापरवाही प्रकटन में न आती।

از دل و جان طریق او جوئی — واز سرِ صدق سوئے او پوئی

तू जान व दिल के साथ उसका मार्ग ढूंढता और वफ़ादारी के साथ उसकी ओर दौड़ता।

ہر کرا دل بود بدلدارے — خبرش پُرسد از خبردارے

जिस मनुष्य का दिल किसी माशूक़ से लग जाता है वह उसकी ख़बर किसी

परिचित से पूछता है।

گر نباشد لقائ محبوبے   جوئد از نزدِ یار مکتوبے

और यदि प्रियतम की मुलाक़ात उपलब्ध नहीं आती तो वह दोस्त के पास से पत्र का अभिलाषी होता है।

بے دلآرام نایدش آرام   گہ بروئش نظر گہی بکلام

उसे दिलआराम के बिना आराम नहीं आता। कभी उसके चेहरे पर नज़र होती है तो कभी उसके कलाम पर।

آنکہ داری بدل محبت او   نایدت صبر جز بصحبت او

हे वह मनुष्य जो दिल में उसका प्रेम रखता है तुझे तो उसके पास बैठने के बिना धैर्य ही नहीं आ सकता।

فرقت او گر اتفاق افتد   در تن و جان تو فراق افتد

यदि संयोग से कभी उससे जुदाई हो जाए तो तेरी जान तेरे शरीर से अलग होने लगती है।

دلت از ہجر او کباب شود   چشمت از رفتنش پُر آب شود

तेरा दिल उस के हिज्र से कबाब होता है और उसके चले जाने से तेरी आंखें आंसू बहाने लग जाती हैं।

باز چون آن جمال و آن روئے   شد نصیب دو چشم در کوئے

फिर जब वह सुन्दरता और वह चेहरा किसी गली में तेरी आंखों के सामने आ जाता है।

دست در د امنش زنی بجنون   کہ ز نادیدنت دِلم شد خون

तो तू दीवानों की तरह उसका दामन पकड़ कर यों कहता है कि तेरे न देखने के कारण मेरा दिल ख़ून हो गया।

این محبت بذرۂ امکان   واز دل افگندۂ خدائے جہان

तुझे एक तुच्छ मख़्लूक़ से तो इतना प्रेम होता है परन्तु उस ख़ुदा की ओर से तू बिल्कुल लापरवाह है।

این وفاہا بذرۂ ناچیز   فارغ افتادۂ ز یار عزیز

एक तुच्छ कण के साथ तो ऐसी वफादारी परन्तु उस प्यारे दोस्त की ओर से

तू लापरवाह है।

او فرستاد بندۂ از جود تارہاند ترا زریب و جحود

उसने मेहरबानी करके एक बन्दे को भेजा ताकि तुझे सन्देहों और इन्कार से रिहाई प्रदान करे।

آن قدر بارہا نشان بنمود کہ زصد معرفت درے بکشود

और उसने बहुत बार इतने निशान दिखाए कि अध्यात्म ज्ञान के सैकड़ों दरवाज़े खोल दिए।

باز سر میزنی بانکارے سہل پنداشتی چنین کارے

फिर भी तू इन्कार से सिर हिलाता है और तूने यह काम आसान समझ लिया है।

لا ابالی فتادۂ زان یار فارغی زان جمال وزان گفتار

तू उस यार की ओर से लापरवाह हो गया है और उस सुन्दरता और उस वार्तालाप की ओर से लापरवाह।

مردگان را ہمین کشی بکنار و از دلآرام زندۂ بیزار

मुर्दा लाशों को तू अपनी बग़ल में खींचता है और ज़िन्दा (ग़ैर फ़ानी) प्रियतम से विमुख है।

کش شنیدی کہ قانع از یار است عشق و صبراین دوکارد شواراست

तूने किसी के बारे में सुना है कि वह दोस्त से लापरवाह हो। इश्क़ और फिर धैर्य ये दो काम बहुत कठिन हैं।

این بود حال و طور عاشق زار این بود قدر دلبر اے مردار

क्या यही आशिक़ अशक्त का हाल और तरीक़ा हुआ करता है और हे मुर्दार! क्या दिलबर की यही क़द्र हुआ करती है।

عاشقان رابوذ صدق آثار اے سیہ دل ترا بہ عشق چہ کار

आशिक़ों में तो सच के लक्षण पाए जाते हैं। हे अंधकारमय दिल इन्सान, तुझे इश्क़ से क्या वास्ता (संबंध)।

نزد تر چون رسید زان کوئے پیک آن دلستان خوش روئے

जब उस गली से तेरे पास उस सुन्दर प्रियतम का सन्देश वाहक पहुंचा।

عزتش این کہ کا فرش خوانی واز سرِ زجر ازدرش رانی

तो तूने उसका यह सम्मान किया कि उसे काफ़िर कहता है और घुड़क कर उसे अपने दरवाज़े से निकालता है।

صد ہزاران نشان ہمے بینی باز منکر شوی ز بے دینی

तू लाखों निशान देखता है फिर भी अधर्म के कारण तू इन्कार करता है।

خویشتن را تو عالم انگاری زین فضولی کنی بغدّاری

तू स्वयं को विद्वान समझता है शायद इसलिए ग़द्दारी से ऐसी व्यर्थ बातें करता है।

تا ز تو ہستی ات بدر نرود این رگ شرک از تو بر نرود

जब तक तेरा घमण्ड तुझ से न निकलेगा तब तक यह शिर्क की रग तुझ से दूर न होगी।

پائے سعیت بلند تر نرود تا ترا دود دل بسر نرود

तेरी कोशिश में बरकत न पड़ेगी जब तक तेरे दिल का धुआं सिर तक न पहुंचेगा।

یار پیدا شود دران ہنگام کہ تو گردی نہان زخود بتام

दोस्त उस समय प्रकट होगा जब तू अपने अस्तित्व से पूर्णरूपेण पृथक हो जाएगा।

تانہ سوزی زسوز و غم نرہی تانہ میری زموت ہم نرہی

तू ग़म से आज़ाद न होगा जब तक ग़म की जलन न जलेगी और मौत से आज़ाद न होगा जब तक फ़ना न होगा।

چیست آن ہر زہ جان و تن کہ نسوخت آتش اندر دلی بزن کہ نسوخت

वह कैसी बेहूदा जान और शरीर है जो नहीं जलता ऐसे दिल को आग लगा दे जो इश्क़ में कबाब न हो।

کلبہء جسم خود بکن برباد چون نمی گردد از خدا آباد

अपने शरीर की झोपड़ी को बर्बाद कर दे यदि वह ख़ुदा के इश्क़ से आबाद नहीं।

پائے خود راجدا کن از تنِ خویش چون نگیردرہ صداقت پیش

अपने पैर को काट कर शरीर से पृथक कर दे यदि वह सच्चाई का मार्ग ग्रहण नहीं करता।

آفریں خدا بران جانے　　که زخود شد برائے جانانے

ख़ुदा की ओर उस मनुष्य पर आफ़्रीं हो जो अपने प्रियतम के लिए नफ़्सानियत से अलग हो गया।

منزل یار خویش کرد بدل　　و از ہواہا رمید صد منزل

जिसने अपने दोस्त का ठिकाना अपने दिल में बना लिया और लोभ-लालच से सैकड़ों मंज़िल दूर भाग गया।

از خودی دورشدو خدا را یافت　　گمشدودست رہنما را یافت

वह अभिमान से दूर हुआ और ख़ुदा को पा लिया वह फ़ना हो गया और मार्गदर्शक के हाथ को प्राप्त कर लिया।

ایکہ دیوانۂ پئے اموال　　وہ کہ درکار دین چنین اہمال

हे वह मनुष्य कि तू दौलत के लिए दीवाना हो रहा है क्या ख़ूब! धर्म के मामले में इतनी कोताही।

وقت عیش ست و موسم شادی　　توچہ در سوگ و ماتم افتادی

यह तो ऐश्वर्य का समय और ख़ुशी का मौसम है तू किस शोक और मातम में पड़ा है।

از خدایت رسید رہبر دین　　مردِدین باش و چون زنان منشین

तेरे पास तो ख़ुदा की ओर से धर्म का मार्गदर्शक पहुंच गया। अब तू भी धर्म के योद्धाओं में से हो जा और स्त्रियों की तरह मत हो।

خیز و از بہر یار کارے کن　　یک نظر سوئے این بہارے کن

उठ और दोस्त के लिए काम कर और इस बाग़ और बहार की ओर एक नज़र डाल।

ورنہ مرگ است اژدہائے دمان　　زود میگیردت مشو نادان

वरना मौत एक भयावह अजगर है जो तुझे जल्दी ही पकड़ेगी। मूर्ख न बन।

آن صبا نکہتی زِ یار آورد　　در دمے موسمِ بہار آورد

वह प्रातः काल की वायु दोस्त के यहां से ऐसी सुगंध लाई है जैसे वह दम भर

में बहार का मौसम ले आई है।

تو خزان بہر خود پسندیدے　　　من نہ دانم چہ در خزان دیدے

परन्तु तूने अपने लिए पतझड़ को पसन्द किया है। मैं नहीं जानता कि पतझड़ में तूने क्या लाभ देखा।

از پئے زندہ کردن آمد یار　　　تو ہم از دست خود شدی مرِدار

यार तो मुझे ज़िन्दा करने आया था परन्तु तू अपने हाथों ही मुर्दार बन रहा है।

قصہ ہا پیش میکنی زِ ضلال　　　کاین کرامات ہائے اہل کمال

गुमराही के कारण तू क़िस्सों को प्रस्तुत करता है कि ये हैं अहले कमाल की करामतें।

گر درین قصہ ہا اثر بودے　　　دلت از رجس دُور تر بودے

यदि इन क़िस्सों में कोई प्रभाव होता तो तेरा दिल अपवित्र से बहुत दूर होता।

قصہ ہا گر بیان کنی تو ہزار　　　کے رمداز تو خبث دل ز نہار

यदि तू हज़ारों क़िस्से भी वर्णन करता है तब भी तेरे दिल की बुराई कहां दूर हो सकती है।

زین قصص ہیچ راہ نکشاید　　　صد ہزاران بگو چہ کار آید

इन क़िस्सों से कोई मार्ग नहीं खुलता। लाखों क़िस्से वर्णन करता फिर वे किस काम के हैं।

بنشین مُدّتے باہل یقین　　　تا دہندت دو دیدۂ حق بین

कुछ समय तक तू विश्वास वालों की संगत में रह ताकि तुझे सच को पहचानने वाली आंखें मिलें।

اندرون تو ہست دیو خصال　　　بر زبان قصہ ہائے از ابدال

तेरा अन्त:करण तो शैतान का जीवन चरित्र है और जीभ पर अब्दालों के क़िस्से हैं।

روز چون روشن است از د ادار　　　چشم بکشاو شب پری بگذار

ख़ुदा की ओर से जब दिन प्रकाशमान है तो तू भी आंखें खोल और चमगादड़पना छोड़ दे।

در خور و مہ شکے نہ گیرد راہ　　　تو ز دا دار خویش دیدہ بخواہ

चन्द्रमा और सूर्य के बारे में किसी को सन्देह नहीं हुआ करता तू ही अंधा है अत: अपने ख़ुदा से दिल की नज़र मांग।

نیستی طالبِ حقیقت راز　　　پس ہمین مشکلست اے ناساز

हे अयोग्य! सब कठिनाई यही है कि तू राज़ की वास्तविकता का अभिलाषी नहीं है।

این مگو من محافظ دینم　　　خود شفا بخش دین مسکینم

यह न कहो कि मैं धर्म का रक्षक हूँ और मैं स्वयं ही असहाय धर्म का तबीब (उपचारक) भी हूँ।

در دلت صد ہزار بیماری　　　چہ ازین دل توقعی داری

तेरे दिल में तो हज़ारों बीमारियां हैं फिर तू ऐसे दिल से क्या आशा रखता है।

تند بادِ بخواہ از دادار　　　تا خس و خار تو برد یکبار

ख़ुदा से आंधी मांग ताकि वह तेरा सब कूड़ा कर्कट उड़ा कर ले जाए।

جز خدا راہ چارہ سازی نیست　　　باز کن دیدہ جائے بازی نیست

ख़ुदा के अतिरिक्त इलाज का और कोई रास्ता नहीं आंखे खोल। यह खेल का मैदान नहीं है।

خبری نیستت ز جانانہ　　　ے زنی ہر زہ کام کورانہ

तुझे प्रियतम की कुछ भी ख़बर नहीं यों ही अंधा धुंध क़दम उठाए चला जा रहा है।

ہمچو کرمے بجز کلام خدا　　　مردہ ہستی بغیر جام خدا

ख़ुदा के कलाम के बिना तू एक कीड़े की तरह है और ख़ुदा के मिलने के जाम के बिना तू मुर्दा है।

آن یقینے کہ بخشدت دادار　　　چون خیال خودت نہد بکنار

वह विश्वास जो ख़ुदा तुझे प्रदान करता है उसे तेरा अपना विचार किस प्रकार पा सकता है।

آن یکے ازدہان دلدارے　　　نکتہ ہائے شنید و اسرارے

एक मनुष्य तो वह है जो अपने प्रियतम के मुंह से नुक्ते और रहस्य सुनता है।

و ان دگراز خیال خود بگمان　　　پس کجا باشد این دو کس یکسان

और दूसरा मनुष्य वह है जो अपने विचारों की बुनियाद पर सन्देह और गुमान में ग्रस्त है तो ये दोनों किस प्रकार बराबर हो सकते हैं।

ذوق این مے چو تو نمیدانی   ہرزہ عو عو کنی بنادانی

चूंकि तू इस शराब का स्वाद नहीं जानता इसलिए मूर्खता से व्यर्थ भोंकता रहता है।

آن خداداں کہ خود دہد آواز   نہ کہ ازوہم کس نمائد باز

तू उसे ख़ुदा समझ जो स्वयं आवाज़ देता है न कि उसे जो किसी के भ्रम का परिणाम है।

واجب آمد ازین بہر دوران   کہ تکلّم کند خدائے یگان

इस तर्क से यह सिद्ध हुआ कि हर युग में ख़ुदा ए वाहिद (एक ख़ुदा) कलाम किया करता है।

ورنہ دین ست محض افسانہ   این چنین دین ز صدق بیگانہ

वरना धर्म केवल एक कहानी बन जाती है ऐसा धर्म सच्चाई से अनभिज्ञ है।

آن زشیطان بودنہ ازحق دین   کہ نہ دارد دوام وحی یقین

वह धर्म ख़ुदा की ओर से नहीं अपितु शैतान की ओर से है जो निश्चिन और हमेशा रहने वाली वह्यी अपने अन्दर न रखता हो।

دین ہمان دین بود کہ وحی خدا   نشود زو بہ ہیچ وقت جُدا

धर्म तो वही धर्म होता है जिससे ख़ुदा की वह्यी किसी समय भी अलग न हो।

وحی و دین خدا ست چون تو ام   یک چوگم شد د گر شود گم ہم

वह्यी और ख़ुदा का धर्म चूंकि दोनों जुड़वा चीज़ें हैं अत: यदि एक जाती रहेगी दो दूसरी भी गुम हो जाएगी।

بے یقین چون نجات یا بد خلق   بیگمان رُو ز حق بتابد خلق

सृष्टि विश्वास के बिना मुक्ति क्योंकर पा सकती है अनिवार्य है कि इस स्थिति में जनता सच से मुख न फेरे।

بے خدا چویقین بدل آید   گفتگو یا لقا ہے باید

ख़ुदा के बिना दिल में विश्वास किस प्रकार पैदा हो इसके लिए या तो कलाम चाहिए या दर्शन।

ایکہ مغرور راہ مظنونے   تو نہ عاقل کہ سخت مجنونے

हे वह मनुष्य कि तू गुमान के मार्ग पर घमण्डी है तू बुद्धिमान नहीं अपितु बहुत बड़ा पागल है।

نفس امّارہ بندۂ صد آز   جزیقین کے بگرددازوے باز

वह तामसिक वृत्ति जो सैकड़ों लोभ-लालच का ग़ुलाम है विश्वास के बिना उस से क्योंकर रुक सकता है।

چون بہ بینی بہ بیشۂ شیرے   نہ کنی در گریختن دیرے

जब तू किसी जंगल में शेर को देख लेता है तो वहाँ से भागने में देर नहीं करता।

ہم چنین پیش تو چو گرگ آید   دل تپد ہیبتِ سُترگ آید

इसी प्रकार जब तेरे सामने भेड़िया आ जाता है तो तेरा दिल तड़पने लगता है और तुझे बहुत डर लगता है।

پس بدین دعویٰ یقین کہ ترا   ہست بر کرد گار و روز جزا

तो विश्वास के इस दावे के साथ जो तुझे ख़ुदा तआला और प्रतिफल के दिन के संबंध में है।

باز چون میکنی گناہِ بزرگ   چہ خدا نیست نزد تو چون گرگ

फिर तू किस प्रकार बड़ा गुनाह करता है। क्या ख़ुदा तेरे नज़दीक एक भेड़िए जैसा भी नहीं है।

برخدا نیستت یقین ز نہار   زین چو گرگان خوشایدت مردار

तुझे ख़ुदा पर कदापि विश्वास नहीं इसलिए भेड़ियों की तरह तुझे मुर्दार ही पसन्द आता है।

آن یقینے کہ مانعے زخطاست   گر بخواہی رہش بگویم را ست

वह विश्वास जो गुनाह से बचाता है यदि तू चाहे तो मैं तुझ से उसकी वास्तविकता वर्णन कर दूँ।

آن کلامِ خدا بقطع و یقین   پاک و برتر ز دخل دیو لعین

वह ख़ुदा का अटल और निश्चित कलाम है जो लानती शैतान के हस्तक्षेप से पवित्र और उच्चतर है।

پس ہمان چارۂ خطا کاریست　　راہ دیگر طریق مکاریست

तो वही कलाम गुनाह का इलाज है कोई और तरीका केवल धोखा है।

کس شنیدی کہ بالیقین ہلاک　　باز در بیشۂ رود بیباک

क्या तूने कभी सुना कि यदि मर जाने का विश्वास हो तो फिर भी कोई निडर होकर जंगल में जाता हो?

پس چہ ممکن کہ بایقین خدا　　باز گردد ولے بگرد خطا

तो क्योंकर संभव है कि ख़ुदा पर विश्वास होकर फिर भी कोई दिल गुनाह में व्यस्त रहता हो।

شک و ظن را یقین نہادی نام　　زین شدی با جرائمت بدنام

तूने संदेहों एवं शंकाओं का नाम विश्वास रख छोड़ा है इसलिए तू गुनाहों के कारण बदनाम है।

اند کے سوئے خود نظر انداز　　از سرِ غور دیدہ راکن باز

तनिक अपनी ओर देख और ध्यानपूर्वक आंखे खोल।

تا بدانی کہ کور و مجوبی　　سخت محروم ماندہ زین خوبی

ताकि तुझे मालूम हो कि तू अंधा और महजूब है और विश्वास की खूबी से सर्वथा वंचित।

ذرۂ نیست در تو از انوار　　شب دیجور را بماہ چہ کار

तुझ में थोड़ा भी प्रकाश नहीं है। घोर अंधकारमय रात को चन्द्रमा से क्या वास्ता।

این خدائے عجیب در دل تست　　کہ ازو صد نبات ظلمت رست

यह विचित्र प्रकार का ख़ुदा तेरे दिल में है कि उससे भिन्न-भिन्न प्रकार का भ्रम पैदा हो सकता है।

شب تارست و دشت و بیم دوان　　چون بخو ابے زغفلت اے نادان

अंधकारमय रात है तथा जंगल और दरिन्दों का भय। हे मूर्ख तू क्योंकर गहरी नींद में पड़ा है।

خیزد بر حال خود نگاہ بکن　　خطرِ رہ بہ بین و آہ بکن

उठ और अपने हाल पर दृष्टि डाल, मार्ग के ख़तरे को देख और अफ़सोस

कर।

خیز و از نفس خود بپرس نشان   کہ چہ خواہد مراتبِ عرفان

उठ और अपने नफ़्स से ही मालूम कर ले कि वह मारिफत की कैसी-कैसी श्रेणियां मांगता है।

چہ یقین نزد اوست ز آبحیات   یا پسندید ورطۂ شبہات

क्या उसके नज़दीक विश्वास ही अमृत है या वह सन्देहों एवं शंकाओं के भंवर को पसन्द करता है।

گر دلت می تپد برائے یقین   بخل چون کرد آن کریم و معین

यदि तेरा दिल विश्वास के लिए वास्तव में बेचैन है तो फिर उस कृपालु और सहायक ख़ुदा ने तुझ से कंजूसी क्यों कर रखी है?

ہرچہ در فطرت تو ریختہ است   باز زان عزم چون گریختہ است

जो चीज़ स्वयं उसने तेरी प्रकृति में डाल दी है फिर उस इरादे से उसने बचाव क्यों किया।

زین عیان شد کہ آن کریم و رحیم   داد ہر مقتضائے این تقویم

इस बात से प्रकट है कि उस कृपालु, दयालु ख़ुदा ने मानवीय प्रकृति की प्रत्येक मांग को पूरा कर दिया है।

باز انسان ز قصر ہمت اُو   گشت غافل زنور فطرت اُو

फिर इन्सान ही अपनी हिम्मत की कमी से उसके दिए हुए प्रकृति (स्वभाव) के प्रकाश से लापरवाह हो गया है।

گر یقین نیست خواہش انسان   پس چہ باعث کہ جویدش ہر آن

यदि इन्सान की इच्छा विश्वास के लिए नहीं है तो क्या कारण है कि वह हर घड़ी उसकी तलाश में रहता है।

آنچہ در فطرتِ بشر مکتوم   چون بماند بشر ازو محروم

जो कुछ इन्सान की प्रकृति में छुपा है इन्सान उस से किस प्रकार वंचित रह सकता है।

بحر فیض است چون روان ہر دم   تا رسانند تا یقین اتم

जब हर समय ख़ुदा की दानशीलता का समुद्र जारी है ताकि ख़ुदा तुझे पूर्ण

विश्वास तक पहुंचा दे।

پس اگر قانعی بمظنونے   تو نہ عاقل کہ سخت مجنونے

फिर भी यदि गुमान पर सन्तुष्ट है तो तू बुद्धिमान नहीं अपितु बहुत बड़ा दीवाना है।

دل تپداز برائے رفع حجاب   جز دلے کان شد است ہمچو کلاب

दिल तो पर्दों को दूर करने के लिए बेचैन रहता है सिवाए ऐसे दिल के जो कुत्तों के समान हो गया हो।

افلا تبصرون گفت خدا   خیزد در نفس جو تعطش ہا

क्या ख़ुदा ने 'अफ़ला तुबसिरून' (अर्थात क्या तुम विचार नहीं करोगे) नहीं फ़रमाया? उठ और अपने अन्दर प्यास को तलाश कर।

ہمت دون مدار چون دو نان   رو بجو یار را چو مجنونان

नीच लोगों की तरह हिम्मत कम न रख जो और ख़ुदा को दीवानों की तरह ढूंढ।

ہر کہ جو یائے اوست یافتہ است   تافت آنِ روکہ سر نتافتہ است

जो उसका अभिलाषी है उसने उसे पा लिया वह मुंह प्रकाशमान हो गया जिसने उस से सिर न फेरा।

آفرین خدا بران مردے   کہ برین در شدت چون گردے

ख़ुदा की ओर से उस जवां मर्द पर आफ्रीं हो जो उस दरवाज़े पर ख़ाक की तरह आ पड़ा।

از پئے وصل آن مہیمن پاک   اوفتادہ سرِ نیاز بخاک

उस पवित्र निगरान के मिलने के लिए वह गिरा और विनयपूर्वक अपना सर ख़ाक पर रख दिया।

ہر زمان با خدائے یکتائے   بر زمین و بر آسمان جائے

वह हर समय एक ख़ुदा के साथ पृथ्वी और आकाश पर आराम पाता है।

ذرہ ذرہ جُدا شدہ ززمین   دل پریدہ بسوئے عرش برین

उस का कण-कण पृथ्वी से संबंधहीन हो गया और उसका दिल अर्शे बरीं की ओर उड़ गया।

بر رُخِ او تجلّیات خدا   دردلش جلوہ گاہ ذات خدا

उसके चेहरे पर ख़ुदा की चमकार है और उसका दिल ख़ुदा तआला का प्रकटन स्थल है।

این ہمہ حالت از خدا آید   چون یقین از کلامش افزاید

यह सब हालत ख़ुदा की मेहरबानी से ही आती है। जब ख़ुदा के कलाम के कारण बन्दे का विश्वास बढ़ जाता है।

تو نفہمی ہنوز این سخنم   دردلت چون فروشوم چہ کنم

तू अभी मेरी बात को नहीं समझता। मैं तेरे दिल में क्योंकर घुस जाऊँ? बता क्या करूँ?

اے دریغا کہ دل ز درد گداخت   درد ما را مخاطبے نشناخت

अफ़सोस कि हमारा दिल दर्द के मारे पिघल गया परन्तु हमारे दर्द को सम्बोधित ने न पहचाना।

اے خورِ روئے یارزود برآ   کہ دل آزردازشبِ یلدا

हे यार के चेहरे के सूर्य शीघ्र बाहर निकल कि अंधेरी रात के कारण हमारा दिल पीड़ित हो गया है।

عمر ما ہم رسید تابکنار   بکنارم در آئی اے دلدار

हमारी आयु भी समाप्त होने को आ गई। हे दिलदार (यार) मेरे आंचल में आ जा।

ایکہ تو طالبِ خدا ہستی   آن یقین جو کہ بخشدت مستی

हे वह व्यक्ति जो ख़ुदा का अभिलाषी है तो ऐसा विश्वास तलाश कर जो तुझे उन्मत्त कर दे।

آن یقین جو کہ سیل تو گردد   ہمہ در یار میل تو گردد

वह विश्वास ढूंढ जो तेरे लिए सैलाब बन जाए और तेरा सम्पूर्ण प्रेम ख़ुदा के लिए ही हो जाए।

آن یقین جو کہ آتش افروزد   ہر چہ غیر خدا ہمہ سوزد

वह विश्वास ढूंढ जो ऐसी आग जलाए जो कि हर ख़ुदा के अतिरिक्त को भस्म कर डाले।

از یقین ست زہد و عرفان ہم — گفتمت آشکار و پنہان ہم

विश्वास ही के कारण संयम और आत्मज्ञान भी प्राप्त होता है यह बात मैंने तुझ से अभी प्रकटन के रूप में कह दी और गुप्त भी।

جز یقین دین تو چو مر دارے — سر پُراز کبرو دل ریا کارے

बिना विश्वास के तेरा धर्म मुर्दार के समान है। सिर अहंकार से भरा हुआ और दिल दिखावे में ग्रस्त।

بے یقین نفس گرددت چو سگے — جنبدش نزد ہر فساد رگے

बिना विश्वास के तेरा नफ़्स कुत्ते की तरह हो जाता है। हर फ़साद के समय उसकी रग हरकत में आ जाती है।

ہر کہ دور از نگار خواہد ماند — نفس دون راشکار خواہد ماند

जो व्यक्ति प्रियतम से दूर रहेगा वह हमेशा अपवित्र नफ़्स का शिकार रहेगा।

گر ترا آرزوئے دیدار است — پاک دل شونہ مشکل این کار است

यदि तुझे दर्शन करने की इच्छा है तो पवित्र हृदय हो जा यह बात कठिन नहीं है।

این مراد از خرد چہ می جوئی — وحی حق شوید از سیہ روئی

तू उस कामना को बुद्धि के ज़ोर से क्या ढूंढता है। ख़ुदा की वह्यी ही मुंह की कालक को धो सकती है।

این خردجملہ خلق میدارند — ناز کم کن کہ چون تو بسیاراند

बुद्धि तो समस्त संसार के पास है उस पर गर्व न कर क्योंकि तेरे जैसे बहुतेरे पड़े फिरते हैं।

چارئہ دل کلام دلدار است — ہر چہ غیرش کنند بیکار است

दिल का इलाज तो प्रियतम का कलाम है इसके अतिरिक्त जो इलाज भी लोग बताएं वह व्यर्थ है।

زہر فرقت چشی و ناکامی — باز منکر ز وحی و الہامی

तू जुदाई का ज़हर चख रहा है और असफल है परन्तु फिर भी वह्यी और इल्हाम का इन्कारी है।

جان تو بر لب از نخوردن آب — باز از آب زندگی رو تاب

पानी न पीने से तू मृतप्राय हो रहा है फिर भी अमृत से विमुख है।

داروئے ہر شکے کہ دردل ہاست   آن بدارالشفائِ وحی خدا ست

हर उस सन्देह का इलाज जो दिलों में पैदा हो वह ख़ुदा की वह्यी के शिफ़ाख़ाने में है।

ہست بر عقل منت الہام   کہ ازو پخت ہر تصور خام

बुद्धि पर इल्हाम का उपकार है कि उसकी बरकत से हर कमज़ोर विचार पुख़्ता हो जाता है।

آن گمان بردو این نمود فراز   آن نہان گفت و این کشود آنراز

उसने केवल गुमान किया और उसने दिखाया, उसने दिल में एक बात सोची और इसने वह राज़ ही खोलकर रख दिया।

آن فرو ریخت این بکف بسپرد   آن طمع داد و این بجا آورد

उसने गिराया और उसने हाथ में दिया, उसने आशा दिलाई और उसने पूरी कर दी।

آنکہ بشکست ہر بت دل ما   ہست وحی خدائے بے ہمتا

वह चीज़ जिसने हमारे दिल के हर बुत (मूर्ति) को तोड़ दिया वह अनुपम ख़ुदा की वह्यी ही तो है।

آنکہ ما را رُخ نگار نمود   آنکہ ما را رُخ نگار نمود

वह चीज़ जिसने हमें प्रियतम का चेहरा दिखाया वह मेहरबान ख़ुदा का इल्हाम ही तो है।

آنکہ داد ازیقین دل جامے   ہست گفتار آن دلآرامے

वह चीज़ जिसने हार्दिक विश्वास का जाम पिलाया वह उस प्रियतम का वार्तालाप ही तो है।

وصل دلدار و مستی از جامش   ہمہ حاصل شدہ زالہامش

प्रियतम का मिलन और उसके शराब के जाम की मस्ती सब उसके इल्हाम ही से प्राप्त हुई।

اے بریدہ امیدہا ز خدا   توبہ کن از فساد خود باز آ

हे वह व्यक्ति जिसने अपनी आशाएं ख़ुदा से तोड़ ली हैं। तौब: कर और अपने

उस फ़साद से रुक जा।

عیش دنیائے دون دمے چند است　　　　آخرش کار باخداوند است

इस नीच दुनिया का ऐश तो थोड़ी सी देर की चीज़ है। अन्ततः ख़ुदा से ही वास्ता पड़ता है।

ترک کن کین و کبرو نازو دلال　　　　تانہ کارت کشد بسوئے ضلال

दुश्मनी, अहंकार और नाज़-नख़रे को त्याग दे ताकि तेरा अन्त गुमराही पर न हो।

چوں‌ازین دام گہ ببندی بار　　　　باز نائی درین بلاد و دیار

जब तू उस शिकारगाह से अपना बोरिया बिस्तरा बांध लेगा तो फिर तू उन देशों और शहरों में वापस नहीं आएगा।

اے زدین بے خبر بخور غم دین　　　　کہ نجاتت معلّق است بدین

हे धर्म से बेख़बर मनुष्य धर्म का ग़म खा क्योंकि तेरी मुक्ति धर्म से सम्बद्ध है।

ہاں تغافل مکن ازین غم خویش　　　　کہ ترا کار مشکلست بہ پیش

देख अपने उस ग़म से लापरवाही न करना कि तुझे कठिन काम का सामना है।

دل ازین دردو غم فگار بکن　　　　دل چہ جان نیز ہم نثار بکن

उस दर्द व ग़म से अपने दिल को ज़ख़्मी कर। दिल तो क्या अपने प्राण भी क़ुर्बान कर दे।

ہست کارت ہمہ بآن یک ذات　　　　چون صبوری کنی ازو ہیہات

तुझे तो उसी अद्वितीय ख़ुदा से ही काम पड़ेगा। अफ़सोस फिर तू उस ख़ुदा से क्योंकर सब्र कर सकता है।

بخت گرد چو زد بگردی باز　　　　دولت آید زآمدن بہ نیاز

जब तू ख़ुदा से विमुख होगा तो तेरा भाग्य बिगड़ जाएगा और विनयपूर्वक उसकी ओर आने में दौलत मिलेगी।

اے رسن ہائے آز کردہ دراز　　　　زین ہوس ہا چرا نیائی باز

हे वह व्यक्ति जिसने इच्छाओं की रस्सी लम्बी कर दी है। तू इन लालचों से

क्यों नहीं रुकता।

دولتِ عمر دمبدم بزوال   تو پریشان بفکرِ دولت ومال

आयु की दौलत हर पल कमी पर है और तू सोना और माल की चिन्ता में परेशान हो रहा है।

خویش و قوم و قبیلہ پُر زد غا   تو بریدہ برائے شان ز خدا

रिश्तेदार, क़ौम और कबीला सब धोखेबाज़ हैं परन्तु तूने उन के लिए ख़ुदा से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया है।

این ہمہ را بکشتنت آہنگ   گر بصلحت کشند و گاہ بجنگ

उन सब का इरादा तेरे क़त्ल करने का है। कभी ये सुलह करके तुझे क़त्ल करते हैं कभी युद्ध करके।

ہست آخر بآن خدا کارت   نہ تو یارِ کسے نہ کس یارت

अन्ततः उसी ख़ुदा से तेरा वास्ता पड़ेगा। न तो तू किसी का दोस्त है न कोई तेरा दोस्त।

ہر کہ دارد یکے دلآرامے   جز بو! صلش نیابد آرامے

जो व्यक्ति एक प्रियतम रखता है उसे उसके मिलन के बिना आराम नहीं आता।

تا نہ بیند صبوریش نائد   ہر دمش سیل عشق برباید

और जब तक उसे नहीं देख लेता उसे सब्र नहीं आता। सफल प्रेम उसे बहाए ले जाता है।

در دلِ عاشقان قرار کجا   توبہ کردن ز روئے یار کجا

आशिक़ों के दिल को कहां चैन है। दोस्त के मुंह से विमुखता किस प्रकार संभव है।

حُسن جانان بگوش خاطر شان   گفت رازے کہ گفتنش نتوان

प्रियतम के सौन्दर्य ने उनके दिल के कानों में वह राज़ फूंक दिया है जिस की अभिव्यक्ति असंभव है।

کامیابان و زین جہان ناکام   زیر کان دور ترپریدہ ز دام

ये लोग सफल हैं परन्तु इस संसार से असफल ये लोग बुद्धिमान हैं जो जाल

से उड़कर दूर चले गए हैं।

از خودو نفس خود خلاص شدہ مہبطِ فیض نور خاص شدہ

वे अपने अहंकार और नफ़्सानियत से आज़ाद हो गए और ख़ुदा के प्रकाशों की दानशीलता के उतरने का स्थान बन गए।

در خداوند خویش دل بستہ باطن از غیر یار بگسستہ

उन्होंने अपने ख़ुदा से दिल लगा लिया और ग़ैरल्लाह से अपना दिल तोड़ लिया।

پاک از دخل غیر منزل دل یار کردہ بجان و دل منزل

ग़ैर के हस्तक्षेप से उनके दिल का ख़ाना पवित्र है और दोस्त ने उनके जान-व-दिल में घर बना लिया है।

ریزہ ریزہ شد آبگینہ شان بوئے دلبر دمد ز سینہء شان

उन (की मर्यादा) का शीशा चकना चूर हो गया। दिलबर की सुगन्ध उनके सीने में से आ रही है।

نقش ہستی بشُست جلوہ یار سرزد آخر زجیب دل دلدار

यार की झलक ने उनके अस्तित्व के नक़्श को धो डाला और उनके दिल के गरेबान से यार प्रकट हो गया।

فانیاں و پر از خدائے وحید پاک و رنگین برنگ ربّ مجید

वे फ़ानी (नश्वर) हैं परन्तु एक ख़ुदा से भरे हुए, वे पवित्र हैं और ख़ुदा-ए-मजीद के रंग में रंगीन हैं।

آن خدا دیگر و دگر انسان لیکن اینان درو شدند نہان

ख़ुदा का अस्तित्व अलग है और मनुष्य का अलग। परन्तु ये लोग तो जैसे ख़ुदा के अन्दर छुप गए हैं।

نے ز سر ہوش نے زپا خبرے در سرِ دلستان بخاک سرے

न सिर का होश न पैर की ख़बर प्रियतम के विचार में उनका सिर मिट्टी पर है।

ہر کسے رابخود سروکارے کار دلدادگان بدلدارے

प्रत्येक व्यक्ति अपने काम से काम रखता है परन्तु प्रेमियों का काम केवल

प्रियतम के साथ है।

عالمِ دیگر است علم شان   دور از غیر حق معالم شان

उनका संसार एक और ही संसार है और उनका आलस ग़ैरल्लाह से दूर है।

خفتہ اند و بچشم تو بیدار   جز خداکس نہ محرمِ اسرار

वे सोए हुए हैं यद्यपि तेरी नज़र में जाग रहे हैं। ख़ुदा के अतिरिक्त उनका कोई महरमे राज़ नहीं है।

فارغان از مذمت و تحسین   نے زِمدحے خبرنہ ازنفرین

निन्दा और प्रशंसा के विचार से लापरवाह हैं। न उन्हें प्रशंसा की ख़बर है न लानत की।

ہر کہ باذات و سرے دارد   پشت بر روئے دیگرے دارد

जो व्यक्ति ख़ुदा के अस्तित्व से संबंध रखता है वह औरों की ओर से पीठ फेर लेता है।

ہر کہ گیر د درش بصدق و حضور   از در و بام او ببارد نور

हर व्यक्ति उस के दरवाज़े को सच्चाई और निष्कपटता से ग्रहण करता है उसके दरवाज़े और छत से नूर बरसने लगता है।

نور تابان چومہ ز پیشانی   پر ہمہ روز عشق ربّانی

उसके मस्तक से चन्द्रमा के समान प्रकाश चमकता है और ख़ुदा के इश्क़ से समस्त चेहरा प्रकाशमान हो जाता है।

عشق آن یار مدعا گشتہ   دل ز غیر خدا جدا گشتہ

उस दोस्त का इश्क़ उसका उद्देश्य बन गया है और ख़ुदा के अतिरिक्त से उसका दिल पृथक हो गया है।

لطف او ترک طالبان نکند   کس بکار رہش زیان نکند

ख़ुदा का आनन्द हमेशा अपने अभिलाषियों के हाल के साथ सम्मिलित रहता है। उसके मार्ग में कोई हानि नहीं उठाता।

ہر کہ آن در گرفت کارش شد   صد امیدے بروزگارش شد

जिसने वह दरवाज़ा ग्रहण कर लिया उसका काम बन गया और उसके कारोबार की सफलता पर सैकड़ों आशाएं बंध गईं।

مثل آن دلستان کجا دیدی　　　　پس چرا ہجر او پسندیدی

तूने उस प्रियतम की तरह का कोई और प्रियतम कहां देखा है फिर क्यों उसकी जुदाई को पसन्द कर लिया।

بہ کہ تو زود تر رہش گیری　　　　این نہ باشد کہ پیش ازان میری

अच्छा है कि तू तुरन्त उसका मार्ग अपनाए। ऐसा न हो कि उस से पहले ही मर जाए।

عمر اول ببین کجا رفت است　　　　رفت و بنگرز تو چہارفت است

अपनी पहली आयु को देख कि किधर चली गई। वह तो नष्ट हो गई परन्तु देख तेरे पास से क्या-क्या चला गया।

پارۂ عمرِ رفت در خُردی　　　　پارئہ را بسر کشی بُردی

आयु का एक भाग तो बचपन में चला गया और आयु का एक भाग तूने उद्दण्डता से गुज़ारा।

تازہ رفت و بماند پس خوردہ　　　　دشمنان شاد و یار آزردہ

अच्छा भाग तो गया अब बचा-खुचा रह गया है दुश्मन प्रसन्न हैं और दोस्त अप्रसन्न।

بشنو از وضع عالم گذران　　　　چون کند از زبان حال بیان

इस फ़ानी (नश्वर) संसार पर कान रख किस प्रकार वह वर्तमान की जीभ से वर्णन कर रहा है।

کین جہان باکسے وفانکند　　　　نکند صبر تا جدا نہ کند

कि यह दुनिया किसी से वफ़ा नहीं करती और सब्र नहीं करती जब तक उसे अपने से पृथक नहीं कर लेती।

گر بود گوش بشنوی صد آہ　　　　از دل مردہ درون تباہ

यदि तेरे कान हों तो सौ आहें सुने स्वयं अपने मुर्दा और तबाह दिल के हाल से।

کہ چرا رو بتافتم ز خدا　　　　دل نہادم در آنچہ گشت جدا

कि मैंने ख़ुदा से क्यों मुंह फेरा और ऐसी चीज़ से क्यों दिल लगाया जो पृथक हो गई।

ہمچنین ساعتے ترا در پیش   گور آواز ہا دہد چون خویش

इसी प्रकार तुझे भी एक ऐसी घड़ी सामने आने वाली है। कब्र तुझे अपने रिश्तेदारों के समान बुला रही है।

یاد کن وقتِ کوچ و ترک جہان   جان بلب خانہ پُر زشوروفغان

कूच के समय और दुनिया को छोड़ने की घड़ी को याद कर कि तू मृतप्राय होगा और घर में विलाप का शोर मचा होगा।

زن بنالد بدیدہ خونبار   پسرے گرید از پسِ دیوار

तेरी पत्नी ख़ून के आंसुओं से रोती होगी और बेटा दीवार के पीछे रोना-धोना कर रहा होगा।

دخترے سر برہنہ اشک راون   ہمہ خویشان شدہ تنِ بیجان

लड़की नंगे सिर आंसू बहाती होगी और सब रिश्तेदार मुर्दे की तरह होंगे।

ناگہان بانگ آمداز سر درد   کہ فلان زین سرائے رحلت کرد

कि सहसा यह आवाज़ आएगी कि अमुक व्यक्ति इस दुनिया से गुज़र गया।

چند فرزند را گذاشت یتیم   بیوہ بیچارہ ماندہ باصد بیم

कुछ बच्चों को अनाथ छोड़ गया और हमारी विधवा सैकड़ों दु:ख उठाने के लिए रह गई।

این مآل ست عیش دنیا را   گر ندانی بپرس دانا را

दुनिया के जीवन का यह अंजाम है यदि तुझे ख़बर नहीं तो किसी बुद्धिमान से ही पूछ ले।

بر سرِ گور پائے تُست اے خام   ہوش کن تانہ بد شود انجام

हे मूर्ख तेरा पैर क़ब्र के ऊपर रखा हुआ है। होश कर कि तेरा अंजाम बुरा न हो।

این جہان است مثل مردارے   ہر طرف چون سگے طلبگارے

यह संसार मुर्दार के समान है और उसके हर ओर अभिलाषी कुत्तों के समान खड़े हैं।

رُست آنکس کہ رُست زین مردار   خاک شدتا مگر شود خوش یار

वह मनुष्य आज़ाद हो गया जिसने इस मुर्दार से रिहाई पाई और वह ख़ाक हो

गया ताकि दोस्त राज़ी हो जाए।

لطف او ترک طالبان نہ کند   کس بکار رہش زیان نہ کند

ख़ुदा का आनन्द अपने अभिलाषियों के साथ संलग्न रहता है। उसके मार्ग में कोई हानि नहीं उठाता।

ہر کہ از خودشد ایز دش خواند   نکتہء ہست گر کسے داند

जो अपने अस्तित्व से अलग हो गया ख़ुदा उसे अपने यहां बुला लेता है यह नुक़्तः याद रखने योग्य है यदि किसी को समझ में आ जाए।

इस सम्पूर्ण वर्णन का सारांश यह है कि मनुष्य इन अंधकारों के घर (संसार) में आकर कभी मुक्ति नहीं पा सकता सिवाए इसके कि स्वयं ख़ुदा तआला के वार्तालापों से सम्मानित होकर या किसी विश्वसनीय वार्तालाप वाले और स्पष्ट निशानियों वाले व्यक्ति की संगत में रहकर इस आवश्यक और निश्चित ज्ञान तक पहुंच जाए कि उसका एक ख़ुदा है जो सामर्थ्यवान कृपालु और दयालु है और यह धर्म अर्थात् इस्लाम जिस पर यह स्थापित है वास्तव में यह सच्चा है।

और प्रतिफल (जज़ा) का दिन तथा स्वर्ग, नर्क सब सच है क्योंकि यद्यपि क़िस्से और नक़ल के तौर पर समस्त मुसलमान इस बात को मानते हैं कि ख़ुदा मौजूद है और उसका रसूल सच्चा, परन्तु यह ईमान कोई निश्चित बुनियाद नहीं रखता। इसलिए ऐसे कमज़ोर ईमान के द्वारा विश्वसनीय रंग के लक्षण प्रकट होना और पाप से सच्ची नफ़रत करना असम्भव है और इसके कारण कि इस्लाम पर तेरह सौ वर्ष गुज़र गए समस्त पहले चमत्कार नक़ल और क़िस्सों के रंग में हो गए हैं और पवित्र क़ुर्आन यद्यपि महान चमत्कार है परन्तु एक कामिल (पूर्ण) के अस्तित्व को चाहता है कि जो क़ुर्आन के चमत्कारमय जौहरों पर अवगत हो और वह उस तलवार के समान है जो वास्तव में अद्वितीय है किन्तु अपने जौहर दिखाने में एक विशेष हाथ और बाज़ू की मुहताज है। इस पर गवाह तर्क यह आयत है कि-

لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الۡمُطَهَّرُوۡنَ (अलवाक़िअः -80)

तो वह अपवित्रों के दिलों पर चमत्कार के तौर पर प्रभाव नहीं डाला सकता सिवाए

इसके कि उसका प्रभाव दिखाने वाले भी क़ौम में एक मौजूद हो और वह वही होगा जिसको निश्चित तौर पर नबियों के समान ख़ुदा तआला का वार्तालाप और सम्बोधन प्राप्त होगा। अतः समस्त बरकतों तथा विश्वास का माध्यम ख़ुदा का वार्तालाप एवं सम्बोधन है और मनुष्य का यह जीवन जो सन्देहों एवं शंकाओं से भरा हुआ है ख़ुदा के वार्तालापों के स्वच्छ उद्गम के अतिरिक्त विश्वास तक कदापि नहीं पहुंच सकता परन्तु ख़ुदा तआला का वह वार्तालाप विश्वास तक पहुंचता है जो निश्चित और अटल हो जिस पर एक मुल्हम क़सम खाकर कह सकता है कि वह उसी रंग का वार्तालाप है जिस रंग का वार्तालाप आदम से हुआ और फिर शीस से हुआ और फिर नूह से हुआ और फिर इब्राहीम से और फिर इस्हाक़ से और फिर इस्माईल से और फिर याक़ूब से हुआ और फिर यूसुफ से हुआ फिर चार सौ वर्ष के बाद मूसा से फिर यसू बिन नून से हुआ और फिर दाऊद से हुआ, फिर सुलेमान से, यसइयाह नबी से, दानियाल से और इस्राईली सिलसिले के अन्त में ईसा बिन मरयम से हुआ और सब से अन्त में सर्वांगपूर्ण तौर पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हुआ। परन्तु यदि कोई कलाम विश्वास की श्रेणी से कम हो तो वह शैतानी कलाम है न कि रब्बानी क्योंकि तुम जानते हो कि जब सूर्य उदय होता है और अपनी किरणें पृथ्वी पर छोड़ता है तो उसका प्रकाश दुनिया पर ऐसा साफ पड़ता है कि किसी देखने वाले को उसके उदय होने में सन्देह शेष नहीं रहता और न वह कह सकता है कि कल का सूर्य तो विश्वसनीय था परन्तु और आज का सन्देहात्मक। तो क्या तुम इस इल्हाम में सन्देह कर सकते हो कि ख़ुदा के चेहरे का प्रकाश अपने अन्दर रखता है। क्या ख़ुदा के कलाम का उदय सूर्य के उदय से कुछ कम है? कोई वस्तु अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं से पृथक नहीं हो सकती। फिर ख़ुदा का कलाम जो ताज़ा कलाम है क्योंकर पृथक हो सके। तो क्या तुम कह सकते हो कि ख़ुदा की वह्यी का सूर्य पहले युगों में निश्चित तौर पर उदय होता रहा है परन्तु अब वह सफ़ाई उसे प्राप्त नहीं। मानो निश्चित मारिफ़त तक पहुंचने का कोई सामान आगे नहीं अपितु पीछे रह गया है और जैसे ख़ुदा की हुकूमत और दानशीलता कुछ अल्प समय तक रह कर समाप्त हो चुकी है। परन्तु ख़ुदा का कलाम इसके

विरुद्ध गवाही देता है क्योंकि वह यह दुआ सिखाता है कि

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔

(अल फ़ातिहा -6,7)

इस दुआ में उस इनाम की आशा दिलाई गई है जो पहले नबियों और रसूलों को दिया गया है और स्पष्ट है कि उन समस्त इनामों में से बड़ा इनाम तो निश्चित वह्यी का इनाम है क्योंकि ख़ुदा का वार्तालाप ख़ुदा के दर्शन का स्थानापन्न है क्योंकि इसी से पता लगता है कि ख़ुदा मौजूद है। अत: यदि किसी को इस उम्मत में से निश्चित वह्यी प्राप्त ही नहीं और वह इस बात पर साहस ही नहीं कर सकता कि अपनी वह्यी को निश्चित तौर पर नबियों के समान निश्चित समझे और न उनकी वह्यी ऐसी हो कि नबियों के आज्ञापालन की भांति त्याग करने और उस के अमल करने को छोड़ने पर निश्चित तौर पर दुनिया की हानि समझी जा सके तो ऐसी दुआ सिखाना केवल धोखा होगा क्योंकि यदि ख़ुदा को यह स्वीकार ही नहीं कि दुआ -

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

(अल फ़ातिहा -6,7)

के अनुसार नबियों के इनामों में इस उम्मत को भागीदार करे तो उसने क्यों यह दुआ सिखाई और एक न सुनने वाली बात के लिए दुआ करने की प्रेरणा क्यों दी। फिर यदि यह दुआ सिखाना विश्वास और अध्यात्म ज्ञान का इनाम देने की नीयत से नहीं अपितु शब्दों से प्रसन्न करना है तो इसी से फ़ैसला हो गया कि यह उम्मत अपने भाग्यों में समस्त उम्मतों से गिरी हुई है और ख़ुदा तआला की इच्छा नहीं है कि इस उम्मत को निश्चित झरने का पानी पिलाकर मुक्ति दे, अपितु वह उनको सन्देहों एवं शंकाओं के भंवर में छोड़कर मारना चाहता है परन्तु स्मरण रहे कि इन इनामों में जो नबियों को दिए गए इस उम्मत के लिए अवश्य भाग रखा गया है। क्योंकि यदि मुसलमानों के कामिल मनुष्यों के स्वभावों में यह भाग न होता तो उनके दिलों में यह इच्छा न पाई जाती कि वे ख़ुदा को पहचानने की श्रेणी में हक़्क़ुल यक़ीन (पूर्ण विश्वास) की श्रेणी तक पहुँच जाएं और उन ईनामों में से सबसे बढ़कर विश्वसनीय तौर पर ख़ुदा तआला

से इल्हाम पाने की श्रेणी है जिससे मनुष्य ख़ुदा को पहचानने में पूर्ण उन्नति करता है मानो एक प्रकार से ख़ुदा तआला को देख लेता है और उसके अस्तित्व पर देखने के समान ईमान लाता है तब ख़ुदाई रोब पूर्ण रूप से उसके हृदय पर काम करता है और जैसा कि प्रत्येक स्थान पर देखने और विश्वास की विशेषता है। वह विशेषता उसके अन्दर अपना काम करने लगती है तथा सन्देहों एवं शंकाओं का अंधकार उस से दूर हो जाता है जैसा कि सूर्य से अंधकार। तब पृथ्वी पर उस जैसा कोई बहुत संयमी नहीं होता और उस जैसा पाप से कोई विमुख नहीं होता तथा उस जैसा इस अद्वितीय स्रष्टा से कोई प्रेम करने वाला नहीं होता और उस जैसा उस यार का कोई वफ़ादार नहीं होता और उस जैसा कोई डरने वाला नहीं होता और उस जैसा कोई भरोसा करने वाला नहीं होता और उस जैसा पैबन्द में (संबंध स्थापित करने में) सच्चा कोई नहीं होता और जैसा कि ख़ुदा तआला के कलाम से स्पष्ट है निश्चित एवं अटल वह्यी का क़यामत के दिन तक इस उम्मत को वादा दिया गया है। ऐसा ही बुद्धि भी मानव जाति के लिए उसको आवश्यक समझती है। क्योंकि पाप और दुष्कर्मों का उपचार और चारा इसके अतिरिक्त और कोई नहीं कि ख़ुदा का जमाल और जलाल (सौन्दर्य एवं प्रताप) निश्चित तौर पर मनुष्य पर प्रकट हो। कारण यह कि अनुभव गवाही दे रहा है कि या तो सच्चा प्रेम पाप और विरोध से रोकता है या सच्चा डर अवज्ञाओं से रोकता है तथा सच्चे प्रेम में भी एक भय होता है और वह यही कि मेहरबान यार से संबंध न टूट जाए और जिस पर सच्चा प्रेम और सच्चे भय की हालत निश्चित तौर पर आई हो और या वह व्यक्ति कि जो पूर्ण रूप से उस व्यक्ति का परिचित और प्रेम करने वाला तथा उस से प्रभावित हो वह निस्सन्देह पाप से रोक लिया जाता है और दूसरे लोग दुनिया में जितने हैं उनमें से कोई भी पाप के ज़हर से ख़ाली नहीं। हाँ मक्कारी से बहुत लोग कहते हैं कि हम बेगुनाह हैं और हमारे हृदयों में कोई अपवित्रता नहीं। परन्तु वे झूठे हैं तथा ख़ुदा और सृष्टि को धोखा देना चाहते हैं। पाप से पवित्र होना इसके अतिरिक्त संभव नहीं कि अल्लाह का भय, विश्वास की मौत तेज़ किरणों के कारण मनुष्य के हृदय पर आ जाए और हृदय में सच्चा प्रेम तथा सच्चा भय

बस जाए और हृदय ख़ुदा के जमाल और जलाल से रंगीन हो जाए और ये दोनों हालतें कभी तथा कदापि हृदय में आ ही नहीं सकतीं जब तक कि ख़ुदा का अस्तित्व और उसकी इन दोनों प्रकार की विशेषताओं पर विश्वास पैदा न हो। अतः इस से ज्ञात हुआ कि मुक्ति की जड़ और मुक्ति का माध्यम केवल विश्वास है। वह विश्वास ही है जो विपदाओं के सामने आने के बावजूद आज्ञापालन के लिए गर्दन झुका देता और अग्नि में प्रवेश करने के लिए खड़ा कर देता है वह निश्चित दृश्य ही है जो आशिक़ बना देता है और मरने के लिए तैयार कर देता है। वह निश्चित दृश्य ही है कि जिस से मनुष्य ख़ुदा के लिए आराम का पहलू छोड़ देता और सृष्टि की प्रशंसा तथा तारीफ़ से लापरवाह हो जाता और एक के लिए सम्पूर्ण संसार को अपना ख़तरनाक दुश्मन बना लेता है। मनुष्य निश्चित भय के कारण वैध चीज़ों को भी डरता-डरता ही इस्तेमाल करता है और जीभ को अकथनीय बातों से रोकता है जैसे उसके मुंह में पत्थर के टुकड़े हैं और यह विश्वास या तो दर्शन से प्राप्त होता है और या उस बातचीत से जो ख़ुदा का निश्चित कलाम है जो अपनी शक्ति और वैभव और चित्ताकर्षक विशेषता एवं विलक्षणताओं से सिद्ध कर देता है कि वह ख़ुदा की वाणी है इस स्थिति के अतिरिक्त न ख़ुदा के अस्तित्व पर विश्वास आ सकता है और न उसकी विशेषताओं पर। अब जिस हालत में यह माना गया है कि ख़ुदा तआला इस बात पर समर्थ है कि किसी बन्दे पर विश्वसनीय वाणी उतारे और उसका वादा اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ (अनअम्ता अलैहिम) इस सम्भावना को आवश्यक ठहराता है और मुक्ति भी उसी ख़ुदाई वाणी पर निर्भर है जो विश्वसनीय हो और मानवीय प्रकृति भी इसकी प्यासी पाई जाती है तो क्यों और क्या कारण कि ख़ुदा उस दानशीलता से उम्मत को वंचित रखे। क्या मनुष्य की प्रकृति में यह जोश नहीं डाला गया कि वह ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर विश्वास पैदा करे और कोई ऐसा माध्यम उसे प्राप्त हो जिससे वह समझ ले कि वह अपनी सम्पूर्ण पवित्र विशेषताओं के साथ वास्तव में मौजूद है? परन्तु क्या वह माध्यम केवल आकाश और पृथ्वी की कारीगरियां हो सकती हैं? कदापि नहीं, क्योंकि अन्ततः उनसे केवल स्रष्टा की आवश्यकता महसूस होती है न कि यह कि

वास्तव में स्रष्टा मौजूद भी है और स्रष्टा की आवश्यकता पर तर्क क़ायम होना उस स्रष्टा के वास्तविक अस्तित्व पर ठोस तर्क नहीं हो सकता। इसलिए नबियों और आकाशीय निशानों की आवश्यकता पड़ी। क्योंकि बौद्धिक तर्क केवल इस सीमा तक ख़ुदा तआला के बारे में ज्ञान प्रदान करते हैं कि उन कारिगरियों पर दृष्टि डालकर जिनमें एक सुदृढ़ और उत्तम तर्कीब पाई जाती है यह आवश्यकता सिद्ध होती है कि उनका एक कारीगर होना चाहिए परन्तु यह तर्क यह सिद्ध नहीं करते कि वह कारीगर (रचयिता) वास्तव में है भी। और है तथा होना चाहिए में एक अन्तर है जो इस हालत को प्रकट करता है। इसी प्रकार नहीं कह सकते कि ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर पहले चमत्कार और पहली किताबें एक ठोस तर्क है। क्योंकि इस समय वे चमत्कार न स्पष्ट तौर पर अवलोकनों में से हैं और न इस समय वह कलाम उतर रहा है। हाँ पवित्र क़ुर्आन चमत्कार है परन्तु वह इस बात को चाहता है कि उसके साथ एक ऐसा व्यक्ति हो जो इस चमत्कार के जौहर व्यक्त करे और वह वही होगा जो इल्हामी कलाम के द्वारा पवित्र किया जाएगा। अब जबकि मानवीय प्रकृति और मानवीय अन्तर्आत्मा तथा मानवीय रूह सन्देहों एवं शंकाओं की मौत से मरना पसन्द नहीं करती और ख़ुदा तआला के मार्ग में एक खुले-खुले विश्वास की प्यासी है तो इस से स्पष्ट है कि जिस सामर्थ्यवान और हकीम ने मनुष्य को विश्वास प्राप्त करने की प्यास लगा दी है उसने पहले से इस बात का प्रबंध भी कर लिया है कि मनुष्य विश्वास की श्रेणी तक पहुंच जाए। अब यह प्रश्न पैदा होता है कि वह कौन सा प्रबन्ध है जो विश्वास तक पहुंचाता है। अतः मुझे छोड़ो ताकि मैं साफ-साफ कह दूं कि वह प्रबंध दुनिया के प्रारंभ से आज तक एक ही चला आया है अर्थात् ख़ुदा का कथन जिसका समर्थन और पुष्टि उसका विलक्षण कर्म करता है। और यह धोखा मत खाओ कि ख़ुदा की वाणी एक बार या कुछ बार जो पहले युग में उतर चुका है वह विश्वास प्रदान करने के लिए पर्याप्त है। बार-बार की क्या आवश्यकता है। इसी सन्देह में आर्य समाज वाले गिरफ़्तार हैं क्योंकि उनके नज़दीक वेद ख़ुदा का कलाम है और वह एक बार इस वर्तमान दुनिया के दौर के लिए उतर चुका है फिर बार-बार की क्या आवश्यकता है

परन्तु वे और ऐसा ही उनके समस्त एक राय रखने वाले धोखा खाते हैं और इस धोखे में ईसाई भी सम्मिलित हैं जो कहते हैं कि तौरात ने शिक्षा के हक़ को पूर्ण कर दिया था फिर क़ुर्आन की क्या आवश्यकता थी। इन समस्त भ्रमों का उत्तर यही है कि ख़ुदा का उद्देश्य किताबों के उतारने से विश्वास का लाभ पहुँचाना है ताकि उसके अस्तित्व और विशेषताओं तथा उसके प्रिय और अप्रिय मार्गों पर लोगों को विश्वास आ जाए और फिर विश्वास की बरकत से वे अपने ख़ुदा पर पूर्ण ईमान लाएं और बुराई से पूर्ण रूप से बचें और नेकी को पूर्ण रूप से प्राप्त करें। तो जब नुबुव्वत का युग गुज़र जाता है और ख़ुदा का कलाम क़िस्सों के रंग में पढ़ा जाता है तब यह उद्देश्य समाप्त हो जाता है और दिलों में उस कलाम पर विश्वास नहीं रहता जैसा कि तुम यहूदियों का हाल देखते हो कि तौरात उनके हाथ में है और खोट उनके हृदयों में। और क्या तुम ईसाइयों में बता सकते हो कि ऐसे लोग उनमें कितने हैं कि एक ओर मार खा कर दूसरी ओर भी गाल फेर देते हैं और चादर लेने वालों को कुर्ता देने के लिए तैयार हैं और आंखों को बुरी नज़र से देखने से रोकते हैं तथा लोगों पर दोष नहीं लगाते, उनके हृदय टेढ़े, मक्कार और षड्यंत्र करने वाले नहीं परन्तु बहुत कम जिसने न इंजील से अपितु अपनी प्रकृति की हिदायत से बदी से बचाव किया हो। तो जिस प्रकार प्रत्येक सुबह ताज़ा खाने की आवश्यकता होती है इसी प्रकार जब युग बीत जाने से ईमान का प्रकाश जो विश्वास है कम हो जाता है तो वे ख़ुदा की वाणी को पढ़ते तो हैं परन्तु वह पढ़ना उनके कंठ से नीचे नहीं उतरता। तब ख़ुदा की वाणी जो उनसे दूर हो जाती है और उन्हें स्पर्श तक नहीं करता उन पर कोई अच्छा प्रभाव नहीं डाल सकता। जैसे वह वाणी उनको छोड़कर आकाश पर उठ जाती है तब एक क़ाबिल जौहर पैदा किया जाता है जिसको कलाम अपनी ओर आकर्षित करता है और ख़ुदा के कलाम की शक्ति उसको विश्वास की पूर्ण श्रेणी तक पहुंचाती है। तब वह ज्ञान जो आकाश पर उठ गया था पुनः उसके माध्यम से पृथ्वी पर वापस आ जाता है। इसी प्रकार विश्वास हमेशा ख़ुदा के ताज़ा वार्तालाप से ताज़ा पैदा होता रहता है और जिस शरीअत को ख़ुदा तआला निरस्त कर देता है उस शरीअत का अनुकरण करने वालों के हृदय

विकृत हो जाते हैं तथा उनमें कोई शेष नहीं रहता जिस पर ताज़ा वाणी उतरे तब वह किताब एक बदबूदार पानी के समान हो जाती है जिसके साथ बहुत कीचड़ और गन्दगी मिल गई है। और ऐसी शरीअत से मनुष्य को कुछ लाभ नहीं हो सकता क्योंकि उनके हाथ में केवल क़िस्से रह जाते हैं और आकाश का ताज़ा पानी अर्थात् ख़ुदा की ताज़ा वाणी उनके पास नहीं आती। तो इससे समझा जाता है कि ख़ुदा ने उनको छोड़ दिया है। सारांश यह कि धिक्कृत धर्म की यह निशानी है कि उसमें ताज़ा वाणी का प्रकाश नहीं पाया जाता और वे लोग हमेशा उसी वाणी पर भरोसा रखते हैं जिसकी ख़ुदा की ताज़ा वाणी पुष्टि नहीं करती और न ताज़ा निशान पुष्टि करते हैं। इसलिए उनके हृदय मुर्दा रहते हैं और विश्वास का प्रकाश जो पापों को जलाता है उनके नज़दीक नहीं आता। इस सम्पूर्ण वर्णन का ख़ुलासे का ख़ुलासा यह है कि ख़ुदा का ताज़ा कलाम ख़ुदा की शरीअत का सहायक है और उस नौका को जो पापों के कारण डूबने लगती है अति शीघ्र अमन के किनारे तक पहुंचाने वाला है परन्तु शायद कोई भूल न जाए, इसलिए बार-बार कहा जाता है कि ख़ुदा के कलाम से अभिप्राय वही कलाम है कि जो युग के लिए ताज़ा तौर पर उतरता है और अपनी स्वभाविक विशेषता से मुल्हम और उसके साथ बैठने वालों पर सिद्ध करता है कि मैं निश्चित तौर पर ख़ुदा का कलाम हूँ। और ऐसा मुल्हम स्वभाविक तौर पर उसमें तथा ख़ुदा की दूसरी बातों में जो पहले नबियों पर उतरीं वह्यी की दृष्टि से कुछ अन्तर नहीं समझता यद्यपि अन्य कारणों से कुछ अन्तर हो। परन्तु स्मरण रहे कि जनसामान्य के ऐसे सन्देह और भ्रमपूर्ण इल्हाम हमारी इस बहस से बाहर हैं, जिनके साथ न तो कोई ख़ुदाई निशान और निरन्तर आकाशीय समर्थन होते हैं ताकि उस कथन को कर्म की साक्ष्य के साथ शक्ति दें और न स्वयं मुल्हम को उनके बारे में पूर्ण विश्वास होता है अपितु वह हमेशा दुविधा में रहता है कि क्या ये शैतानी हैं या रहमानी। इस स्थान पर यह नुक़्तः बड़े ध्यानपूर्वक स्मरण रखने के योग्य है कि जो इल्हाम ऐसे कमज़ोर और कम प्रभाव वाले हों जो मुल्हम पर संदिग्ध रहते हैं जो ख़ुदा की ओर से हैं या शैतान की ओर से। वे वास्तव में शैतान की ओर से ही होते हैं या शैतान की मिलावट

से। और गुमराह है वह व्यक्ति जो उन पर भरोसा करता है और दुर्भाग्यशाली है वह व्यक्ति जो इस ख़तरनाक इब्तिला (आज़मायश) में गिरफ़्तार है, क्योंकि शैतान उस से बाज़ी करता है और चाहता है कि उसको मार दे अधिकतर लोग पूछा करते हैं कि फिर रहमानी इल्हाम की निशानी क्या है? इसका उत्तर यही है कि इसकी कई निशानियां है:-

(1)- प्रथम यह कि उसके साथ ख़ुदा की ऐसी शक्ति और बरकत होती है कि यद्यपि और तर्क अभी प्रकट न हों वह शक्ति बड़े जोश और ज़ोर से बताती है कि मैं ख़ुदा की ओर से हूँ और मुल्हम के हृदय को अपना ऐसा नियंत्रित कर लेती है कि यदि उसको अग्नि में खड़ा कर दिया जाए या उस पर एक बिजली पड़ने लगे वह कभी नहीं कह सकता कि यह इल्हाम शैतानी है या दिल में आया हुआ विचार है या सन्देहात्मक है या भ्रमात्मक है अपितु हर पल उसकी रूह बोलती है कि यह विश्वासपूर्ण है तथा ख़ुदा का कलाम है।

(2)- द्वितीय ख़ुदा के इल्हाम में एक विलक्षण वैभव होता है।

(3)- तृतीय -वह ज़ोरदार आवाज़ और शक्ति से उतरता है।

(4)- चतुर्थ- उसमें एक आनन्द होता है।

(5)- उसमें अधिकतर प्रश्नोत्तर का सिलसिला पैदा हो जाता है। बन्दा प्रश्न करता है ख़ुदा उत्तर देता है और फिर बन्दा प्रश्न करता है ख़ुदा उत्तर देता है। ख़ुदा का उत्तर पाने के समय बंदे पर एक ऊँघ छा जाती है। परन्तु केवल ऊँघ की हालत में जीभ पर कोई कलाम जारी होना ख़ुदा की वह्यी का कोई ठोस तर्क नहीं क्योंकि इस प्रकार से शैतानी इल्हाम भी हो सकता है

(6)- षष्टम- वह इल्हाम कभी ऐसी भाषाओं में भी हो जाता है जिनका मुल्हम को कुछ भी ज्ञान नहीं।

(7)- ख़ुदाई इल्हाम में एक ख़ुदाई आकर्षण होता है- प्रथम वह आकर्षण मुल्हम को एकत्व की अवस्था तथा पृथकता की ओर खींच लेता है और अन्ततः उसका प्रभाव बढ़ता-बढ़ता बैअत करने वालों के स्वस्थ स्वभावों पर जा पड़ता है तब एक दुनिया उसकी ओर खींची जाती है और बहुत सी रूहें उसके रंग में योग्यतानुसार आ जाती हैं।

(8)- सच्चा इल्हाम ग़लतियों से मुक्ति देता और बतौर हकम के कार्य करता है और पवित्र क़ुर्आन के किसी वर्णन में विरोधी नहीं होता।

(9)- सच्चे इल्हाम की भविष्यवाणी स्वयं में सच्ची होती है यद्यपि उसके समझने में लोगों को धोखा हो

(10)- सच्चा इल्हाम संयम को बढ़ाता और शिष्टाचार की शक्तियों को बढ़ाता और दुनिया से दिल विमुख हो जाता है और पापों से नफ़रत करने वाला कर देता है।

(11)- सच्चा इल्हाम चूंकि ख़ुदा का कथन है इसलिए वह अपने समर्थन के लिए ख़ुदा के कर्म को साथ लाता है और अधिकतर महान भविष्यवाणियों पर आधारित होता है जो सच्ची निकलती हैं तथा कथन और कर्म दोनों की मिलावट से विश्वास के दरिया जारी हो जाते हैं और मनुष्य अधम जीवन से पृथक होकर फ़रिश्तों की विशेषताओं वाला बन जाता है। विश्वासपूर्ण इल्हाम में से जो इस विनीत को प्रदान किया गया है वह भाग जो विलक्षण निशानों और भविष्यवाणियों पर आधारित है हम उस में से कुछ उदाहरण स्वरूप नीचे उल्लेख करते हैं-

अर्थात् हम उदाहरण स्वरूप कुछ निशान लिखते हैं जो उस वह्यी के साथ कभी-कभी प्रकट हुए जो मुझ पर उतरी और वे ये हैं -

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं और उनके हज़ारों गवाह हैं जिनमें से कुछ यहां लिखे गए-	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
1. **पहली भविष्यवाणी**	1874 ई.	**पहली भविष्यवाणी घटना के विवरण सहित-** मेरे पिता श्री मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा (स्वर्गीय) इस इलाक़े में एक प्रसिद्ध रईस थे। अंग्रेज़ी सरकार में वह पेन्शन पाते थे तथा इसके अतिरिक्त चार सौ रुपए इनाम मिलता था और चार गांव ज़मीदारी के थे। पेन्शन और इनाम स्वयं उन तक सम्बद्ध थे। देहात की ज़मींदारी के बारे में भागीदारों के मुकद्दमें आरंभ होने वाले थे। इतने में वह लगभग पच्चासी वर्ष की आयु में बीमार हो गए और फिर बीमार से स्वस्थ भी हो गए कुछ हल्की सी पेचिश शेष थी। शनिवार का दिन था तथा दोपहर का समय था कि मुझे कुछ ऊंघ आकर ख़ुदा तआला की ओर से यह इल्हाम हुआ। وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِق	आज तक प्रकट हो रही हैं

देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

ख़ुदा की इस वह्यी को देखने वाले गवाहों की एक बड़ी जमाअत है यदि मैं विस्तारपूर्वक लिखूं तो एक हज़ार से भी अधिक होंगे। परन्तु चूंकि हज़रत मिर्ज़ा साहिब (स्वर्गीय) की मृत्यु के पश्चात् ही जिस को आज अठ्ठाईस वर्ष गुज़र चुके हैं इस इल्हाम को एक नगीने पर खुदवा कर एक मुहर बनवाई गई थी जो अब तक मौजूद है-

الیس اللہ بکاف عبدہ

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं। उनके हज़ारों गवाह हैं जिनमें से कुछ यहां लिखे गए-	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष पहली भविष्यवाणी		जिसके अर्थ मुझे ये समझाए गए कि क़सम है आकाश की और क़सम है उस घटना की जो सूर्य अस्त होने के बाद पड़ेगी। और हृदय में डाला गया कि यह भविष्यवाणी मेरे पिता के बारे में है और वह आज ही सूर्य अस्त होने के बाद मृत्यु पाएंगे और यह कथन ख़ुदा तआला की ओर से बतौर शोक व्यक्त करने के लिए है। ख़ुदा की इस वह्यी के साथ ही मेरे हृदय में मनुष्य होने के नाते यह गुज़रा कि इनकी मृत्यु से मुझे बड़ी आज़मायश का सामना करना होगा क्योंकि आय के जो कारण उनके अस्तित्व से सम्बद्ध हैं वे सब छिन जाएंगे। और ज़मींदारी का ज़्यादा हिस्सा भागीदार ले जाएंगे और फिर न मालूम हमारे लिए क्या-क्या प्रारब्ध है। मैं इस विचार में ही था कि फिर अचानक ऊंघ आई और यह इल्हाम हुआ- اليس الله بكاف عبده अर्थात् - क्या ख़ुदा अपने बन्दे के लिए	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

इसलिए अधिक सबूत की कुछ आवश्यकता नहीं क्योंकि यह मुहर एक आर्य के माध्यम से बनवाई गई थी जो अब तक ज़िन्दा मौजूद है जिसका नाम मलावामल है और उसका दूसरा सजातीय भाई शरमपत नामक भी इस बात का गवाह है। और वह आर्य मेरे इस इल्हाम को मेरे एक पत्र के द्वारा अमृतसर में स्वर्गीय हकीम मुहम्मद शरीफ़ कलानौरी के पास ले गया था और वहां एक मुहर खोदने वाले से यह मुहर बनवाई गई थी। स्वर्गीय हकीम साहिब के दोस्तों तथा सन्तान को भी यह घटना मालूम है। अब जो व्यक्ति थोड़ी शर्म से

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	**जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं। उनके हज़ारों गवाह हैं जिनमें से कुछ यहां लिखे गए-**	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष पहली भविष्यवाणी		पर्याप्त नहीं। फिर इसके बाद मेरे हृदय में सांत्वना उतारी गई और ज़ुहर की नमाज़ के बाद मैं नीचे उतरा और जून का महीना और बहुत गर्मी के दिन थे। मैंने जाकर देखा कि मेरे पिता श्री तन्दुरुस्त के समान बैठे थे और उठने-बैठने की हरकत करने में किसी सहारे के मुहताज न थे और आश्चर्य था कि आज मृत्यु की घटना क्योंकर होगी। परन्तु जब सूर्य अस्त होने के क़रीब वह शौचालय में जाकर वापस आए तो सूर्य अस्त हो चुका था और पलंग पर बैठने के साथ ही चन्द्रा का ग़रगरा आरम्भ हो गया। ग़रगरे के आरम्भ में उन्होंने मुझ से कहा देखा यह क्या हालत है और फिर स्वयं ही लेट गए और इसके बाद कोई बात न की और कुछ मिनट में ही इस अस्थाई दुनिया से गुज़र गए। आज तक जो 10 अगस्त 1902 ई. है स्वर्गीय मिर्ज़ा साहिब के निधन को अठ्ठाईस वर्ष हो चुके हैं। इसके बाद मैंने मिर्ज़ा साहिब के कफ़न इत्यादि से निवृत्त	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

काम लेकर सोचे और छान-बीन करे कि आज से अठ्ठाईस वर्ष पहले अर्थात् हज़रत पिता श्री के युग में मैं क्या चीज़ थी फिर ख़ुदा की इस वह्यी

اليس الله بكاف عبده

के बाद ख़ुदा ने मेरा कैसा प्रतिपालन किया तो मैं विश्वास नहीं रखता कि इस चमत्कार से उस व्यक्ति के अतिरिक्त जो बहुत बड़ा निर्लज्ज हो इन्कार कर सके।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं। उनके हज़ारों गवाह हैं जिनमें से कुछ यहां लिखे गए-	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष पहली भविष्यवाणी		होकर वह ख़ुदा की वह्यी जो कफ़ालत (अभिभावकता) के बारे में हुई थी अर्थात् اليس الله بكاف عبده उसे एक नगीने पर खुदवाकर वह मुहर अपने पास रखी। और मुझे क़सम है उस अस्तित्व की जिसके हाथ में मेरी जान है कि यह भविष्यवाणी विलक्षण तौर पर पूरी हुई और न केवल मैं अपितु प्रत्येक व्यक्ति जो मेरे उस युग से परिचित है जबकि मैं अपने पिता श्री की छाया के नीचे जीवन व्यतीत करता था वह गवाही दे सकता है कि स्वर्गीय मिर्ज़ा साहिब के समय में कि कोई मुझे जानता भी नहीं था उनकी★ मृत्यु के पश्चात् ख़ुदा तआला ने इस प्रकार से मेरी सहायता की और मेरा ऐसा अभिभावक हुआ कि किसी व्यक्ति के भ्रम और कल्पना में भी नहीं था कि ऐसा होना संभव है प्रत्येक पहलू से वह मेरा सहायक और सहयोगी हुआ मुझे केवल अपने दस्तरख़्वान में रोटी की चिन्ता थी परन्तु अब तक उसने कई लाख लोगों को मेरे दस्तख़त पर रोटी खिलाई। डाकख़ाने वालों से स्वयं पूछ लो कि उसने कितना रुपया भेजा। मेरी समझ में दस लाख से कम नहीं। अब ईमान से कहो कि यह चमत्कार है या नहीं?	

★बाहर के लोगों में से दो-चार आदमियों के अतिरिक्त कौन कह सकता है कि मैं जानता था।

क्रम संख्या	**भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि**	**जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं। उनके हज़ारों गवाह हैं जिनमें से कुछ यहां लिखे गए-**	**भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि**
2. **दूसरी भविष्यवाणी**	1880 ई. तथा 1882 ई.	لا تيئس من روح الله الا ان روح الله قريب۔ الا ان نصر الله قريب۔ ياتيك من كل فج عميق۔ يأتون من كل فج عميق۔ ينصرك الله من عنده۔ ينصرك رجال نوحى اليهم من السماء ۔ لا مبدل لكلمات الله۔ (देखो पृष्ठ-241 बराहीन अहमदिया प्रकाशित 1880,1882 सफ़ीर हिन्द प्रेस अमृतसर) **अनुवाद-** ख़ुदा की कृपा से निराश मत हो अर्थात् यह विचार मत कर कि कोई मेरी ओर ध्यान नहीं देता और न कोई मेरी सहायता करता है। यह बात सुन रख कि ख़ुदा की कृपा क़रीब है। सावधान हो कि ख़ुदा की मदद क़रीब है। वह मदद प्रत्येक ऐसे मार्ग से तुझे पहुंचेगी जो कभी बन्द न होगा और लोग प्रत्येक मार्ग से आते रहेंगे जो बन्द नहीं होगा अपितु लोगों के चलने से गहरा होता रहेगा। अर्थात् लोग	इस भविष्यवाणी से बीस वर्ष बाद प्रत्येक पहलू से ख़ुदा की सहायता और लोगों का रुजू प्रकटन में आया।

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

इस भविष्यवाणी का वर्णन करना और फिर पूरा हो जाना बराहीन अहमदिया की गवाही से सिद्ध है। क्योंकि बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 241 में यह भविष्यवाणी दर्ज है और बराहीन अहमदिया वह पुस्तक है जो लगभग बाईस वर्ष से देश में प्रकाशित हो गई है। यह वह युग था कि जब मैं अकेले कोने में पड़ा हुआ था। न मेहमान थे और न कोई मेहमानख़ाना था। इस घटना को यह पूरा क़स्बा जानता है। कौन ऐसा बेईमान है जो इससे इन्कार करेगा

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं। उनके हज़ारों गवाह हैं जिनमें से कुछ यहां लिखे गए-	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष दूसरी भविष्यवाणी		प्रत्येक मार्ग से प्रचुरता से तेरे पास आएंगे यहां तक कि रास्ते गहरे हो जाएंगे। यह रूपक इस उद्देश्य से अदा करने के लिए है कि लोगों के रुजू करने का सिलसिला कभी बन्द नहीं होगा। और यह उस युग की भविष्यवाणी है जब कि मुझे कोई भी नहीं जानता था परन्तु बहुत कम जो केवल प्रारम्भिक समय के परिचय वाले थे और न सरकार का मेरी ओर कुछ ध्यान था कि इसका इतना बड़ा सिलसिला स्थापित होगा और न इस मुल्क के लोगों में से कोई भविष्यवाणी कर सकता था कि यह ग़ैर मामूली तरक़्क़ी एक दिन ज़रूर होगी परन्तु यह ख़ुदा का कार्य है कि बावजूद हज़ारों रोकों के जो क़ौम की ओर से और मौलवियों की ओर से हुईं ख़ुदा ने मेरी उस दुआ को स्वीकार करके जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 242 में है। अर्थात् यह कि رَبِّ لَا تَذَرْنِیْ فَرْدًا۔ अपने बन्दों को मेरी ओर भेज दिया। जब मैंने कहा हे मेरे प्रतिपालक! मुझे अकेला मत छोड़। तो उत्तर दिया कि मैं अकेला नहीं छोड़ूंगा। और जब मैंने कहा मैं ग़रीब हूँ मुझे आर्थिक सहायता दे तो	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

तथा कौन कह सकता है कि सैकड़ों लोग जो अब आते-जाते और मौजूद रहते हैं यह उस समय भी मौजूद थे। डाकख़ाने की पुस्तकों को देखो कि क्या यह धन की आय पहले भी कभी थी और क्या= पहले भी इतनी प्रचुरता से लोग आते थे। और वे प्रतिष्ठित लोग जो स्वयं अपनी आंखों से देख रहे हैं कि उस पुराने समय की भविष्यवाणी इन दिनों में बड़े ज़ोर-शोर से कैसे पूरी हो रही है। उन लोगों के चश्मदीद गवाहों के तौर पर नीचे कुछ नाम

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	**जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं। उनके हज़ारों गवाह हैं जिनमें से कुछ यहां लिखे गए-**	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष दूसरी भविष्यवाणी		उसने कहा कि प्रत्येक मार्ग से तुझे सहायता आएगी और वे मार्ग गहरे हो जाएंगे। फिर ऐसा ही हुआ और यक्कों की अधिकता से क़ादियान की सड़क कई बार टूट गई, उसमें गड्ढ़े पड़ गए और कई बार अंग्रेज़ी सरकार को वह सड़क मिट्टी डाल कर ठीक करनी पड़ी और इससे पहले क़ादियान की सड़क का यह हाल था कि उस पर एक यक्का भी चलना बहुत कम के आदेश में था। अब प्रतिवर्ष यक्कों के कारण मार्ग गहरा हो जाता है। फिर ख़ुदा ने इसी वर्ष में जमाअत को सत्तर हज़ार के लगभग पहुंचा दिया। कौन विरोधी है जो इस बात को सिद्ध कर सकता है कि जब प्रारंभ में ख़ुदा की यह वह्यी उतरी तो उस समय सात आदमी भी मेरे साथ न थे। परन्तु उसके बाद उन दिनों में हज़ारो लोगों ने बैअत की, विशेष	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

लिखे जाते हैं और वे ये हैं मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब भैरवी, मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी, मौलवी मुहम्मद अली एम.ए., नवाब मुहम्मद अली खान साहिब मालेरकोटला, ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब बी.ए. पलीड,र मीर नासिर नवाब साहिब देहलवी, मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब अमरोही, मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब झंग, सेठ अबदुर्रहमान साहिब मद्रास, मौलवी मुबारक अली साहिब सियालकोट छावनी, शेख़ रहमतुल्लाह साहिब सौदागर बम्बई हाउस लाहौर, ख़लीफ़ा नूरुद्दीन साहिब जम्मू इत्यादि गवाह जो दस हज़ार से भी अधिक हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	**जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं। उनके हज़ारों गवाह हैं जिनमें से कुछ यहां लिखे गए-**	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष दूसरी भविष्यवाणी		तौर पर ताऊन के दिनों में जितने समूह के समूह बैअत में दाख़िल हुए उसकी कल्पना ख़ुदा की क़ुदरत का एक दृश्य है। जैसे ताऊन दूसरों को खाने के लिए और हमारे बढ़ाने के लिए आई। अभी मालूम नहीं कि ताऊन की बरकत से क्या कुछ उन्नति होगी। इसी साल समस्त बैअत करने वालों ने अपने दायित्व में ले लिया कि इस सिलसिले की सहायता में कुछ न कुछ माहवार भेंट किया करें। तो इस एक ही वर्ष में हज़ारों रुपये की आय हुई और हज़ारों लोग बैअत में दाख़िल हुए और होते हैं तथा वह इल्हाम يأتيك من كل فج عميق و يأتون من كل فج عميق- ठीक ताऊन के दिनों में पूरा हुआ। यदि कोई व्यक्ति बराहीन अहमदिया को हाथ में पकड़े और मेरी ग़रीबी और अकेले होने की पहली हालत को जो बराहीन अहमदिया के समय में थी क़ादियान में आकर समस्त हिन्दुओं तथा मुसलमानों से पूछे या अंग्रेज़ी सरकार के काग़ज़ों में देखे कि कब से सरकार ने मेरे सिलसिले	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	**जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं। उनके हज़ारों गवाह हैं जिनमें से कुछ यहां लिखे गए-**	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष दूसरी भविष्यवाणी		को एक महान जमाअत ठहराया है तो नि:सन्देह वह निश्चित एवं अटल तौर पर समझ लेगा कि भविष्यवाणी के आशय के अनुसार ख़ुदा की ओर से इतनी सहायता होना और सत्तर हज़ार से भी अधिक लोगों का बैअत में दाख़िल होना समस्त मौलवियों के शोर और आर्तनाद करने के बावजूद नि:सन्देह एक चमत्कार है। अन्यथा ख़ुदा शक्तिमान था कि इस सिलसिला को तरक़्क़ी से रोक देता और मौलवियों के मंसूबों को पूरा कर देता या मुझे हलाक कर देता और ख़ुदा तआला का यह फ़रमाना कि يأتيك من كل فج عميق ويأتون من كل فج عميق इस प्रकार भी प्रत्येक पर सिद्ध हो सकता है कि बीस वर्ष के बाद इन दिनों में पंजाब और हिन्दुस्तान के शहरों में से कोई शहर ख़ाली नहीं रहा जिसके निवासियों में से कोई न कोई क़ादियान में नहीं आया और न कोई ऐसी दिशा है जिससे आर्थिक सहायता न आई। अब सोच लो कि क्या इतने लम्बे समय के पश्चात् ग़ैब की बातों का पूरा होना क्या ख़ुदा की वह्यी के अतिरिक्त किसी अन्य के कलाम में यह शक्ति है? और यदि इन्सान ऐसा कर सकता है तो उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत करो कि किस ने मेरे समान गुमनामी की हैसियत में होकर भविष्यवाणी के प्रकटन के दिनों से बीस वर्ष पूर्व लेख द्वारा समस्त संसार में प्रकाशित किया कि एक दिन वह आने वाला है कि मेरी यह गुमनामी की हालत जाती रहेगी	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	**जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं। उनके हज़ारों गवाह हैं जिनमें से कुछ यहां लिखे गए-**	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
	शेष दूसरी भविष्यवाणी	और मेरे पास हज़ारों उपहार आएंगे और हज़ारों लोग दूर के देशों से यात्रा करके मुझ से मिलने के लिए आएंगे। मैं जानता हूँ कि ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करने पर मनुष्य कदापि सामर्थ्यवान नहीं।	
3. तीसरी भविष्यवाणी	1880,1882	لَا تُصَعِّرْ لِخَلْقِ اللّٰهِ وَلَا تَسْئَمْ مِنَ النَّاسِ देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 242 अनुवाद- अल्लाह की प्रजा तेरी ओर रुजू करेगी। अत: तुझे चाहिए कि तू उन से मुंह न फेरे और न उनकी प्रचुरता को देख कर थक जाए। इस इल्हाम में यह ख़ुशख़बरी दी गई थी कि लोग समूह के समूह तेरे पास आएंगे और इतने आएंगे कि मनुष्य बशर होने के कारण उनकी निरन्तर मुलाक़ातों से मनोमालिन्य हो सकता है और उनकी भीड़ से थक सकता है क्योंकि बहुत प्रचुरता होगी। इसलिए तू ऐसा मत करना और लोगों की प्रचुरता से मत घबराना अब जिस सीमा तक कोई मनुष्य चाहे सिद्ध कर ले कि बराहीन अहमदिया के युग में जिसको बीस-बाईस वर्ष गुज़र गए लोगों का मेरी ओर रुजू न था अपितु मैं उन लोगों में से नहीं था जिनकी दुनिया में कुछ चर्चा की जाती। तो ख़ुदा का यह कहना कि तुम लोगों की प्रचुरता को देखकर थकना मत।	यह भविष्यवाणी उस समय से सर्वांग तौर पर प्रकटन में आई जब पंजाब में ताऊन पड़ी।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
		यह ख़बर पूरे बीस वर्ष के पश्चात् इस भविष्यवाणी के प्रकटन में आई अर्थात् वर्तमान में जबकि हज़ारों लोग क़ादियान में आने लगे और आ रहे हैं।	
चौथा इल्हाम	1880-1882 ई.	اصحاب الصُّفة وما ادراك مااصحاب الصُّفة۔ ترٰی اعینھم تفیض من الدمع۔ یصلّون علیك۔ ربّنا اننا سمعنا منادیا ینادی للایمان وداعیًاالی اللہ وسراجا منیرا املوا (देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-242) **अनुवाद-** सुफ़्फ़: के दोस्त और तू क्या जानता है कि क्या हैं सुफ़्फ़: के दोस्त । तू उनकी आंखों को देखेगा कि उन से आंसू जारी हैं। तुझ पर दरूद भेजेंगे यह कहते हुए कि हे हमारे ख़ुदा कि हमने एक आवाज़ देने वाले की आवाज़ को सुना जो कहता था कि अपने ईमान का दुरुस्त करो और सुदृढ़ करो और वह ख़ुदा की ओर बुलाता था और शिर्क से दूर करता था और वह एक दीपक था पृथ्वी पर प्रकाश	यह भविष्यवाणी लगभग दस वर्ष पश्चात् इज़हार इसके प्रकटन में आई।

देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

इन समस्त भविष्यवाणियों की ठोस गवाह **बराहीन अहमदिया** है और इस क़िस्से को इस गांव और आस-पास के इलाक़े के सब लोग जानते हैं कि जिस युग की ये भविष्यवाणियां हैं उस युग में मेरी प्रसिद्धि का नामोनिशान न था और पंजाब के लोग आसानी से समझ सकते हैं कि वे उस युग में न स्वयं कभी क़ादियान में आए और न

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष चौथा इल्हाम		फैलाने वाला। (लिख लो) यह भविष्यवाणी जिस युग में बराहीन अहमदिया में प्रकाशित की गई उस समय न कोई सुफ़्फ़ः था न अस्हाबुस्सुफ़्फ़ः तत्पश्चात् जो निष्कपट लोग क़ादियान में हिजरत करके आए उनके लिए अतिथि गृह और सुफ़्फ़े तैयार किए गए। देखो यह कितनी महान भविष्यवाणी है उस युग में ये बातें बताई गईं जबकि किसी को इस ओर विचार भी नहीं आ सकता था कि ऐसा समय भी आएगा कि क़ादियान में ऐसे मुख़लिस (निष्कपट) लोग जमा होंगे और उनके लिए सुफ़्फ़े तैयार किए जाएंगे।	
पाँचवीं भविष्यवाणी	1880-1882 ई.	سبحان اللہ تبارک و تعالیٰ زاد مجدک ینقطع اٰبائک و یبدأ منک (देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ- 490) **अनुवाद-** पवित्र है ख़ुदा प्रत्येक आरोप से जो बहुत बरकत वाला तथा बहुत बुलन्द है। वह तेरी महानता को बढ़ाएगा। तेरे बाप-दादे का ज़िक्र समाप्त हो जाएगा और	इसका प्रदर्शन 1888 ई. से शुरू हो गया।

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

लोगों को क़ादियान आते देखा और न सुना। दूसरे इसका बड़ा सबूत सरकारी पेपर्स हैं और भविष्यवाणी नं. 5 का सबूत स्वयं प्रकट है कि इस भविष्यवाणी के बाद ख़ुदा ने मुझे चार लड़के दिए और मुझे वह सम्मान और प्रसिद्धि दी जो मेरे ख़ानदान में किसी को नहीं दी गई।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष पाँचवीं भविष्यवाणी		ख़ुदा इस ख़ानदान की महानता की बुनियाद तुझ से डालेगा। अब बताओ कि यह सच नहीं कि मेरी प्रसिद्धि मेरे ख़ानदान की प्रसिद्धि से बहुत अधिक बढ़ गई और हज़ारो लोगों को ख़ुदा ने आज्ञापालन की ताक़ में दाख़िल कर दिया और आज के दिन से पहले कौन जानता था कि इस सिलसिले की इतनी उन्नति हो जाएगी विशेष तौर पर बराहीन अहमदिया के युग में जबकि न कोई सिलसिला था न दावत थी न जमाअत थी न ख्याति थी। अत: अफ़सोस उन पर जो नहीं समझते और ख़ुदा की अदभुत् क़ुदरतों पर विचार नहीं करते	
छठी भविष्यवाणी	1880-1882 ई.	اردت ان استخلف فخلقت اٰدم ۔ انّی جاعل فی الارض خلیفۃ۔ (देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-492) यह भविष्यवाणी आदम शब्द अपने अर्थ की दृष्टि से है क्योंकि फ़रिश्तों ने आदम की ख़िलाफ़त को स्वीकार न किया परन्तु	आज से आठ वर्ष पूर्व

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

भविष्यवाणी न. 5 का सबूत गुज़र चुका है और भविष्यवाणी न. 6 इस बात की ओर संकेत करती है कि आदम के रंग में मुझ पर भी ऐतराज़ होंगे और मेरे दोष गिने जाएंगे और अन्तत: ख़ुदा मेरा सम्मान प्रकट करेगा। अत: ऐसा ही हुआ और दोष गिनने वालों को असफल होना पड़ा और ख़ुदा ने मेरी सहायता की और यद्यपि ख़ुदा की सहायता स्वयं में एक निशान होता है। परन्तु जब समय से पूर्व भविष्यवाणी के रंग में उसे वर्णन किया जाए

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष छठी भविष्यवाणी		अन्ततः वही जिसको रद्द किया गया था ख़लीफ़ा ठहराया गया और अस्वीकार करने वालों का कुछ बस न चला अपितु उनमें से कट्टर इन्कारी शैतान कहलाया। अतः आदम शब्द में इस क़िस्से की ओर संकेत है कि इस स्थान पर भी ऐसा ही होगा और ख़ुदा इस ख़िलाफ़त को अपने हाथों से पृथ्वी पर क़ायम करेगा। और इस भविष्यवाणी का एक भाग "इज़ाला औहाम" में एक इल्हाम है और वह यह है- قالوا أتجعل فيها من يفسد فيها و يسفك الدّمآء قال انّى اعلم مالا تعلمون- इन समस्त इल्हामों का अनुवाद यह है कि मैंने इरादा किया कि पृथ्वी में अपना ख़लीफ़ा पैदा करूं तो मैंने आदम को अर्थात् इस विनीत को अपना ख़लीफ़ा नियुक्त किया। मैं इसी आदम को पृथ्वी पर अपनी ख़िलाफ़त के लिए मामूर करने	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

तो वह निशान प्रकाश पर प्रकाश हो जाता है। क्योंकि भविष्यवाणी का पूरा होना इस बात पर मुहर कर देता है कि वह सहायता जो प्रकटन में न आई है वह वास्तव में ख़ुदा की ओर से है न कि संयोग के तौर पर। इसलिए एक मुर्सल और मामूर के लिए ख़िलाफ़त और नुबुव्वत का पद सिद्ध करना ख़ुदा की ऐसी सहायता को चाहता है जिस के साथ भविष्यवाणी हो। और उस भविष्यवाणी की आवश्यकता समझता है जिसके साथ सहायता हो। और उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए इसके अतिरिक्त अन्य कोई आवश्यकता नहीं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष छठी भविष्यवाणी		वाला हूँ और लोग कहेंगे कि ऐसा ख़लीफ़ा क्यों नियुक्त किया जाता है जो उपद्रवी है और ख़ून बहाने वाला है, और ख़ून बहाने का आरोप लगाएंगे। अंततः इस भविष्यवाणी के अनुसार आज्ञानी लोगों ने ऐसा ही किया जैसा कि लेखराम के मामले के बारे में और डॉक्टर क्लार्क के बारे में तथा आथम के बारे में। फ़िर फ़रमाता है कि ख़ुदा कहेगा कि तुम ग़लती करते हो। उस व्यक्ति के बारे में जो कुछ मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते। यह भविष्यवाणी स्पष्ट तौर पर बताती है कि लोग इन्कार करेंगे और झूठे आरोप लगाएंगे और स्वीकार नहीं करेंगे। अत: ऐसा ही प्रकटन में आया और ख़ुदा ने मेरा नाम आदम रखा ताकि अन्तिम को प्रथम से सम्बन्ध हो और मध्य में यह भी समानता थी कि आदम जुड़वां पैदा किया गया पहले नर, बाद में मादा हुआ ताकि उन्नति करने वाले इन्सानी सिलसिले की ओर संकेत करें। और मैं भी आदम की तरह जुड़वां पैदा किया गया परन्तु पहले लड़की पैदा हुई और उसके बाद मैं। ताकि यह पैदायश का तरीक़ा इन्सानी सिलसिले के समाप्त होने पर संकेत करे। अत: मैं इस प्रकार से अन्तिम हूँ जैसा कि प्रथम आदम था। और ईसा इब्ने मरयम को आदम से केवल एक अनुकूलता थी कि बिना बाप के पैदा हुआ और वह अनुकूलता भी अपूर्ण। क्योंकि मां मौजूद थी परन्तु मैं रूहानी तौर	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष छठी भविष्यवाणी		पर बिना बाप और माँ दोनों के हूँ क्योंकि न कोई पीर रखता हूँ जो बाप के स्थान पर हो और न ख़ानदान नुबुव्वत जो माँ के स्थान पर हो और मैं आदम की तरह जुड़वां हूँ और हज़रत ईसा जुड़वां नहीं था और आदम की तरह मुझ पर ख़ून बहाने का आरोप लगाया गया हज़रत ईसा पर यह आरोप नहीं लगाया गया और आदम की तरह मैं जमाली और जलाली (सौंदर्य एवं प्रताप) दोनों रंग रखता हूँ परन्तु हज़रत ईसा केवल जमाली रंग था। इसलिए मैं आदम के लिए पूर्ण द्योतक हूँ परन्तु हज़रत ईसा पूर्ण द्योतक नहीं था। चूंकि मानव जाति जिस बिन्दु से आरंभ हुई उसी बिन्दु पर उसको दुनिया के दौर की दृष्टि से समाप्त होना चाहिए। इसलिए मानव जाति के अन्तिम सिलसिले में आदम का पूर्ण द्योतक पैदा किया गया ताकि इस प्रकार से इन्सान की पैदायश का दायरा पूर्ण हो जाए। और चूंकि आदम नर और मादा पैदा किया गया, इसलिए ख़ुदा ने मुझे नर और मादा अर्थात् बतौर जुड़वां पैदा किया ताकि अन्तिम को प्रारम्भिक से समानता हो। और मुझे उसने न नुबुव्वत के ख़ानदान से पैदा किया जो बतौर माँ के है और न पीर जो रूहानी शिक्षा देता मुझे प्रदान किया ताकि रूहानी बाप के तौर पर होता। और यह अवश्य न था कि मैं ईसा की तरह बिना बाप के पैदा होता जैसा कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म के लिए	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष छठी भविष्यवाणी		अवश्य न था कि डंडे का सांप बनाते बल्कि पवित्र क़ुर्आन के चमत्कार को द्योतक डंडा ठहराया गया। क्योंकि ख़ुदा नहीं चाहता कि पहले निशानों को दोबारा प्रकट करे, परन्तु दूसरे रंग में।	
सातवीं भविष्यवाणी		وان يرو اٰيةيعرضوا و يقولو اسحر مستمر۔ واستيقنتها انفسهم وقالوالات حين مناص۔ (देखो बराहीन अहमदिया-पृष्ठ 498) 25/9:10 अनुवाद- जब देखेंगे कोई निशान तो मुंह फेर लेंगे और कहेंगे कि यह एक मक्र (छल) है और यह तो प्रारंभ से चला आता है कोई अनोखी बात नहीं कोई विलक्षण बात नहीं और उनके दिल विश्वास कर गए और कहा कि अब इन्कार का स्थान नहीं। यह आयत अर्थात् وَاِنۡ يَّرَوۡا اٰيَةً يُّعۡرِضُوۡا وَيَقُوۡلُوۡا سِحۡرٌ مُّسۡتَمِرٌّ (अलक़मर-3)	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह- बराहीन अहमदिया का इल्हाम पृष्ठ-498 इस बात का गवाह है कि यह भविष्यवाणी चन्द्र ग्रहण से बारह वर्ष पूर्व की गई थी। इसके बावजूद यह भविष्यवाणी पुस्तक दार-ए-कुतनी में लगभग हज़ार वर्ष पहले और पुस्तक 'इक्मालुद्दीन' में जो शियों की अत्यन्त विश्वसनीय पुस्तक है इतने ही समय पूर्व की गई थी परन्तु तब भी लोगों ने स्वीकार न किया और कहा कि चन्द्र ग्रहण क़मर महीने की पहली रात में अर्थात हिलाल को होना चाहिए था और सूर्य ग्रहण ठीक-ठीक महीने के मध्य में होना चाहिए था अर्थात पंद्रहवीं तिथि। परन्तु जिस प्रकार यह हुआ यह तो एक निरंतर चली आने वाली बात है। अर्थात हमेशा से इसी प्रकार चला आता है। हालांकि हदीस में विलक्षण आदत का कोई शब्द नहीं केवल अपनी अज्ञानता से प्रथम वाक्य रात और वाक्य बीच के दिन से यह ग़लत अर्थ निकालते हैं

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	**जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।**	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष सातवीं भविष्यवाणी		यह सूरह क़मर की आयत है और शक़्क़ुल क़मर के चमत्कार के वर्णन में उस समय काफ़िरों ने शक़्क़ुल क़मर के निशान को देख कर जो एक प्रकार का चन्द्र ग्रहण था यही कहा था कि इसमें क्या अनोखी बात है हमेशा से ऐसा ही होता चला आया है कोई विलक्षण बात नहीं। तो ख़ुदा तआला ने इस इल्हाम में वही आयत प्रस्तुत करके यह संकेत किया है कि इन लोगों को भी चन्द्र ग्रहण का निशान दिखाया जाएगा और इन्कारी लोग यही कहेंगे जो अबूजहल इत्यादि ने कहा था अर्थात् इस प्रकार से हमेशा से चन्द्र और सूर्य ग्रहण होता आया है विलक्षण होना चाहिए था ताकि हम स्वीकार करते। अत: देखो यह भविष्यवाणी कैसी महान है जो चन्द्र और सूर्य ग्रहण के बारह वर्ष पहले लिखी गई।	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह- और हदीस का अर्थ स्पष्ट है और वह यह कि चन्द्र ग्रहण उसकी निर्धारित रातों में से जो क़ुदरत के नियमों में से निर्धारित हैं पहली रात में होगा और सूर्य ग्रहण उसके निर्धारित दिनों में से बीच के दिन में अर्थात् अठ्ठाइस तारीख़ को होगा और इसी प्रकार प्रकट हुआ। यह एक सच्चे महदी मौऊद के लिए एक निशान निर्धारित किया गया था कि उसके दावे के दिनों में जब उसको झुठलाया जाएगा और वह निशान का ज़रूरतमंद होगा तब रमज़ान के महीने में इन तिथियों में चन्द्र ग्रहण सूर्य ग्रहण हो जाएगा। अब स्पष्ट है कि हमेशा रमज़ान में चन्द्र ग्रहण सूर्य ग्रहण नहीं लगता यदि लगा होगा तो कई सौ वर्षों के बाद फिर यह ग्रहण भी इन्हीं तिथियों में हो। यह विशेषता भी कई सौ वर्षों ही की मांग करती है अब हदीस का अर्थ यह भी है कि जब तक महदी मौऊद न आए यह विशेषताएं किसी युग में किसी झूठे दावा करने वाले के लिए एकत्र नहीं होंगी। केवल महदी के समय में एकत्र होंगी तो ऐसा ही हुआ। तो अब स्पष्ट है कि महदी मौऊद के निशानों के लिए इतना पर्याप्त न था कि उसके प्रारंभिक समय में रमज़ान की इन तिथियों में चन्द्र ग्रहण सूर्य ग्रहण होगा। क़ुदरत

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी न. - ८	1880-1882 ई.	يا عبدالقادر انى معك اسمع وارٰى غرست لك بيدى رحمتى و قدرتى- والقيت عليك محبة منّى- ولتصنع علٰى عينى- كزرع اخرج شطأه فاستغلظ فاستوٰى علٰى سوقهٖ- (देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ -514) **अनुवाद-** हे क़ादिर के बन्दे मैं तेरे साथ हूँ, मैं देखता हूँ और सुनता हूँ। मैंने अपना प्रेम तुझ पर डाल दिया ताकि तू मेरी आंखों के सामने पोषण पाए। तू एक बीज के समान है अर्थात् अकेला है जिसकी अपनी कोई शाख़ नहीं निकली, केवल एक हरियाली निकली परन्तु इसके बाद ऐसा होगा कि वह हरियाली मोटी हो जाएगी और उसकी शाखाएं तने पर क़ायम होंगी और वह एक बड़ा वृक्ष बन जाएगा। अब देखो कि यह भविष्यवाणी कितनी सफ़ाई से पूरी हुई। और कट्टर विरोधियों की कठोर रुकावटों के बावजूद यह सिलसिला एक महान बुज़ुर्गी के साथ स्थापित हो गया। और	यह भविष्यवाणी बीस वर्ष पश्चात् प्लेग के समय में पूरी हुई।

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह- के नियम को तोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं थी रही यह बात कि दार-ए-कुतनी की हदीस प्रमाणिक नहीं। यदि हम स्वीकार भी लें तो फिर पुस्तक इक्मालुद्दीन में भी तो यही हदीस है अतिरिक्त इसके असल बात तो यह है कि हदीस के बयान करने वालों की न तो प्रमाणिकता विश्वसनीय है और न अप्रमाणिकता। इसीलिए ख़ुदा ने हदीस की प्रमाणिकता स्वयं कर दी अब किसी हदीस वर्णन करने वाले की क्या मजाल है कि उस को झुठलाए। भविष्यवाणी तो इंजील और तौरात की भी माननी पड़ेगी और यदि वह सफ़ाई से पूरी हो जाए जबकि उन पुस्तकों में हस्तक्षेप किया गया है बल्कि यदि सिक्खों के ग्रन्थों में भी कोई भविष्यवाणी हो जो अत्यन्त महत्व और प्रतिष्ठित की हो और वह भविष्यवाणी

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी न. - 8		जैसा कि भविष्यवाणी का उद्देश्य था इस बीज की बहुत सी शाखाएं निकल आईं तथा पंजाब और हिन्दुस्तान में फैल गईं और फैलती जाती हैं। बराहीन अहमदिया में अनेकों बार यह ज़िक्र आ चुका है कि तू इस समय अकेला है और तेरे साथ कोई नहीं जैसा कि एक स्थान पर मेरी दुआ का स्वयं ख़ुदा तआला ज़िक्र फ़रमाता है कि رَبِّ لَا تَذَرْنِیْ فَرْدًا وَّ اَنْتَ خَیْرُ الْوَارِثِیْنَ अर्थात् हे ख़ुदा मुझे अकेला मत छोड़ और तू उत्तम वारिसों में से है। तो उस स्थान पर ख़ुदा गवाही देता है कि इस इल्हाम के समय मैं अकेला था तो ख़ुदा ने वादा दिया कि तू अकेला नहीं रहेगा और एक संसार तेरी शाख़ाओं में दाख़िल हो जाएगा।	
भविष्यवाणी न. - 9	1880-1882 ई.	اَلَیْسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبْدَہٗ۔ فَبَرَّاَہُ اللّٰہُ مِمَّا قَالُوْا وَ کَانَ عِنْدَ اللّٰہِ وَجِیْھًا۔ (देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 516) अनुवाद- क्या ख़ुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं। अत: वह उसको उन समस्त आरोपों से बरी करेगा जो उस पर लगाए जाएंगे और वह ख़ुदा के नज़दीक प्रतिष्ठा रखता है। यह भविष्यवाणी इस प्रकार से पूरी हुई कि कप्तान डगलस डिप्टी कमिश्नर	यह भविष्यवाणी उस समय से पूरी होनी आरम्भ हुई जब कि मुझ पर क़त्ल इत्यादि के झूठे मुक़द्दमें किए ये गए।

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह- पूरी हो जाए तब भी स्वीकार करनी पड़ेगी। क्या मनुष्य की परख ख़ुदा की निम्न स्तर की से उत्तम है बराहीन अहमदिया इन समस्त भविष्यवाणियों की गवाह है और कोई इस से इन्कार नहीं कर सकता कि ये उस युग की भविष्यवाणियां हैं कि जब इस वैभव और सम्मान तथा सफलता के कुछ भी लक्षण नहीं थे कि जो अब 1901 ई. तथा 1902 ई. में प्रकट हुए।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी न. - ९		के समय में मुझ पर ख़ून का आरोप लगाया गया, उससे भी ख़ुदा ने मुझे बरी कर दिया और फिर मिस्टर डोई डिप्टी कमिश्नर के समय में मुझ पर आरोप लगाया गया उससे भी ख़ुदा ने मुझे बरी कर दिया फिर मुझ पर अनपढ़ होने का आरोप लगाया। तो विरोधी मौलवियों का स्वयं अनपढ़ होना प्रमाणित हुआ और फिर मेहर अली ने मुझ पर चोर होने का आरोप लगाया तो उसका स्वयं चोर होना सिद्ध हुआ। ऐसा ही ये दिन कभी नहीं गुज़रेंगे जब तक ख़ुदा टेढ़े दिल वाले लोगों को न दिखला दे कि यह मेरा बन्दा मेरी ओर से था तब बहुतों की आंखें ख़ुलेंगी परन्त क्या लाभ। इकनू हज़ार उज्र बयारी गुनाहरा मुर्शवे करदा रा न बूद ज़ेब दुख्तरे	
भविष्यवाणी न. -10	1880-1882 ई.	إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ अर्थात् हम तुझे बहुत से श्रद्धालु प्रदान करेंगे और एक बहुत बड़ी जमाअत तुझे दी जाएगी। देखो उस भविष्यवाणी को बीस वर्ष गुज़र गए और अब वह बहुत बड़ी जमाअत हुई और न केवल सत्तर हज़ार	ताऊन के दिनों में पूर्ण प्रकटन हुआ

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

जिन मुकद्दमों में ख़ुदा ने मुझे बरी किया जो बड़ा झूठ गढ़कर तथा सहमति से पैदा किए गए थे उनके लिखने की कुछ आवश्यकता नहीं, सरकारी पेपर मौजूद हैं तथा जिन सैकड़ों निशानों के साथ इल्ज़ाम, झूठ, झूठ गढ़ने और अनपढ़ होने से ख़ुदा ने मुझे बरी किया उन निशानों में से उदाहरण स्वरूप इसी सूची में मौजूद हैं और जज के लिए पर्याप्त हो सकते हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी न. -10		अपितु अब तो यह जमाअत लाख के लगभग हो गई और उन दिनों में एक भी न था।	
भविष्यवाणी नम्बर -11	1880-1882 ई.	يا احمد فاضت الرحمت عَلٰى شفتيك۔ (बराहीन अहमदिया पृष्ठ-517) अनुवाद- हे अहमद! तेरे होंठो पर रहमत जारी की जाएगी। सरलता, सुबोधता, वास्तविकताएं और अध्यात्म ज्ञान तुझे दिए जाएंगे। अत: स्पष्ट है कि मेरे कलाम ने वह चमत्कार दिखाया कि कोई मुक़ाबला नहीं कर सका। इस इल्हाम के बाद बीस से अधिक पुस्तकें और पत्रिकाएं मैंने सरस, सुबोध अरबी में प्रकाशित कीं परन्तु कोई मुक़ाबला न कर सका। ख़ुदा ने उन से जीभ और हृदय दोनों छीन लिए और मुझे दे दिए।	जिस समय से अरबी पुस्तकें लिखी गईं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी नम्बर -12	1880-1882 ई.	وقالوا انّى لك هٰذا ان هٰذا الّا سحر يؤثر۔ لن نؤمن لك حتّٰى نرى اللّٰه جهرة لا يصدق السفيه الا سيفة الهلاك عدوٌّ لّى و عدوٌّ لك۔ قل اتٰى امر اللّٰه فلا تستعجلوه۔ (देखो पृष्ठ 518, 519 बराहीन अहमदिया) **अनुवाद-** और कहते हैं कि यह मुक़ाम तुझे कहां से मिला यह तो एक छल है हम तुझ पर ईमान नहीं लाएंगे जब तक ख़ुदा को न देख लें। ये लोग तो मौत के निशान के अतिरिक्त कभी नहीं मानेंगे। उन को कह दे कि मरी अर्थात् ताऊन भी चली आती है। अतः तुम मुझ से जल्दी मत करो। यह भविष्वाणी बीस वर्ष पूर्व ताऊन के बारे में की गई थी। कि जो लोग	ताऊन के दिनों में यह भविष्यवाणी पूरी हुई।
भविष्यवाणी नम्बर -13	1880-1882 ई.	امراض الناس وبركاته۔ लोगों के रोग और ख़ुदा की बरकतें देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-519, यह इस बात की ओर संकेत है कि एक कठोर संक्रामक रोग का युग आएगा और अन्ततः यह होगा	ताऊन के दिनों में यह भविष्यवाणी पूरी हुई।

देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

जैसा कि हम ऊपर लिख आए हैं ये सब भविष्यवाणियां बराहीन अहमदिया में दर्ज हैं और वे गवाह भी दर्ज हैं जिनके सामने कुछ भविष्यवाणियां पूरी हुईं और ताऊन फैलने की ख़बर जो बराहीन अहमदिया में थी वह अब देश में फैल रही है। इस समय भी जो 20 अगस्त 1902 है पंजाब के कुछ भागों में ताऊन ज़ोर पर है और मालूम नहीं कि शरद ऋतु में क्या

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी नम्बर -13		ख़ुदा और उसके मामूर की ओर सच्चे दिल से और पूरी निष्कपटता से ध्यान देंगे वे बचाए जाएंगे और बहरहाल अपेक्षाकृत कुशलता से हिस्सा लेने वाले सर्वाधिक वही होंगे। तो यह ताऊन के युग की ओर संकेत है। और जो लोग अंजाम तक जीवित रहेंगे वे देखेंगे कि ताऊन के संक्रामक रोग के दिनों में इस सिलसिले के निष्कपट लोगों के साथ ख़ुदा की विशेष बरकतें रहेंगी और वे अपेक्षाकृत जलती अग्नि से बहुत दूर रहेंगे।	
भविष्यवाणी नम्बर -14	1880-1882 ई.	بخرام کہ وقتِ تو نزدیک رسید و پائے محمدیاں برمنارِ بلند تر محکم افتاد۔ (देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 522) अर्थात् अब प्रकटन कर और निकल कि तेरा समय निकट आ गया और अब वह समय आ रहा है कि मुहम्मदी गढ़े में से निकाल लिए जाएंगे और एक बुलन्द और सुदृढ़ मीनार पर उनका क़दम पड़ेगा। इसके साथ ही बराहीन अहमदिया में	बीस वर्ष बाद ताऊन के दिनों में

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

रूप सामने आएगा। अब सोच लो कि क्या ये ग़ैबी बातें मनुष्य के हाथ में हैं? क्या आज से बीस वर्ष पूर्व किसी को ख़बर भी थी कि इस देश में इतने ज़ोर से ताऊन आएगी ऐसा ही इन भविष्यवाणियों में उन्नति के युग की उस समय सूचना दी गई है जबकि यह विनीत अज्ञात के कोने में पड़ा हुआ था। अब सोच लो कि क्या इन्सान भी यह क़ुदरत रखता है।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी नम्बर -14		एक अंग्रेज़ी इल्हाम है जिस का अनुवाद यह है कि वे दिन आ रहे हैं कि जब ख़ुदा तुम्हारी सहायता करेगा। प्रतापवान ख़ुदा पृथ्वी और आकाश का स्रष्टा। यह उन दिनों की भविष्यवाणी है जब सिलसिले का नामोनिशान न था। क्या यह इन्सान की क़ुदरत में से है।	
15 भविष्यवाणी नम्बर -15	1880-1882 ई.	एक बार मुझे निश्चित् तौर पर इल्हाम हुआ कि आज इक्कीस रूपए आएंगे आना कम न अधिक। अत: क़ादियान के आर्यों को गवाह बनाने के लिए इस रुपये के आने की सूचना दी गई। तब पड़ताल के लिए एक आर्य गया और हंसता हुआ आया कि केवल पांच रुपये आए हैं। फिर इल्हाम हुआ कि इक्कीस रुपए आए हैं एक और आर्य पुन: डाकख़ाने गया और वह सूचना लाया कि वास्तव में बीस रुपए आए हैं। डाकख़ाने वाले ने ग़लती से पांच रुपये कहे थे और इसी अवसर पर वज़ीर सिंह नामक एक व्यक्ति ने इलाज	उसी दिन जिस दिन भविष्यवाणी की गयी।

देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

भविष्यवाणी नं. 15 में जितनी ख़ुदा की क़ुदरत पर ग़ैब की सूचना पाई जाती है उसे ध्यानपूर्वक पढ़ो और भविष्यवाणी नं. 16 स्वयं प्रकट है। क्या ऐसा साफ़ ग़ैब (परोक्ष का ज्ञान) बताना कि दस दिन तक रुपया नहीं आएगा और दस के बाद ग्यारहवें दिन रुपया अवश्य आएगा और उस दिन किसी मजबूरी से अमृतसर भी जाना पड़ेगा। क्या ऐसी भविष्यवाणियों पर इन्सान भी समर्थ हो सकता है? और इससे शक्तिशाली और क्या सबूत

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी नम्बर -15		कराने के उद्देश्य से एक रुपया दे दिया। इस प्रकार से पूरे इक्कीस रुपये हो गए। यह बीस रुपये मुंशी इलाही बख़्श साहिब एकाउन्टेन्ट ने मुझे भेजे थे। और जब ऐसी सफ़ाई से यह भविष्यवाणी पूरी हुई और आर्य लोग इसके गवाह हो गए तब मैंने एक रुपये की मिठाई आर्यों को खिला दी ताकि हमेशा इस भविष्यवाणी को याद रखें। (देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-524)	
16 भविष्यवाणी नम्बर -16	1880-1882 ई.	बराहीन अहमदिया छप रही थी और रुपया नहीं था। छापने वाले की मांग थी। तब दुआ की गई तो यह इल्हाम हुआ **"दस दिन के बाद मौज दिखाता हूँ"** इसके साथ यह इल्हाम भी हुआ **"Than will you go to Amritsar"** अर्थात उस दिन तुम अमृतसर भी जाओगे। यह इल्हाम आर्यों को सुनाया गया ख़ूब कान खोले गए अंततः दस दिन तक एक पैसा न आया, जब ग्यारवां दिन आया तो एक सौ बीस रुपये	भविष्यवाणी वर्णन करने से ग्यारहवें दिन

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

होगा कि आर्य जो धर्म के कट्टर दुश्मन हैं इस भविष्यवाणी के गवाह हैं। उन सब में लाला शरमपत और लाला मलावामल निवासी क़ादियान जो अब तक जीवित मौजूद हैं इस निशान से ख़ूब परिचित हैं। इन के लिए बड़ा संकट है कि इस्लामी गवही दें। परन्तु यदि यह स्थान उनको बराहीन अहमदिया का दिखाया जाए और उनको उनकी सन्तान की क़सम दी जाए। क्योंकि उनके दिलों में ख़ुदा तआला का डर नहीं तो सम्भव नहीं कि झूठ बोलें। क्या हुआ स्वीकार होकर फिर ख़ुदा का भविष्यवाणी करना और समर्थन दिखाना तथा अमृतसर जाने का निशान साथ रखना यह चमत्कार नहीं और भविष्यवाणी नं. 17 का हाफ़िज़ नूर अहमद और हाफ़िज़ हामिद अली इत्यादि गवाह हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी नम्बर -16		मुहम्मद अफ़ज़ल ख़ान साहिब नामक व्यक्ति ने रावलपिण्डी से भेजे। उसी दिन नूर अहमद एक और व्यक्ति ने भेज दिए। उसी दिन सरकारी सम्मन आया और एक गवाही के लिए अमृतसर जाना पड़ा। (देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 469)	
17 भविष्यवाणी नम्बर -17	1880-1882 ई.	नामक एक व्यक्ति मौलवी ग़ुलाम अली साहिब अमृतसरी के शिष्यों में से क़ादियान में आया और इस से इन्कारी था कि इस उम्मत के कुछ लोग ख़ुदा तआला से सच्ची और विश्वासपूर्ण वह्यी पा सकते हैं। उसे यह कहकर ठहराया गया कि हम दुआ करते हैं शायद अल्लाह तआला कोई ऐसा इल्हाम करे जो किसी भविष्यवाणी पर आधारित हो। अत: दुआ स्वीकार होकर अंग्रेज़ी में किसी अन्य के वृतान्त के तौर पर यह इल्हाम हुआ - I AM QUARRELLER अर्थात् मैं मुक़द्दमा करने वाला हूँ और झगड़ने वाला हूँ। और साथ यह इल्हाम हुआ- هٰذا شاهد نزاغ۔ (देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 472) अर्थात् यह गवाह तबाही डालने वाला है और समझाया गया कि किसी का मुक़द्दम:	यह भविष्यवाणी फ़ज्र के समय वर्णन की गई और तीसरे पहर पूरी हो गई।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	**जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।**	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी नम्बर -17		है और वह मुझे गवाह बनाना चाहता है ये समस्त मरहले मियां नूर अहमद को भविष्यवाणी के प्रकट होने से पूर्व सुनाए गए। उस दिन हाफ़िज़ नूर अहमद अमृतसर जाने को तैयार था। वर्षा हुई और वह रोक लिया गया। शाम को उसके सामने रजब अली नामक एडीटर सफ़ीर हिन्द प्रेस का अमृतसर से पत्र आया, साथ ही एक सम्मन गवाही का मेरे नाम आया। जिस से मालूम हुआ कि पादरी रजब अली ने मुझे अपना गवाह लिखवाया है। और दावा सही था और मेरी गवाही प्रतिवादी की तबाही का कारण थी। यही अर्थ इस इल्हाम के थे कि هٰذا شاهد نزاغ۔ तो इस प्रकार से हाफ़िज़ नूर अहमद अमृतसरी ने जो हमारा विरोधी था भविष्यवाणी को सुन भी लिया और फिर उसे पूरा होते देख भी लिया। उपरोक्त आर्य जो मेरे पास प्रतिदिन आते थे वे भी इस बात के गवाह हैं। मेरे कर्मचारी और	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

बराहीन अहमदिया के पृष्ठ -474,475 ये हर दो भविष्यवाणियां उपरोक्त शब्दों की मौजूद हैं। वे हर दो आर्य धर्म के विरोधी और हिन्दू हैं अब तक जीवित मौजूद हैं, धर्म के शत्रु हैं। क़सम के साथ झूठ नहीं बोलेंगे। तो देखो विलक्षण निशान और चमत्कार इसको कहते हैं जिस के दुश्मन गवाह हों ऐसा ही मुंशी इलाही बख़्श साहिब लेखक 'असा-ए-मूसा' दुश्मनों में से हैं परन्तु उनको भी क़सम के साथ सच बोलना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त यह

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी नम्बर -17		संबंधित लोग भी गवाह हैं। अब देखो कि परोक्ष का ज्ञान तो ख़ुदा की विशेषता है। यदि ये इल्हाम ख़ुदा की ओर से नहीं तो क्या नऊज़ुबिल्लाह शैतान ऐसे इल्हाम और स्पष्ट ग़ैब (परोक्ष) पर समर्थ है। अल्लाह तआला फ़रमाता है- فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ (अलजिन्न-27,28) अर्थात् साफ़ और स्पष्ट ग़ैब केवल ख़ुदा के चुने हुए लोगों को दिया जाता है। यदि कोई इन वर्णनों को झूठा समझता है तो उसे समझना चाहिए कि बीस वर्ष के ये इल्हाम प्रकाशित हैं और किताब में इन गवाहों के नाम दर्ज हैं परन्तु किसी ने झूठा होना प्रकाशित न किया और मनुष्य झूठ पर सब्र नहीं कर सकता और अब भी अधिकतर गवाह जीवित हैं। यदि अब भी सन्तुष्टि नहीं तो ऐसे झुठलाने वाले को अधिकार है कि लानतुल्लाह अलल कज़िबीन से ही फैसला कर ले	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

भविष्यवाणी बीस वर्ष की है। यदि इसमें कोई बात वास्तविकता के विरुद्ध होती तो आर्य लोग इतनी धार्मिक शत्रुता के बावजूद इस पर सब्र नहीं कर सकते थे अवश्य इसका खण्डन क़सम के साथ प्रकाशित करते कि ये बातें वास्तविकता के विरुद्ध हैं।

इसके अतिरिक्त यह भविष्यवाणी बीस वर्ष की है। यदि इसमें कोई बात वास्तविकता के विरुद्ध होती तो आर्य लोग इतनी धार्मिक शत्रुता के बावजूद इस पर सब्र नहीं कर सकते थे अवश्य इसका खण्डन क़सम के साथ प्रकाशित करते कि ये बातें वास्तविकता के विरुद्ध हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
18 भविष्यवाणी नम्बर -18	1880-1882 ई.	एक बार फ़ज्र के समय इल्हाम हुआ कि आज हाजी अर्बाब मुहम्मद लश्कर ख़ान के निकट सम्बन्धी का रुपया आता है। तो मैंने शरमपत और मलावामल उपरोक्त कथित आर्यों को यह भविष्यवाणी बताई परन्तु उन आर्यों ने इस बात पर आग्रह किया कि उन्हीं में से कोई डाकख़ाने जाए ताकि मालूम करे कि उसी दिन किसी ऐसे व्यक्ति की ओर से कोई रुपया आया है या नहीं। अत: मलावामल आर्य इस काम के लिए गया और एक पत्र लाया जिसमें लिखा था कि दस रुपये अर्बाब सर्वर ख़ान ने भेजे हैं परन्तु आर्यों ने इस बात से इन्कार किया कि सर्वर ख़ान को मुहम्मद लश्कर ख़ान का कोई रिश्तेदार समझा जाए। विवश होकर मुंशी इलाही बख़्श एकाउन्टेण्ट लेखक "असा-ए-मूसा" जो होती मर्दान में थे उनको पत्र लिखना पड़ा	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

और भविष्यवाणी नं. 19 के गवाह सर्वप्रथम तो बराहीन अहमदिया है जिसमें यह भविष्यवाणी लिखी गई। फिर उस युग और बराहीन अहमदिया के युग को दृष्टिगत रखकर प्रत्येक बुद्धिमान सोच सकता है कि बराहीन के समय में क्या हालत थी और बाद में क्या हालत हुई। और जैसा कि हम कई बार लिख चुके हैं। ये भविष्यवाणियां जिन में यह चर्चा है कि मैं इस सिलसिले को एक बड़ी क़ौम बनाऊंगा। इनका 1901 और 1902 में पूरा हो जाना सूर्य से भी अधिक स्पष्ट है। प्रथम यह बात स्पष्ट है कि जिस युग में बराहीन अहमदिया में ये भविष्यवाणियां लिखी गई हैं कि यह एक बड़ी जमाअत बनाई जाएगी उस समय जमाअत का नामोनिशान न था जैसा कि स्वयं बराहीन अहमदिया में बार-बार इसका ज़िक्र है और यह दुआ भी है

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	**जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।**	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी नम्बर -18		कि यहां यह बहस हो रही है और यह बात मालूम करना है कि सर्वर ख़ान का मुहम्मद लश्कर ख़ान से कुछ क़रीबी रिश्तेदारी है या नहीं। होती मर्दान से मुंशी इलाही बख़्श साहिब ने लिखा कि सर्वर ख़ान अर्बाब लश्कर ख़ान का बेटा है और आर्य निरुत्तर हो गए। (देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ- 474 व 475)	
भविष्यवाणी नम्बर -19	1880-1882 ई.	जिस युग में बराहीन अहमदिया छप रही थी रुपये की आय में पग-पग पर तंगी थी कोई जमाअत न थी जिन से चन्दा लिया जाए। इसलिए काफी समय तक पुस्तक का मसौदा निलंबित पड़ा रहा तथा इल्हाम सांत्वना देते थे कि ये समस्त काम हो जाएंगे और एक जमाअत भी हो जाएगी। अत: इन सब में कुछ अंग्रेज़ी इल्हाम हैं और मैं अंग्रेज़ी नहीं जानता। इस कूचे से	ताऊन के बाद उसी युग में

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

رَبِّ لَا تَذَرۡنِی فردًا وَاَنۡتَ خَیۡرُ الۡوَارِثِیۡن

अर्थात् हे मेरे ख़ुदा मुझे अकेला मत छोड़ना और तू उत्तम वारिस है। इसके अतिरिक्त पंजाब या हिन्दुस्तान से कौन दावा कर सकता है कि वह बराहीन अहमदिया के युग में मुरीद होने के तौर पर मुझ से कोई संबंध रखता था अपितु मुझे पहचानने वाले भी केवल कुछ लोग ही निकलेंगे और सरकार भी स्वयं इसकी गवाह है कि क़ादियान में मेरे लिए किसी का आना जाना न था। और भविष्यवाणी नं. 20 का सबूत भी बराहीन अहमदिया पर विचार करने से खुलता है क्योंकि बराहीन अहमदिया जिस में यह भविष्यवाणी है बता रही है कि बराहीन का युग अकेलेपन का युग था। और अब हमारे सिलसिले में हज़ारों लोग सम्मिलित हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी नम्बर -19		बिल्कुल अपरिचित हूँ, एक वाक्य तक मुझे मालूम नहीं परन्तु विलक्षण तौर पर निम्नलिखित इल्हाम हुए:- I LOVE YOU, I AM WITH YOU, I SHALL HELP YOU, I CAN WHAT I WILL DO, WE CAN WHAT WE WLL DO, पृष्ठ- 480, 481 GOD IS COMING BY HIS ARMY पृष्ठ-484 HE IS WITH YOU TO KILL ENEMY पृष्ठ- 484, THE DAYS SHALL COME THAN GOD SHALL HELP YOU GLORY BE TO THIS LORD, GUARD MEKER OF EARTH AND HEAVEN (पृष्ठ-522) THOUGH ALL MEN SHOULD BE ANGRY BUT GOD IS WITH YOU, HE SHALL HELP YOU, WORDS OF GOD CAN NOT EXCHANGE पृष्ठ-554, I LOVE YOU, I SHALL GIVE YOU A LARGE PARTY OF ISLAM (देखो वर्णित पृष्ठ बराहीन अहमदिया) (पृष्ठ-556)	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी नम्बर -19	शेष भविष्यवाणी 19	**अनुवादः**- मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। मैं तुम्हारे साथ हूँ। मैं तुम्हारी सहायता करूंगा। मैं जो चाहूंगा कर सकता हूँ हम कर सकते हैं जो चाहेंगे। ख़ुदा एक सेना लेकर चला आता है, वह तुम्हारे साथ है ताकि तुम्हारे दुश्मन को मार दे अर्थात् पराजित और अपमानित करे। वे दिन आते हैं कि ख़ुदा तुम्हारी सहायता करेगा। प्रतापवान ख़ुदा पृथ्वी और आकाश का सृष्टा। यदि समस्त लोग तुम से क्रोधित हो जाएंगे परन्तु ख़ुदा तुम्हारे साथ रहेगा। वह अन्ततः तुम्हारी मदद करेगा। ख़ुदा की बातें परिवर्तित नहीं हो सकतीं। मैं एक बहुत बड़ी जमाअत इस्लाम की तुम्हें दूंगा। और मैं तुम से प्रेम करता हूँ। अब देखो जिस समय में ये अंग्रेज़ी इल्हाम हुए थे कैसी गुमनामी और विवशता का युग था। और आज वे समस्त वादे पूरे हो गए और उस युग में जमाअत का वादा हुआ जबकि मेरे साथ एक भी न था और अब यह जमाअत सत्तर हज़ार से भी कुछ अधिक है और अंग्रेज़ी इल्हाम में यह जो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यदि सब लोग तुम से क्रोधित हो जाएंगे परन्तु ख़ुदा तुम्हारे साथ रहेगा और वह प्रतिफल प्रदान करने वाला तुम्हारा सहायक होगा यह इस बात की ओर संकेत है कि ख़ुदा की एक	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी नम्बर -19		विशेष कृपा तुम्हारे साथ है जो प्रेमियों के साथ हुआ करती है। बात यह है कि ख़ुदा तआला दुनिया में तीन प्रकार के कार्य किया करता है:- (1) ख़ुदा होने की हैसियत से। (2) दोस्त की हैसियत से। (3) दुश्मन की हैसियत से जो कार्य सामान्य जन से होते हैं वे मात्र ख़ुदाई हैसियत से होते हैं। जो कार्य प्रेमियों से होते हैं वे न केवल ख़ुदाई हैसियत से अपितु उन पर दोस्ती की हैसियत के रंग का प्रभुत्व होता है और दुनिया को स्पष्ट तौर पर महसूस होता है कि ख़ुदा उस व्यक्ति की दोस्त के तौर पर मदद कर रहा है। और जो कार्य दुश्मनों की हैसियत से होते हैं उनके साथ एक दर्दनाक अज़ाब होता है तथा ऐसे निशान प्रकट होते हैं जिनसे स्पष्ट दिखाई देता है कि ख़ुदा तआला उस क़ौम या उस मनुष्य से दुश्मनी कर रहा है। और ख़ुदा जो अपने दोस्त के साथ कभी यह मामला करता है कि समस्त संसार को उसका दुश्मन बना देता है और कुछ समय के लिए उनकी जीभों तथा उनके हाथों को उस पर विजयी कर देता है। स्वाभिमानी ख़ुदा यह इसलिए नहीं कि उस अपने दोस्त को मारना चाहता है या अपमानित और तिरस्कृत करना चाहता है अपितु इसलिए करता है ताकि दुनिया को अपने निशान दिखाए और ताकि डींगे मारने वाले विरोधियों को मालूम होकि उन्होंने दुश्मनी में नाख़ूनों तक ज़ोर लगाकर हानि क्या पहुंचाई।	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी नम्बर -20	1880-1882 ई.	ثلة من الاولين وثلة من الآخرين (पृष्ठ-556) **अनुवाद-** दो गिरोह अर्थात् दो जमाअतें तुम्हें दी जाएंगी। एक वह जमाअत है जो आपदाओं के उतरने से पहले स्वीकार कर लेगी और दूसरी वह जमाअत है जो निशानों को देखकर जो बड़ी संख्या में समूह के समूह बैअत के सिलसिले में दाख़िल होगी अब बताओ कि क्या इस भविष्यवाणी के अनुसार घटित हो गया या नहीं। आंखें ऐसी तो बन्द नहीं करनी चाहिए जैसा कि अंधों की आंखें होती हैं। थोड़ा मालूम करो चाहे सरकारी काग़ज़ देख लो कि क्या बराहीन अहमदिया के समय सात आदमी भी थे और क्या अब सत्तर हज़ार आदमी मेरे साथ बैअत में दाख़िल हैं या नहीं? यह केवल भविष्यवाणी ही नहीं अपितु समर्थन और रहमत से मिली हुई भविष्यवाणी है।	1901,1902 ई. में पूर्ण रूप से भविष्यवाणी पूरी हुई
21	1865 ई.	लगभग पन्द्रह वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया के लिखने से मुझे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दर्शन द्वारा मुझे स्वप्न	15 वर्ष बाद 1880 ई. में पूरी हुई

देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

भविष्यवाणी नं. 20 का सबूत हम लिख चुके हैं और भविष्यवाणी 21 का सबूत वे गवाह हैं जिन के पास यह स्वप्न वर्णन किया गया था और उनमें से अब तक कुछ जीवित हैं दूसरे स्वयं बराहीन अहमदिया भी गवाह है क्योंकि जिस स्वीकारिता का यह स्वप्न ख़ुशख़बरी

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी नम्बर -21		में सूचना दी गई कि मैं एक पुस्तक लिखूंगा और उस पुस्तक को मुसलमानों में सार्वजनिक स्वीकारिता की श्रेणी प्राप्त होगी और विरोधी उसके मुक़ाबले की शक्ति नहीं रखेंगे। अतः पन्द्रह वर्ष के पश्चात् बराहीन अहमदिया लिखी गई और उसमें ये समस्त चर्चा मौजूद है। (देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-248, 249)	
भविष्यवाणी नम्बर -22	1868 ई.	शरमपत आर्य जिसकी चर्चा ऊपर हो चुकी है उसका भाई विशम्बर दास नामक तथा एक अन्य व्यक्ति ख़ुशहाल नामक एक मुक़द्दमे में दोनों क़ैद हो गए थे। जब अपील गुज़ार शरमपत ने जैसा कि व्याकुलता के समय हिन्दुओं का हाल हुआ करता है मुझ से दुआ का निवेदन किया और अंजाम मालूम किया। तब दुआ करने के बाद रात के समय ख़ुदा तआला ने स्वप्न में मुकद्दमः की कुल वास्तविकता मुझ पर खोल दी और प्रकट किया कि दुआ इस प्रकार से स्वीकार होगी कि	छः माह के पश्चात्

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

देता था जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ-248 और 249 में छप गए। छपने के समय इस स्वीकारिता का कोई निशान प्रकट न था अपितु आर्थिक कठिनाइयों का सामना था परन्तु एक लम्बे समय के बाद बराहीन अहमदिया के लोगों में प्रसिद्धि और स्वीकारिता फ़ैल गई।

और भविष्यवाणी नं. 22 इस सम्पूर्ण गांव में एक प्रसिद्ध घटना है और कई मुसलमान इस भविष्यवाणी से अवगत हैं। भविष्यवाणी नं. 22 और 23 के बारे में विशम्बर दास के सगे

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी नम्बर -22		विशम्बर दास की आधी क़ैद समाप्त कर दी जाएगी और यों होगा कि इस मुक़द्दमें की मिस्ल चीफ़कोर्ट की अदालत से फिर अधीन अदालत में वापस आएगी और उस अदालत से विशम्बरदास की क़ैद केवल आधी रह जाएगी और आधी माफ़ कर दी जाएगी और उसका दूसरा साथी ख़ुशहाल नामक पूरी क़ैद भुगत कर छुटकारा पाएगा और एक दिन भी कम नहीं होगा और वह भी बरी नहीं होगा। इस स्वप्न की उसी समय बहुत से लोगों को सूचना दी गई और शरमपत को भी बुला कर सूचना दी गई और अन्त में इसी प्रकार घटित हुआ, जिस प्रकार भविष्यवाणी की गई थी। (देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-251)	
23	1868 ई.	उपरोक्त मुक़द्दमा: जिसमें विशम्बरदास क़ैद हुआ था अपील की स्थिति में चीफ़ कोर्ट में दायर किया गया तो विशम्बरदास के भाई जिसका नाम धनपत था, ने गांव में आकर प्रसिद्ध कर दिया कि हमारी अपील	दो माह बाद पूरी हुई

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

भाई शरमपत की गवाही पर्याप्त है जिस ने मुझ से दुआ कराई थी जिसका परिणाम आधी क़ैद कम हुई थी। शरमपत को समय से पूर्व ख़ुदा तआला से सूचना पाकर मैंने मुक़द्दमें का अंजाम बता दिया था कि मिस्ल वापस आ गई और विशम्बर दास की आधी क़ैद कम की जाएगी बरी नहीं होगा। इतनी क़ैद में कमी दुआ का परिणाम है परन्तु ख़ुशहाल उसका साथी बिल्कुल बरी नहीं होगा उसका एक दिन भी कम नहीं होगा।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी नम्बर -23		स्वीकार हो गई। और विशम्बरदास बरी हो गया। यह ख़बर इशा के समय प्रसिद्ध हुई और उस समय मैं मस्जिद में था और चूंकि यह स्थिति मेरी भविष्यवाणी के विरुद्ध थी इसलिए बड़ी घबराहट का कारण हुई। मैं इस बेचैनी में था कि ठीक सज्दे के समय में मुझे इल्हाम हुआ لا تخف انک انت الاعلیٰ अर्थात् कुछ भय न कर तू विजयी है। अन्ततः वह ख़बर ग़लत सिद्ध हुई और विशम्बरदास की क़ैद तो कम हुई परन्तु वह बरी न हुआ। (देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-550)	
24	1868 ई.	हमारा एक मुक़द्दमः तहसील बटाला में मौरूसी आसामियों पर दो वृक्षों के काटने के बारे में था। मुझे बताया गया कि इस मुक़द्दमें में डिग्री होगी। परन्तु आदेश सुनाने के समय दूसरा सदस्य तो अदालत में मौजूद था और हमारी ओर से संयोग	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

भविष्यवाणी नं. 24 के बारे में सरकारी दफ़्तर में मिस्ल मौजूद है और शरमपत इत्यादि आर्य गवाह हैं। निर्णेता हाकिम ने जिसका नाम हाफ़िज़ हिदायत अली था केवल प्रतिवादी के बयान पर कि हमें फ़ैसले के अनुसार कमिश्नर साहिब पेड़ काट लेने का अधिकार प्राप्त है मुक़द्दमें को ख़ारिज कर दिया। और प्रतिवादी को आदेश सुना कर उसके गवाहों सहित रुख़सत कर दिया। इस पर उन्होंने गांव में आकर प्रसिद्ध कर दिया कि मुक़द्दमः ख़ारिज

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी नम्बर -24		से कोई उपस्थित न था। शाम को दूसरा सदस्य और उसके गवाहों ने जो पन्द्रह आदमी के लगभग थे बाज़ार में आकर वर्णन किया कि मुक़द्दमः ख़ारिज हो गया। शरमपत और अन्य आर्य लोगों को जो मैंने भविष्यवाणी सुनाई थी वे बहुत प्रसन्न हुए कि आज हमारा हाथ पड़ गया और मुझे बड़ी बेचैनी हुई, इसलिए कि वर्णन करने वाले पन्द्रह लोग थे, अस्र का समय था और मैं मस्जिद में अकेला था और कोई न था इतने में एक आवाज़ गूँज कर आई मैंने सोचा कि यह आवाज़ बाहर से है। आवाज़ के शब्द ये थे कि डिग्री हो गई मुसलमान है अर्थात् तू क्यों विश्वास नहीं करता क्या ख़ुदा से कोई अधिक विश्वसनीय है अंततः यही सच निकला कि डिग्री हो गई थी और उनको धोखा लगा था। (देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 552)	
25	1880-1882 ई.	मैं अपनी चमकार दिखाऊंगा अर्थात् क़ुदरत के प्रदर्शन से तुमको उठाऊंगा दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने उसको स्वीकार न किया, परन्तु ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े	पन्द्रह वर्ष के पश्चात्

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

हो गया है। परन्तु जब वे अदालत के कमरे से निकल गए तो उस समय मिस्ल पढ़ने वाले ने जो संयोग से बाहर गया हुआ था हाकिम को कहा कि आप ने इस मुक़द्दमें में धोखा खाया है और जो प्रतिपक्ष ने नक़ल कमिश्नर साहिब के सामने प्रस्तुत की है वह आदेश तो फिनेनशल साहिब के आदेश से निरस्त हो चुका है और उसने मिस्ल दिखा दी तब हिदायत अली की बुद्धि चकरा गई और उस समय अपना निर्णय फाड़ दी और डिग्री की। ये ख़ुदा की क़ुदरत के दृश्य हैं। भविष्यवाणी 25 का पूरा सबूत लेखराम वाली भविष्यवाणी में अभी आएगा।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी नम्बर -25		शक्तिशाली आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा। الفتنة هٰهنا فاصبر كما صبر اولوالعزم अर्थात् इन्हीं दिनों में एक फित्नः होगा। अतः तू दृढ़ प्रतिज्ञ रसूलों के समान सब्र कर। (बराहीन अहमदिया पृष्ठ-557) यह भविष्यवाणी लेखराम की घटना की ओर संकेत करती है। क्योंकि इसमें वर्णन किया गया है कि मैं तुझे क़ुदरत का प्रदर्शन करके उठाऊंगा। अतः आथम के बारे में शोर और हंगामः के बाद लेखराम वाली भविष्यवाणी ऐसे वैभव और धाक के साथ पूरी हुई कि समस्त शत्रुओं के मुंह काले हो गए। उन्होंने मुझे गिराना चाहा था ख़ुदा ने अपने हाथ से मुझे उठाया और एक चमकता हुआ निशान दिखा दिया और लेखराम के बारे में जो भविष्यवाणी प्रकटन् में आई वह वास्तव में ख़ुदा की एक चमकार थी। जैसे ख़ुदा अपने रसूल के लिए स्वयं उतर कर लड़ा। और इस भविष्यवाणी के बाद दुर्भाग्यशाली आर्यों की शत्रुता बढ़ गई, यहां तक कि उन्होंने उस मूर्ख ब्राह्मण के मरने के बाद हमारे घर की तलाशी भी कराई। इसी की ओर भविष्यवाणी में भी संकेत है। जो फ़रमाया الفتنة هٰهُنَا فاصبر كما صبر	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी नम्बर -25		اولوالعزم देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-557 और ख़ुदा तआला ने इस भविष्यवाणी में दो बातों की सूचना दी है:- (1) प्रथम यह कि दुनिया सख़्त मुक़ाबला करेगी और किसी प्रकार स्वीकार नहीं करेगी और वह अपनी ओर से पृथ्वी पर गिरा देगी और झूठा होने का आरोप लगाएगी जैसा कि आथम की शर्त की अवधि के बाद मूर्ख मुसलमानों ने ईसाइयों के साथ मिलकर शोर मचाया और अपने विचार में गिरा दिया तथा ख़ुदा ने लेखराम को क़त्ल करके गिरने के बाद फिर उठाया। (2) यह कि ख़ुदा इस भविष्यवाणी में वादा करता है कि मैं शक्तिशाली आक्रमणों से इस मुर्सल की सच्चाई प्रकट करूंगा। तो वही शक्तिशाली आक्रमण हैं कि खुले-खुले निशान प्रकट हो रहे हैं और दुश्मन स्वयं मर रहे हैं क़ौम के दुश्मनों ने इस प्रकाश को बुझाने के लिए नाख़ूनों तक ज़ोर लगाए, परन्तु यह जमाअत जो शुरू में केवल दो-तीन आदमी थे अब सत्तर हज़ार तक पहुंच गई और ख़ुदा के कोप के हाथ ने मुख्य विरोधियों के पांच भागों में से तीन भाग दुनिया से उठा लिए। इस्माईल मौलवी अलीगढ़ी जिस ने कहा था कि हम दोनों में से (अर्थात् वह और मैं) जो व्यक्ति झूठा	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी नम्बर -25		है वह पहले मरेगा। अत: स्वयं वह पहले मर गया। और ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी ने अपनी पुस्तक 'फ़त्ह रहमानी' में मुझे झूठा ठहराकर ख़ुदा तआला से झूठे की मौत चाही। तो वह इस मुबाहले को प्रकाशित करके फिर जीवित न रह सका और कुछ ही दिनों में मर गया। देखो पुस्तक 'फ़त्ह रहमानी' पृष्ठ-26, 27। और मुहियुद्दीन लखूके वाले ने भी इसी निबंध का इल्हाम प्रकाशित किया। अर्थात् यह इल्हाम प्रकाशित किया कि मिर्ज़ा साहिब फ़िरऔन परन्तु जैसा कि 24 जुलाई 1901 ई. के अलहकम के पृष्ठ 5 के दूसरे कलाम में प्रकाशित हो चुका है मेरी भविष्यवाणी के अनुसार वह मर गया। ऐसा ही रशीद अहमद गंगोही अपने विज्ञापन के बाद अंधा हो गया। शाहदीन विरोधी लुधियानवी पागल हो गया और मुहम्मद हसन भीं मेरे ऐजाज़ुल मसीह के मुक़ाबले पर यह घटना लिखते ही कि झूठों पर ख़ुदा की लानत अपने मुंह की लानत से ही पकड़ा गया और मर गया। ऐसा ही लुधियाना के तीन मौलवी भी अर्थात् अब्दुल्लाह, अब्दुल	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

इस भविष्यवाणी का सबूत स्पष्ट है क्योंकि ख़ुदा ने लेखराम को मारकर सिद्ध कर दिया कि उसका यह बन्दा उसकी ओर से है।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी नम्बर -25		अज़ीज़, मुहम्मद। वे तीनों मेरे मुक़ाबले पर गन्दे विज्ञापन लिखने के बाद मर गए। ये ख़ुदा के शक्तिशाली आक्रमण हैं जिनसे सच्चाई प्रकट है। और इन्हीं पर समाप्त नहीं अभी और आक्रमण भी हैं। आकाश नहीं थकेगा जब तक पृथ्वी अपनी घृष्टताएं नहीं छोड़ती।	
26 भविष्यवाणी नम्बर -26	1880-1882 ई.	اشکر نعمتی رئیت خدیجتی - (बराहीन अहमदिया पृष्ठ 558) **अनुवाद-** मेरा धन्यवाद कर कि तूने मेरी ख़दीजा को पाया। यह एक ख़ुशख़बरी कई वर्ष पहले उस निकाह की ओर थी जो सादात के घर मे देहली में हुआ जिससे ख़ुदा की कृपा से चार लड़के पैदा हुए और मेरी पत्नी का नाम ख़दीजा इसलिए रखा कि वह एक मुबारक नस्ल की माँ है जैसा कि इस स्थान पर भी मुबारक नस्ल का वादा था तथा यह उस ओर संकेत था कि वह पत्नी सादात की क़ौम में से होगी। इसी	एक वर्ष पश्चात्

देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

भविष्यवाणी नं. 25 पर तो एक दुनिया गवाह है कि पहले क्या था फिर क्या हो गया। और भविष्यवाणी नं. 26 अर्थात् शादी के मामले में जो आज से अट्ठारह वर्ष हुए देहली में हुई थी। आर्य शरमपत और मलावामल तथा अधिकतर दोस्त गवाह हैं कि उनको भविष्यवाणी की पहले सूचना दी गई थी। इस शादी के बारे में तीन इलहाम थे। एक यही जो बराहीन अहमदिया में पृष्ठ 558 में दर्ज हो गया दूसरा इलहाम-

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी नम्बर -26		के अनुसार दूसरा इल्हाम है और वह यह है कि الحمد للہ الذی جعل لکم الصّہر والنسب अर्थात् वह ख़ुदा जिसने दामाद होने के रिश्ते तथा वंश की दृष्टि से तुम्हें सामान प्रदान किया।	
भविष्यवाणी नम्बर -27	1880-1882 ई.	مبارک و مبارک و کل امرٍ مبارک یجعل فیہ۔ و من دخلہ کَانَ اٰمِنًا۔ (बराहीन अहमदिया -पृष्ठ 559) **अनुवाद-** यह मस्जिद बरकत दी गई है और बरकत देने वाली है और प्रत्येक काम जो बरकत दिया गया है वह इसमें किया जाएगा और जो इसमें दाख़िल हो वह अमन में आ जाएगा। इस इल्हाम में तीन प्रकार के निशान हैं-	ताऊन के युग के क़रीब

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह- न.26

الحمد للہ الذی جعل لکم الصّہر والنسب

था। तीसरा इल्हाम

بکر و ثیب

था अर्थात तुम्हारे लिए प्रारब्ध एक कुंवारी है एक विधवा। यह इल्हाम भली-भांति याद है कि मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब को मैंने बटाला में उन्हीं के मकान पर सुनाया था। संयोग से उन्होंने पूछा था कि कोई ताज़ा इल्हाम है। तब मैंने सुना दिया था। और भविष्यवाणी नं. 27 के अनुसार अब तक इस मस्जिद में पचास हज़ार से भी अधिक नमाज़ पढ़ चुके हैं और उनको ख़ुदा ने ताऊन और प्रत्येक संक्रामक रोग से बचाया है।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या -27		(1)- यह कि इसमें ख़ुदा तआला की ओर से माद-ए-तारीख़ मस्जिद की बुनियाद है। (2)- यह कि यह भविष्यवाणी बता रही है कि एक बड़े सिलसिले के कारोबार इसी मस्जिद में होंगे। अत: अब तक इसी मस्जिद में बैठ कर हज़ारों लोग बैअत-ए-तौबः कर चुके हैं। इसी में बैठ कर सैकड़ों अध्यात्म ज्ञान वर्णन किए जाते हैं और इसी में बैठकर नवीन पुस्तकों के लिए लिखने की बुनियाद पड़ती है और इसी में मुसलमानों का एक बहु संख्यक गिरोह पांच समय नमाज़ पढ़ता है और उपदेश सुनते हैं और हार्दिक जोश से दुआएं की जाती हैं और मस्जिद की बुनियाद के समय में इन बातों में से किसी बात की निशानी मौजूद न थी। (3)- यह कि यह इल्हाम बता रहा है कि भविष्य में कोई आपदा आने वाली है। और जो व्यक्ति निष्कपटता पूर्वक इसमें दाख़िल होगा वह उस आपदा से बच जाएगा और बराहीन अहमदिया के अन्य स्थानों से सिद्ध हो चुका है कि वह आपदा ताऊन है। तो यह भविष्यवाणी भी इससे निकलती है कि जो व्यक्ति पूर्ण श्रद्धा और निष्ठा से जिसको ख़ुदा पसन्द कर ले इस मस्जिद	ताऊन के ज़माने के क़रीब

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या -27		में प्रवेश करेगा वह ताऊन से भी बचाया जाएगा अर्थात् ताऊन की मौत से।	
भविष्यवाणी संख्या -28	1880-1882 ई.	يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِئُوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَ اللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ۔ (बराहीन अहमदिया पृष्ठ-240) **अनुवाद-** विरोधी लोग इरादा करेंगे कि ख़ुदा के प्रकाश को अपने मुंह की फूंकों से बुझा दें अर्थात् बहुत से छल काम में लाएंगे, परन्तु ख़ुदा अपने प्रकाश को पूर्णता तक पहुंचाएगा। यद्यपि काफ़िर लोग पसन्द ही न करें। यह उस युग की भविष्यवाणी है जबकि इस सिलसिले के मुक़ाबले पर विरोधियों को कुछ जोश और उत्तेजना न थी। और फिर इस भविष्यवाणी से दस वर्ष बाद वह जोश दिखलाया कि चरम सीमा को पहुंच गया अर्थात् तक्फ़ीर नाम: लिखा गया, क़त्ल के फ़त्वे लिखे गए और सैकड़ों पुस्तकें और पत्रिकाएं छाप दी गईं। और लगभग समस्त मौलवी विरोधी हो गए और कोई अधम से अधम षड्यंत्र न	चार वर्ष हुए कि यह भविष्यवाणी पूरी हुई।

देखने वाले ज़िन्दा गवाह क्रम संख्या 28

भविष्यवाणी नं. 27 का सबूत वर्णन हो चुका है और भविष्यवाणी नं. 28 का सबूत स्वयं प्रकट है कि विरोधी मौलवियों ने इस सिलसिले के उन्मूलन के लिए नाख़ूनों तक ज़ोर लगाया परन्तु अन्ततः यह सिलसिला उन्नति कर गया।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या -28	शेष भविष्यवाणी 28	छोड़ा और मेरे तबाह करने के लिए न किया गया परन्तु परिणाम विपरीत हुआ और यह सिलसिला विलक्षण तौर पर उन्नति कर गया।	
शेष भविष्यवाणी संख्या -29	1880-1882 ई.	وَلَنْ تَرْضٰی عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَ لَا النَّصَارٰی حَتّٰی تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنَاتٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ اَللّٰهُ الصَّمَدُ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ۔ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمَاكِرِيْنَ۔ اَلْفِتْنَةُ هٰهُنَا فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ۔ (बराहीन अहमदिया-241) **अनुवाद-** अर्थात् पादरी सिफ़त ईसाई जो अपने गुमान में ईसाइयत के सहायक हैं और यहूदी सिफ़त मुसलमान जो अपने गुमान में यहूदियों की तरह हदीस पर अमल करने वाले हैं कदापि राज़ी नहीं होंगे जब तक तू उनके धर्म में दाख़िल न हो। कह वह ख़ुदा एक है और निस्पृह है, न वह किसी का बेटा है न कोई उसका बेटा। और लोग परस्पर मिलकर कुछ मक्र करेंगे और ख़ुदा भी मक्र करेगा और ख़ुदा अच्छा मक्र करने वाला है। और उस समय तेरे लिए एक फ़ित्नः खड़ा होगा। अत: सब्र कर जैसा कि दृढ़ प्रतिज्ञ नबियों ने सब्र	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या -29		किया है। यह भविष्यवाणी उस फ़ित्नः के बारे में है जो ईसाइयों और मुसलमानों ने अपने प्रथम आथम के समय किया और फिर क्लार्क के क़त्ल के लिए अग्रसर होने के दावे के समय किया। और क्लार्क के मुक़द्दमें में सबने सहमति कर ली और संभव है कि कोई और फ़ित्नः भी इन लोगों के हाथ से प्रारब्ध हो क्योंकि इनका जोश अभी कम नहीं है।	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह- 29

बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 241 में मुझे संबोधित करके यह भविष्यवाणी मौजूद है कि पादरी और यहूदी सिफ़त मुसलमान मिलकर कोई मक्र करेंगे और तुम पर एक फ़ित्नः खड़ा करेंगे परन्तु ख़ुदा असलियत प्रकट कर देगा। तो सर्वप्रथम आथम के मुक़द्दमें में ऐसा ही हुआ कि इन लोगों ने मिलकर भविष्यवाणी को झूठा ठहराना चाहा परन्तु ख़ुदा ने उसकी सच्चाई प्रकट कर दी। आथम ने भविष्यवाणी की शर्त के अनुसार दज्जाल कहने से लोगों के समूह में रुजू किया और बहुत सा हताश और भयभीत हुआ जिस से कोई इन्कार नहीं कर सकता और फिर चार हज़ार रुपए इनाम के वादे जो क़सम खाने पर हमारी ओर से था क़सम नहीं खाई और फिर भविष्यवाणी के आशय के अनुसार मेरे जीवन में ही मर गया और भविष्यवाणी का सारांश यही था कि दोनों सदस्यों में से जो झूठा है वह पहले मरेगा। तो एक लम्बा समय हुआ कि वह इस संसार से गुज़र गया और इस बात पर मुहर लगा गया कि वह मुबाहले में झूठा था (2) पादरियों और मुसलमानों का दूसरा मक्र यह था कि डाक्टर क्लार्क ने इक्दाम-ए-क़त्ल का मुझ पर एक झूठा मुक़द्दमा दायर किया था और सब विरोधी मुसलमान उसके सहायक हो गए और कुछ मौलवियों ने अदालत में उसकी ओर से मेरे विरुद्ध गवाही दी परन्तु अन्त में वह मुक़द्दमा झूठा सिद्ध हुआ और ख़ारिज हो गया। अतः तुम इस भविष्यवाणी की शान देखो कि इन मुक़द्दमों के बारे में

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या -30	1880-1882 ई.	ان لم یعصمک الناس فیعصمک اللّٰہ مِن عندہٖ۔ یعصمک اللّٰہ من عندہ و ان لم یعصمک الناس۔ (बराहीन अहमदिया 510) **अनुवाद-** यद्यपि लोग तुझे न बचाएं अर्थात् तबाह करने में कोशिश करें परन्तु ख़ुदा अपने पास से सामान पैदा करके तुझे बचाएगा। ख़ुदा तुझे अवश्य बचा लेगा यद्यपि लोग बचाना न चाहें। अब देखो कि यह किस शक्ति और शान की भविष्यवाणी है तथा बचाने के लिए निर्धारित वादा किया गया है और इसमें साफ़ वादा किया गया है कि लोग तुझे तबाह करने और मारने के लिए कोशिश करेंगे और भिन्न-भिन्न प्रकार के षड्यंत्र करेंगे परन्तु ख़ुदा तेरे साथ होगा	1892 ई. के बाद

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

कई वर्ष पूर्व ख़बर दी गई कि इस प्रकार से पादरी और मुसलमान परस्पर मिलकर तुझ पर मुक़द्दमें करेंगे और ख़ुदा उनके मक्र को टुकड़े-टुकड़े कर देगा। ऐसा ही प्रकटन में आया। भविष्यवाणी नं. 30 जो ऊपर वर्णन हो चुकी है उसका सबूत भी इसी से मिलता है कि दुश्मनों ने ख़ून के मुक़द्दमें भी किए परन्तु ख़ुदा ने मुझे उन से बचाया।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 30		और वह इन षड्यंत्रों को तोड़ देगा तथा तुझे बचाएगा। अब सोचो कि कौन सा षड्यंत्र है जो नहीं किया गया परन्तु मुझे तबाह और मारने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के मक्र किए गए। अत: ख़ून के मुक़द्दमें बनाए गए, अपमानित करने के लिए बहुत से जोड़-तोड़ पर काम किया गया और टैक्स लगाने के लिए योजनाएं बनाई गईं, कुफ्र के फ़त्वे लिखे गए, क़त्ल के फ़त्वे लिखे गए परन्तु ख़ुदा ने सबको असफल रखा, वे अपने किसी छल में सफल न हुए। तो इतने ज़ोर का तूफ़ान जो बाद में आया लम्बे समय पहले ख़ुदा ने उसकी ख़बर दे दी थी ख़ुदा से डरो और सच बोलो कि क्या यह ग़ैब का ज्ञान और ख़ुदा का समर्थन है अथवा नहीं और यदि कहो कि अस्मिता का वादा चाहता था कि वे लोग किसी प्रकार का कष्ट न दें परन्तु उन्होंने झूठे मुक़द्दमें करके अदालत में जाने का कष्ट दिया, बहुत सी गालियां दीं, मुक़द्दमों के ख़र्च से हानि कराई। इस का उत्तर यह है कि इस्मत से अभिप्राय यह है कि बड़ी आपदाओं से जो दुश्मनों का मूल उद्देश्य था बचाया जाए। देखो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी इस्मत का वादा किया गया था हालांकि उहद की लड़ाई में आंहज़रत सल्लल्लाहु	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 30		अलैहि व सल्लम को सख़्त ज़ख़्म पहुंचे थे और यह घटना अस्मिता के वादे के बाद प्रकटन में आई थी। इसी प्रकार अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा को फ़रमाया था- اِذۡ کَفَفۡتُ بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ عَنۡکَ (अलमाइदः 111) अर्थात् स्मरण कर वह समय जब बनी इस्राईल को जो क़त्ल का इरादा रखते थे मैंने तुझ से रोक दिया हालांकि शक्तिशाली निरन्तरता से सिद्ध है कि हज़रत मसीह को यहूदियों ने गिरफ़्तार कर लिया था और सलीब पर खींच दिया था परन्तु अन्त में ख़ुदा ने जान बचा दी। अतः यही अर्थ اِذۡ کَفَفۡتُ के हैं जैसा कि وَاللّٰہُ یَعۡصِمُکَ مِنَ النَّاسِ के हैं	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 30	जब मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने कुफ़्र का फ़त्वा मेरे संबंध में प्रकाशित किया और नज़ीर हुसैन देहलवी ने फ़त्वा दिया	وَاِذْ یَمْکُرُ بِکَ الَّذِیْ کَفَّرَ اَوْقِدْلِیْ یَا ھَامَان لَعَلِّیْ اَطَّلِعُ عَلٰی اِلٰہِ مُوْسٰی وَ اِنِّیْ لَاَظُنُّہٗ مِنَ الْکَاذِبِیْنَ۔ تَبَّتْ یَدَا اَبِیْ لَھَبٍ وَّتَبَّ۔ مَا کَانَ لَہٗ اَنْ یَّدْخُلَ فِیْھَا اِلَّا خَائِفًا۔ وَمَا اَصَابَکَ فَمِنَ اللّٰہِ۔ اَلْفِتْنَۃُ ھٰھُنَا فَاصْبِرْ کَمَا صَبَرَ اُولُوالْعَزْمِ اَلَآ اِنَّھَا فِتْنَۃٌ مِّنَ اللّٰہِ۔ لِیُحِبَّ حُبًّا جَمًّا۔ حُبًّا مِنَ اللّٰہِ العزیز الاکرم عَطَاءً اغَیْرَ مجذوذ۔ شاتان تذبحان و کُلّ من علیھا فان۔ **अनुवाद-** और स्मरण कर वह युग जब कि एक ऐसा व्यक्ति मक्र करेगा जो तुम पर कुफ़्र के फ़त्वे का प्रवर्तक होगा और इक़रार के बाद इन्कारी हो जाएगा (अर्थात् मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी) और वह अपने साथी को कहेगा (अर्थात् मौलवी नज़ीर हुसैन देहलवी को) कि हे हामान मेरे लिए आग भड़का अर्थात् काफ़िर बनाने के लिए फ़त्वा दे। मैं चाहता हूँ कि मूसा के ख़ुदा की पड़ताल करूँ और मैं गुमान करता हूँ कि वह झूठा है। इस स्थान पर ख़ुदा तआला ने मेरा नाम मूसा	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह संख्या क्रम 31

भविष्यवाणी नं. 31 का सबूत स्वयं मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने अपने हाथ से दिया कि मेरे लिए कुफ़्र नामा लिखा और काफ़िर ठहराया। तत्पश्चात् हाकिम के आदेश से झुठलाने और काफ़िर कहने से रोका गया। जैसा कि भविष्यवाणी में वर्णन था।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 31		रखा ताकि इस बात की ओर संकेत करे कि जिस नज़र से अर्थात् अत्यन्त तिरस्कार और अपमान पूर्वक फ़िरऔन ने मूसा को देखा था और कहता था कि यह मेरा ही पोषण किया हुआ है और मैं ही इसे मारूंगा यही तरीक़ा मुहम्मद हुसैन ने अपनाया तथा उस विजय की ओर संकेत है जो प्रारब्ध था कि मुझे मूसा के समान फ़िरऔन पर प्राप्त होगी और फिर मुझे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ठहरा कर تبّت یدا ابی لھب وتبّ फ़रमा दिया। अर्थात् तबाह हो गए दोनों हाथ अबी लहब के अर्थात बेकार हो गए और वह भी तबाह हो गया अर्थात् गुमराही के गढ़े में गिरा उसको नहीं चाहिए था कि इस मामले में हस्तक्षेप करता परन्तु डरते-डरते। और तुझे जो कुछ दुख पहुंचेगा वह तो ख़ुदा तआला की ओर से है। यह तेरे लिए एक फ़ित्नः होगा। अतः सब्र कर कि जैसा दृढ़ प्रतिज्ञ नबियों ने सब्र किया और ख़ुदा की ओर से इसलिए फ़ित्नः है ताकि वह तुझ से बहुत ही प्रेम करे उस ख़ुदा का प्रेम जो ग़ालिब और बुज़ुर्ग है। और यह वह नेमत है जो छीनी नहीं जाएगी। इस जमाअत में से दो बकरियां ज़िब्ह की जाएंगी प्रत्येक प्राणी अन्ततः मरने को है। देखो अब इस भविष्यवाणी पर न्यायपूर्वक	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 31		विचार करो कि उस युग से पहले की यह भविष्यवाणी है कि जब मौलवी मुहम्मद हुसैन ने बराहीन अहमदिया पर रीव्यू लिखा था और यह भविष्यवाणी भी पढ़ी थी। क्या ख़ुदा के बिना किसी का काम है कि इस गुप्त ग़ैब की ख़बर दे दे जिसकी किसी को भी ख़बर नहीं थी। (बराहीन अहमदिया पृष्ठ 150)	
भविष्यवाणी संख्या - 32	26 फरवरी 1898 ई.	ख़ुदा ने स्वप्न में अपनी विशेष वह्यी से मुझ पर प्रकट किया कि पंजाब के विभिन्न स्थानों में काले रंग के पौधे लगाए जा रहे हैं और वे पौधे अत्यन्त कुरूप, काले, भयावह और छोटे क़द के हैं। मैंने कुछ लगाने वालों से पूछा कि ये कैसे वृक्ष हैं। उन्होंने उत्तर दिया कि यह ताऊन के वृक्ष हैं जो शीघ्र ही देश में फैलने वाली है और इल्हाम हुआ कि الامراض تشاع و النفوس تضاع اِنّ	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह नम्बर - 32

भविष्यवाणी नं. 31 का सबूत गुज़र चुका है और भविष्यवाणी नं. 32 को हम ने अपने 6 फ़रवरी 1898 ई. के विज्ञापन में और 17 मार्च 1901 ई. में प्रकाशित किया था जो बहुत सफ़ाई से पूरी हो गई। जब यह भविष्यवाणी 6 फ़रवरी 1898 ई. में प्रकाशित हुई तब पंजाब में केवल दो ज़िले लिप्त थे परन्तु इसके बाद 23 ज़िले और इस रोग से ग्रस्त हो गए और पौने दस माह में तीन लाख सोलह हज़ार केस हुए और दो लाख अट्ठारह हज़ार सात सौ निन्नयानवे मौतें हुईं। देखो सरकारी नक़्शे।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 32		اللہ لا یغیّر ما بقومٍ حتّٰی یغیّروا ما بأنفسھم انّہٗ اٰوی القرْیۃ अर्थात् यह ताऊन जो देश में प्रारंभ हो गई है यह कभी दूर नहीं होगी और यह रोग फैल जाएगा और बहुत मौतें होंगी तथा कम नहीं होंगी जब तक लोग अपने कर्मों का सुधार न करें। परन्तु उस सामर्थ्यवान ख़ुदा ने क़ादियान को बिखरने और अस्त-व्यस्त होने से बचा लिया है। अर्थात् क़ादियान पर ऐसी तबाही नहीं आएगी जो इस क़स्बे को पूर्ण रूप से बरबाद कर दे और मिटा दे तथा अस्त-व्यस्त कर दे और क़ादियान का क़स्बा ताऊन से पूर्णतया सुरक्षित भी रह सकता है परन्तु बशर्ते तौब: अर्थात् इस शर्त से कि समस्त अपनी गालियों और दुष्कर्मों और बुराइयों से तौब: कर लें। देखो विज्ञापन ताउन प्रकाशित 6 फ़रवरी 1898 और 17 मार्च 1901। यह स्वप्न और इल्हाम था कि मुझे दिखाया गया और और बताया गया और फिर विज्ञापन 6 फरवरी 1898 से चार वर्ष के बाद पंजाब में सामान्यतया ताऊन फैल गई। अत: 1 अक्टूबर 1901 से 19 जुलाई 1902 तक पौने दस माह में इतनी फैल गई कि पंजाब के कुल 23 ज़िले ताऊन ग्रस्त हो गए। देखो सरकारी नक़्शे पंजाब में ताऊन से	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या -32		संबंधित। ये भविष्यवाणी ऐसे समय में की गई थी अर्थात् फ़रवरी 1898 में जबकि सम्पूर्ण पंजाब में केवल दो ज़िले ताऊन ग्रस्त थे। देखो अख़बार आम 2 अगस्त 1902 ई. जिसमें सरकारी गवाही दर्ज है।	
भविष्यवाणी संख्या - 33	आज से 9 वर्ष पूर्व	इसी प्रकार उस युग में जबकि बम्बई में भी ताऊन का नामोनिशान न था। ताऊन के आने के लिए दुआ की गई और वह दुआ स्वीकार हो गई। अत: 1311 हिज्री में जिस को 9 वर्ष हो गए यह दुआ रूपी शेर हमामतुल बुश्रा में मौजूद है- فَلَمَّا طَغَى الفِسْقُ الْمُبِيْدُ بِسَيْلِهٖ تَمَنَّيْتُ لَوْ كَانَ الْوَبَاءُ الْمُتَبِّرُ देखो पृष्ठ प्रथम क़सीद: हमामतुल बुश्रा। अर्थात् जब पापों का तूफ़ान मचा तो मैंने ख़ुदा से चाहा कि ताऊन आए।	कुछ वर्ष के बाद बम्बई में ताऊन फ़ूट पड़ी
भविष्यवाणी संख्या - 34	1897 ई.	ऐसा ही ताऊन के बारे में पुस्तक सिराजे मुनीर पृष्ठ-59 में भविष्यवाणी की गई है कि जिन लोगों ने लेखराम के बारे में भविष्यवाणी को स्वीकार नहीं किया था उन पर भी ताऊन की विपत्ति उतरेगी। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है- إِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا (अलआराफ़-153)	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 34		अर्थात् जिन्होंने बछड़े को सम्मान दिया और उसकी उपासना की उन पर प्रकोप आएगा और उन पर अपमान की मार पड़ेगी। तो दुनिया में प्रकोप उतरने से अभिप्राय ताऊन है और उसी पुस्तक के पृष्ठ-60 में ताऊन के बारे में यह इल्हाम भी लिखा था يامسيح الخلق عدوانا अर्थात् ताऊन के प्रभुत्व के समय लोग कहेंगे कि हे मसीह हमारी सिफ़ारिश कर। और इस पुस्तक के प्रकाशित करने पर आज से जो 18 जुलाई 1902 ई. है पांच वर्ष गुज़र गए और उस युग में ताऊन के फैलने की कुछ भी आशा न थी तो देखो यह कितनी अज़ीमुश्शान ग़ैब की ख़बरें हैं जो बराबर बाईस वर्ष से निरन्तर तौर पर प्रकाशित हो रही हैं तथा निरन्तर ख़बर दी गई कि देश में ताऊन आने वाली है।	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

उन दिनों भविष्यवाणी नं. 33, 34 के सबूत में सरकारी नक़्शे पर्याप्त हैं जिन की हम पृष्ठ 153, 154 में चर्चा कर आए हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या - 35	मुहर्रम 1312 हिज्री	समय नौ वर्ष गुज़र जाता है कि पुस्तक सिर्रुल ख़िलाफ़त के पृष्ठ 62 में विरोधियों पर तबाही पड़ने और ताऊन उतरने के लिए दुआ की गई थी। तो अब तक हज़ारों विरोधी ताऊन और अन्य आपदाओं से मर चुके हैं और वह दुआ यह है- وخذ ربّ مَن عادی الصّلاح و مُفسدًا و نزّل علیہ الرِجْز حقًّا و دَمّرِ وَفَرِّجْ کُرُوبِیْ یَا کَرِیْمی وَ نَجّنِیْ و مزّق خصیمی یَا الٰھی و عَفّرِ **अनुवाद-** अर्थात् हे मेरे ख़ुदा प्रत्येक पर जो उपद्रवी है ताऊन उतार या किसी दूसरी मौत से मार या कोई और गिरफ़्त कर और मुझे ग़मों से मुक्ति दे और मेरे दुश्मन को टुकड़े-टुकड़े कर और ख़ाक में मिला दे और ख़ाक से आलूदा कर। अत: देश में ताऊन के उतरने से हज़ारों ईर्ष्यालु जो हमारे सिलसिले के दुश्मन हैं ताऊन से मरे। अभी आगे की ख़बर नहीं इसके अतिरिक्त जो चयनित मौलवी थे कुछ उनमें से अन्धे हो गए और कुछ काने हो गए और कुछ	ताऊन के दिनों में

देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

भविष्यवाणी नं. 35 के सबूत में सरकारी नक़्शे पर्याप्त हैं और ये भविष्यवाणी किताब सिर्रुल खिलाफ़त में मौजूद है

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	**जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।**	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 35		पागल और उनमें से बहुत से मर गए और इस दुआ के बाद मौलवी शाह[1]दीन दीवाना हो गया। रशीद[2]अहमद अंधा हो गया। मुहम्मद[3]बख़्श ताऊन से मरा तीनों लुधियाना के मौलवी मारे गए। मुहम्मद[7]हसन भीं मारा गया। ग़ुलाम दस्तगीर[8]क़सौरी मारा गया। [9]मुहियुद्दीन लखूखे वाला मारा गया। और असग़र अली की एक आँख जाती रही और मौलवी मुहम्मद हुसैन अफ़्फ़ीरी की दुआ के अन्तर्गत आ गया क्योंकि 'अफ़रा' शब्दकोष में ख़ाक में मिलने को कहते हैं। अत: वह कुफ्र की जमादारी से ख़ुदा के आदेश से रोका गया और ज़मींदारी की धूल-मिट्टी में मिलाया गया क्योंकि मिट्टी में लिप्त होना ज़मींदारी की विशेषताओं में से है। कारण यह है कि हर समय मिट्टी से ही काम पड़ता है। इतना तो सामने आ गया अभी पता नहीं कि इसका भाग कितना बाक़ी है।	
भविष्यवाणी संख्या - 36	1311 हिज्री	पुस्तक नूरुल हक़ के पृष्ठ 35 से 38 तक ख़ुदा के इल्हाम के द्वारा ख़बर दी गई है जो छ: वर्ष बाद ज़ाहिर हुई। पृष्ठ 35 में यह इबारत है- اِعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ نَفَثَ فِیْ رَوْعِیْ اَنَّ هٰذَا الْخُسُوْف وَالکسوف فِیْ رَمَضَان اٰیَتَانِ مخوفتانِ لِقَوْم اتّبعُوا الشیْطان.......... وَ لَئِنْ اَبَوا فَاِنَّ الْعَذاب قَدْ حَان۔ अनुवाद :- ख़ुदा ने अपने इल्हाम के साथ मेरे हृदय में फूंका है कि सूर्य ग्रहण और चन्द्रमा ग्रहण एक अज़ाब का मुक़द्दमा है अर्थात् ताऊन का जो निकट है।	ताऊन के दिनों में

देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

भविष्यवाणी 35 का प्रमाण गुज़र चुका है वही प्रमाण भविष्यवाणी न. 36 का है।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या - 37	1883 ई.	आर्यों के लीडर पंडित दयानन्द की मृत्यु की सूचना उसकी मृत्यु से तीन माह पूर्व दी गई और लाला शरमपत इत्यादि आर्यों निवासी क़ादियान को वह भविष्यवाणी सुनाई गई। देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 535। यदि इन लोगों को क़सम दी जाए तो यह सच-सच कह देंगे। पंडित दयानन्द के मरने पर हमें बहुत अफ़सोस हुआ इसलिए कि वह **हमारे कुछ प्रश्नों के उत्तर देने से** पहले ही गुज़र गया। एक प्रश्न यह था कि आवागमन अर्थात् कर्मों के दण्ड से योनि परिवर्तन होना यहां तक कि कीड़े-मकोड़े, कुत्ते-बिल्ले बन जाना यह तो आर्यों के कथनानुसार करोड़ों वर्षों से इनके गले पड़ा हुआ है परन्तु इसके बावजूद कि वे बहुत थोड़े थे असीमित न थे अब तक मुक्ति नहीं हुई। या तो परमेश्वर मुक्ति देना नहीं चाहता था अथवा कोई नियम मुक्ति का वेद में निर्धारित नहीं और स्पष्ट है कि विश्वास के बिना मनुष्य पाप से रुक नहीं सकता। वेद ने कोई माध्यम परमेश्वर पर विश्वास लाने का प्रस्तुत नहीं किया इसलिए आर्यों के पास ख़ुदा को पहचानने का कोई निश्चित तरीक़ा नहीं। अत: शायद इसी कारण से कीड़ों मकोड़ों की अब तक मुक्ति नहीं होती। एक तो यही प्रश्न था।	30 अक्टूबर 1883 ई. भविष्यवाणी से लगभग तीन माह पश्चात्

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 37		**दूसरा** यह कि आर्य की स्त्री एक ही समय में एक पति तथा एक अन्य व्यक्ति बतौर याराना रख सकती है क्या यह भड़ुआपन नहीं? **तीसरा** यह कि यदि परमेश्वर रूहों का स्रष्टा नहीं और रूहें किसी समय पाप से मुक्ति पा सकती हैं तो जैसा कि वेद का नियम है दुनिया का सिलसिला हमेशा के लिए चल नहीं सकता और परमेश्वर ख़ाली हाथ रह जाता है क्योंकि जो व्यक्ति पाप से मुक्ति पा गया वह तो परमेश्वर के हाथ से गया, इसलिए कि उसका कोई पाप नहीं रहा। इसलिए वह दोबारा दुनिया में नहीं आ सकता और इस से वेद का यह उसूल झूठा होता है कि रूहें बार-बार दुनिया में आती हैं। इन बातों से किसी बात का उत्तर दयानन्द ने न दिया और अजमेर में जाकर असफलता की हालत में मर गया।	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

इस भविष्यवाणी का गवाह लाला शरमपत आर्य और कुछ मुसलमान हैं। परन्तु शरमपत की गवाही सुदृढ़ है केवल क़सम की आवश्यकता है।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या - 38	1880-1882 ई.	एक बार ख़ुदा की यह वह्यी मेरी जीभ पर जारी हुई कि अब्दुल्लाह ख़ान डेरा इस्माईल ख़ान वह सुबह का समय था और संयोग से कुछ हिन्दू उस समय मौजूद थे। उनमें से एक हिन्दू का नाम बिशनदास था। मैंने सबको सूचना दी कि ख़ुदा ने मुझे यह समझाया है कि आज इस नाम के एक मनुष्य की ओर से कुछ रुपया आएगा बिशनदास बोल उठा कि मैं इस बात की परीक्षा करूंगा और मैं डाकख़ाने में जाऊंगा चूंकि क़ादियान में उन दिनों में डाक दोपहर के बाद दो बजे आती थी वह उसी समय डाकख़ाने में गया और उत्तर लाया कि डाकमुंशी से मौखिक तौर पर मालूम हुआ कि वास्तव में डेरा इस्माईल ख़ान से एक व्यक्ति अब्दुल्लाह ख़ान ने जो एक्सट्रा असिस्टेन्ट है रुपया भेजा है और फिर उसने बहुत आश्चर्य और हैरत में पड़कर पूछा कि यह क्योंकर मालूम हो गया। मैंने उत्तर दिया कि वह ख़ुदा जिसको तुम लोग नहीं पहचानते उसने यह सूचना दी है। देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-226	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह - 38

भविष्यवाणी न. 38 का गवाह वही बिशनदास है जो क़ादियान का रहने वाला है और अभी तक ज़िन्दा मौजूद है।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या - 39	1880-1882 ई.	एक बार क़ादियान का एक आर्य जो सरगर्म आर्य है मलावामल नामक व्यक्ति क्षय रोग में ग्रस्त हो गया और तप पीछा नहीं छोड़ता था और निराशा के लक्षण प्रकट होते जाते थे। अतः वह एक दिन मेरे पास आकर इलाज की मांग की और फिर अपने जीवन से निराश होकर बेचैनी से रोया और मैंने उसके लिए दुआ की। ख़ुदा तआला की ओर से उत्तर आया قلنا یا نار کونی بردًا وسلامًا۔ अर्थात् हमने कहा कि हे तप की अग्नि सर्द और सलामती हो जा। अतः इसके बाद उसी सप्ताह में वह हिन्दू अच्छा हो गया और अब तक ज़िन्दा मौजूद है। बराहीन अहमदिया पृष्ठ-227	एक सप्ताह के अन्दर
भविष्यवाणी संख्या - 40	1880-1882 ई.	जब पुस्तक बराहीन अहमदिया के कुछ भाग तैयार हो गए तो मुझे ख़याल आया कि इनको छाप दिया जाए परन्तु मेरे पास कुछ पूंजी नहीं थी तब मैंने ख़ुदा के पास दुआ की कि लोग मदद करने की ओर ध्यान दें। उसी समय थोड़ी सी ऊंघ होकर उत्तर मिला (क्रियात्मक तौर पर नहीं)	तीन वर्ष तक पुस्तक के प्रकाशन में -----रहा

देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

भविष्यवाणी नं. 39 का गवाह स्वयं मलावामल आर्य है उसे ख़ूब याद होगा कि कैसे निराशा के समय में यह इल्हाम उसको बताया गया और फिर एक सप्ताह तक अच्छा हो गया। और भविष्यवाणी नं. 40 के बहुत गवाह हैं और कुछ यहां मौजूद हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 40		तब बहुत सी कोशिश के बावजूद किसी ने एक पैसा भी नहीं भेजा और एक लम्बा समय गुज़र गया। देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 225	
भविष्यवाणी संख्या - 41	1880-1882 ई.	जब मुझे ख़ुदा तआला की ओर से यह सूचना मिली कि क्रियात्मक तौर पर तुम्हारी कुछ सहायता नहीं की जाएगी तो एक लम्बे समय तक कोई भी मेरी ओर आकृष्ट नहीं हुआ और लोगों ने लापरवाही का व्यवहार किया और पुस्तक का छपना विलम्ब में पड़ा रहा तब एक दिन मग़रिब के नकट फिर दुआ के लिए दिल में जोश पैदा हुआ तो प्रतापी ख़ुदा की ओर से यह वह्यी मेरी जीभ पर जारी हुई هُزِّ اِلَيْكَ بجذع النخلة تَساقط عَلَيْك رطبًا جنيًا۔ देखो बराहीन 226 अर्थात् खजूर के तने को हिला तुझ पर ताज़ा से ताज़ा खजूरें गिरेंगी। तब मैंने कुछ प्रसिद्ध लोगों की ओर पत्र लिखे तो इतना रुपया आ गया कि मैं पहला और दूसरा भाग बराहीन अहमदिया का इस रुपये के द्वारा छाप सका। परन्तु अभी मेरी हालत मामूली थी और केवल एक पुराने ख़ानदान की कुछ ख्याति कुछ दिलों को ध्यान दिलाने के लिए ख़ुदा तआला की आज्ञा और आदेश से प्रेरक हो गई थी।	तीन वर्ष पश्चात्

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	**जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।**	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 41		तत्पश्चात् ख़ुदा तआला ने इरादा किया कि व्यक्तिगत प्रतिष्ठा की दृष्टि से मुझे दुनिया में मान्यता प्रदान करे। तब इसके बाद ये समस्त इल्हाम हुए जो कि बराहीन अहमदिया में दर्ज हैं। अर्थात् القيت عليك محبّةً مِنِّی ولتصنع علٰی عینی سینصرك رجال نوحی الیهم من السّماءِ یأتون من کل فج عمیق۔ یأتیك من کلّ فج عمیق۔ ولا تصعّر لخلق اللّٰہ ولا تسئم من الناس۔ (बराहीन अहमदिया पृष्ठ-241,242) **अनुवाद-** अर्थात् मैंने अपनी ओर से तेरी मुहब्बत तैयार दिलों में डाल दी ताकि तू मेरी आंखों के सामने पोषण पाए। शीघ्र ही लोग तेरी सहायता करेंगे जिनकी ओर मैं वह्यी भेजूंगा। वे प्रत्येक दूर के मार्ग से तेरे पास आएंगे और नाना प्रकार के उपहार नक़द तथा वस्तुएं हर एक मार्ग से तेरे पास लाएंगे। तो इसके बाद यह भविष्यवाणी एक बीज की तरह बढ़ती गई यहां तक कि इन दिनों में जो 1320 हिज्री है उस युग की तुलना में जब मुझ से दो-तीन आदमी सम्बन्ध रखते थे और वह भी बाद में।	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

डाकख़ानों के रजिस्टर इस बात के गवाह हैं कि इसके बाद कितना रुपया आया। और सरकारी लेख गवाह हैं कि कितने मेहमान आए।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 41		अब एक लाख से कुछ ★ अधिक इस जमाअत की संख्या पहुंच गई है और हर ओर से जब कोई इन्सान आता है या किसी नए व्यक्ति की ओर से कोई उपहार आता है तो वह एक निशान प्रकट होता है और चूंकि इस जगह आकर बैअत करने वाले पचास हज़ार से कम नहीं होंगे। और जो रुपया और उपहार विभिन्न समयों में आए वह दस लाख से कम नहीं होंगे। इसलिए यह बात बिलकुल सही और सच है कि उन निशानों के अतिरिक्त जो इस नक़्शे में लिखे गए हैं कम से कम दस लाख और ऐसे निशान हैं जो इल्हाम ياتون من كل فج عميق و ر ياتيك من كل فج عميق से सही सिद्ध होते हैं और उन निशानों का एक सिलसिला वह है जो इल्हाम اِنِّیْ مُهِیْنٌ مَنْ اَرَادَ اِهَانَتَكَ के द्वारा प्रकटन में आए हैं। इस स्थान पर एक और नुक़्तः स्मरण रखने योग्य है वह यह है कि यह वह्यी अर्थात्	

★**हाशिया :-** मैं समझता था कि बम्बई में मेरी बैअत करने वाले छः सात से अधिक नहीं। अब सरकारी चिट्ठी से ज्ञात हुआ कि वर्णित भाग से बैअत करने वाले 11087 आदमी हैं सरकारी तहरीर है मेमो नंबर 19143 दिनांक 2 सितंबर 1902 ई. पूजे से, उत्तर चिट्ठी दिनांक 13 अगस्त 1902 ई. मर्क़ूमा (मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब असिस्टेंट सेक्रेटरी अंजुमन इशाअते इस्लाम। निवेदन है कि फ़िर्क़ा अहमदिया की संख्या पिछली गणना में 11087 थी। हस्ताक्षर हेड कम्पाइलर। बजाए प्रोवेनशल सुप्रीटेंडेंट मर्दम शुमारी।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 41		هزی الیک بجذع النخلة تساقط علیک رطبًا جنیًا۔ यह हज़रत मरयम को उस समय वह्यी हुई थी कि जब उनका लड़का ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुआ था और वह कमज़ोर हुई थीं और ख़ुदा तआला ने इसी पुस्तक बराहीन अहमदिया में मेरा नाम भी मरयम रखा और मरयम सिद्दीक़ा की तरह मुझे भी आदेश दिया و کن من الصالحین الصدّیقین۔ (देखो पृष्ठ-242) बराहीन अहमदिया। तो यह मेरी वह्यी अर्थात् هزّ الیک इस बात की ओर संकेत करती है कि सिद्दीक़ियत का जो गर्भ था उस से बच्चा पैदा हुआ जिसका नाम ईसा रखा गया और जब तक वह कमज़ोर रहा मरयमी विशेषताएं उसका पोषण करती रहीं और जब वह अपनी शक्ति में आया तो उसको पुकारा गया	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 41		يَاعِيۡسٰى اِنِّىۡ مُتَوَفِّيۡكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ देखो पृष्ठ 556 बराहीन अहमदिया। यह वही वादा था जो सूरह तहरीम में किया गया और अवश्य था कि उस वादे के अनुसार इस उम्मत में से किसी का नाम मरयम होता और फिर इस प्रकार उन्नति करके उससे ईसा पैदा होता और वह इब्ने मरयम कहलाता। अतः वह मैं हूँ। वह्यी هزّى اليك मरयम को भी हुई और मुझे भी। परस्पर अन्तर यह है कि उस समय मरयम शारीरिक कमज़ोरी में लिप्त थी और मैं आर्थिक कमज़ोरी में ग्रस्त था।	
शेष भविष्यवाणी संख्या - 42		अल्लाह तआला के महान निशानों में से एक वह निशान है जो उस शक्तिमान ख़ुदा ने डिप्टी अब्दुल्लाह आथम ईसाई के बारे में प्रकट किया और उसके लिए यह अवसर प्राप्त हुआ कि मई और जून 1893 ई. में डॉक्टर मार्टिन क्लार्क की तहरीक से इस्लाम और ईसाइयत में एक मुबाहसः निर्णय पाया। उस मुबाहसे में ईसाइयों की	

देखने वाले जीवित गवाह - 42

भविष्यवाणी नं. 42 अर्थात् अब्दुल्लाह आथम के बारे में मैंने जो भविष्यवाणी की थी उसका सबूत उस पुस्तक के मुबाहसे में मौजूद है जिसका नाम जंग मुक़द्दस है और उसी से सिद्ध है कि यह भविष्यवाणी क्यों की गई। अर्थात् आथम ने आंहज़रत सल्लल्लाहु

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 42		ओर से डिप्टी अब्दुल्लाह आथम चुना गया और मुसलमानों की ओर से मैं प्रस्तुत हुआ। अब्दुल्लाह आथम ने मुबाहसे से कुछ दिन पूर्व अपनी पुस्तक अन्दरूना बाईबल में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में दज्जाल का शब्द लिखा था जैसा कि पुस्तक जंगे मुक़द्दस के अन्तिम पृष्ठ में इसकी चर्चा है। उसकी वह शरारत और धृष्टता मुझे बहस के समस्त दिनों में याद रही। और मैं दिल-व-जान से चाहता था कि उसकी भर्त्सना के बारे में ख़ुदा तआला से कोई भविष्यवाणी पाऊं। तो मैंने आथम से एक हस्ताक्षरित पत्र भी इसी उद्देश्य से ले लिया था ताकि वह भविष्यवाणी के समय सामान्य ईसाइयों की तरह मुझे कष्ट पहुंचाने के लिए किसी अदालत की ओर न दौड़े। अत: मैं पन्द्रह दिन तक बहस में व्यस्त रहा और गुप्त तौर पर आथम की डांट-डपट के लिए दुआ मांगता रहा। जब बहस के दिन समाप्त हो गए तो मैंने ख़ुदा तआला की ओर से सूचना पाई कि यदि	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

अलैहि वसल्लम को दज्जाल कहा था। और फिर भविष्यवाणी को सुनकर लगभग सत्तर लोगों के सामने रुजू किया जिन में बिरादरम हकीम नूरुद्दीन साहिब और बिरादरम मौलवी अब्दुल करीम साहिब और बिरादरम शेख रहमतुल्लाह साहिब मालिक बम्बई हाऊस लाहौर

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 42		आथम उस धृष्टता और ग़ुस्ताख़ी से तौब: और रुजू नहीं करेगा जो उसने दज्जाल का शब्द आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में अपनी पुस्तक में लिखा तो वह पन्द्रह महीने के अन्दर हाविय: में गिराया जाएगा। तो यह ख़ुदा का आदेश पाकर बहस के समापन के दिन एक बड़ी जमाअत के सामने जिसमें ईसाइयों की ओर से डॉक्टर मार्टिन क्लार्क तथा तीस के लगभग अन्य ईसाई थे। और मेरी जमाअत के लोग भी तीस या चालीस के लगभग थे, जिनमें से बिरादरम मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब, बिरादरम मौलवी अब्दुल करीम साहिब, बिरादरम शेख़ रहमतुल्लाह साहिब, बिरादरम मुंशी ताजुद्दीन साहिब एकाउन्टेण्ट रेलवे दफ्तर लाहौर, बिरादरम ख़लीफ़ा नूरुद्दीन साहिब, बिरादरम अब्दुल अज़ीज़ ख़ान साहिब क्लर्क दफ्तर एक्ज़ामिनर रेलवे लाहौर इत्यादि दोस्त मौजूद थे। मैंने डिप्टी अब्दुल्लाह आथम को कहा कि आज यह मुबाहस: शास्त्रीय और बौद्धिक रंग में	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

और बिरादरम ख़लीफा नूरुद्दीन साहिब ताजिर जम्मू, बिरादरम मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब कपूरथला, बिरादरम ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब प्लीडर पेशावर और ख़लीफ़ा रजबुद्दीन साहिब लाहौर, मिंया मुहम्मद चट्टू साहिब लाहौर, मुंशी ताजुद्दीन साहिब लाहौर, मौलवी

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 42		तो समाप्त हो गया। परन्तु एक अन्य रंग का मुक़ाबला शेष रहा जो ख़ुदा की ओर से है। और वह यह है कि आपने अपनी पुस्तक अन्दरूना बाइबल में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दज्जाल के नाम से पुकारा है और मैं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सच्चा रसूल जानता हूँ और इस्लाम धर्म को ख़ुदा की ओर से होने पर विश्वास रखता हूँ। अतः यह वह मुक़ाबला है कि आकाशीय फ़ैसला इसका निर्णय करेगा। और वह आकाशीय फ़ैसला यह है कि हम दोनों में से जो व्यक्ति अपने कथन में झूठा है और अकारण सच्चे रसूल को झूठा और दज्जाल कहता है और सच का दुश्मन है वह आज के दिन से पन्द्रह महीने तक उस व्यक्ति के जीवन में ही जो सच पर है हाविय: में गिरेगा। बशर्ते कि सच की ओर रुजू न करे। अर्थात् ईमानदार और सच्चे रसूल को	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

अल्लाह दिया साहिब लुधियाना, मुंशी मुहम्मद अरोड़ा साहिब कपूरथला, मियां मुहम्मद ख़ान साहिब कपूरथला, और शेख़ नूर अहमद साहिब एडीटर अख़बार रियाज़ हिन्द अमृतसर मालिक रियाज़ हिन्द प्रेस अमृतसर, मियां नबी बख़्श साहिब ताजिर पशमीना अमृतसर, मियां कुतुबुद्दीन मिसगर अमृतसर, मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, साहिबज़ादा सिराजुल्लाहक़ साहिब, काज़ी ज़ियाउद्दीन साहिब, मौलवी अब्दुल्लाह सिन्नौरी साहिब, शेख़ चिराग़ अली साहिब इत्यादि इस भविष्यवाणी के गवाह हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 42		दज्जाल कहने से न रुके तथा धृष्टता और गालियां न छोड़े। यह इसलिए कहा गया कि केवल किसी धर्म का इन्कार करना दुनिया में दण्ड के योग्य नहीं ठहरता। अपितु धृष्टता और ग़ुस्ताख़ी और गाली दण्डनीय ठहराती है। अत: जब आथम को ऐसी सभा में जिसमें सत्तर से अधिक लोग होंगे यह भविष्यवाणी सुनाई गई तो उसका रंग फ़क़ और चेहरा पीला हो गया और हाथ कांपने लगे। तब उसने अविलम्ब अपनी जीभ मुंह से निकाली और दोनों हाथ कानों पर रख लिए और हाथों को सिर सहित हिलाना शुरू किया जैसा कि एक भयभीत अपराधी एक आरोप से सख़्त इन्कार करके तौब: और विनय के रंग में स्वयं को प्रकट करता है और बार-बार थरथराते हुए जीभ से कहता था कि तौब: तौब: मैंने अनादर और ग़ुस्ताख़ी नहीं की तथा मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कदापि, कदापि दज्जाल नहीं कहा और कांप रहा था। इस दृश्य को न केवल मुसलमानों ने देखा अपितु उस समय ईसाइयों की भी एक बड़ी जमाअत मौजूद थी जो इस विनय और निवेदन को देख रही थी। इस इन्कार से उसका यह मतलब मालूम होता था कि मेरी उस इबारत के जो मैंने अन्दरूना बाइबल में लिखी है और मायने	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 42		हैं। बाहरहाल उसने उस सभा में लगभग सत्तर लोगों के सामने दज्जाल कहने के शब्द से रुजू कर लिया और यही वह शब्द था जो इस भविष्यवाणी का मूल कारण था। इसलिए वह पन्द्रह महीने के अन्दर मरने से बच रहा क्योंकि जिस ग़ुस्ताख़ी के शब्द पर भविष्यवाणी का आधार था वह शब्द उसने छोड़ दिया तथा संभव न था कि ख़ुदा अपनी शर्त को याद न करे। और यद्यपि रुजू की शर्त से लाभ उठाने के लिए इतना ही पर्याप्त था परन्तु आथम ने केवल यही नहीं किया कि अपने दज्जाल कहने से रुका अपितु उसी दिन से जो उसने भविष्यवाणी को सुना उसने इस्लाम पर आक्रमण करना सर्वथा त्याग दिया और भविष्यवाणी का भय उसके दिल पर दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया। उसका आराम और चैन जाता रहा, यहां तक कि उसने अपनी हालत में परिवर्तन किया कि अपने पहले तरीक़े को जो हमेशा मुसलमानों से धार्मिक बहस करता था और इस्लाम के खण्डन में पुस्तकें लिखता था बिलकुल छोड़ दिया और प्रत्येक अपमान एवं तिरस्कार के वाक्य से अपना मुख बन्द कर लिया अपितु उसके मुख पर मुहर लग गई और ख़ामोश तथा शोकग्रस्त रहने लगा। उसका ग़म इस स्तर पर पहुंच गया कि अन्ततः वह जीवन	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 42		से निराश होकर बेचैनी के अपने परिजनों की अन्तिम मुलाक़ात के लिए दीवानगी की हालत में शहर-शहर फिरता रहा और इसी मुसाफ़िरों वाली हालत में अन्तत: फ़ीरोज़पुर में मर गया। और यह प्रश्न कि उसने अपनी धृष्टता के शब्द से सामान्य सभा में रुजू कर लिया और बार-बार विनय एवं निवेदन से दज्जाल कहने के शब्द से विमुखता व्यक्त की तो फिर इसके बावजूद क्यों पकड़ा गया और क्यों शीघ्र उन्हीं दिनों में मर गया। इसका उत्तर यह है कि चूंकि वह मुबाहल: का निशान हो चुका था, इसलिए उन भविष्यवाणियों के अनुसार जो अंजाम आथम पुस्तक के पहले पृष्ठ में मौजूद हैं जो आथम के जीवन में ही पन्द्रह महीने गुज़रने के बाद की गई थीं उसका मरना आवश्यक था क्योंकि उन भविष्यवाणियों में स्पष्ट शब्दों में लिखा गया था कि आथम क़सम से इन्कार, गवाही के छुपाने और पुन: धृष्टता करने के बाद शीघ्रतर मर जाएगा। इसलिए जब उसने इन अपराधों को किया तो हमारे अन्तिम विज्ञापन से सात महीने बाद मर गया और इसलिए उसका मरना बहरहाल आवश्यक था। कि भविष्यवाणी के निबंध में यह बात सम्मिलित थी कि जो झूठा है वह सच्चे से पहले मरेगा। इसलिए उसने	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 42		रुजू का लाभ केवल इतना उठाया कि पन्द्रह माह में न मरा परन्तु बाद में जब वे पन्द्रह महीने गुज़रने के पीछे अपने रुजू पर भी क़ायम न रह सका और उसके दिल में वह भय न रहा जो पन्द्रह महीने की अवधि के अन्दर था और झूठ बोला तथा कहा कि मैं भविष्यवाणी से कदापि नहीं डरा। और जब चार हज़ार रुपये नक़द देने के वादे से क़सम के लिए बुलाया गया तो क़सम भी न खाई। इसलिए ख़ुदा ने इन्कार और गवाही छुपाने तथा धृष्टता के पश्चात् हमारे अन्तिम विज्ञापन से सात महीने के अन्दर अर्थात् पन्द्रह महीने के अन्दर ही मार दिया और 27 जुलाई 1896 ई. फ़ीरोज़पुर के स्थान पर उसके जीवन का अन्त हो गया। इस स्थिति में जो पन्द्रह महीने भविष्यवाणी की मीआद निर्धारित हुए थे अन्त में आथम उस दायरे के अन्दर ही मरा और पन्द्रह महीने की अवधि बहरहाल क़ायम रही। यह भविष्यवाणी ख़ुदा तआला की ओर से जमाली रंग में थी अर्थात् कोमलता और नर्मी के लिबास में। चूंकि आथम ने अपने आचरण में नर्मी ग्रहण की और उन सख़्त गालियों को ग्रहण न किया जिसको लेखराम ने ग्रहण किया था। इसलिए ख़ुदा तआला ने भी उस से नर्मी का ही बर्ताव	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 42		किया और उसे छूट देने और अन्त में मारने से जमाली रंग का निशान दिखाया। परन्तु लेखराम नितान्त मुंहफट और गालियां देता था इसलिए ख़ुदा ने उसमें जलाली (प्रतापी) रंग का निशान दिखा दिया। और जब मूर्खों तथा अंधों ने उस जमाली निशान की क़द्र न की जो आथम के द्वारा प्रकट हुआ तो ख़ुदा ने इसेक बाद लेखराम की मौत का निशान जो भयावह और जलाली (प्रतापी) था प्रकट कर दिया।	
भविष्यवाणी संख्या - 43	20 फरवरी 1886 तथा 20 फरवरी 1893	जब ईसाइयों ने आथम के निशान को जो साफ और स्पष्ट था अपने अन्याय और झूठ से छुपाना चाहा और मूर्ख मुसलमान भी उनके साथ मिल गए तथा ख़ुदा के महान निशान को स्वीकार न किया अपितु बड़ा फित्न: मचा दिया और इस बात को किसी ने न सोचा कि भविष्यवाणी का मूल उद्देश्य तो यह था कि झूठा सच्चे के जीवन में ही मरेगा और वह घटित हो गया। और न यह सोचा कि आथम ने तो एक भरी सभा में दज्जाल कहने से रुजू	हमारे अन्तिम विज्ञापन से छः महीने के पश्चात् यह भविष्यवाणी पूरी हुई 6 मार्च 1897 ई. को यह भविष्यवाणी चार साल पश्चात् हुई।

देखने वाले जीवित गवाह - 43

भविष्यवाणी नं. 43 के गवाह लाखों हैं क्योंकि विज्ञापनों तथा पुस्तकों द्वारा जिन का हवाला मूल इबारत में आया है उसे प्रचुरता से प्रकाशित किया गया था और लेखराम ने स्वयं भी उसे अपनी पुस्तक में प्रकाशित किया था और कई अख़बारों में यह भविष्यवाणी भी

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		कर लिया जो इस भविष्यवाणी का मूल कारण था तो वह फिर शर्त से क्यों लाभ न उठाता। तो जब ख़ुदा की भविष्यवाणी को लोगों ने संदिग्ध करना चाहा तो ख़ुदा तआला ने गवाही के तौर पर एक दूसरी भविष्यवाणी को प्रकट किया। अर्थात् लेखराम के बारे में भविष्वाणी जो बहुत शक्ति और प्रतिष्ठा से प्रतापी रंग में प्रकट हुई। अतः स्पष्ट हो कि भयावह तथा महान निशानों में से एक पंडित लेखराम की मौत का निशान है जिसकी भविष्यवाणी की बुनियाद मेरी पुस्तकें बरकातुद्दुआ, करामातुस्सादिक़ीन, और आईना कमालात इस्लाम हैं जिस घटना से पूर्व सूचना दी गई है कि लेखराम क़त्ल के द्वारा **छः वर्ष के अन्दर इस दुनिया से** कूच करेगा। और वह ईद से दूसरा दिन होगा ताकि यह स्थिति इस बात को बताए कि जिस दिन मुसलमानों के घर में ईद होगी उससे दूसरे दिन हिन्दुओं के घर में मातम (शोक) होगा। और यह भविष्यवाणी न केवल मेरी पुस्तकों में दर्ज हो गई अपितु लेखराम ने	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

प्रकाशित हुई थी और इसके पूरा होने पर कई सौ आदमियों ने जो हमारी जमाअत में से न थे और जिन में से बहुत से हिन्दू भी थे यह गवाही दी कि वास्तव में यह भविष्यवाणी पूरी

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		स्वयं अपनी पुस्तक में नक़ल करके अपनी क़ौम में इस भविष्यवाणी को घटित होने की समय से पहले प्रसिद्धि दे दी और जितनी प्रसिद्धि इस भविष्यवाणी के पूरा होने की हुई उसके वर्णन की इससे कम प्रसिद्धि न थी। यद्यपि घटित होने के समय आर्यों में बहुत मातम हुआ और मातम के द्वारा उन्होंने और भी प्रसिद्धि दी जिसका परिणाम यह हुआ कि ब्रिटिश इण्डिया के समस्त हिन्दू, मुसलमान और ईसाई अपितु हमारी सरकार स्वयं इस निशान की गवाह बन गई। अल्लाह अल्लाह यह कैसा भयावह और भयानक निशान प्रकट हुआ जिसने आंखें रखने वालों को ख़ुदा का चेहरा दिखा दिया। स्पष्ट हो कि लेखराम हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कट्टर दुश्मन और गालियां देता था। वह आर्यों का एक बड़ा एडवोकेट और लेक्चरार था और जगह-जगह भाषण देता फिरता था और इस्लाम के विरुद्ध कई एक पुस्तकें भी लिखी थीं, परन्तु बिलकुल बछड़ा थ। समझ और ज्ञान उसके पास नहीं आया था तथा उसके पास गाली, अश्लील बातें करना और नितान्त लज्जाजनक गालियों के अतिरिक्त और कुछ न था तथा	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

हुई। उन में से कुछ एक के नाम तिरयाक़ुल क़ुलूब पुस्तक में (लगभग 300) हमने लिखे हैं। यहां बतौर नमूना कुछ एक के नाम दर्ज करते हैं अन्यथा असल में हिन्दुओं, मुसलमानों या

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		यहां क़ादियान में भी मुबाहसे के लिए आया और फिर निशान का इच्छुक हुआ। जब 20 फरवरी 1886 ई. के विज्ञापन में यह लिखा गया कि लेखराम पेशावरी तथा कुछ अन्य आर्यों के प्रारब्ध के बारे में कुछ लिखा जाएगा। यदि किसी सज्जन पर ऐसी भविष्यवाणी असह्य गुज़रे तो वे सूचना दें ताकि उसके बारे में कोई भविष्यवाणी प्रकाशित न की जाए। तो इस पर पंडित लेखराम का कार्ड पहुंचा कि मैं इजाज़त देता हूँ कि मेरी मौत के बारे में भविष्यवाणी की जाए परन्तु मीआद निर्धारित होनी चाहिए। फिर पुस्तक करामातुस्सादिक़ीन प्रकाशित सफ़र माह 1311 हिज्री में यह भविष्यवाणी दर्ज की गई जिसके शब्द ये हैं- وعدنی ربّی واستجاب دعائی فی رجل مفسد عدو اللّٰہ ورسولہ المسمّٰی لیکھرام الفشاوری واخبرنی انہ من الھالکین۔ انہ کان یسب نبی اللّٰہ ویتکلم فی شانہ بکلمات خبیثۃ۔ فدعوت علیہ فبشرنی ربّی بموتہ فی	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

ईसाइयों का तथा अन्य धर्मों का कोई घर होगा जिस में इस भविष्यवाणी की सूचना न पहुंची हो और वे नाम ये हैं-ख़ान बहादुर सय्यद फ़तह अली शाह साहिब डिप्टी कलक्टर अन्हार ज़िला शाहपुर, हकीम अलाउद्दीन साहिब निवासी शेखूपुर, तहसील भेरा, शेख फ़ज़ल इलाही ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भेरा, जीवन सिंह नम्बरदार भाटांवाला, मलावामल, शरमपत आर्य क़ादियान,

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		ست سنین ان فی ذٰلک لآیۃ للطالبین۔ अर्थात् ख़ुदा तआला ने अल्लाह और रसूल के एक शत्रु के बारे में जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियां निकालता है और जीभ पर अपवित्र बातें लाता है जिसका नाम लेखराम है मुझे वादा दिया और मेरी दुआ सुनी। और जब मैंने उस पर बद्-दुआ की तो ख़ुदा ने मुझे ख़ुशख़बरी दी कि वह छः वर्ष के अन्दर मारा जाएगा। यह उनके लिए एक निशान है जो सच्चे धर्म को ढूंढ़ते हैं। फिर 20 फरवरी 1893 जो आईना कमालात-ए-इस्लाम के साथ है में यह भविष्यवाणी प्रकाशित की गई थी कि 20 फरवरी 1886 के विज्ञापन पर लेखराम ने बड़ी निर्भीकता पूर्वक एक कार्ड हमारे नाम लिखा था कि जो मौत की भविष्यवाणी मेरे बारे में चाहो प्रकाशित करो। तो उसके बारे में जब ध्यान किया गया तो अल्लाह तआला की ओर से यह इल्हाम हुआ- عجل جسد لہ خوار۔ لہ نصب و عذاب	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

मलावामल लाहौरी (भेरा), ज्वाला सिंह नम्बरदार कोटलोरान, तहसील रइया, हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहिब भेरवी, मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी, ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब बी.ए.एल.एल.बी. प्लीडर पेशावरी, मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए.एल.एल.बी. प्लीडर क़ादियान, मौलवी ग़ुलाम क़ादिर साहिब रजिस्ट्रार पेशावर, मीर नासिर नवाब साहिब

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		अर्थात् यह सामिरी का एक बछड़ा है जो मुर्दा होकर फिर आवाज़ निकालता है। अर्थात् रूहानियत से वंचित और निष्प्राण है और उस सामिरी के बछड़े की तरह उसका अंजाम अज़ाब है। यह संकेत इस बात की ओर था कि जैसा सामिरी का बछड़ा शनिवार के दिन टुकड़े-टुकड़े किया गया वैसा ही ये भी टुकड़े-टुकड़े किया जाएगा और फिर आग में जलाया जाएगा। तो यह उसके क़त्ल की ओर संकेत था। अर्थात् यह कि सामिरी के बछड़े की तरह अत्यन्त कठोरता पूर्वक टुकड़े-टुकड़े किया जाएगा। अतः ऐसा ही हुआ। लेखराम अत्यन्त कठोरता से काटा गया और उसके काटे जाने का दिन शनिवार था और शनिवार से पहले मुसलमानों की ईद थी और सामिरी के बछड़े के काटे जाने की भी यही तिथि थी अर्थात् शनिवार का दिन था और यहूदियों की ईद भी थी। और सामिरी का बछड़ा टुकड़े-टुकड़े करने के बाद जलाया गया था। ऐसा ही समस्त मामला लेखराम के साथ हुआ क्योंकि सर्वप्रथम क़ातिल	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

देहलवी। मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, ख़लीफ़ा नूरुद्दीन साहिब ताजिर कुतुब जम्मू, मुंशी ज़फर अहमद साहिब कपूरथला, शेख रहमतुल्लाह साहिब बम्बई हाउस लाहौर, मुंशी ताजदीन साहिब लाहौर, मियाँ नबी बख़्श साहिब रफूगर अमृतसर डॉक्टर काज़ी करम इलाही

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		ने उसकी आंतों को टुकड़े-टुकड़े किया फिर डॉक्टर ने छुरी के साथ उसके ज़ख़्म को अधिक खोला फिर शव पर डॉक्टरी परीक्षण की छुरी चली फिर वह आग में जलाया गया और अन्त में सामिरी के बछड़े की तरह दरिया में डाला गया। और जैसा कि सामिरी के बछड़े के बाद इस्राईल क़ौम में सख्त ताऊन पड़ी थी कि उन्होंने उस मूर्ति को ख़ुदा के मुक़ाबले पर श्रेष्ठता दी। ऐसा ही जब क़ौम ने लेखराम को बहुत श्रेष्ठता दी तो फिर इसके बाद ताऊन पड़ी। क्योंकि उन्होंने प्रतापवान ख़ुदा की भविष्यवाणी को तिरस्कार की दृष्टि से देखा और उस व्यक्ति को जिसका नाम ख़ुदा ने सामिरी का बछड़ा रखा था बहुत महानता के साथ याद किया और विज्ञापन में इस इल्हाम के बाद यह लिखा गया था कि आज 20 फरवरी 1893 को जब लेखराम के अज़ाब का समय मालूम करने के लिए ध्यान किया गया तो ख़ुदावंद करीम ने मुझ पर प्रकट किया कि आज से छः वर्ष के समय तक इस व्यक्ति का	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

साहिब अमृतसर, डॉक्टर ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहिब अमृतसर असिस्टेंट सर्जन रुड़की, सय्यद हामिद शाह साहिब सियालकोट, शेख मुहम्मद खान साहिब वज़ीराबाद, डॉक्टर मिर्ज़ा याक़ूब बेग़ साहिब प्रोफ़ेसर मैडीकल कॉलेज लाहौर,मुंशी नवाब ख़ान साहिब तहसीलदार

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		असभ्यताओं के दण्ड में जो उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में की हैं एक ऐसा अज़ाब उतरेगा जो मामूली कष्टों से निराला, विलक्षण और अपने अन्दर ख़ुदाई धाक रखता होगा और उस विज्ञापन में ज़ोर देकर लिखा गया था कि यदि मैं इस भविष्यवाणी में झूठा निकला तो प्रत्येक दण्ड को भुगतने के लिए तैयार हूँ। और मैं उस अज़ाब पर राज़ी हूंगा कि मेरे गले में रस्सा डालकर मुझे फांसी दी जाए। और इस भविष्यवाणी के साथ आथम की भविष्यवाणी की तरह कोई शर्त न थी अपितु अटल और निश्चित तौर पर वादा ख़िलाफ़ होने की स्थिति में अपने लिए कठोर से कठोर दण्ड स्वीकार करके भविष्यवाणी प्रकाशित की गई थी। और इसी 20 फरवरी 1893 के विज्ञापन के सिरे पर एक नज़्म भी लिखी गई थी जो लेखराम की मौत के रूप पर बुलन्द आवाज़ से इशारा करती है और इसी नज़्म में उस स्थान पर जहां बतौर भविष्यवाणी	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

गुजरात, मियाँ मैराजुद्दीन साहिब लाहौर, चौधरी रुस्तम अली साहिब कोर्ट इन्सपेक्टर, अम्बाला मुंशी अब्दुल अज़ीज़ साहिब मुहाफ़िज़ दफ़्तर देहली, सेठ अब्दुर्रहमान साहिब मद्रास, ज़ैनुद्दीन मुहम्मद इब्राहीम साहिब इंजीनियर बम्बई, शेख नूर अहमद साहिब मालिक रियाज़ हिन्द प्रेस अमृतसर, मिंया अब्दुल ख़ालिक़ साहिब अमृतसर, मियाँ कुतुबुद्दीन साहिब

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		न वाक्य लिखा है एक हाथ बनाया गया था जो लेखराम की ओर संकेत करता था और प्रकट करता था कि यह व्यक्ति क़त्ल की मौत से मरेगा। अब हम उस नज़्म को जो हमारी पुस्तक कमालात-ए-इस्लाम में हाथ के निशान सहित नौ वर्ष से प्रकाशित हो चुकी है। यहां दोबारा अक्षरशः नक़ल कर देते हैं और वह इस प्रकार से है:- عجب نوریست درجانِ محمدؐ عجب لعلیست درکانِ محمدؐ **अनुवाद-** मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जान में एक विचित्र नूर है और मुहम्मद की खान में एक अद्भुत लाल है। ز ظلمت ہا دلے آنگہ شود صاف کہ گردد از محبّان محمدؐ **अनुवाद-** दिल उस समय अंधकारों से पवित्र होता है जब वह मुहम्मद सल्लल्लाहु	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

मिसगर अमृतसर, डॉ इबादुल्लाह साहिब अमृतसर। शेख़ अब्दुर्रहमान साहिब क़ादियानी, शेख़ अब्दुर्रहमान साहिब, पीर मंज़ूर अहमद साहिब, साहिबज़ादा पीर सिराजुलहक़ साहिब नोमानी, मियाँ नजमुद्दीन साहिबस भैरवी, डॉक्टर मिर्ज़ा याक़ूब बेग़ साहिब प्रोफेसर मेडिकल कॉलेज लाहौर, मुंशी नवाब ख़ान साहिब तहसीलदार, गुजरात, चौधरी रुस्तम अली साहिब कोर्ट इन्सपेक्टर अंबाला, डॉक्टर ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहिब असिस्टेन्ट सर्जन रुड़की, लेखराम वाली भविष्यवाणी समय से पूर्व बहुत सी पुस्तकों में और विज्ञापनों में दर्ज हो चुकी थी जिनका ज़िक्र ऊपर आ चुका है और इसकी गवाह समस्त ब्रिटिश इण्डिया है।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		अलैहि वसल्लम के दोस्तों में दाख़िल हो जाता है। عجب دارم دلِ آن ناکسان را کہ رُو تا بند از خوانِ محمدؐ **अनुवाद-** मैं उन अयोग्य लोगों के दिलों पर आश्चर्य करता हूँ जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्तरख़्वान से मुंह फेरते हैं। ندانم ہیچ نفسے در دو عالم کہ دارد شوکت و شانِ محمدؐ **अनुवाद-** दोनों लोकों में से किसी को नहीं जानता जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सी शान रखता हो। خدا زان سینہ بیزار ست صد بار کہ ہست از کینہ داران محمدؐ **अनुवाद-** ख़ुदा उस व्यक्ति से बहुत अप्रसन्न है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से द्वेष रखता है। خدا خود سوزد آن کرم دنی را کہ باشد از عدوانِ محمدؐ **अनुवाद-** ख़ुदा स्वयं उस नीच कीड़े को जला देता है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दुशमनों में से हो। اگر خواہی نجات از مستیء نفس بیا در ذیلِ مستانِ محمدؐ	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		**अनुवाद-** यदि तू नफ्स की बुरी मस्तियों से मुक्ति चाहता है तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मस्तानों में से हो जा। اگر خواہی کہ حق گوید ثنایت بشو از دل ثنا خوانِ محمدؐ **अनुवाद-** यदि तू चाहता है कि ख़ुदा तेरी प्रशंसा करे तो तहे दिल से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यशोगान करने वाला बन जा। اگر خواہی دلیلے عاشقش باش محمدؐ ہست برہانِ محمدؐ यदि तू उसकी सच्चाई की दलील चाहता है तो उसका आशिक़ बन जा, क्योंकि मुहम्मद स. ही स्वयं मुहम्मद की दलील है। سرے دارم فدائے خاکِ احمد دِلم ہر وقت قربانِ محمدؐ **अनुवाद-** मेरा सिर अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैरों की धूल पर न्योछावर है और मेरा दिल हर समय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर क़ुर्बान रहता है। بگیسوئے رسول اللہ کہ ہستم نثارِ روئے تابانِ محمدؐ	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		**अनुवाद-** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बालों की क़सम कि मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नूरानी चेरहे पर फ़िदा हूँ। درین رہ گر کشندم ور بسوزند نتابم رو ز ایوانِ محمدؐ **अनुवाद-** इस मार्ग में यदि मुझे क़त्ल कर दिया जाए या जला दिया जाए तो फिर भी मैं मुहम्मद की चौखट से मुंह नहीं फेरूंगा। بکارِ دین نترسم از جہانے کہ دارم رنگِ ایمانِ محمدؐ **अनुवाद-** धर्म के मामले में मैं समस्त संसार से भी नहीं डरता कि मुझ में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ईमान का रंग है। بسے سہل است از دُنیا بریدن بیادِ حُسن و احسانِ محمد **अनुवाद-** दुनिया से सम्बन्ध विच्छेद करना बहुत आसान है मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सौन्दर्य और उपकार को याद करके। فدا شد در رہش ہر ذرّہ من کہ دیدم حسن پنہانِ محمدؐ **अनुवाद-** उसके मार्ग में मेरा हर क़ुर्बान है क्योंकि मैंने मुहम्मद	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुप्त सौन्दर्य देख लिया है। دِگر استاد رانامے ندانم کہ خواندم در دبستانِ محمدؐ **अनुवाद-** मैं किसी और उस्ताद का नाम नहीं जानता मैं तो केवल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदरसे का पढ़ा हुआ हूँ। بدیگر دلبرے کارے ندارم کہ ہستم کشتۂ آنِ محمدؐ **अनुवाद-** और किसी प्रियतम से मुझे वास्ता नहीं कि मैं तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाज़-व-अदा का मक़्तूल हूँ। مرا آن گوشہ چشمے بباید نخواہم جز گلستانِ محمدؐ **अनुवाद-** मुझे तो उसी आंख की मेहरबानी की आवश्यकता है मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाग़ के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहता। دلِ زارم بہ پہلو یم مجوئید کہ بستیمش بدامانِ محمدؐ **अनुवाद-** मेरे ज़ख़्मी दिल को मेरे पहलू में तलाश न कर उसे तो हमने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दामन से	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		बांध दिया है। من آن خوش مرغ از مرغانِ قدسم کہ دارد جا بہ بستانِ محمدؐ **अनुवाद-** मैं जन्नत के परिन्दों में से वह श्रेष्ठतम परिन्दा हूँ जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाग़ में बसेरा रखता है। تو جانِ ما منور کردی از عشق فدایت جانم اے جانِ محمدؐ **अनुवाद-** तू ने इश्क़ के कारण हमारी जान को प्रकाशमान कर दिया हे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुझ पर मेरी जान फ़िदा हो। دریغا گر دہم صد جان دریں راہ نباشد نیز شایانِ محمدؐ **अनुवाद-** यदि इस मार्ग में सौ जान से क़ुर्बान हो जाऊं तो भी अफ़सोस रहेगा कि यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान के यथायोग्य नहीं। چہ ہیبت ہا بدادند ایں جواں را کہ ناید کس بمیدانِ محمدؐ **अनुवाद-** इस जवानी को कितना रोब दिया गया है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मैदान में कोई भी (मुक़ाबले	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		पर) नहीं आता। رہِ مولیٰ کہ گم کردند مردم بجو در آل و اعوانِ محمدؐ **अनुवाद-** ख़ुदा के इस मार्ग को जिसे लोगों ने भुला दिया है तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आल और अन्सार में ढूंढ। الا اے دشمنِ نادان و بے راہ بترس از تیغِ بُرّانِ محمدؐ **अनुवाद-** हे मूर्ख और गुमराह दुश्मन होशियार हो जा और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की काटने वाली तलवार से डर। الا اے منکر از شانِ محمدؐ ہم از نورِ نمایانِ محمدؐ **अनुवाद-** ख़बरदार हो जा! हे व्यक्ति जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चमकते हुए नूर का इन्कारी है। کرامت گرچہ بے نام و نشان است بیا بنگر ز غلمانِ محمد **अनुवाद-** यद्यपि करामत अब समाप्त है परन्तु तू आ और उसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलामों में देख ले।	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		**लेखराम पेशावरी के शव की वह तस्वीर जिसको आर्यों ने अपने हाथ से प्रकाशित किया है।** यह जिसकी लाश इस तस्वीर में देख रहे हो यह एक हिन्दू विरोधी आर्य इस्लाम का शत्रु था जिसने मेरे बारे में अपनी पुस्तक में भविष्यवाणी की थी कि यह व्यक्ति तीन वर्ष में हैज़े से मर जाएगा। और मैंने भी उसके बारे में भविष्यवाणी की थी कि छ: वर्ष तक छुरी से मारा जाएगा। अब देख लो कि मुसलमानों का यह ख़ुदा हिन्दुओं के बनावटी परमेश्वर पर विजयी हो गया। मैं जीवित मौजूद हूँ और यह मर गया और इसकी शैतानी भविष्यवाणी झूठी निकली इस व्यक्ति की लाश इस्लाम की सच्चाई का स्पष्ट सबूत दे रही है। अत: ख़ुदा से डरो हे आर्यो! और कमज़ोर परमेश्वर को छोड़ो। याद रहे कि ये वही शेर और अन्त में वही हाथ का निशान है जो लेखराम की मौत की ओर भविष्यवाणी करता है जिसको हमने लेखराम की मौत और उसके घायल होने से पांच वर्ष पूर्व 'आईना कमालाते इस्लाम' में लिखा है और इस नक़्ल में कोई परिवर्तन नहीं सिवाए इसके कि आईना कमालात-ए-इस्लाम में लेखराम का शब्द	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		मोटे क़लम से लिखकर तस्वीर की ओर लिटा दिया गया है और इस स्थान पर वह शव की तस्वीर ही लिख दी है जिसके स्वयं आर्यों ने दिखाने के लिए प्रकाशित किया है। अब इन समस्त शेरों से प्रकट है कि लेखराम की मौत के लिए एक काटने वाली तलवार की ओर संकेत किया गया है। फिर इस भविष्यवाणी को बहुत स्पष्टतापूर्वक टायटल पेज **'बरकातुद्दुआ'** में अख़बार अनीस हिन्द मेरठ के कुछ ऐतराज़ों का उत्तर देते हुए वर्णन किया गया है। अत: हम यहां हूबहू वह इबारत जो लेखराम की मौत से कई वर्ष पूर्व प्रकाशित हो चुकी है **'बरकातुद्दुआ'** के टायटल पेज से नक़ल करते हैं और वह यह है:- **स्वीकृत दुआ का उदाहरण अनीस हिन्द मेरठ और हमारी भविष्यवाणी पर ऐतराज़** इस अख़बार का पर्चा 25 मार्च 1893 ई. जिसमें मेरी उस भविष्यवाणी के बारे जो लेखराम पेशावरी के संबंध में मैंने प्रकाशित की थी कुछ मीन मेख है मुझ को मिला। मुझे मालूम हुआ है कि कुछ और अख़बारों पर भी यह सच बात असह्य गुज़री है और वास्तव में मेरे लिए ख़ुशी का स्थान है कि यों स्वयं विरोधियों के हाथों उसकी प्रसिद्धि और प्रकाशन हो रहा है तो मैं इस समय इस मीन-मेख के उत्तर में केवल इतना लिखना पर्याप्त समझता हूँ कि जिस ढंग से ख़ुदा तआला ने चाहा उसी ढ़ंग से किया। मेरा उसमें हस्तक्षेप नहीं। हाँ यह प्रश्न कि ऐसी भविष्यवाणी लाभप्रद नहीं होगी और उसमें सन्देह शेष रह जाएंगे। इस ऐतराज़ के बारे में मैं भली-भांति समझता हूँ कि यह समय से पूर्व है। मैं इस बात का स्वयं इक़रारी हूँ और अब पुन: इक़रार करता	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		हूँ कि यदि जैसा कि ऐतराज़ करने वालों ने सोचा है भविष्यवाणी का सारांश अन्ततः यही निकला कि कोई मामूली ज्वर आया या मामूली तौर पर दर्द हुआ अथवा हैज़ा हुआ और फिर उसकी स्वस्थ हालत क़ायम हो गई तो वह भविष्यवाणी नहीं समझी जाएगी और निःसंदेह एक छल और प्रपंच होगा। क्योंकि ऐसी बीमारियों से तो कोई भी ख़ाली नहीं। हम सब कभी न कभी बीमार हो जाते हैं। तो इस स्थिति में निःसंदेह मैं उस दण्ड के योग्य ठहरूंगा जिसका वर्णन मैंने किया है। किन्तु यदि भविष्यवाणी का प्रकटन इस प्रकार से हुआ कि जिस में ख़ुदा के कोप के निशान साफ़-साफ़ और खुले तौर पर दिखाई दें तो फिर समझो कि ख़ुदा तआला की ओर से है। वास्तविकता यह है कि भविष्यवाणी की अपनी श्रेष्ठता और धाक दिनों और समयों के निर्धारित करने की मुहताज नहीं। इस बारे में तो अज़ाब उतरने के समय की एक सीमा निर्धारित कर देना पर्याप्त है। फिर यदि भविष्यवाणी वास्तव में एक महान धाक के साथ प्रकट हो तो वह स्वयं दिलों को अपनी ओर खींच लेती है और ये समस्त विचार और ये समस्त नुक़्तः चीनियां जो समय से पहले दिलों में पैदा होती हैं ऐसी मिट जाती है कि न्याय स्वभाव अहले राय एक शर्मिन्दगी के साथ अपनी रायों से रुजू	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		करते हैं सिवाए इसके कि यह ख़ाकसार भी प्रकृति के नियम के अधीन है। यदि मेरी ओर से इस भविष्यवाणी की बुनियाद केवल इतनी है कि मैंने केवल डींगे मारने के तौर पर कुछ संभावित बीमारियों को मस्तिष्क में रख कर और अटकल से काम लेकर यह भविष्यवाणी प्रकाशित की है। तो जिस व्यक्ति के बारे में यह भविष्यवाणी है वह भी तो ऐसा कर सकता है कि इन्हीं अटकलों की बुनियाद पर मेरे बारे में कोई भविष्यवाणी कर दे। अपितु मैं राज़ी हूँ कि छः वर्ष के स्थान पर जो मैंने उसके बारे में मीआद निर्धारित की है वह मेरे लिए दस वर्ष लिख दे। लेखराम की आयु इस समय शायद अधिक से अधिक तीस वर्ष होगी। और वह एक जवान, सुदृढ़ आकृति और अच्छे स्वास्थ्य का आदमी है और इस ख़ाकसार की आयु इस समय पचास वर्ष से कुछ अधिक है तथा कमज़ोर और हमेशा बीमार और भिन्न-भिन्न प्रकार के रोगों में ग्रस्त है फिर इसके बावजूद मुक़ाबले में स्वयं मालूम हो जाएगा कि कौन सी बात मनुष्य की ओर से है और कौन सी बात ख़ुदा तआला की ओर से है। और आरोपी का यह कहना कि अब ऐसी भविष्यवाणी का युग नहीं है एक मामूली वाक्य है जो अधिकतर लोग मुंह से बोल दिया करते हैं।	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		मेरी समझ में तो सुदृढ़ और पूर्ण सच्चाइयों को स्वीकार करने के लिए यह एक ऐसा युग है कि शायद इसका उदाहरण पहले युगों में कोई भी न मिल सके। हाँ इस युग से कोई छल और धोखा गुप्त नहीं रह सकता। परन्तु यह तो ईमानदारों के लिए और भी प्रसन्नता का स्थान है। क्योंकि जो व्यक्ति छल और सच में अन्तर करना जानता है वही दिल से सच्चाई का सम्मान करता है और प्रसन्नता पूर्वक तथा दौड़कर सच्चाई को स्वीकार कर लेता है। और सच्चाई में कुछ ऐसा आकर्षण होता है कि स्वयं स्वीकार करा लेती है। स्पष्ट है कि युग ऐसी सैकड़ों नई बातों को स्वीकार करता जाता है जो लोगों के बाप-दादों ने स्वीकार नहीं की थीं यदि युग सच्चाइयों का प्यासा नहीं तो फिर क्यों इसमे एक महान क्रांति आरंभ है। युग निःसन्देह वास्तविक सच्चाइयों का दोस्त है न दुश्मन। और यह कहना कि युग बुद्धिमान है और सीधे-सादे लोगों का समय गुज़र गया है। यह दूसरे शब्दों में युग की निन्दा है जैसे यह युग एक बुरा युग है कि सच्चाई को वास्तविक तौर पर सच्चाई पाकर फिर उसको स्वीकार नहीं करता। परन्तु मैं कदापि स्वीकार नहीं करूंगा कि वास्तव में ऐसा ही है। क्योंकि	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		मैं देखता हूँ कि अधिकतर मेरी ओर रुजू करने वाले और मुझ से लाभ प्राप्त करने वाले वही लोग है जो नवीन शिक्षा प्राप्त हैं। कुछ उन में से बी.ए. और एम.ए. तक पहुंचे हुए हैं और मैं यह भी देखता हूँ कि यह नवीन शिक्षा प्राप्त लोगों का गिरोह सच्चाइयों को बड़े शौक से स्वीकार करता जाता है और केवल इतना ही नहीं अपितु एक नव मुस्लिम और शिक्षा प्राप्त यूरेशियन अंग्रेज़ों का गिरोह जिनका निवास मद्रास की प्राचीर में है हमारी जमाअत में शामिल और समस्त सच्चाइयों पर विश्वास रखते हैं। अब मैं सोचता हूँ कि मैंने वे सब बातें लिख दी हैं जो एक ख़ुदा के डरने वाले आदमी के समझने के लिए पर्याप्त हैं। आर्यों का अधिकार है कि मेरे इस निबंध पर भी अपनी ओर से जिस प्रकार चाहें हाशिए चढ़ा दें। मुझे इस बात पर कुछ भी नज़र नहीं, क्योंकि मैं जानता हूँ कि इस समय इस भविष्यवाणी की प्रशंसा करना या निन्दा करना दोनों बराबर हैं। यदि यह ख़ुदा तआला की ओर से है और मैं ख़ूब जानता हूँ कि उसी की ओर से है तो अवश्य भयावह निशान के साथ घटित होगी और दिलों को हिला देगी और यदि उसकी ओर से नहीं तो फिर मेरा अपमान	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		प्रकट होगा और यदि मैं उस समय अधम तावीलें करूंगा तो यह और भी अपमान का कारण होगा। वह अनादि अस्तित्व, पवित्र और पुनीत जो समस्त अधिकार अपने हाथ में रखता है वह झूठे को कभी सम्मान नहीं देता। यह बिल्कुल ग़लत बात है कि लेखराम से मुझे कोई व्यक्तिगत शत्रुता है। मुझे व्यक्तिगत तौर पर किसी से भी शत्रुता नहीं अपितु इस व्यक्ति ने सच्चाई से दुश्मनी की और एक ऐसे कामिल और पुनीत को जो समस्त सच्चाइयों का झरना था अपमान से याद किया। इसलिए ख़ुदा तआला ने चाहा कि अपने एक प्यारे का दुनिया में सम्मान प्रकट करे। والسلام علی من اتبع الھدی फिर इसी पुस्तक बरकातुद्दुआ के हाशिए पर वह कश्फ़ दर्ज है जो 2 अप्रैल 1893 को मैंने देखा कि एक व्यक्ति सदृढ़ भारी शरीर, भयावह रूप जैसे उसके चेहरे पर से ख़ून टपकता है जैसे वह इन्सान नहीं कठोर और शक्तिशाली फ़रिश्तों में से है। वह मेरे सामने आकर खड़ा हो गया और उसका भय दिलों पर छाया हुआ था और मैं उसको देखता था कि उसने मुझसे पूछा कि लेखराम कहां है तथा एक और	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		नाम लिया जो याद नहीं रहा और कहा कि वह कहां है। तब मैंने समझ लिया कि यह व्यक्ति लेखराम और उस दूसरे को दण्ड देने के लिए नियुक्त किया गया है। देखो टायटल पेज बरकातुद्दुआ। अप्रैल 1893 को प्रकाशित। इसके बाद 6 मार्च 1897 को लेखराम क़त्ल द्वारा मर गया और उस समय कि जब मुझे निश्चित और ठोस तौर पर मालूम हो गया था कि मेरी दुआ के स्वीकार होने पर आकाश पर यह निर्णय पा चुका है कि लेखराम एक दर्दनाक अज़ाब से क़त्ल किया जाएगा। मैंने इसी पुस्तक बरकातुद्दुआ में सय्यिद अहमद ख़ान को जो अपनी मिथ्या आस्था की दृष्टि से दुआओं के स्वीकार होने से इन्कारी था इस ओर ध्यान दिलाया और उसके सामने अपनी दुआ से लेखराम के मारे जाने का उदाहरण प्रस्तुत किया। हालांकि लेखराम अभी ज़िन्दा फ़िरता था और मैंने सय्यिद अहमद ख़ान को सम्बोधित करके बरकातुद्दुआ पुस्तक में लिखा कि लेखराम की मौत के लिए मैंने दुआ की है और वह स्वीकार हो गई। तो आप के लिए नमूने के तौर पर यह स्वीकृति योग्य दुआ पर्याप्त है परन्तु इस लेख पर हंसी की गई क्योंकि लेखराम अभी ज़िन्दा और हर प्रकार से	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		स्वस्थ तथा इस्लाम का अपमान करने में बहुत तन्मय था। और मैंने इस अभिप्राय से कि लोग भविष्यवाणी को याद कर लें काव्य पंक्तियों में सय्यिद अहमद खान को सम्बोधित किया और वे शेर ये हैं जो बरकातुद्दुआ में दर्ज है:- روئے دلبر از طلبگاران نمیدارد حجاب میدرخشد در خور و مے تابد اندر ماہتاب **अनुवाद-** दिलबर का चेहरा अभिलाषियों से छुपा नहीं है वह सूर्य में भी चमकता है और चन्द्रमा में भी। لیکن این روئے حسین از غافلان ماند نہان عاشقے باید کہ بردارند از بہرش نقاب **अनुवाद-** परन्तु वह सुन्दर चेहरा लापरवाहों से छुपा है। सच्चा प्रेमी चाहिए ताकि उसके लिए पर्दा उठाया जाए। دامن پاکش ز نخوت ہا نمے آید بدست ہیچ راہے نیست غیر از عجز و درد و اضطراب **अनुवाद-** उस का पवित्र दामन अभिमान से हाथ नहीं आता। उसके लिए कोई मार्ग दर्द और बेचैनी के अतिरिक्त नहीं है। بس خطرناک است راہ کوچۂ یار قدیم جان سلامت بایدت از خود روی ہا سر بتاب **अनुवाद-** उस अनादि प्रियतम का रास्ता	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		बहुत ख़तरनाक है। यदि तुझे जान की सलामती चाहिए तो ख़ुदरवी छोड़ दे। تا کلامش عقل و فہم ناسزایان کم رسد ہر کہ از خود گم شود او یابد آن راہ صواب **अनुवाद-** अयोग्य लोगों की बुद्धि उसके कलाम की तह तक नहीं पहुंच सकती जो अहंकार का त्यागने वाला हो उसी को वह सही रास्ता मिलता है। مشکل قرآن نہ از ابنائے دُنیا حل شود ذوق آن میداند آن مستی کہ نوشد آن شراب **अनुवाद-** क़ुर्आन को समझने का मामला दुनिया वालों से हल नहीं हो सकता। उस शराब का मज़ा वही जानता है जो उस शराब को पीता है। اے کہ آگاہی ندادندت ز انوار درون در حقِ ما ہر چہ گوئی نیستی جائے عتاب **अनुवाद-** हे वह व्यक्ति जिसे आन्तरिक प्रकाशों की कुछ ख़बर नहीं। तू जो कुछ हमारे पक्ष में कहे अप्रसन्नता का कारण नहीं। از سرِ وعظ و نصیحت ایں سخن ہا گفتہ ایم تا مگر زیں مرہمے بہ گردد آن زخمِ خراب **अनुवाद-** हमने नसीहत और हमदर्दी के तौर पर ये बातें कही हैं। ताकि वह ख़राब	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		ज़ख्म इस मरहम से अच्छा हो जाए। از دعا کن چارۂ آزار انکارِ دعا چُوں علاج مَے زِ مَے وقتِ خمار والتہاب **अनुवाद-** दुआ के इन्कार के रोग का इलाज दुआ ही से कर जैसे नशे के समय शराब का इलाज शराब से ही किया जाता है। ایکہ گوئی گر دعاہا را اثر بودے کجاست سوئے من بشتاب بنمایم ترا چُوں آفتاب **अनुवाद-** हे वह व्यक्ति जो कहता है कि यदि दुआओं में असर है तो दिखाओ कहां है। अतः मेरी ओर दौड़ ताकि मैं तुझे सूर्य की तरह वह असर दिखाऊं। ہاں مکن انکار زیں اسرار قُدرتہائے حق قصہ کوتاہ کن بہ بیں از ما دعائے مستجاب **अर्थात्- लेखराम की मौत की दुआ** **अनुवाद-** ख़बरदार ख़ुदा की क़ुदरतों के भेदों का इन्कार न कर बात समाप्त कर और हम से स्वीकार होने वाली दुआ देख ले। फिर इस भविष्यवाणी का स्पष्टीकरण केवल इस सीमा तक नहीं कि काटने वाली तलवार के द्वारा एक भयावह मौत की सूचना दी गई हो अपितु पुस्तक करामातुस्सादिक़ीन के एक अरबी शेर	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		में जो पंडित लेखराम के क़त्ल की घटना से चार वर्ष पूर्व समस्त क़ौमों में प्रकाशित हो चुका था। उसकी मौत का दिन और तिथि भी बताई गई थी। अत: इस शेर पर हिन्दू अख़बार ने लेखराम के क़त्ल के समय बड़ा शोर मचाया था और वह शेर यह है:- وبَشّرنی ربّی و قال مبشرا ستعرف یوم العید والعید اقرب अर्थात् मेरे ख़ुदा ने एक भविष्यवाणी के पूरा होने की सूचना दी है और ख़ुशख़बरी देकर कहा कि तू ईद के दिन को पहचानेगा जबकि निशान प्रकट होगा। और ईद का दिन निशान के दिन से बहुत करीब और साथ मिला हुआ होगा। अत: यह महान भविष्यवाणी इतनी शक्ति और सार्वजनिक प्रसिद्धि के साथ फैलने के बाद 6 मार्च 1897 ई. को इस प्रकार पूरी हुई कि एक व्यक्ति ने जिसका आज तक पता नहीं लगा कि कौन था। शाम के समय लाहौर शहर में शनिवार के दिन जो ईद से दूसरा दिन था लेखराम के पेट में एक भरपूर छुरी मार कर दिन दहाड़े ऐसा ग़ायब हुआ कि फिर आज तक उसका पता न लगा। हालांकि लेखराम के साथ कितने समय से रहता था। और इस क़त्ल की ख़बर के साथ सब हिन्दू	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		मुसलमान और ईसाइयों पर एक रोब और भय छा गया और आर्यों ने बड़ा शोर मचाया और अगुआ मुसलमानों तथा इस्लामी अंजुमनों की ख़ाना तलाशियां कराईं। और हर जगह इस मक्तूल की हमदर्दी के लिए बड़े-बड़े जल्से किए और प्रस्ताव पारित किए कि हर साल इस मातम का एक दिन निर्धारित किया जाए। ताकि यह घटना हमारे दिलों से भूलने न पाए। और पद्यों एवं गद्यों में शोक गीत और बैन★ लिखे तथा देश में प्रकाशित किए और ख़ुदा ने यह सब कुछ इसलिए होने दिया ताकि भविष्यवाणी की श्रेष्ठता दिलों में फैल जाए, क्योंकि मक़्तूल को जितनी श्रेष्ठता दी जाए वास्तव में वह भविष्यवाणी की श्रेष्ठता है। कारण यह है कि मक़्तूल यदि एक नीच और तुच्छ आदमी हो तो भविष्यवाणी का बहुत ध्यान से वर्णन नहीं किया जाता और इस प्रकार से वह शीघ्रतर भूल जाती है। अत: ख़ुदा ने चाहा कि लेखराम को उसकी क़ौम बहुत कुछ श्रेष्ठता दे ताकि उस श्रेष्ठता से भविष्यवाणी की श्रेष्ठता सिद्ध हो। और आर्यों के दिल में डाल दिया कि उन्होंने हमेशा के लिए उसकी यादगारें स्थापित कीं। अत: यह भविष्यवाणी एक महान भविष्यवाणी है और हज़रत रसूले करीम के उस चमत्कार के साथ समान है जिसमें किस्रा मारा	

★ बैन :- वह दर्दनाक वाक्य जो किसी मुर्दे के दु:ख में उसकी प्रशंसा वर्णित करते हुए अथवा किसी और मुसीबत में रोते समय औरतों के मुख से निकलते हैं। अनुवादक

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		गया था और कोई सत्याभिलाषी जितना इसमें विचार करेगा उतना अटल विश्वास की श्रेणी से निकट होता जाएगा इस भविष्यवाणी के बारे में आईना कमालाते इस्लाम वाला विज्ञापन पढ़ो फिर बरकातुद्दुआ की इबारत ध्यान से पढ़ो फिर वह विज्ञापन देखो जिसमें एक हाथ बना हुआ है जो लेखराम की ओर संकेत करता है। फिर वह कश्फ़ ध्यान से पढ़ो जो बरकातुद्दुआ के अन्तिम पृष्ठ के हाशिए पर है। फिर سَتُعرف वाला अरबी शेर पढ़ो फिर वह अरबी भविष्यवाणी पढ़ो जो करामातुस्सादिक़ीन के अन्तिम टायटल पेज के पृष्ठ पर हैं। फिर इन्साफ़ से सोचो कि इतनी परोक्ष की बातों का वर्णन करना	

✶ ख़ुदा की क़ुदरत कि मेरे निशानों में से बहुत सा भाग आर्यों ने ही लिया है। लाला शरमपत आर्य क़ादियान को जो क़ादियान में ज़िन्दा मौजूद है मैंने सूचना दी कि मेरी दुआ से उसके भाई विशम्बरदास की आधी क़ैद कम होगी और मैंने उसे कहा कि ख़ुदा ने मुझे ख़बर दी है कि मिस्ल अपील चीफ़ कोर्ट से ज़िले में आएगी और आधी क़ैद माफ की जाएगी परन्तु उसके साथी की क़ैद का एक दिन भी माफ़ नहीं होगा। दूसरे दयानंद सरस्वती की मृत्यु की समय से पूर्व सूचना दी। और लाला मलावामल निवासी क़ादियान दिल का रोगी हो गया था। उसके बारे में मैंने दुआ करके रोगमुक्त होने की ख़बर दी। अत: वह उस घातक रोग से रोगमुक्त हो गया। हे आर्यों! अपने इन दोनों आर्य भाईयों से क़सम देकर पूछो कि क्य यह सच है या नहीं। हे कठोर हृदय क़ौम! तुम ने ये तीन निशान देख लिए और ख़ुदा की हुज्जत तुम पर पूरी हो गई। अब इस्लाम को झुठलाना और अपमान करना और इस्लाम में दाख़िल न होना बड़ी बेईमानी और लानती जीवन है। (इसी से)

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		क्या किसी मुफ़्तरी (झूठ गढ़ने वाला) इन्सान का काम है और किसी की क़ुदरत और अधिकार में है कि केवल अपनी योजना से ऐसी विलक्षण और शक्ति से ऊपर बातें वर्णन कर सके जो अन्त में उसी प्रकार पूरी भी हो जाएं। हम आईना कमालात-ए-इस्लाम का विज्ञापन जो लेखराम की मौत के बारे में समय से पूर्व प्रकाशित किया गया था नीचे लिख देते हैं ताकि पाठकों को मालूम हो कि किस शक्ति और दबदबे से यह विज्ञापन लिखा गया था और वह यह है- **लेखराम पेशावरी के बारे में एक भविष्यवाणी** स्पष्ट हो कि इस विनीत ने 20 फरवरी 1886 ई. के विज्ञापन में जो इस पुस्तक के साथ सम्मिलित किया गया था इन्दरमन मुरादाबादी और लेखराम पेशावरी को इस बात की दावत की थी कि यदि वे इच्छुक हों तो उनके प्रारब्ध के बारे में कुछ भविष्यवाणियां प्रकाशित की जाएं। अतः इस विज्ञापन के बाद इन्दरमन ने तो विमुखता की और कुछ समय के बाद मर गया। परन्तु लेखराम ने बड़ी निर्भीकता से एक कार्ड इस विनीत की ओर रवाना किया कि मेरे बारे में जो भविष्यवाणी चाहो प्राकशित कर दो मेरी ओर से इजाज़त है।	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		तो इसके बारे में जब ध्यान किया गया तो अल्लाह तआला की ओर से यह इल्हाम हुआ:- عجل جسد لہٗ خوار۔ لہٗ نصب و عذاب अर्थात् यह एक निर्जीव बछड़ा है जिसके अन्दर से एक घृणित आवाज़ निकल रही है और उसके लिए उन ग़ुस्ताख़ियों और गालियों के बदले में दण्ड, रंज और अज़ाब मुक़द्दर है जो उसे अवश्य मिलेगा और इसके बाद आज जो 20 फरवरी 1893 ई. दिन सोमवार है। इस अज़ाब का समय मालूम करने के लिए ध्यान किया गया तो ख़ुदा तआला ने मुझ पर प्रकट किया कि आज की तिथि से जो 20 फरवरी 1893 है छः वर्ष की अवधि तक यह व्यक्ति अपनी गालियों के दण्ड में अर्थात् उन असभ्यताओं के दण्ड में जो इस व्यक्ति ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संबंध में की हैं कठोर अज़ाब में ग्रस्त हो जाएगा। अतः अब मैं इस भविष्यवाणी को प्रकाशित करके समस्त मुसलमानों, आर्यों, ईसाइयों तथा अन्य फ़िर्क़ों पर व्यक्त करता हूँ कि यदि इस व्यक्ति पर छः वर्ष की अवधि में मैं आज की तिथि से कोई ऐसा अज़ाब✶ न उतरा जो मामूली तकलीफ़ों	

✶अब आर्यों को चाहिए कि सब मिलकर दुआ करें कि यह अज़ाब उनके इस वकील से टल जाए।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		से निराला, विलक्षण और अपने अन्दर ख़ुदाई धाक रखता हो तो समझो कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं और न उसकी रूह से मेरा यह बोलना है। और यदि मैं इस भविष्यवाणी में झूठा निकला तो प्रत्येक दण्ड के भुगतने के लिए मैं तैयार हूँ और इस बात पर राज़ी हूँ कि मुझे गले में रस्सा डालकर सूली पर खींचा जाए और मेरे इस इक़रार के बावजूद यह बात भी प्रकट है कि किसी इन्सान का अपनी भविष्यवाणी में झूठा निकलना स्वयं समस्त बदनामियों से बढ़कर बदनामी है। इस से अधिक क्या लिखूं। स्पष्ट रहे कि इस व्यक्ति ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बहुत अनादर किया है जिनकी कल्पना से शरीर कांपता है। इसकी पुस्तकें विचित्र प्रकार के तिरस्कार, अपमान और गालियों से भरी हुई हैं कौन मुसलमान है जो इन पुस्तकों को सुने और उसका दिल-व-जिगर टुकड़े-टुकड़े न हो, इसके साथ घृष्टता और निर्लज्जता। यह व्यक्ति निपट मूर्ख है, अरबी से थोड़ा भी स्पर्ष नहीं, सूक्ष्म उर्दू लिखने का भी सामर्थ्य नहीं। यह भविष्यवाणी संयोगात्मक नहीं अपितु इस विनीत ने विशेष तौर पर इसी उद्देश्य के लिए दुआ की जिसका यह उत्तर मिला। और यह भविष्यवाणी	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 43		मुसलमानों के लिए भी निशान है। काश वे वास्तविकता को समझते तथा उनके दिल नर्म हो जाते। अब मैं उसी प्रतापी ख़ुदा के नाम पर समाप्त करता हूँ जिसके नाम से शुरु किया था। والحمد للہ والصّلوٰۃ والسلام علٰی رسولہ محمد المصطفٰی افضل الرسل و خیر الورٰی سیدنا وسیر کلّ ما فی الارض والسّما विनीत - मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियान, ज़िला- गुरदासपुर 20 फ़रवरी 1893 ई.	
भविष्यवाणी संख्या - 44	24 मई 1897 ई.	मैंने अपने 24 मई 1897 ई. के विज्ञापन में यह भविष्यवाणी की थी कि रूमी हुकूमत के अधिकारी अधिकतर ऐसे हैं जिनका चाल-चलन हुकूमत के लिए हानिप्रद है और जैसा उसी विज्ञापन में दर्ज है। इस बात के प्रकाशन का कारण यह हुआ था कि एक व्यक्ति हुसैन बिक कामी नामक वाइस कौन्सिल अस्थाई निवास कराची जो रूम का राजदूत कहलाता था मेरे पास क़ादियान आया और वह यह विचार रखता था कि वह और उसके पिता टर्की (तुर्की)	अक्टूबर 1899 ई.

लेखराम वाली भविष्यवाणी सम्पूर्णता बहुत सारी पुस्तकों और विज्ञापनों में प्रकाशित हो चुकी थी जिनका वर्णन उपर आ चुका है और इस की गवाह समस्त ब्रिटिश इण्डिया है।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 44		की हुकूमत के बड़े शुभचिन्तक, अमीन और ईमानदार हैं परन्तु जब वह मेरे पास आया तो मेरे विवेक ने गवाही दी कि यह व्यक्ति सच्चा और आन्तरिक तौर पर पवित्र नहीं और साथ ही मेरे ख़ुदा ने मेरे दिल में डाला कि रूमी हुकूमत इन्हीं लोगों के कर्म दण्ड के कारण ख़तरे में है तो मैं उससे विमुख हुआ परन्तु उसने अकेले में कुछ बातें करने के लिए निवेदन किया। चूंकि वह मेहमान था इसलिए शिष्टाचार के अधिकारों के कारण उसके निवेदन को रद्द न किया गया। अत: अकेले में उसने दुआ के लिए निवेदन किया। तब उसको वही उत्तर दिया गया जो 24 मई 1897 ई. के विज्ञापन में दर्ज किया गया था और उस वर्णन में दो भविष्यवाणियां थीं-(1) एक यह कि तुम लोगों का चाल-चलन अच्छा नहीं और ईमानदारी तथा अमानत की नेक विशेषताओं से तुम वंचित हो। (2) दूसरे यह कि यदि तेरी यही हालत रही तो तुझे अच्छा फल नहीं मिलेगा और तेरा अंजाम	

इस भविष्यवाणी के गवाह शेख रहमतुल्लाह साहिब सौदागर बम्बई हाउस लाहौर, मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, साहिबज़ादा सिराजुलहक़ साहिब नोमानी, शेख़ अब्दुर्रहीम साहिब, डॉक्टर याक़ूब बेग़ साहिब, ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब, मौलवी नूरुद्दीन साहिब, मौलवी अब्दुल करीम साहिब, शेख याक़ूब अली साहिब इत्यादि लोग हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 44		बुरा होगा। फिर इसी विज्ञापन में यह लिखा था कि उत्तम था कि यह मेरे पास न आता। मेरे पास से ऐसी निन्दा से वापस जाना उसका बड़ा दुर्भाग्य है। यही कारण था कि मेरी नसीहत उसे बुरी लगी और उसने जाकर मेरी बुराई की फिर 25 जून 1897 ई. के विज्ञापन में यह लिखा गया था कि क्या संभव न था कि जो कुछ मैंने रूमी हुकूमत की आन्तरिक व्यवस्था के बारे में वर्णन किया वह वास्तव में सही हो और तुर्की सरकार के शीराज़े में ऐसे धागे भी हों जो समय पर टूटने वाले और ग़द्दारी प्रकृति व्यक्त करने वाले हों "ये तो मेरे इल्हाम थे जो लाखों लोगों में विज्ञापन द्वारा प्रकाशित किए गए थे परन्तु अफ़सोस कि हज़ारों मुसलमान और इस्लामी एडीटर मुझ पर जोश के साथ टूट पड़े और हुसैन कामी के बारे में लिखा कि वह नायब ख़लीफ़तुल्लाह रूम का सुलतान है, और अन्तः पवित्रता से सिर से पैर तक नूर है। और मेरे बारे में लिखा कि यह क़त्ल योग्य है। अतः स्पष्ट हो कि इस घटना के दो साल बाद ये भविष्यवाणियां प्रकटन में आईं और हुसैन कामी के धन हथियाने और ग़बन का हिन्दुस्तान में शोर मच गया।	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 44		अत: अख़बार नय्यर आसिफ़ी मद्रास तिथी 12 अक्टूबर 1899 ई. में से थोड़ा सा नक़ल करते हैं- "हुसैन कामी ने बड़ी बेशर्मी के साथ (चन्दा मज़लूमान क्रेट जो हिन्द में जमा हुआ था उसके समस्त) रुपयों को डकार लिए बिना हज़्म कर लिया और कारकुन कमेटी ने बड़े विवेक और मेहनत से उगलवाया। यह रुपया एक हज़ार छ: सौ क़रीब था जो कि हुसैन कामी की ज़मीनों को नीलाम कराकर वसूल किया गया और इस ग़बन के कारण हुसैन कामी को हटा दिया गया।"	
भविष्यवाणी संख्या - 45	सितम्बर 1894 ई.	हुब्बी फ़िल्लाह बिरादरम हज़रत मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब का एक दूध पीता बच्चा गुज़र गया था। जिस पर विरोधियों ने कटाक्ष किया। तब मैंने मौलवी साहिब के लिए दुआ की तो स्वप्न में दिखाया गया की मौलवी साहिब की गोद में एक लड़का खेलता है और उसके शरीर पर ख़तरनाक बड़े-बड़े फोड़े हैं। अत: यह भविष्यवाणी	1895 ई.

इन भविष्यवाणियों के गवाह साहिबज़ादा सिराजुलहक़ साहिब, हज़रत मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, मौलवी अब्दुल करीम साहिब, मौलवी हाजी हकीम फ़ज़्लुद्दीन साहिब, ख़लीफ़ा रजबुद्दीन साहिब लाहौर।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या -45		'अन्वारुल इस्लाम' के विज्ञापन के पृष्ठ 26 पर दर्ज की गई और इसके द्वारा यह इल्हाम प्रकाशित किया गया कि मौलवी साहिब के यहां एक लड़का पैदा होगा जिसके शरीर पर फोड़े होंगे। फिर इसके पांच साल बाद मौलवी साहिब के यहां लड़का पैदा हुआ और उसका नाम अब्दुल हयी रखा गया तथा साथ ही उसके शरीर पर ख़तरनाक फोड़े निकले जिनके निशान अब तक मौजूद हैं जो चाहे देख ले। यह कितना बड़ा चमत्कार प्रकट हुआ जो वृद्धावस्था और निराशा के बाद लड़के की ख़बर दी गई और बताया गया कि उसके पैदा होते ही बड़े-बड़े फोड़े उसके शरीर पर प्रकट होंगे यह उसका निशान होगा।	
भविष्यवाणी संख्या - 46	1880 ई.	انی مہین من اراد اھانتک۔ अर्थात मैं उसे अपमानित करूंगा जो तेरे अपमान का इरादा करेगा। यह एक अत्यन्त दबदबे से भरपूर वह्यी और भविष्यवाणी है जिसका प्रकटन विभिन्न पद्धतियों और विभिन्न क़ौमों में होता रहा है और जिस किसी ने इस सिलसिले को अपमानित करने की कोशिश की वह स्वयं अपमानित और असफल हुआ। उदाहरणतया मौलवी मुहम्मद हुसैन ने कप्तान डगलस के सामने	यह भविष्यवाणी हमेशा पूरी होती रहती है।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 46		मेरे विरुद्ध गवाही दी और मेरा अपमान चाहा तो उसको कुर्सी के मांगने पर डिप्टी कमिश्नर ने सख़्त झिड़का और अपमानित किया। जब विरोधी मौलवी लोगों ने मुझे मूर्ख कहा तो ख़ुदा ने मुझे ऐसी सरस-सुबोध अरबी पुस्तकें लिखने और मुक़ाबले के लिए सब को चैलेन्ज करने का सामर्थ्य दिया कि आज तक कोई मौलवी उत्तर न दे सका। पीर मेहर अली शाह ने मेरा अपमान चाहा तो प्रथम ऐजाज़ुल मसीह का उत्तर अरबी में न लिखने पर वह अपमानित हुआ और फिर एक मृतक के लेखों को चोरी से अपने नाम से प्रकाशित करके अपमानित हुआ और कैसा अपमानित हुआ कि चोरी भी की और वह भी गन्दगी की चोरी। क्योंकि मुहम्मद हसन मुर्दा का कुल लेख ग़लत था और मेहर अली उसका चोर था। उस चोरी से क्या-क्या अपमान उठाए (1) प्रथम मुर्दे के माल का चोर (2) दूसरा चूंकि माल सब खोटा था इसलिए दूसरा अपमान यह सिद्ध हुआ कि ज्ञान के रंग में विवेक की आंख एक कण भर उसे प्राप्त न थी (3) तीसरा अपमान यह कि सैफ़-ए-चिश्तियाई में इक़रार कर चुका कि यह	

क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन साहिब और यह भविष्यवाणी पुस्तक अन्वारुल इस्लाम में दर्ज हो कर हज़ारों लोगों में प्रकाशित हो चुकी है।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 46		मेरी लिखी हुई है। तत्पश्चात् सिद्ध हो गया कि झूठा कज़्ज़ाब है। यह उसकी लिखी हुई नहीं अपितु मुहम्मद हसन मुतवफ़्फ़ी की तहरीर है जो मर कर अपनी मूर्खता का नमूना छोड़ गया। मेहर अली ने अकारण उसके माथे का काला दाग़ अपने माथे पर लगा लिया। चला मौलवी बनने अगली हैसियत भी जाती रही। यही भविष्यवाणी थी कि انی مہین من اراد اهانتك۔ मुहम्मद हसन मुर्दा ने जब ही कि मेरी पुस्तक ऐजाज़ुल मसीह का उत्तर लिखने का इरादा किया उसे ख़ुदा ने तुरन्त मार दिया। ग़ुलाम दस्तगीर ने अपनी पुस्तक फ़त्ह रहमानी के पृष्ठ 27 में मुझ पर बद्-दुआ की उसे ख़ुदा ने मार दिया। मौलवी मुहम्मद इस्माईल अलीगढ़ ने मुझ पर बद्-दुआ की ख़ुदा ने उसको मार दिया। मुहियुद्दीन लखुकेवाला ने मुझ पर बद्-दुआ की ख़ुदा ने उसको मार दिया। मेहर अली ने मुझे चोर बताना चाहा वह स्वयं चोर बन गया। मुहम्मद हसन भीं ने मेरी पुस्तक का रद्द लिखकर मुझे अपमानित करना चाहा स्वयं ऐसा अपमानित हुआ कि ख़ुदा ने उसका दण्ड केवल उसकी मौत तक पर्याप्त न समझा अपितु मेरी प्रत्येक	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 46		ग़लती जो उसने निकाली वह उनकी स्वयं ग़लती सिद्ध हुई। दुर्भाग्यशाली मेहर अली को भी साथ ही ले डूबा।	
भविष्यवाणी संख्या - 47	20 फरवरी 1886 ई.	20 फरवरी 1886 ई. में पहली बार और 12 मार्च 1897 में दूसरी बार विज्ञापन द्वारा एक भविष्यवाणी प्रकाशित की थी जिसका सारांश यह था कि सय्यद अहमद ख़ान साहिब के.सी.एस.आई. को कई प्रकार की बलाएं और संकट आएंगे। अतः ऐसा ही प्रकटन में आया कि सर्वप्रथम तो अन्तिम आयु में सय्यद साहिब को एक जवान बेटे की मौत का जानलेवा अघात पहुंचा फिर मुस्लिम क़ौम का डेढ़ लाख रुपया जो उनकी अमानत में था उनका एक विश्वस्नीय दुष्ट हिन्दू ख़यानत से ग़बन करके उनको ऐसा सद्मा और रंज-व-ग़म पहुंचा गया जिससे उनकी समस्त आन्तरिक शक्तियां और ताक़तें अचानक समाप्त हो गईं और जल्द उन्होंने मौत का मार्ग देखा।	9798 ई.

ये भविष्यवाणियां समय से पूर्व विज्ञापनों द्वारा हज़ारों लोगों में प्रकाशित हो चुकी थीं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या - 48	12 मार्च 1897 ई.	सर्वज्ञ और ख़बर रखने वाले ख़ुदावन्द से ख़बर पाकर मैंने अपने 12 मार्च 1897 के विज्ञापन में इस बात को व्यक्त कर दिया था कि अब सय्यद अहमद ख़ान साहिब के.सी.एस.आई. की मौत का समय क़रीब है। अफ़सोस है कि एक नज़र देखना भी प्राप्त न हुआ। सय्यद साहिब ध्यानपूर्वक पढ़ें कि अब मुलाक़ात के बदले में यही विज्ञापन है। अतः इस विज्ञापन के एक साल बाद सय्यद साहिब दुनिया से कूच कर गए।	25 मार्च 1897 ई.
भविष्यवाणी संख्या - 49	1 जनवरी 1888 ई.	मुझे अल्लाह तआला ने एक लड़के के पैदा होने की ख़ुशख़बरी दी। अतः जन्म से पूर्व विज्ञापन द्वारा वह भविष्यवाणी प्रकाशित हुई। तत्पश्चात् वह लड़का पैदा हुआ जिसका नाम भी स्वप्न के अनुसार महमूद अहमद रखा गया और यह पहला लड़का है जो सबसे बड़ा है।	12 जनवरी 1889 ई.
भविष्यवाणी संख्या -50	10 दिसम्बर 1892 ई.	फिर मुझे दूसरे लड़के के पैदा होने के बारे में इल्हाम हुआ कि जो जन्म से पूर्व विज्ञापन द्वारा प्रकाशित किया गया	20 अप्रैल 1893 ई.

ज़िन्दा गवाह रोयत न. 49,50,51

ये भविष्यवाणियां छपे हुए विज्ञापनों द्वारा हज़ारों लोगों में प्रसिद्ध हो चुकी हैं और फिर पूरी हुई और हज़ारों ज़िन्दा गवाह मौजूद हैं जैसा- मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब, मौलवी अब्दुल करीम साहिब, मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए., मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन साहिब, साहिबज़ादा सिराजुल हक़ साहिब इत्यादि।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 50		इल्हाम यह था سیولد لک الولد۔ و یُدْنٰی منک الفضل और वह इल्हाम आईना कमालात-ए-इस्लाम के पृष्ठ 266 में भी दर्ज किया गया था और इसके बाद दूसरा बेटा पैदा हुआ जिसका नाम बशीर अहमद है।	
भविष्यवाणी संख्या - 51	5 सितम्बर 1894 ई.	फिर तीसरे बेटे के बारे में अल्लाह तआला ने मुझे ख़ुशख़बरी दी انا نبشّرک بغلام और यह भविष्यवाणी 'अन्वारुल इस्लाम' में समय से पूर्व प्रकाशित की गई। अतः इसके अनुसार अल्लाह तआला ने तीसरा बेटा प्रदान किया जिसका नाम शरीफ़ अहमद है।	24 मई 1895
भविष्यवाणी संख्या - 52	जनवरी 1897	फिर चौथे लड़के के बारे में अल्लाह तआला ने मुझे इल्हाम से ख़ुशख़बरी दी। जिसके प्रकाशित होने पर अब्दुल हक़ ग़ज़नवी ने कुछ ऐतराज़ किए तो दोबारा पुस्तक 'ज़मीमा अंजामे आथम' के पृष्ठ 58 पर इस बात को बड़े ज़ोर से प्रकाशित किया गया कि यह भविष्यवाणी जब तक पूरी हो अवश्य है कि उस समय तक अब्दुल हक़ ग़ज़नवी ज़िन्दा रहे। अतः चौथा लड़का भी जून 1899 को भविष्यवाणी के अनुसार पैदा हुआ जिसका नाम मुबारक अहमद है।	14 जून 1899

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 52	शेष भविष्यवाणी 52	والحمد للہ علیٰ ذالک यह भविष्यवाणी ख़ुदा के हाथ से कितनी विशिष्टता रखती है कि एक के पैदा होने को एक बूढ़े आदमी के ज़िन्दा होने के दिनों से सम्बद्ध किया और ऐसा ही प्रकटन में आया जैसा कि एक लड़के की पैदायश को फोड़ों के साथ सम्बद्ध किया और ऐसा ही प्रकटन में आया।	
भविष्यवाणी संख्या - 53	15 मार्च 1897	जब मेरी भविष्यवाणी के अनुसार लेखराम के क़त्ल हो जाने पर आर्यों में मेरे बारे में बहुत शोर मचा और मेरे क़त्ल या गिरफ़्तार होने के लिए षडयंत्र किए। तो कुछ अख़बार वालों ने इन बातों को अपने अख़बारों में भी दर्ज किया तो उस समय अल्लाह की ओर से मुझे इल्हाम हुआ "सलामत बर तू ऐ मर्द सलामत" अत: यह इल्हाम विज्ञापन द्वारा प्रकाशित किया गया और इस वादे के अनुसार अल्लाह तआला ने मुझे विरोधियों के छल-प्रपंच और योजनाओं से सुरक्षित रखा।	यह भविष्यवाणी अब तक हर दिन प्रकट हो रही है।

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

भविष्यवाणी नं. 52 परिशिष्ट अंजाम आथम में प्रकाशित होकर लाखों लोगों में प्रसिद्ध हो चुकी थी। शेष इस पृष्ठ की भविष्यवाणियों के गवाह हमारी जमाअत के और बहुत से हैं। जैसे- साहिबज़ादा सिराजुल हक़ साहिब, मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब इत्यादि।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या - 54	1901 ई.	पुस्तक ऐजाज़ुल मसीह के बारे में यह इल्हाम हुआ था من قام للجواب وتنمّر فسوف یریٰ انه تندم و تذمر अर्थात् जो व्यक्ति क्रोध से भर कर इस पुस्तक का उत्तर लिखने के लिए तैयार होगा वह शीघ्र ही देख लेगा कि वह शर्मिन्दा हुआ और निराशा के साथ उसका अन्त हुआ। अत: मुहम्मद हसन फैज़ी निवासी तहसील चकवाल ज़िला-जेहलम टीचर मदरसा नौमानिया स्थान शाही मस्जिद लाहौर ने जनसामान्य में प्रकाशित किया कि मैं इस पुस्तक का उत्तर लिखता हूँ। और ऐसी डींग मारने के बाद जब उसने उत्तर के लिए नोट तैयार करने शुरू किए और हमारी पुस्तक के अन्दर कुछ सच्चाइयों पर जो हमने लिखी थीं लानतुल्लाहि अलल काज़िबीन लिखा तो शीघ्र मर गया। देखो मुझ पर लानत भेजकर एक सप्ताह के अन्दर ही स्वयं लानती मौत के नीचे आ गया। क्या यह ख़ुदा का निशान नहीं?	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या - 55	20 फरवरी 1902 ई.	पीर मेहर अली शाह गोलड़ी ने जब इस पुस्तक ऐजाज़ुल मसीह का बहुत समय के बाद उत्तर उर्दू में लिखा तो इस बात के सिद्ध हो जाने से कि यह उर्दू इबारत भी शब्द-ब-शब्द मौलवी मुहम्मद हसन भीनी की चोरी है। मेहर अली शाह का बड़ा अपमान हुआ और उपरोक्त इल्हाम उसके बारे में भी पूरा हुआ।	अगस्त 1902 ई.
भविष्यवाणी संख्या - 56	मई 1893	सैकड़ों विरोधी मौलवियों को मुबाहले के लिए बुलाया गया था जिनमें से अब्दुल हक़ ग़ज़नवी मैदान में निकला और मुबाहल: किया जिसका परिणाम यह हुआ कि उस समय तो केवल कुछ आदमी हमारे साथ थे और अब एक लाख से भी कुछ अधिक हैं और प्रतिदिन उन्नति कर रहे हैं। और इसके मुक़ाबले पर जाकर देखना चाहिए कि अब्दुल हक़ के साथ कितने साथी हैं और उसका क्या सम्मान है। क्या यह ख़ुदा का निशान नहीं?	यह भविष्यवाणी हर समय प्रकट हो रही है

ज़िन्दा गवाह रोयत न.-55,56

इस भविष्यवाणी के गवाह हज़ारों लोग हैं। उदाहरणतया- शेख रहमतुल्ला साहिब, मुंशी ज़फर अहमद साहिब, मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी, शेख नूर अहमद साहिब एडीटर रियाज़ हिन्द अमृतसर, मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, हकीम फ़ज़्लुद्दीन साहिब भैरवी, सय्यिद हामिद शाह साहिब इत्यादि।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या - 57	21 दिसंबर 1897 ई.	दिसंबर 1896 में पंजाब की राजधानी लाहौर में एक बड़ा भारी जल्सा मज़ाहिब (धर्म महोत्सव) हुआ। जिसमें समस्त धर्मों के वकील और प्रसिद्ध लोग दूर और नज़दीक से इस बात का फैसला करने के लिए एकत्र हुए कि प्रचलित धर्मों में से कौन सा धर्म सच और लोगों के लिए सर्वाधिक लाभप्रद और मानव जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करा देने वाला है। हमने भी इस जल्से में सुनाने के लिए एक निबंध लिखा और इस निबंध के बारे में हमें समय से पूर्व यह इल्हाम हुआ कि निबंध सब पर बाला रहा। अर्थात् तुम्हारा यह वह निबंध है जो सब पर विजयी आएगा और फिर इल्हाम था- اللہ اکبر خربت خیبر۔ ان اللہ معک۔ ان اللہ یقوم اَینما کنت۔ अत: यह इल्हाम एक छपे हुए विज्ञापन द्वारा दिनांक 21 दिसंबर जल्से से पहले ही दो दिन के अन्दर ही दूर-व-नज़दीक प्रकाशित किया गया और सब लोगों को इस बात से	27 दिसंबर 1897 ई.

ज़िन्दा गवाह रोयत न.-57

यह भविष्यवाणी समय से पूर्व विज्ञापन द्वारा प्रकाशित की गई थी मौक़े पर इसको पूरा होते हुए देखने वाले हज़ारों लोग उस समय हर मिल्लत और धर्म के जल्से के मैदान में मौजूद थे जिन्होंने इक़रार किया कि यह निबंध विजयी रहा। दूसरे अंग्रेज़ी तथा उर्दू अख़बारों ने इस बात की पुष्टि की कि यही निबंध सब से बाला (ऊपर) रहा।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 57		अवगत किया गया कि हमारा ही निबंध विजयी रहेगा। अतः ऐसा ही हुआ कि इस जल्से में जितने निबंध पढ़े गये थे उन सब पर हमारा निबंध ऊपर रहा और स्वयं उस जल्से में ग़ैर धर्मों के वकीलों ने प्लेटफॉर्म पर खड़े होकर गवाहियां दीं कि मिर्ज़ा साहिब का निबंध सब निबंधो पर विजयी रहा और अंग्रेज़ी अखबार स्विल मिल्ट्री गज़ट एवं पंजाब अख़बार एवं सब अन्य अख़बारों ने बड़े ज़ोर से गवाही दी कि हमारा निबंध सब निबंधों पर विजयी रहा।	
भविष्यवाणी संख्या - 58	1886 ई.	सन् 1883 ई. में मुझे इल्हाम हुआ कि तीन को चार करने वाला मुबारक और यह इल्हाम समय से पूर्व विज्ञापन द्वारा प्रकाशित किया गया था और इसके बारे में समझाया यह गया था कि अल्लाह तआला इस दूसरी पत्नी से मुझे चार लड़के देगा और चौथे का नाम मुबारक होगा। और इस इल्हाम के	चौथा लड़का 14 जून 1899 ई. को पैदा हुआ

ज़िन्दा गवाह रोयत न.-58,59

भविष्यवाणी नं. 58, 59 पूरी होने से पूर्व विज्ञापन द्वारा प्रकाशित की गई थीं। विज्ञापन मौजूद है और तीनों भविष्यवाणियों के गवाह भी बहुत हैं जैसे- हामिद अली, मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब, मियां मुहम्मद ख़ान साहिब मुंशी रुसतम अली साहिब इत्यादि। भविष्यवाणी नं. 60 से समय से पूर्व लगभग पांच सौ लोगों को सूचना दी गई थी। उनमें से कुछ के नाम ये हैं- हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब, हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब, मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए., मुफ्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, हकीम फ़ज़्लुद्दीन साहिब, ख्वाजा कमालुद्दीन साहिब, मौलवी शेर अली साहिब।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
	शेष भविष्यवाणी 58	समय इन चारों में से एक लड़का भी इस निकाह से मौजूद न था और अब चारों लड़के ख़ुदा की कृपा से मौजूद हैं।	
भविष्यवाणी संख्या - 59	10 जुलाई 1888 ई.	10 जुलाई 1888 ई. के विज्ञापन में इल्हाम द्वारा प्रसिद्ध किया गया था कि अहमद बेग होशियारपुरी यदि अपनी लड़की का निकाह किसी और के साथ करेगा तो तीन साल के अन्दर मर जाएगा और इससे पूर्व उसके कई परिजन मरेंगे। अत: उस लड़की के दूसरी जगह निकाह के बाद ऐसा ही हुआ कि अहमद बेग़ अवधि के अन्दर शीघ्र मर गया और इस से पहले उसके कई एक अन्य परिजन मर गए। हाँ इस भविष्यवाणी के तीन भागों में से अभी एक शेष है और प्रतीक्षा योग्य है परन्तु चूंकि भविष्यवाणी के तीनों भाग एक ही इल्हाम में थे इसलिए दो के पूरा होने ने भविष्यवाणी की सच्चाई प्रकट कर दी है।	छ: महीने निकाह के बाद
भविष्यवाणी संख्या - 60	29, जुलाई 1897 ई.	29 जुलाई 1897 ई. को मैंने स्वप्न में देखा कि एक गिरने वाली बिजली मग़रिब (पश्चिम) की ओर से मेरे मकान की ओर चली आती है जो बिना आवाज़ के और हानि रहित एक प्रकाशमान सितारे के समान आहिस्ता हरकत करती हुई मेरे मकान की ओर ध्यान दे रही है और जब निकट पहुँची तो मेरी आंखों ने केवल एक	स्वप्न के कुछ दिनों पश्चात्

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 60		छोटा सा तारा देखा जिसको मेरा दिल बिजली समझता था फिर इल्हाम हुआ ما هذا الا تهدید الحکام अर्थात् यह एक मुक़द्दमा होगा और केवल अधिकारियों की पूछताछ तक पहुंच कर फिर समाप्त हो जाएगा तत्पश्चात् इल्हाम हुआ انّی مع الافواج اٰتیک بغتۃ۔ یاتیک نصرتی اِبْراء انّی انا الرحمٰن ذوالمجد والعُلٰی۔ अर्थात् मैं अपनी फौजों (अर्थात् फ़रिश्तों) के साथ अचानक तौर पर तेरे पास आऊंगा और इस मुक़द्दमें में मेरी सहायता तुझे पहुंचेगी। मैं अन्ततः तुझे बरी करूंगा और निर्दोष ठहराऊंगा। मैं ही वह रहमान (कृपालु) हूँ जो बुज़ुर्गी और बुलन्दी से विशिष्ट है। और फिर इसके साथ यह भी इल्हाम हुआ بلجت اٰیاتی अर्थात् मेरे निशान प्रकट होंगे और उनके सबूत अधिक से अधिक प्रकट होंगे और	

ज़िन्दा गवाह रोयत न.-60

हाफ़िज़ अब्दुल अली साहिब बी.ए., मीर नासिर नवाब साहिब, मुंशी ताजदीन साहिब, हकीम फ़ज़्ल इलाही साहिब, ख़लीफ़ा रजबुद्दीन साहिब, डॉक्टर मिर्ज़ा याक़ूब बेग़ बिरादर मिर्ज़ा अय्यूब बेग़ साहिब, मुंशी ताजुद्दीन साहिब क्लर्क तथा अन्य जमाअत लाहौर, हकीम हुसामुद्दीन साहिब, सय्यद हामिद शाह सुप्रिन्टेन्डेण्ट दफ्तर ज़िला, शेख़ मौला बख़्श साहिब सौदागर व जमाअत सियालकोट, शेख रहमतुल्लाह साहिब लाहौर, मुंशी ज़फर अहमद

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 60		फिर इल्हाम हुआ- لواء فتح अर्थात् विजय का झण्डा। फिर इल्हाम हुआ- انما امرنا اذا اردنا شيئا ان نقول له كن فيكون۔ इस भविष्यवाणी से समय से पूर्व पांच सौ लोगों को ख़बर दी गई थी कि ऐसा इब्तिला (आज़मायश) आने वाला है परन्तु अन्तत: बरी किया जाएगा और ख़ुदा तआला की कृपा होगी। अत: मेरी पुस्तक किताबुलबरिय्य: में ये समस्त इल्हाम दर्ज हैं जो समय से पूर्व दोस्तों को सुनाए गए और फिर उन्हीं के लिए पुस्तक अलबरिय्यत भी लिखी गई ताकि हमेशा के लिए उन्हें याद रहे कि जो कुछ मुक़द्दमें से पूर्व उन दोस्तों को ख़बर दी गई वे सब बातें कैसी सफाई से उनके सामने ही पूरी हो गईं। यह मुक़द्दमा इस प्रकार से हुआ कि एक व्यक्ति अब्दुल हमीद नामक ने ईसाइयों के सिखाने पर ज़िला मजिस्ट्रेट अमृतसर के सामने बयान दिए कि मुझे मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद ने डॉक्टर हेनरी मार्टिन क्लार्क के	

शेष देखने वाले ज़िन्दा गवाह- साहिब, मियां मुहम्मद ख़ान साहिब, मुंशी मुहम्मद साहिब तथा जमाअत कपूरथला, खलीफ़ा नूरुद्दीन साहिब तथा जमाअत जम्मू, चौधरी रुस्तम अली साहिब कोर्ट इन्सपेक्टर, सय्यद अमीर शाह साहिब डिप्टी इन्सपेक्टर इत्यादि। कुछ एक नाम उदाहरण स्वरूप लिखे गए हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 60		क़त्ल करने के लिए भेजा है। इस पर अमृतसर के मजिस्ट्रेट ने मेरी गिरफ्तारी के लिए 1 अगस्त को वारंट जारी किया, जिसकी ख़बर सुनकर हमारे विरोधी अमृतसर, बटाला रेल के प्लेटफॉर्मों और सड़कों पर आ-आ कर खड़े हो जाते थे ताकि मेरा अपमान देखें। परन्तु ख़ुदा की क़ुदरत ऐसी हुई कि पहले तो वह वारंट ख़ुदा जाने कहां गुम हो गया। द्वितीय अमृतसर के ज़िला मजिस्ट्रेट को बाद में ख़बर लगी कि उसने ग़ैर ज़िले में वारंट जारी करने में बड़ी ग़लती की है। अत: उसने 6 अगस्त को जल्दी से साहिब ज़िला गुरदासपुर को तार दिया कि वारंट फौरन रोक दो जिस पर सब हैरान हुए कि वारंट कैसा, परन्तु मुक़द्दमे की मिस्ल आने पर साहिब ज़िला गुरदासपुर ने एक मामूली सम्मन के द्वारा मुझे बुलाया और सम्मान के साथ मुझे कुर्सी दी। यह साहिब ज़िला जिसका नाम कप्तान एम.डब्ल्यू डगलस था। दक्ष, बुद्धिमान और न्याय प्रिय स्वभाव होने के कारण तुरन्त समझ गया कि मुक़द्दमा निर्मूल और झूठा है। इसलिए मैंने एक दूसरे स्थान में उसको पैलातूस से तुलना दी है अपितु मर्दानगी और इन्साफ़ में उससे बढ़कर। परन्तु ख़ुदा की और कृपा	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 60		यह हुई कि स्वयं अब्दुल हमीद ने अदालत में इक़रार कर लिया कि ईसाइयों ने मुझे सिखाकर यह बयान दिलाया था अन्यथा यह बयान सर्वथा झूठा है कि मुझे क़त्ल के लिए प्रेरणा दी गई थी अत: साहिब ज़िला ने इस अन्तिम बयान को सही समझा और बड़े ज़ोर-शोर का चिट्ठा लिखकर मुझे बरी कर दिया और मुस्कराहट के साथ अदालत में मुझे मुबारकबाद दी- فالحمد للہ علیٰ ذالک۔	
भविष्यवाणी संख्या -61	29 जुलाई 1897 ई.	इसी उपरोक्त इल्हाम के सिलसिले में एक इल्हाम यह था कि विरोधियों में फूट और एक विरोधी व्यक्ति का अपमान, मान हानि और लोगों की निन्दा। अत: इस इल्हाम का एक भाग तो इस प्रकार पूरा हुआ कि हमारे विरोधी अर्थात् अब्दुल हमीद ने साफ़ इक़रार कर लिया कि मुझे इन लोगों ने यह झूठी बात सिखाई थी अन्यथा असल में यह कुछ बात न थी। केवल उनके बहकाने पर मैंने ऐसा कहा। यह इल्हाम समय से पूर्व तीन सौ से अधिक लोगों को सुनाया गया था और वे ज़िन्दा हैं।	20 अगस्त 1897 ई.

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या - 62	29 जुलाई 1897	इल्हाम का दूसरा भाग इस प्रकार से पूरा हुआ कि मुक़द्दमें के मध्य जब एकेश्वर वादियों के एडवोकेट मौलवी मुहम्मद हुसैन मेरे विरोध में ईसाइयों के गवाह बनकर प्रस्तुत हुए तो अपनी आशाओं के विरुद्ध मेरा सम्मान देखकर इस कच्चे लालच में पड़े कि हम भी कुर्सी मांगें। तो आते ही उन्होंने प्रश्न किया कि मुझे कुर्सी मिलनी चाहिए। परन्तु अफ़सोस कि डिप्टी कमिश्नर साहिब ने उनको झिड़क दिया और सख़्त झिड़का कि तुम को कुर्सी नहीं मिल सकती। तो यह ख़ुदा का एक निशान था कि जो कुछ उन्होंने मेरे लिए चाहा वह स्वयं उनके लिए हो गया।	13 अगस्त 1897 ई.
भविष्यवाणी संख्या - 63	29 मार्च 1897 ई.	इल्हामों के इसी सिलसिले में एक यह भविष्यवाणी की गई थी कि- بلجت آیاتی अर्थात् मेरे निशान प्रकट होंगे और उनके सबूत अधिक से अधिक प्रकट होंगे। अत: ऐसा ही हुआ कि इस घटना से लगभग डेढ़ साल बाद अब्दुल हमीद अपराधी को फिर	12 सितंबर 1899 ई.

देखने वाले ज़िन्दा गवाह- इन भविष्यवाणियों के गवाह हज़ारों लोग सहमत और विरोधी मौजूद हैं। अत: कुछ के नाम ये हैं- हज़रत हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहिब, शेख रहमतुल्लाह साहिब, साहिबज़ादा सिराजुलहक़ साहिब, मुफ्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, ख़लीफा नुरुद्दीन साहिब, ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब, मौलवी शेर अली साहिब बी.ए., मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए. इत्यादि।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 63		गिरफ़्तार किया गया और कितनी अवधि हिरासत में रखकर उससे फिर इक़रार लिए गए परन्तु उसने यही गवाही दी कि मेरा पहला बयान ही झूठा था जो ईसाइयों के सिखलाने पर मैंने कहा था। तो इस प्रकार ख़ुदा ने मेरी बरीअत को पूर्ण कर दिया। इस इल्हाम के ये मायने थे कि मेरी बरीअत के लिए ख़ुदा की ओर से और भी निशान प्रकट होंगे। तो ऐसा ही प्रकटन में आया।	
भविष्यवाणी संख्या - 64	1879 ई.	इसी मुक़द्दमें के द्वारा जो ख़ून के आरोप का मुक़द्दमा था और वह इल्हामी भविष्यवाणी पूरी हुई जो बराहीन अहमदिया में इस मुक़द्दमें से बीस वर्ष पूर्व दर्ज थी और वह इल्हाम यह है- فبرّأهُ اللّٰه ممّا قالوا و كان عند اللّٰه وجيها- अर्थात् ख़ुदा उस व्यक्ति को उस आरोप से जो उस पर लगाया जाएगा बरी कर देगा क्योंकि वह ख़ुदा के नज़दीक रोबदार चेहरे वाला है। अत: ख़ुदा तआला का यह एक भारी निशान है कि इसके बावजूद कि	1897 ई.

देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

इन भविष्यवाणियों के गवाह बहुत हैं जैसे मुंशी ताजुद्दीन साहिब, मीर नासिर नवाब साहिब, मौलवी अब्दुल करीम साहिब, मौलवी सय्यद मुहम्मद अहसन साहिब, मौलवी कुतुबुद्दीन साहिब, हाफ़िज़ अब्दुल अली साहिब बी.ए., मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब, साहिबज़ादा मंज़ूर अहमद साहिब इत्यादि।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 64		क़ौमों ने मुझे अपमानित करने के लिए सहमति कर ली थी मुसलमानों की ओर से मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब थे, हिन्दुओं की ओर से लाला रामभज दत्त वकील थे और ईसाइयों की ओर से डॉक्टर हेनरी मार्टिन क्लार्क साहिब अपनी समस्त जमाअत सहित आए और अहज़ाब के युद्ध की तरह इन क़ौमों ने सर्व सहमति से मुझ पर चढ़ाई की थी परन्तु ख़ुदा तआला ने सब को अपमानित किया। और मुझे बरी किया और अब्दुल हमीद के मुंह से इस प्रकार सच निकलवाया जिस प्रकार यूसुफ के मुक़ाबले में उस मुफ़्तरी औरत के मुंह से सच निकल गया था और अथवा जिस प्रकार हज़रत मूसा के मुक़ाबले में उस झूठी औरत के मुँह से सच निकल गया था ताकि वह बात पूरी हो जिसकी ओर इस इल्हामी भविष्यवाणी में संकेत था- بَرَّأَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا۔	
भविष्यवाणी संख्या - 65	1886 ई.	एक बार मुझे स्वप्न में दिखाया गया कि शेख मेहर अली साहिब रईस होशियारपुर के फर्श को आग लगी हुई है और उस आग को इस ख़ाकसार ने बार-बार पानी डालकर बुझाया है। उसी समय मेरे दिल में ख़ुदा तआला की ओर से पूर्ण विश्वास के साथ यह ताबीर डाली गई कि शेख साहिब पर और उनके सम्मान पर बड़ा संकट आएगा और वह संकट और बला	1887 ई.

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 65		केवल मेरी दुआ से दूर की जाएगी। मैंने इस स्वप्न से शेख साहिब को एक विस्तृत पत्र द्वारा सूचना दे दी थी अतः इसके छः महीने बाद शेख मेहर अली साहिब एक ऐसे आरोप में फंस गए कि उन्हें फांसी का आदेश दिया गया। ऐसे गंभीर समय में उनके बेटे के निवेदन पर दुआ की गई और रिहाई की ख़ुशख़बरी उन के बेटे को लिखी गई। तो इसके बाद वह बिल्कुल रिहा हो गए।	
भविष्यवाणी संख्या - 66	लगभग 1880 ई.	एक बार कश्फ़ी तौर पर मुझे 44 या 46 रुपए दिखाए गए और फिर इल्हाम हुआ कि माझे खां का बेटा और शम्सुद्दीन पटवारी ज़िला लाहौर भेजने वाले हैं। तत्पश्चात् कार्ड आया जिसमें लिखा था कि 40 माझे खां के बेटे की ओर से हैं और 4 या 6 शम्सुद्दीन पटवारी की ओर से हैं। फिर इसी विवरण से रुपए आए।*	लगभग 1880 ई.

ज़िन्दा गवाह रोयत न.-65-66

इस निशान के गवाह शेख मेहर अली साहिब और उनके बेटे तथा अन्य सैकड़ों लोग ज़िला होशियारपुर इत्यादि के हैं। देखो विज्ञापन 25 फरवरी 1893 ई.।

*इस चमत्कार के गवाह शेख हामिद अली साहिब थह निवासी ग़ुलाम नबी काडो ज़िला अमृतसर और क़ादियान के अधिकांश निवासी हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या - 67	1 फरवरी 1897 ई.	जब मेरी लड़की मुबारका मां के पेट में थी तो हिसाब की ग़लती से चिन्ता हुई और उसका ग़म सीमा से बढ़ गया कि शायद कोई और रोग हो। तब मैंने ख़ुदा के दरबार में दुआ की तो इल्हाम हुआ- آید آن روزے کہ مستخلص شود۔ और मुझे समझाया गया कि लड़की पैदा होगी। फिर इसके अनुसार 27 रमज़ान 1314 हिज्री को लड़की पैदा हुई जिसका नाम मुबारका रखा गया।✷	
भविष्यवाणी संख्या - 68	1897 ई.	एक और ज़बरदस्त निशान जो मेरी सच्चाई में प्रकट हुआ यह है कि एक मौलवी ने पुस्तक 'निबरास' लेखक साहिब ज़र्मद का हाशिया लिखते हुए मेरे बारे में کسرہ اللّٰہ की बद्-दुआ की। इस बद्-दुआ का मतलब यह है कि जिस व्यक्ति के बारे में यह बद्-दुआ की जाए वह ऐसा तबाह हो जाए कि उसकी सारी सन्तान मर जाए और वह निकृष्ठ रह जाए। तो अभी कथित मौलवी हाशिया समाप्त करने न पाया था कि उसकी सब सन्तान मर गई और वह स्वयं भी निकृष्ठ हो गया और मुझे ख़ुदा ने एक और बेटा प्रदान किया।	1897 ई.

ज़िन्दा गवाह रोयत न.-67

✷इसके गवाह मौलवी नूरुद्दीन साहिब, मौलवी अब्दुल करीम साहिब तथा अन्य बहुत से लोग हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या - 69	1897 ई.	ऐसा ही मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी ने इस ख़ाकसार के लिए अपनी पुस्तक 'फ़्तह रहमानी' के पृष्ठ-27 में मुझ पर बद्-दुआ की थी। अन्ततः उस बद्-दुआ का असर यह हुआ कि वह बहुत जल्द मर गया।	अपने रिसाला बनाने के लगभग तीन माह पश्चात्
भविष्यवाणी संख्या - 70	लगभग 1893 ई.	ऐसा ही मौलवी इस्माईल अलीगढ़ी ने अपनी पुस्तक में मुझे ज़ालिम और मुफ़्तरी ठहरा कर बतौर मुबाहलः अपनी पुस्तक में मेरे हक़ में बद्-दुआ की तो अल्लाह तआला ने उसे मार दिया देखो पुस्तक मौलवी इस्माईल।	लगभग 1894 ई.
भविष्यवाणी संख्या - 71	लगभग 1890 ई.	ऐसा ही मुहियुद्दीन लखूके वाले ने अपना एक इल्हाम मेरे बारे में प्रकाशित किया कि मिर्ज़ा साहिब फिरऔन और फिरऔन की तरह मेरी तबाही चाही तो अल्लाह तआला ने शीघ्र ही उसे पकड़ा और मार दिया और उसकी मृत्यु से पहले पत्र द्वारा उसको सूचना दी गई थी।	लगभग 1893 ई.

देखने वाले ज़िन्दा गवाह-

इन निशानों के पूरा होने के गवाह उन मृत्यु प्राप्त लोगों की अपनी पुस्तकें, पत्रिकाएं और विज्ञापन हैं जो कि उन्होंने हमारे विरोध में प्रकाशित किए और हमारे वे इल्हाम हैं जो समय से पूर्व ऐसे लोगों की मृत्यु के बारे में हज़ारों लोगों में प्रकाशित हो चुके थे और उनके बारे में अन्य गवाह मौलवी अब्दुल करीम, साहिबज़ादा सिराजुलहक़ इत्यादि लोग और लाला शरमपत और मलावामल आर्य क़ादियान हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या - 72	1901 ई.	ऐसा ही मौलवी मुहम्मद हसन फ़ैज़ी निवासी भीं ने हमारे बारे में हमारी पुस्तक ऐजाज़ुल मसीह पर लानतुल्लाह अलल काज़िबीन शब्दों के साथ मुबाहल: किया तो अल्लाह तआला ने एक-दो माह के अन्दर-अन्दर उसको भयंकर बीमारी के साथ मार दिया और इस प्रकार के और बहुत से निशान हैं परन्तु सब के वर्णन करने की यहां गुंजायश नहीं।	1902 ई.
भविष्यवाणी संख्या - 73	लगभग 1878 ई.	इन सब निशानों में से जो पृथ्वी और आकाश के स्रष्टा ने मेरे हाथ पर प्रकट किए एक यह भी है कि एक बार मैंने बाबा नानक साहिब को स्वप्न में देखा कि उन्होंने स्वयं को मुसलमान प्रकट किया है और मैंने देखा कि एक हिन्दू उनके झरने से पानी पी रहा है तो मैंने उस हिन्दू को कहा कि यह झरना गदला है। हमारे झरने से पियो। तीस वर्ष का समय हुआ है जब कि मैंने यह स्वप्न अर्थात् बाबा नानक साहिब को मुसलमान देखा। उसी समय सब हिन्दुओं को सुनाया गया था और मुझे विश्वास था कि इसका कोई सत्यापन पैदा हो जाएगा। अत: एक लम्बे समय के बाद वह भविष्यवाणी पूर्ण सफ़ाई से पूरी हो गई और तीन सौ वर्ष के बाद वह चोला हमें मिल गया जो बाबा साहिब के मुसलमान	1895 ई.

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 73		होने पर एक स्पष्ट तर्क है। यह चोला जो एक प्रकार की क़मीज़ है डेरा बाबा नानक में बाबा नानक साहिब की सन्तान के पास सम्मान प्रतिष्ठा से बतौर तबर्रुक़ (बरकत के तौर पर) सुरक्षित है। और सिक्खों की ऐतिहासिक पुस्तकों में लिखा है कि इस चोले को बाबा नानक साहिब पहना करते थे उस पर बहुत सी क़ुर्आन की आयतें लिखी हुई हैं जिनमें से एक यह सूरह है- قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ۔ اَللّٰهُ الصَّمَدُ۔ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ۔ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا أَحَدٌ۔ (इख्लास-2-5) और एक यह आयत है- إِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْإِسْلَامُ (आले इमरान-20) وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِيْنَ (आले इमरान-86) ऐसे चोले बाबा नानक के युग में वह फ़क़ीर बनाया करते थे जिनका दावा था कि हम इस्लाम में लीन हैं। तो बाबा साहिब का चोला आपको केवल मुसलमान ही नहीं	

ज़िन्दा गवाह रोयत न.-73

इस निशान के बारे में इल्हामों के समय से पूर्व सुनने वाले बहुत सारे लोग हैं उनमें से साहिबज़ादा सिराजुलहक़ साहिब नोमानी, और शेख हामिद अली साहिब, और शेख अब्दुल्लाह साहिब सिन्नौरी, मुंशी ताजुद्दीन साहिब, मौलवी नूरुद्दीन साहिब इत्यादि बहुत

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 73		बनाता अपितु कामिल मुसलमान बनाता है। कुछ सिक्खों का यह उत्तर है कि यह चोला बाबा साहिब ने एक काज़ी से ज़बरदस्ती छीना था। यह बहुत व्यर्थ उत्तर है। सिक्खों को अब तक ख़बर नहीं कि क़ाज़ियों का काम नहीं कि चोले अपने पास रखें। इस्लाम में चोले रखना उस युग में फ़क़ीरों की एक रस्म थी। अतः यह बात बहुत सही है कि बाबा साहिब के मुर्शिद ने जो मुसलमान था यह चोला उनको दिया था। हाँ यह भी हो सकता है अपितु जनम साखियों में भी लिखा है कि चूंकि बाबा साहिब सौभाग्यशाली आदमी थे और बड़ी मर्दानगी से हिन्दुओं से सम्बन्ध विच्छेद कर बैठे थे, मर्दे मैदान भी बड़े थे और एक व्यक्ति हयात ख़ान नामक एक अफ़ग़ान की लड़की से निकाह भी किया था और मुल्तान तथा कुछ अन्य औलिया-ए-इस्लाम के मक़बरों पर चिल्ला-कशी भी की थी। इसलिए ख़ुदा से इल्हाम पाकर यह चोला उन्होंने बनाया था। यह उनका चमत्कार है जैसा चोला आकाश से उतरा	

शेष ज़िन्दा गवाह रोयत न.-73

से दोस्त हैं और इसके पूरा होने का सबूत स्वयं डेरा बाबा नानक में अब तक मौजूद है जो चाहे जाकर स्वयं देख सकता है और उन आयतों को पढ़ सकता है जो हमने अपनी पुस्तक सतबचन में लिख दी हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 73		और मेरे स्वप्न में जो बाबा नानक साहिब ने स्वयं को मुसलमान प्रकट किया इस से यही अभिप्राय था कि एक युग में उनका मुसलमान होना पब्लिक पर प्रकट हो जाएगा अतः इसी बात के लिए पुस्तक सतबचन लिखी गई थी और यह जो मैंने हिन्दुओं को कहा कि यह झरना गदला है हमारे चश्मे से पानी पियो इस से अभिप्राय यह था कि ऐसा युग आने वाला है कि हिन्दुओं और सिक्खों पर इस्लाम की सच्चाई साफ तौर पर खुल जाएगी और बाबा साहिब का झरना जिसको वर्तमान सिक्खों ने अपनी कम समझी से गदला बना रखा है वह मेरे द्वारा साफ किया जाएगा और जिस संबंध को बाबा साहिब ने हिन्दू क़ौम से बड़ी मर्दानगी के साथ तोड़ दिया था वह तोड़ना दोबारा सिद्ध कर दिया जाएगा और बाबा साहिब का अपने चोले पर यह लिखना कि इस्लाम के बिना किसी जगह मुक्ति नहीं। यदि सिक्ख धर्म के लोग इसी एक वाक्य पर ध्यान देते तो बहुत पहले वे वही रंग ग्रहण कर लेते जो बाबा साहिब ने ग्रहण किया था। बाबा साहिब वास्तव में एक ऐसा व्यक्ति सिक्खों में गुज़रा है जिसको सिक्खों ने पहचाना नहीं। अधिकतर लोग इस्लाम की सच्चाई पुस्तकों द्वारा मालूम करते हैं परन्तु बाबा	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 73		साहिब ने ख़ुदा के इल्हाम से इस्लाम की सच्चाई मालूम कर ली। आश्चर्य कि जिस क़ौम का पेशवा ऐसा साफ दिल और इस्लाम का सहायक हो जिसने इस्लाम की गवाही देकर कष्ट भी बहुत उठाए उसी की क़ौम और उसी के अनुयायी इस्लाम से इतने दूर और अलग हैं।	
भविष्यवाणी संख्या - 74	लगभग 1878 ई.	एक बार मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी का एक दोस्त अंग्रेज़ी जानने वाला नजफ अली नामक (जो काबुल में भी गया था और शायद अब भी वहां है) मेरे पास आया और उसके साथ मुहिब्बी मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब भी थे। हम तीनों सैर के लिए बाहर गए तो रास्ते में कश्फ़ी तौर पर मुझे मालूम हुआ कि नजफ अली ने मेरे विरोध और कपटाचार में कुछ बातें की हैं। अतः यह कश्फ़ उसे सुनाया गया तो उसने इक़रार किया कि यह बात सही है।✷	लगभग 1878 ई.
भविष्यवाणी संख्या - 75	1874 ई.	लगभग अट्ठाईस वर्ष का समय गुज़रा है कि मैंने स्वप्न में एक फ़रिश्ता एक लड़के के रूप में देखा जो एक ऊंचे चबूतरे पर बैठा हुआ था और उसके हाथ में एक पवित्र नान (रोटी) था जो अत्यन्त चमकीला था वह नान उसने मुझे दिया	लगभग 25 साल बाद इसका प्रकटन शुरू हुआ

✷ इस निशान के गवाह मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 75		और कहा कि यह तेरे लिए और तेरे साथ के दरवेशों के लिए है यह उस युग का स्वप्न है जबकि मैं न कोई ख्याति और न कोई दावा रखता था और न मेरे साथ दरवेशों की कोई जमाअत थी, परन्तु अब मेरे साथ बहुत सी वह जमाअत है जिन्होंने स्वयं धर्म को दुनिया पर प्राथमिक रख कर स्वयं को दरवेश बना दिया है और अपने देशों से हिजरत करके और अपने पुराने दोस्तों और रिश्तेदारों से पृथक होकर हमेशा के लिए मेरे पड़ोस में आबाद हुए हैं। और नान से मैंने यह ताबीर की थी कि ख़ुदा हमारा और हमारी जमाअत का स्वयं अभिभावक होगा और रिज़्क़ (अन्न) की परेशानी हमें अस्त-व्यस्त नहीं करेगी। अतः बहुत वर्षों से ऐसा ही प्रकटन में आ रहा है।✷	
भविष्यवाणी संख्या - 76	20 अगस्त 1875 ई.	मेरे पिता मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब (स्वर्गीय) की मृत्यु का समय जब क़रीब आया और केवल कुछ पहर शेष रह गए तो अल्लाह तआला ने मुझे उनकी मृत्यु से इन शब्दों में ख़बर दी- والسماءوالطارق अर्थात् क़सम है आकाश की और उस	20 अगस्त 1875 ई.

ज़िन्दा गवाह रोयत न.-75

✷ इस स्वप्न के गवाह हाफ़िज़ हामिद अली साहिब तथा अन्य क़ादियान निवासी हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 76		घटना की जो सूर्य अस्त होने के बाद प्रकटन में आएगी। तो यह भविष्यवाणी इस प्रकार पूरी हुई कि सूर्य अस्त होने बाद मेरे पिता श्री ने मृत्यु पाई।✷	
भविष्यवाणी संख्या - 77	1880 ई.	एक बार मैं ऐसा बहुत बीमार हुआ कि मेरा अन्तिम समय समझ कर मुझे मस्नून तरीक़े से तीन बार सूरह यासीन सुनाई गई और मेरे जीवन से सब निराश हो चुके थे और कुछ परिजन दीवारों के पीछे रोते थे। तब अल्लाह तआला ने मुझे इल्हाम के द्वारा यह दुआ सिखाई- سبحان اللہ و بحمدہٖ سبحان اللہ العظیم اللّٰھم صل علٰی محمد و علٰی اٰل محمد और इल्क़ा हुआ कि दरिया के पानी में जिसके साथ रेत भी हो हाथ डाल कर ये पवित्र वाक्य पढ़ और अपने सीने, और सीने के पिछले भाग और दोनों हाथों तथा मुंह पर इसको फेर कि तू इससे रोगमुक्त होगा अतः इस पर अमल किया गया और अभी प्याला समाप्त न होने पाया था कि मैं पूर्णतया स्वास्थ हो गया। फिर यह इल्हाम हुआ - وان کنتم فی ریب ممّا نزلنا علٰی عبدنا فأتوا بشفاء من مثلہٖ	1880 ई.

ज़िन्दा गवाह रोयत न.-76

✷ इस भविष्वाणी के गवाह लाला शरमपत तथा मलावामल हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 76		अर्थात् यदि तुम्हें इस निशान में सन्देह हो जो हमने रोग मुक्त करके दिखाया है तो इसका उदाहरण प्रस्तुत करो।	
भविष्यवाणी संख्या - 78	लगभग 1880 ई.	ख़ुदा तआला के ज़बरदस्त निशानों में से एक यह है कि समय लगभग बीस साल का गुज़र चुका है कि जब मुझे एक पवित्र वह्यी के द्वारा ख़बर दी गई थी कि ख़ुदा तआला एक सभ्य ख़ानदान में मेरी शादी करेगा और वह क़ौम के सय्यद होंगे और उस बीवी को ख़ुदा मुबारक करेगा और उस से सन्तान पैदा होगी और फिर यह इल्हाम हुआ कि- ہر چہ باید نو عروسی را ہمہ سامان کنم अर्थात् इस शादी की समस्त आवश्यकताओं का पूरा करना मेरे ज़िम्मे होगा। अत: उसने इस वादे के अनुसार शादी के बाद उसके प्रत्येक बोझ से मुझे भार मुक्त कर दिया और हमेशा करता रहा और सब सामान उपलब्ध हुए और अच्छे रहन-सहन के लिए सब सामान उपलब्ध होते रहे और किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ अपितु हर प्रकार का आराम पहुंचा और दूसरा बड़ा निशान यह है कि जब शादी के बारे में मुझ पर पवित्र वह्यी उतरी थी तो उस समय मेरा दिल और मस्तिष्क तथा शरीर बहुत कमज़ोर था और	1884 ई.

इस निशान के गवाह शेख हामिद अली, लाला शरमपत, लाला मलावामल खत्री तथा अन्य बहुत से लोग हैं जिन को पहले से इस वह्यी की ख़बर दी गई थी।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 78		मधुमेह के अतिरिक्त सिर का चकराना, हृदय की ऐंठन के यक्षमा की बीमारी का असर अभी पूर्णतया दूर न हुआ था। इस अत्यन्त श्रेणी की कमज़ोरी में जब निकाह हुआ तो कुछ लोगों ने अफ़सोस किया क्योंकि मेरी हालत में पुंसत्व समाप्त हो गया था और वृद्धावस्था के रंग में मेरा जीवन था। अत: मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने मुझे पत्र लिखा था जो अब तक मौजूद है कि आपको शादी नहीं करना चाहिए थी। ऐसा न हो कि कोई इब्तिला सामने आए परन्तु इन कमज़ोरियों के बावजूद ख़ुदा ने मुझे पूरी शक्ति स्वास्थ्य और ताक़त प्रदान की और चार लड़के प्रदान किए।	
भविष्यवाणी संख्या - 79	फरवरी 1897	एक व्यक्ति शियों में से जो स्वयं को शेख़ नजफ़ी के नाम से प्रसिद्ध करता था एक बार लाहौर में आकर हमारे मुक़ाबले में बहुत शोर मचाने लगा और निशान की मांग की। अत: हमने 1 फरवरी 1897 ई. को विज्ञापन प्रकाशित करके यह वादा दिया कि चालीस दिन तक तुझे अल्लाह तआला कोई निशान दिखाएगा। अत: ख़ुदा	मार्च 1897 ई.

ज़िन्दा गवाह रोयत

इन भविष्यवाणियों के गवाह फज़्लदीन साहिब, मुंशी ताजदीन साहिब, मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, मौलवी नूरुद्दीन साहिब, शेख हामिद अली साहिब, मियां अब्दुल्लाह साहिब सिन्नौरी, मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब, मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब इत्यादि हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 79		का उपकार है कि अभी चालीस दिन पूरे नहीं हुए थे कि लेखराम पेशावरी की मौत का निशान घटित हो गया तब तो गुमराह शेख नजफी तुरन्त लाहौर से भाग गया।	
भविष्यवाणी संख्या - 80	लगभग 1877 ई.	मार्टिन क्लार्क वाले मुक़द्दमें से लगभग पच्चीस साल पहले मैं एक बार स्वप्न में देख चुका था कि मैं एक अदालत में किसी हाकिम के सामने उपस्थित हूँ और नमाज़ का समय आ गया है तो मैंने उस हाकिम से नमाज़ के लिए इजाज़त मांगी तो उसने बड़ी उदारता के साथ मुझे इजाज़त दे दी। फिर उसके अनुसार इस मुक़द्दमें में ठीक मुक़द्दमें के मध्य जबकि मैंने कप्तान डगलस से नमाज़ के लिए इजाज़त चाही तो उसने बड़ी ख़ुशी से मुझे इजाज़त दी।	1897 ई.
भविष्यवाणी संख्या - 81	11 अप्रैल 1900 ई.	ईदुल अज़्हिया की सुबह मुझे इल्हाम हुआ कि कुछ अरबी में बोलो। अत: बहुत से दोस्तों को इस बात से सूचना दी गई। और इससे पूर्व मैंने कभी अरबी भाषा में कोई भाषण नहीं दिया था। परन्तु उस दिन मैं ईद का ख़ुत्बा अरबी भाषा में पढ़ने के लिए खड़ा हुआ तो अल्लाह तआला ने एक सरस, सुबोध मायनों से भरपूर कलाम अरबी में मेरी जीभ में जारी किया जो पुस्तक ख़ुत्बा इल्हामिया में दर्ज है।	11 अप्रैल 1900 ई.

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 81		वह कई भाग का भाषण है जो एक ही समय में खड़े होकर मौखिक रूप से बिना सोचे तत्काल दिया गया। और ख़ुदा ने अपने इल्हाम में इसका नाम निशान रखा क्योंकि वह मौखिक भाषण केवल ख़ुदाई शक्ति से प्रकटन में आया मैं कदापि नहीं मानता कि कोई अलंकर्ता और विद्वान और अरबी साहित्यकार भी मौखिक तौर पर खड़ा होकर ऐसा भाषण दे सके। यह भाषण वह है जिस के इस समय डेढ़ सौ लोग गवाह होंगे।	
भविष्यवाणी संख्या - 82	लगभग फ़रवरी 1902 ई.	एक रात को मुझे इस प्रकार इल्हाम हुआ कि जैसे ग़ायब की ख़बर होती है और वे ये शब्द थे- اِنِّی اُفِرُّ مع اھلی الیک۔ यह इल्हाम सब दोस्तों को सुनाया गया। फिर उसी दिन ख़लीफ़ा नुरुद्दीन का जम्मू से पत्र आया कि इस शहर में ताऊन का ज़ोर पड़ गया है और मैं आप से इजाज़त	लगभग फरवरी 1902 ई.

ज़िन्दा गवाह रोयत न.-81

इस इल्हाम के समय से पूर्व बहुत से लोगों को सूचना दी गई। जैसे शेख रहमतुल्लाह साहिब, मौलवी अब्दुल करीम साहिब, मौलवी नूरुद्दीन साहिब, मौलवी मुहम्मद अली साहिब, शेख अब्दुर्रहमान साहिब, मास्टर अब्दुर्रहमान साहिब, मौलवी शेर अली, हाफ़िज़ अब्दुल अला इत्यादि बहुत बड़ी संख्या में लोग इसके गवाह हैं जिन्होंने इस निशान को अपनी आंखों से देखा।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या -82		चाहता हूँ अपने सब परिवार को साथ लेकर क़ादियान चला आऊं।✷	
भविष्यवाणी संख्या - 83	20 मार्च 1898	एक बार क़ादियान के आर्यों ने बहुत आग्रह किया कि कोई निशान दिखलाओ और हमारे विरोधी भागीदार मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन और मिर्ज़ा इमामुद्दीन भी निशान देखने के इच्छुक थे। तब इन सब पर दोषी होने का सबूत क़ायम करने के लिए अल्लाह तआला से इल्हाम पाकर मैंने यह भविष्यवाणी की कि मिर्ज़ा इमामुद्दीन और मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन पर इकत्तीस माह के अन्दर एक कठोर संकट आएगा अर्थात् उनकी सन्तान में से कोई ऐसा आदमी मर जाएगा जिसका मरना उनके लिए कष्ट और फूट का कारण होगा। अत: ऐसा ही हुआ कि जब इकत्तीस माह के पूरा होने में अभी पन्द्रह दिन शेष थे तो मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन की लड़की जो इमामुद्दीन की भतीजी थी पच्चीस साल की आयु में एक छोटा सा बच्चा छोड़कर मर गई जिसका	अक्टूबर 1890 ई.

ज़िन्दा गवाह रोयत न.-82

✷इस इल्हाम के गवाह बहुत से लोग हैं जो उस समय क़ादियान में मौजूद थे। उनमें से मौलवी नूरुद्दीन साहिब, मौलवी अब्दुल करीम साहिब, मौलवी मुहम्मद अली साहिब, मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, हकीम फ़ज़्लदीन साहिब, मौलवी शेर अली साहिब इत्यादि हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या -83		सदमा उन सब पर बहुत सख़्त हुआ और यह बात उनके लिए तथा आर्यों के लिए एक बड़ा निशान हुआ।✷	
भविष्यवाणी संख्या - 84	1884 ई.	लगभग 1884 में अल्लाह तआला ने मुझे इस वह्यी से सम्मानित किया कि- ولقد لبثت فيكم عمرًا من قبله افلا تعقلون۔ और इस में अन्तर्यामी ख़ुदा ने इस बात की ओर संकेत किया था कि कोई विरोधी कभी तेरे जीवन चरित्र पर कोई दाग़ नहीं लगा सकेगा। अतः इस समय तक जो मेरी आयु लगभग पैंसठ साल है कोई व्यक्ति दूर या नज़दीक रहने वाला हमारे गुज़रे जीवन चरित्र पर किसी प्रकार का दाग़ सिद्ध नहीं कर सकता अपितु पहले जीवन की पवित्रता की गवाही अल्लाह तआला ने स्वयं विरोधियों से भी दिलवाई है। जैसा कि मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब ने नितान्त ज़ोरदार शब्दों में अपने अख़बार इशाअतुस्सुन्नः में कई बार हमारी और हमारे ख़ानदान की प्रशंसा की है और दावा किया है कि इस व्यक्ति के बारे में और इसके ख़ानदान के बारे में मुझ से अधिक कोई परिचित नहीं। और	यह भविष्यवाणी हमेशा पूरी हो रही है।

ज़िन्दा गवाह रोयत न.-83

✷इसके गवाह मिर्ज़ा इमामुद्दीन, निज़ामुद्दीन और क़ादियान के बहुत से आर्य हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या -84		फिर इन्साफ़ की पाबन्दी से और अपनी जानकारी के अनुसार प्रशंसाएं की हैं। अत: एक ऐसा विरोधी जो कुफ़्र के फ़त्वे का प्रवर्तक है भविष्यवाणी ولقد لبثت فیکم का सत्यापनकर्ता है।	
भविष्यवाणी संख्या - 85	1877 ई.	मिर्ज़ा आज़म बेग़ भूतपूर्व एक्सट्रा असिस्टेंट कमिश्नर ने हमारे कुछ बेदख़ल भागीदारों की ओर से हमारी जायदाद के स्वामित्व में हिस्सेदार बनने के लिए हम पर नालिश दायर की और हमारे भाई स्वर्गीय मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर साहिब अपनी सफ़लता का विश्वास रख कर जवाबदही में व्यस्त हुए। मैंने जब इस बारे में दुआ की तो सर्वज्ञ ख़ुदा की ओर से मुझे इल्हाम हुआ कि اجیب کل دُعائک الّا فی شر کائک तो मैंने सब रिश्तेदारों को एकत्र करके खोल कर सुना दिया कि सर्वज्ञ ख़ुदा ने मुझे ख़बर दी है कि तुम इस मुक़द्दमें में कदापि विजयी न होगे। इसलिए इस से अलग हो जाना चाहिए परन्तु उन्होंने भौतिक कारणों और साधनों को देखकर अपनी विजय को विश्वसनीय समझ कर	1877 ई.

ज़िन्दा गवाह रोयत न.-85

इसके गवाह क़ादियान के कई आदमी हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 85		मेरी बात की क़द्र न की और मुक़द्दमें की पैरवी आरंभ कर दी और निचली अदालत में मेरे भाई को विजय भी हो गई परन्तु अन्तर्यामी ख़ुदा की वह्यी के विरुद्ध किस प्रकार हो सकता था अन्त में चीफ कोर्ट में मेरे भाई को पराजय हुई और इस प्रकार उस इल्हाम की सच्चाई सब पर प्रकट हो गई।	
भविष्यवाणी संख्या - 86	1898 ई.	ख़्वाजा जमालुद्दीन साहिब बी.ए. जो जमाअत में दाख़िल हैं जब न्याय शास्त्र की परीक्षा में फेल हुए और उनको बहुत असफ़लता और निराशा लग गई और बहुत ग़म हुआ तो उनके बारे में मुझे इल्हाम हुआ कि- سَيُغْفَرُ अर्थात् अल्लाह तआला उनके इस ग़म का निवारण करेगा। अत: इसके अनुसार वह जल्द रियासत कश्मीर में एक ऐसे पद पर उन्नति दिए गए जो उनके लिए मुंसिफी के पद से अच्छा हुआ अर्थात् वह समस्त रियासत जम्मू कश्मीर के इन्सपेक्टर ऑफ	1900 ई.

ज़िन्दा गवाह रोयत न.-86

इस निशान के गवाह बहुत सारे लोग हैं। जैसे मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब, मौलवी अब्दुल करीम साहिब, ख्वाजा कमालुद्दीन साहिब, मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, मौलवी मुहम्मद अली साहिब, मौलवी शेर अली साहिब, हकीम फ़ज़्लदीन साहिब इत्यादि।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या -86	शेष भविष्यवाणी 86	स्कूल्स हो गए और अब तक उसी पद पर स्थापित हैं।	
भविष्यवाणी संख्या - 87	1887 ई.	एक बार हम रेलगाड़ी पर सवार थे और लुधियाना की ओर जा रहे थे कि इल्हाम हुआ- نصف ترا نصف عماليق را और इसके साथ यह समझाया गया कि इमाम बीबी जो हमारे जद्दी भागीदारों में से एक औरत थी मर जाएगी और उसकी ज़मीन आधी हमें और आधी अन्य भागीदारों को मिल जाएगी। यह इल्हाम उन दोस्तों को जो उस समय हमारे साथ थे सुना दिया गया था। अत: बाद में ऐसा ही हुआ कि कथित् औरत मर गई और उसकी आधी ज़मीन हमें और आधी कुछ अन्य भागीदारों को मिली मरने को तो प्रत्येक व्यक्ति मरता है परन्तु इसमें तीन बड़े निशान थे- (1) समय से पूर्व इस घटना की सूचना देना और फिर उस औरत का मामूली आयु में ही मर जाना। (2) हमारा उस समय तक जीवित रहना (3) ज़मीन का इल्हाम के अनुसार विभाजन होना।	लगभग 1887 ई.

ज़िन्दा गवाह रोयत न.-87

इस निशान के गवाह मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब, शेख हामिद अली साहिब और हमारे ख़ानदान के अधिकतर मर्द और औरतें हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या - 87	1895 ई.	मुझे अपने मधुमेह रोग के कारण आंखों की बहुत चिन्ता थी क्योंकि इस रोग के प्रभुत्व से आंख की दृष्टि कम हो जाया करती है और मोतियाबिन्द हो जाता है। इस चिन्ता के कारण दुआ की गई तो इल्हाम हुआ कि- نزلت الرحمة علیٰ ثلٰثٍ - العین و علی الاُخریین अर्थात् रहमत तीन अंगों पर उतरेगी। एक तो आंख तथा अन्य दो अंग, यहां आंख का ज़िक्र तो कर दिया परन्तु शेष दो अंगों की व्याख्या नहीं की परन्तु लोग कहा करते हैं कि जीवन का आनन्द तीन अंगों के बाक़ी रहने में है। आंख, कान, प्राण। इस इल्हाम के पूरा होने का विवरण इस से मालूम हो सकता है कि लगभग अठारह साल से यह रोग मुझे लगा है और डॉक्टर, हकीम लोग जानते हैं कि इस रोग में आंखों को कैसा भय होता है। फिर कौन सी शक्ति है जिसने पहले से ख़बर दे दी कि यह क़ानून तुझ पर तोड़ दिया जाएगा और बाद में ऐसा ही करके दिखा दिया। क्या यह इन्सान का काम है? ऐसे रोग की हालत में दावा करना तो अलग, कौन है जो बिल्कुल तन्दुरुस्ती और जवानी की हालत में भी दावा कर सके कि मेरी आंखें अमुक समय	1895 ई.

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या -88		तक सुरक्षित रहेंगी।✷	
भविष्यवाणी संख्या - 89	लगभग 1893 ई.	हमारी एक लड़की इस्मत बेबी नामक थी। एक बार उसके बारे में इल्हाम हुआ कि- کرم الجنة دوحة الجنة समझाया यह गया कि वह ज़िन्दा नहीं रहेगी। फिर ऐसा ही हुआ। हम इस विचार से कि ऐसा न हो कि किसी अदूरदर्शी के हृदय में ऐसे निशानों के बारे में कुछ ऐतराज़ पैदा हो कि आयु बढ़ाने के लिए दुआ क्यों न की गई और की गई हो तो वह स्वीकार क्यों न हुई। यह बात स्पष्ट कर देते हैं कि ऐसे इल्हामों के बाद मुल्हम लोगों पर स्वभाविक तौर पर दो प्रकार की हालतें सामने आती हैं। कभी तो दुआ की ओर ग़ैब से ध्यान और जोश दिया जाता है और वह इस बात का निशान होता है कि ख़ुदा ने इरादा किया है कि दुआ स्वीकार करे और कभी ख़ुदा दुआ को स्वीकार करना नहीं चाहता है और अपनी इच्छा को व्यक्त करना चाहता है। तब दुआ करने वाले की तबियत पर उदासी पैदा कर देता है और	लगभग 1893 ई.

ज़िन्दा गवाह रोयत न.-88.

✷इस इल्हाम के लिए गवाहों की आवश्यकता नहीं। मधुमेह के रोग का हाल डॉक्टर लोगों से मालूम किया जा सकता है और आंखों पर रहमत नाज़िल है।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या -89	शेष भविष्यवाणी 89	दुआ के कारण और ध्यान और जोश को प्रकटन में नहीं आने देता।✷	
भविष्यवाणी संख्या - 90	6 जनवरी 1900 ई.	जब हमारे जद्दी (भूसंम्पैत्तिक) भागीदार मिर्ज़ा इमामुद्दीन और मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन ने हमारी मस्जिद के दरवाज़े के मार्ग में एक ऐसी दीवार खींची जो हमारे और हमारे मेहमानों के लिए बहुत ही कष्ट का कारण हुई और इस बात की दौड़-धूप के लिए अदालत में नालिश की गई और लगभग डेढ़ साल तक मुक़द्दमा होता रहा। तो उस दीवार के बनाए जाने से कुछ दिन पहले हमें इस के बारे में एक इल्हाम हुआ जो बताता था कि ऐसा कष्ट शीघ्र सामने आएगा और अन्त में विजय होगी। और वह इल्हाम यह है- الرحیٰ تدور و ینزل القضاء۔ ان فضل اللہ لآت ولیس لا!حد ان یرد ما اتی ظفر مبین وانّما یؤخرھم لا!جل مسمّی۔ चक्की फिरेगी और प्रारब्ध उतरेगा। नि:सन्देह ख़ुदा की कृपा आने वाली है और किसी की शक्ति नहीं जो रद्द करे उसको जब आ गया। वह स्पष्ट विजय	20 अगस्त 1901 ई.

ज़िन्दा गवाह रोयत न.-89 ✷यह इल्हाम बहुत से मर्द और औरतों को सुनाया गया था और इस समय क़ादियान में बहुत होंगे जो गवाही दे सकें।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 90		होगी। इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कि इन लोगों को एक समय तक ढील दे रखी है। ये इल्हाम 7 जनवरी के अलहकम में और अरबईन नं. 3 में प्रकाशित हो गए और ठीक उस समय सब लोगों को सुनाए गए। अत: 7 जनवरी 1900 ई. को वह दीवार बनाई गई जिससे हमारे आने-जाने का रास्ता बन्द हो गया और हमारे मेहमान बहुत कष्ट के साथ दूर से कूचों से होकर मस्जिद तक पहुंचते। किन्तु अन्त में अदालत के आदेश से वह दीवार 20 अगस्त 1901 ई. को गिराई गई और मुक़द्दमें का ख़र्च भी हमारे विरोधियों पर पड़ा। अलहम्दुलिल्लाह।	
भविष्यवाणी संख्या -91	1871 ई. आज से इकत्तीस वर्ष पहले	एक बार मैंने स्वप्न में देखा कि मेरे भाई ग़ुलाम कादिर साहिब बहुत बीमार हैं। यह स्वप्न बहुत से लोगों को सुनाया गया तत्पश्चात् वह सख्त बीमार हो गए। तब मैंने उनके लिए दुआ शुरु की तो दोबारा मैंने स्वप्न में देखा कि हमारे एक मृत्यु	1872 आज से तीस वर्ष पहले

ज़िन्दा गवाह रोयत

इन इल्हामों के गवाह सय्यद फ़ज़्ल शाह साहिब, मौलवी अब्दुल करीम साहिब, मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब, मौलवी मुहम्मद अली साहिब, मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, मौलवी शेर अली साहिब इत्यादि तथा अन्य बहुत से लोग हैं। जैसे शेख याक़ूब अली साहिब। हकीम फ़ज़्लुद्दीन साहिब, मीर नासिर नवाब साहिब, सय्यद अब्दुल मुहयी अरब हवेज़ी इत्यादि।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 91		प्राप्त बुज़ुर्ग उनको बुला रहे हैं। इस स्वप्न की ताबीर भी मृत्यु हुआ करती है। तो उनकी बीमारी बहुत बढ़ गई और वह एक मुट्ठी हड्डियों के बराबर रह गए। इस पर मुझे बहुत बेचैनी हुई और मैंने उनके स्वस्थ होने के लिए अल्लाह तआला की ओर ध्यान किया, जिससे मेरे तीन उद्देश्य थे- (1) मैं देखना चाहता था कि मेरी दुआ क़बूल होती है या नहीं। (2) मैं देखना चाहता था कि अल्लाह तआला ऐसे बीमार को भी स्वस्थ करता है या नहीं। (3) मैं देखना चाहता था कि ऐसा डरावना स्वप्न जो उनकी मृत्यु के बारे में था रद्द हो सकता है या नहीं। तो जब मैं दुआ में लग हो गया तो मैंने कुछ दिनों के बाद स्वप्न में देखा कि कथित भाई पूरे स्वस्थ की तरह बिना सहारे के मकान में चल रहे हैं। फिर बाद में अल्लाह तआला ने उनको स्वास्थय प्रदान किया और वह इस घटना के बाद पन्द्रह वर्ष तक जीवित रहे।✶	
भविष्यवाणी संख्या - 92	1887 ई.	उपरोक्त कथित घटना के पन्द्रह वर्ष बाद मेरे भाई साहिब की मृत्यु का समय क़रीब आया तो मैं अमृतसर में था उसी जगह मैंने स्वप्न में देखा कि अब अटल तौर पर उनके जीवन का प्याला भर चुका है। तो मैंने यह स्वप्न हकीम मुहम्मद शरीफ अमृतसरी को सुनाया और अपने भाई साहिब को भी एक पत्र लिखा कि आप आख़िरत के मामलों	

ज़िन्दा गवाह रोयत

✶इस निशान के गवाह क़ादियान के बहुत से लोग हैं जो अब तक ज़िन्दा मौजूद हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 92		की ओर ध्यान दें। अत: उन्होंने सब घर वालों को इस बात से सूचित किया फिर कुछ सप्ताह में वह इस संसार से गुज़र गए।✷	
भविष्यवाणी संख्या - 93		अली मुहम्मद ख़ान साहिब नवाब झज्जर ने लुधियाना में एक अनाज मण्डी बनाई थी। किसी व्यक्ति की शरारत के कारण उनकी मण्डी बेरौनक़ हो गई और बड़ी हानि होने लगी। तब उन्होंने दुआ के लिए मेरी ओर रुजू किया। परन्तु इससे पूर्व की नवाब साहिब की ओर से मेरे पास कोई पत्र इस विशेष बात के लिए दुआ के बारे में आता मैंने अल्लाह तआला की ओर से यह ख़बर पाई कि इस निबंध का पत्र कथित नवाब साहिब की ओर से आ रहेगा। तो मैंने इस घटना की ख़बर अपने पत्र के द्वारा नवाब मुहम्मद अली ख़ान (स्वर्गीय) को समय से पूर्व दे दी और संयोग ऐसा हुआ कि इस ओर से तो मेरा पत्र रवाना हुआ और उसी दिन उनकी ओर से उसी निबंध का पत्र मेरी ओर रवाना हो गया जो मैंने स्वप्न में देखा था जिसकी रवानगी की मैंने उसी समय उनको सूचना दे दी थी कि जैसे एक	भविष्यवाणी से कुछ दिन बाद

देखने वाले ज़िन्दा गवाह न.-92

✷क़ादियान के कई पुरुष और स्त्रियां इस बात के गवाह हैं कि उनकी मौत के समय मेरा पत्र उनके सन्दूक से निकल आया था।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 93		हाथ से उन्होंने डाक में चिट्ठी डाली और दूसरे हाथ से वही पत्र मेरा उनको मिल गया जिसमें उस प्रेषित चिट्ठी का उसके निबंध सहित ज़िक्र था। तब तो नवाब मुहम्मद अली खान पत्र को पढ़कर हक्का-बक्का रह गए और आश्चर्य किया कि यह राज़ का पत्र जिसको मैंने भी डाक में रवाना किया क्योंकर उसका हाल प्रकट किया गया। इस ग़ैब के ज्ञान ने उनके ईमान को बहुत बढ़ा दिया। फिर उन्होंने बहुत बार मुझे जतलाया कि इस पत्र से ख़ुदा पर मेरा ईमान बहुत बढ़ गया। उस पत्र को वह हमेशा अपनी जेबी किताब में तबर्रुक़ के तैर पर रखा करते थे। एक बार उन्होंने ख़लीफ़ा मुहम्मद हुसैन को भी जो पटियाला के प्रधानमंत्री थे बड़े आश्चर्य से वह पत्र दिखाया और मौत से एक दिन पहले फिर उस पत्र को मुझे दिखाया कि मैंने आपकी जेबी किताब में रख लिया था और इस निशान के साथ दूसरा निशान यह है कि जब कश्फ़ की अवस्था में उनका दूसरा पत्र मुझे मिला जिसमें बहुत बेचैनी व्यक्त की गई थी तो मैंने उस उत्तर के पत्र को पढ़कर उनके लिए दुआ की और मुझे इल्हाम हुआ कि कुछ समय के लिए यह रोक उठा दी जाएगी और उनको इस ग़म से मुक्ति दी जाएगी। यह इल्हाम उनको	आज से बारह वर्ष पहले

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 93		उसी पत्र में लिखकर भेजा गया था जो अधिकतर आश्चर्य का कारण हुआ। अत: वह इल्हाम शीघ्र ही पूरा हुआ और थोड़े दिनों के बाद उनकी मण्डी बहुत अच्छी तरह बैरौनक़ हो गई और रोक उठ गई। इस निशान में दो निशान प्रकट हुए प्रथम समय से पूर्व सूचना देना कि ऐसी घटना होने वाली है। द्वितीय दुआ की स्वीकारिता से अवगत होना कि मण्डी फिर शोभायमान हो जाएगी।✶	
भविष्यवाणी संख्या - 94	1901 ई.	एक बार मैंने कश्फ़ की अवस्था में देखा कि मुबारक अहमद जो मेरा चौथा लड़का है चटाई के पास गिर पड़ा है और सख़्त चोट आई है और कुर्ता ख़ून से भर गया है। ख़ुदा की क़ुदरत कि अभी इस कश्फ़ पर शायद अभी तीन मिनट से अधिक नहीं गुज़रे होंगे कि मैं दालान से बाहर आया और मुबारक अहमद जो शायद उस समय सवा दो साल का होगा चटाई के पास खड़ा था। बच्चों की तरह कोई हरकत करते पैर फिसल गया और ज़मीन पर जा गिरा और कपड़े ख़ून से भर गए जिस प्रकार कश्फ़	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह न.- 93

साहिब की मज्लिस में बैठने वाले लोग और लुधियाना में कई आदमी इस घटना के गवाह हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 94		की अवस्था में देखा था उसी प्रकार प्रकटन में आ गया। इस घटना की बहुत सी औरतें ख़ादिमां इत्यादि जो हमारे घर में हैं गवाह हैं।	
भविष्यवाणी संख्या - 95	1901 ई.	एक बार मैंने स्वप्न में देखा कि मेरे चौथे लड़के मुबारक अहमद की मृत्यु हो गई है। इससे कुछ दिनों के बाद मुबारक अहमद को तीव्र ज्वर हुआ और आठ बार बेहोश होकर अन्तिम बेहोशी में मालूम हुआ कि जान निकल गई है। अत: दुआ शुरू की और अभी मैं दुआ में था कि सब ने कहा कि मुबारक अहमद की मृत्यु हो गई है। तब मैंने उस पर अपना हाथ रखा तो न सांस थी न नब्ज़ थी, आंखें मुर्दे की तरह पथरा गई थीं। परन्तु दुआ ने एक विलक्षण प्रभाव दिखाया और मेरे हाथ रखने से ही जान महसूस होने लगी यहां तक कि लड़का ज़िन्दा हो गया और जीवन के लक्षण पैदा हो गए। तब मैंने बुलन्द आवाज़ से उपस्थित लोगों को कहा कि यदि ईसा इब्ने मरयम ने कोई मुर्दा ज़िन्दा किया है तो इस से अधिक कदापि नहीं, अर्थात् इसी प्रकार मुर्दा ज़िन्दा हुआ होगा न कि वह जिसकी जान आकाश पर पहुंच चुकी हो और मलिकुल मौत (मौत का	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 95		फ़रिश्ता) ने उसकी रूह को क़रारगाह (आरमस्थल) तक पहुंचा दिया हो।✷	
भविष्यवाणी संख्या - 96		एक बार मैं स्वयं बहुत बीमार हो गया और हालत ऐसी बिगड़ी कि बीमारी से ठीक होना कठिन मालूम होता था तब यह इल्हाम हुआ- ما كَان لنفسٍ ان تموت الا باذن الله و امّا ما ينفع الناس فيمكث فى الارض अत: अल्लाह तआला ने अपनी कृपा से अपने वादे के अनुसार बिल्कुल निराशा की हालत में स्वास्थ्य प्रदान किया और यों तो हज़ारों लोग स्वस्थ होते हैं परन्तु ऐसी निराशा की अवस्था में सैकड़ों मनुष्यों में दावे से यह प्रस्तुत करना कि रोग से मुक्ति अवश्य प्राप्त हो जाएगी यह मनुष्य का काम नहीं।	
भविष्यवाणी संख्या - 97	1897 ई.	अक्टूबर 1897 ई. के प्रारंभ में मुझे दिखाया गया कि मैं एक गवाही के लिए एक अंग्रेज़ हाकिम के पास उपस्थित किया गया हूँ और उस हाकिम ने मुझ से प्रश्न किया कि आपके पिता का क्या नाम है परन्तु जैसा कि गवाही के लिए दस्तूर है मुझे क़सम नहीं दी। फिर 8 अक्टूबर 1897	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह न.- 95

✷इस घटना के क़ादियान में रहने वाले बहुत से मर्द और औरतें गवाह हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 97		ई. को मुझे स्वप्न में दिखाया गया कि इस मुक़द्दमें का सिपाही सम्मन लेकर आया है। यह स्वप्न मस्जिद में सब जमाअत को सुना दिया गया था। अत: ऐसा ही प्रकटन में आया और सिपाही सम्मन लेकर आ गया और मालूम हुआ कि एडीटर अख़बार नाज़िमुल हिन्द लाहौर ने मुझे गवाह लिखा दिया है जिस पर मौलवी रहीम बख़्श प्राइवेट सेक्रेटरी नवाब बहावलपुर ने लाइबिल☆ का मक़द्दमा मुलतान में किया था। तो जब मैं मुलतान में पहुंच कर अदालत में गवाही के लिए गया तो ऐसा ही प्रकटन में आया हाकिम से ऐसी भूल हो गई कि क़सम देना भूल गया और बयान आरंभ कर दिए।✷	
भविष्यवाणी संख्या - 98	1900 ई.	हमारे दोस्त मिर्ज़ा अय्यूब बेग़ साहिब (स्वर्गीय) बहुत समय से बीमार चले आ रहे थे। 1900 ई. के अन्त में उनकी हालत बहुत बिगड़ गई और वह फ़ाज़िल्का में अपने भाई मिर्ज़ा याक़ूब बेग़ साहिब असिस्टेण्ट सर्जन के पास चले गए। कुछ दिनों के बाद दुआ के लिए उनका पत्र आया। हमने दुआ की तो स्वप्न में देखा	भविष्यवाणी से छ: माह बाद

देखने वाले ज़िन्दा गवाह न.- 97

✷इसके गवाह एक बड़ा गिरोह है। जैसे ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब लीडर पेशावर, मौलवी नूरुद्दीन साहिब, मौलवी अब्दुल करीम साहिब, मौलवी शेर अली साहिब, शेख अब्दुर्रहमान साहिब।

☆ Libel: A published damaging a person (अनुवादक)

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	**जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।**	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 98		कि एक सड़क ऐसी कि जैसे चांद के टुकड़े एकत्र करके बनाई गई है और एक व्यक्ति अत्यन्त सुन्दर स्वर्गीय अज़ीज़ को उस सड़क पर लिए जा रहा है और वह सड़क आकाश की ओर जाती है। इस स्वप्न की ताबीर यही थी कि उनका ख़ात्मा बख़ैर होगा और वह स्वर्गीय हैं और नूरानी चेहरे वाला व्यक्ति एक फ़रिश्ता था जो उस अज़ीज़ को स्वर्ग की ओर ले जा रहा था। हमने यह स्वप्न मिर्ज़ा याक़ूब बेग़ साहिब को लिख दिया और अपनी जमाअत में प्रकाशित कर दिया अत: छ: माह के बाद उस अज़ीज़ ने मृत्यु पाई और जब हमारे पास तार पहुंचा और हमने शोक पत्र लिखना शुरू किया और हमारा ध्यान उस अज़ीज़ की ओर था कि किस प्रकार वह हमारी आंखों के सामने छुप गया तो इस हालत में इल्हाम हुआ- "मुबारक वे आदमी जो इस दरवाज़े के मार्ग से दाख़िल हों" यह इस बात की ओर संकेत था कि स्वर्गीय अज़ीज़ (प्रिय) की मृत्यु बहुत ही नेक तौर पर हुई।✷ कथित स्वर्गीय जवान, सदाचारी और ख़ुदा के	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह न.- 98

✷इसके गवाह मिर्ज़ा याक़ूब बेग़ साहिब सहायक सर्जन, मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब, मौलवी अब्दुल करीम साहिब, मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए., मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, मौलवी शेर अली साहिब, हकीम फ़ज़लदीन साहिब, मीर नासिर नवाब साहिब, शेख़ अब्दुर्रहमान साहिब, शेख अब्दुर्रहीम साहिब और बड़ी जमाअत लाहौर, कपूरथला, सियालकोट इत्यादि।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
	शेष भविष्यवाणी 98	वलियों की विशेषताएं अपने अन्दर रखता था।	
भविष्यवाणी संख्या - 99	जुलाई 1897 ई.	जुलाई 1897 ई. में जब अज़ीज़ी मिर्ज़ा याक़ूब बेग़ साहिब ने असिस्टेण्ट सर्जन की अन्तिम परीक्षा दी और हमने उनके लिए दुआ की तो इल्हाम हुआ "तुम पास हो गए हो" यह इस बात की ओर संकेत था कि वह पास हो गया है। क्योंकि शुद्ध हृदय लोगों के लिए जो स्वजनता की सीमा तक पहुँचते हैं ऐसे वाक्य आ जाते हैं। अत: बाइबल में भी इस ढ़ंग की कई भविष्यवाणियां दर्ज हैं। अन्तत: कथित अज़ीज़ अपनी परीक्षा में बड़ी ख़ूबी से सफ़ल हुआ और लाहौर के मेडिकल कॉलेज में हाऊस सर्जन नियुक्त हुआ।✷	जुलाई 1897 ई.
भविष्यवाणी संख्या - 100		हमारे एक मुख़्लिस दोस्त मिर्ज़ा मुहम्मद यूसुफ बेग़ साहिब हैं जो इलाक़ा सामाना रियासत पटियाला के निवासी हैं और लम्बे समय से हमारे साथ संबंध रखते हैं और हमें आशा है कि वह इस सम्बन्ध में जीवन पर्यन्त रहेंगे। और इसी में इस दुनिया से गुज़रेंगे। एक बार उनका लड़का मिर्ज़ा	भविष्यवाणी के कुछ दिन बाद

देखने वाले ज़िन्दा गवाह न.- 99

✷इस निशान के गवाह हमारी जमाअत के बहुत से लोग और मिर्ज़ा याक़ूब बेग़ के सहपाठी हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 100		इब्राहीम बेग़ (स्वर्गीय) बीमार हुआ तो उन्होंने मेरी ओर दुआ के लिए पत्र लिखा हमने दुआ की तो कश्फ़ में देखा कि इब्राहीम हमारे पास बैठा है और कहता है मुझे स्वर्ग से सलाम पहुंचा दो। जिसके मायने दिल में यही डाले गए कि अब उनके जीवन का अन्त है। यद्यपि दिल नहीं चाहता था तथापि बहुत सोचने के बाद मिर्ज़ा मुहम्मद यूसुफ़ बेग़ साहिब को इस घटना की सूचना दी गई और थोड़े दिनों के बाद वह जवान ग़रीब स्वभाव आज्ञाकारी बेटा उनकी आंखों के सामने इस नश्वर संसार से चल बसा।✷	
101	आज से दो वर्ष पहले	जब विरोधी मौलवी मुक़ाबले पर तफ़्सीर लिखने में असमर्थ हो गए और मेहर अली शाह गोलड़ी ने कई प्रकार की लज्जाजनक कार्रवाइयां कीं तो अल्लाह तआला ने इस विनीत को यकतरफ़ा तौर पर तफ़्सीर क़ुर्आन का चमत्कार प्रदान किया और सत्तर दिनों में पुस्तक ऐजाज़ुल मसीह लिखी गई। इस अवधि में भिन्न-भिन्न प्रकार की बाधाओं का सामना हुआ और बहुत सा समय बीमारी में गुज़रा। इस निशान से तो अधिक	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह न.- 100

✷मिर्ज़ा मुहम्मद यूसुफ बेग़ साहिब ज़िन्दा मौजूद हैं जो इस घटना के गवाह हैं और उन के अतिरिक्त और बहुत से लोग भी इसके गवाह हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 101		हमारे क़ादियान में रहने वाले दोस्त हिस्सा ले गए, क्योंकि वे हमारी दैनिक हालत से परिचित थे। सारांश यह कि उन्हीं दिनों में इस पुस्तक के बारे में यह इल्हाम हुआ कि- منعه مانع من السّماء अर्थात् रोक दिया उस को रोकने वाले ने आकाश से। अतः यह इल्हाम इस सफाई से पूरा हुआ है कि अब तक मियां मेहर अली इसका उत्तर नहीं दे सका और न उनका कोई सहायक उत्तर देने पर समर्थ हो सका। यदि कार्रवाई की तो यह की कि केवल उर्दू में एक पुस्तक लिखी। परन्तु अन्त में लिखित सबूत से सिद्ध हुआ कि वह भी अपनी व्यक्तिगत योग्यता से नहीं अपितु मौलवी मुहम्मद हसन मुतवफ्फी के लिखे हुए नोटों की हूबहू चोरी थी यहां तक कि इस मूर्ख ने उसकी लज्जाजनक ग़लतियों को भी सही समझ लिया और उस चोरी के माल और ग़लतियों के भण्डार का नाम सैफ़े चिश्तियाई रखा वह ऐसी सैफ़ थी जो उन्हीं पर चल गई।✷	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह न.- 101

✷इस निशान की गवाह प्रथम तो स्वयं पुस्तक ऐजाज़ुल मसीह है और बहुत से मुख़्लिस जो उस जगह मौजूद थे जैसे मौलवी नूरुद्दीन साहिब, मौलवी अब्दुल करीम साहिब, मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, मौलवी मुहम्मद अली साहिब, हकीम फ़ज़्लदीन साहिब, पीर मंज़ूर मुहम्मद साहिब, पीर सिराजुल हक़ साहिब।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 101		मर गया बदबख़्त अपने वार से, कट गया सर अपनी ही तलवार से। खुल गई सारी हक़ीक़त सैफ़ की, कम करो अब नाज़ इस मुर्दार से।	
भविष्यवाणी संख्या - 102	लगभग 1892 ई.	ख़लीफ़ा सय्यिद मुहम्मद हसन साहिब प्रधानमंत्री पटियाला किसी इब्तिला, फ़िक्र और ग़म में ग्रस्त थे। उनकी ओर से निरन्तर दुआ का निवेदन हुआ। संयोग से एक दिन यह इल्हाम हुआ- "चल रही है नसीम रहमत की- जो दुआ कीजिए क़ुबूल है आज" उस समय मुझे याद आया कि आज उन्हीं के लिए दुआ की जाए अतः दुआ की गई और उनको पत्र द्वारा सूचना दी गई और थोड़े समय के बाद उन्होंने इब्तिला से छुटकारा पाया और पत्र द्वारा अपने छुटकारे की सूचना दी। उनका पत्र मेरे किसी बस्ते में अब तक पड़ा होगा और वही इस बात का पूर्ण गवाह है।	लगभग 1892 ई.
भविष्यवाणी संख्या - 103	लगभग 1881 ई.	हमारे भाई मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर साहिब (स्वर्गीय) की मृत्यु से एक दिन पहले इल्हाम हुआ "जनाज़ा" मैंने इस इल्हाम की बहुत से लोगों को ख़बर दे दी। तो	भविष्यवाणी के दूसरे दिन

देखने वाले ज़िन्दा गवाह

इन घटनाओं के बहुत से लोग गवाह हैं। जैसे मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, मौलवी मुहम्मद अली, मौलवी शेर अली साहिब इत्यादि।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 103		दूसरे दिन भाई साहिब का निधन हुआ। इस घटना के बहुत लोग गवाह हैं।	
104 भविष्यवाणी संख्या - 104		उन समस्त निशानों के जो ख़ुदा तआला की कृपा से मेरे हाथ पर प्रकटन में आए एक यह है कि जब पुस्तक 'उम्महातुल मोमिनीन' ईसाइयों की ओर से प्रकाशित हुई तो अंजुमन हिमायत इस्लाम लाहौर के सदस्यों ने सरकार में इस निबंध का मेमोरियल भेजा कि इस निबंध का प्रकाशन बन्द किया जाए और लेखक से पूछताछ हो। परन्तु मैं उनके मेमोरियल का अत्यन्त विरोधी था और मैंने अपने लेख में स्पष्ट तौर पर प्रकाशित किया था कि यह तरीक़ा अच्छा नहीं परन्तु उन लोगों ने मेरी सलाह को स्वीकार न किया अपितु बुराई की। इसी बीच मुझे इल्हाम हुआ कि- ستذکرون ما اقول لکم وافوض امری الی اللہ अर्थात् शीघ्र मेरी यह बात जिन्हें याद आएगी। यह इस बात की ओर संकेत था कि तुम्हें अपने मेमोरियल में विफलता मिलेगी और जिस बात को मैंने ग्रहण किया है अर्थात् विरोधियों के आरोपों का खण्डन करना और उनके उत्तर देना। इस बात को मैं ख़ुदा तआला के सुपुर्द करता हूँ।	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	**जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।**	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
		यह इल्हाम समय से पूर्व एक बड़े समूह को सुनाया गया था। तो ऐसा ही प्रकटन में आया। अर्थात् अंजुमन का वह निवेदन अस्वीकार हुआ।	
भविष्यवाणी संख्या - 105	1882 ई.	जब कि दिलीप सिंह की पंजाब में आने की ख़बर मशहूर थी तब मुझे दिखाया गया कि दिलीप सिंह अपने इस इरादे में असफ़ल रहेगा और वह हिन्दुस्तान में कदापि क़दम नहीं रखेगा। तो मैंने इस कश्फ़ को लाला शरमपत निवासी क़ादियान को जो आर्य है तथा कई हिन्दू-मुसलमानों को बता दिया और एक विज्ञापन भी प्रकाशित कर दिया जो फरवीर 1882 में छपवाकर बांट दिया था। अत: ऐसा ही हुआ कि दिलीप सिंह अदन से वापस हुआ और उसके सम्मान और ऐश्वर्य में बहुत बड़ा ख़तरा पड़ा जैसा कि मैंने सैकड़ों लोगों को ख़बर दी थी।✷	
भविष्यवाणी संख्या - 106	लगभग 1887 ई.	एक बार हमारे मुख़्लिस (निष्कपट) मियां अब्दुल्लाह सिन्नौरी पटवारी इलाक़ा रियासत पटियाला के देखते हुए ख़ुदा का यह निशान प्रकट हुआ कि प्रथम मुझे कश्फ़ी तौर पर दिखाया गया कि मैंने प्रारब्ध के बहुत से आदेश दुनिया वालों	लगभग 1882 ई.

देखने वाले ज़िन्दा गवाह न.- 105

✷इस निशान के गवाह अधिकतर क़ादियान के लोग हैं और इनके अतिरिक्त विज्ञापन जो फ़रवरी 1882 में छाप कर प्रसारित किया गया था।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या -		की नेकी और बदी के बारे में अपने लिए और अपने दोस्तों के लिए लिखे हैं और चाहता हूँ कि ऐसा ही हो जाए। फिर प्रतिछाया के तौर पर मैंने अनुपम एवं अद्वितीय ख़ुदा तआला को देखा और वह काग़ज़ अल्लाह तआला के आगे रख दिया ताकि उस पर हस्ताक्षर कर दे। ताकि वे सब बातें जिनके लिए निवेदन किया गया है हो जाएं। ख़ुदा तआला ने उस पर सुर्ख़ी (लाल इंक) हस्ताक्षर कर दिए और क़लम की नोक पर जो अधिक सुर्ख़ी थी उसको झाड़ दिया और झाड़ने के साथ ही उस सुर्ख़ी के क़तरे (बूंदें) मेरे और मियां अब्दुल्लाह के कपड़ों पर पड़े। और चूंकि कश्फ़ी हालत में इन्सान जागने से हिस्सा रखता है। इसलिए मैंने उन क़तरों को स्वयं अपनी आंखों से देखा और मैं उस समय इस विचार से कि ख़ुदा ने मेरे प्रस्तावित आदेशों पर हस्ताक्षर कर दिए आंखें आंसुओं से भरी हुई थीं और मेरे दिल पर एक आर्द्रता छाई हुई थी। इतने में मियां अब्दुल्लाह ने यह कहकर कि यह सुर्ख़ क़तरे हमारे पर कहां से पड़े मुझे उस हालत से जगा दिया और मैंने अपने कुर्ते और उसकी टोपी पर सुर्ख़ क़तरे देखे जो अभी ख़ुश्क़ नहीं हुए थे और उस कश्फ़	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 106		का सब हाल सुनाया। और उस समय हम दोनों ने इधर-उधर ख़ूब तलाश करके देखा परन्तु कोई चीज़ ऐसी दिखाई न दी जिससे उन क़तरों के गिरने का गुमान हो सके। तब मियां अब्दुल्लाह को भी विश्वास हुआ कि ये सुर्ख़ क़तरे चमत्कार के तौर पर हैं। कुछ कपड़े अब तक मियां अब्दुल्लाह के पास मौजूद हैं और वह ख़ुदा की कृपा से ग़ौसगढ़ इलाक़ा पटियाला में ज़िन्दा मौजूद हैं और इस विवरण को क़सम खाकर वर्णन कर सकते हैं। और यह बात कि यह सुर्ख़ क़तरे किस बात की ओर संकेत करते थे। इसका उत्तर यह है कि यह समय से पूर्व इस बात के लिए निशान दिया गया था कि आकाश से प्रकोपी निशान होंगे और कुछ भयावह मौतें निशान की तरह होंगी जैसा कि पंडित लेखराम की मौत और जैसा कि ताऊन दुनिया को खा रही है।	
भविष्यवाणी संख्या - 107	लगभग 1887 ई.	पंडित अग्निहोत्री ने जो ब्रह्म समाज का एक चुना हुआ टीचर है लाहौर से मेरी ओर एक पत्र लिखा कि मैं बराहीन अहमदिया भाग तृतीय का खण्डन लिखना चाहता हूँ। अभी वह पत्र यहां नहीं पहुंचा था कि हमें	लगभग 1887 ई.

देखने वाले ज़िन्दा गवाह

इसके गवाह मियां अब्दुल्लाह सिन्नौरी तथा अन्य बहुत से लोग हैं जिन्होंने उस अवसर पर उस कुर्ते को देखा।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 107		ख़ुदा तआला ने इल्हाम के द्वारा उस निबंध से अवगत कर दिया था। अत: कई हिन्दू आर्यों को बुलाकर बता दिया गया था और एक आर्य को ही शाम के समय डाकखाने में भेजा गया ताकि वह गवाह बन सके। तो जब वह पत्र लाया तो उस पत्र का वही निबंध था जो ख़ुदा के इल्हाम से ख़बर पाकर लोगों पर पहले प्रकट कर दिया था। और वह पत्र सबको दिखाया गया और पंडित अग्निहोत्री को उत्तर लिखा गया कि जिस इल्हाम के सिलसिले का तुम उत्तर लिखना चाहते हो उसी के द्वारा अल्लाह तआला ने समय से पूर्व तुम्हारे पत्र के निबंध से सूचना दे दी है यदि चाहो तो क़ादियान में आकर अपने हिन्दू भाइयों से पुष्टि कर लो।✷	
भविष्यवाणी संख्या - 108	1899 ई.	जब कुछ विरोधियों की जासूसी से मुझ पर टेक्स लगाने के लिए सरकार की ओर से मुक़द्दमः हुआ और मेरी ओर से आपत्ति की गई। तो मैं एक दिन छोटी मस्जिद में कुछ दोस्तों के साथ बैठा हुआ था और आमद-व-ख़र्च का हिसाब कर रहे थे कि मुझ पर एक कश्फ़ी हालत छा गई और उसमें दिखाया गया कि हिन्दू तहसीलदार	भविष्यवाणी के कुछ दिनों बाद

देखने वाले ज़िन्दा गवाह

✷इस निशान के गवाह क़ादियान के बहुत से आर्य हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 108		बटाला जिस के पास मुक़द्दमः था बदल गया है तथा उसके बदले एक अन्य व्यक्ति कुर्सी पर बैठा है जो मुसलमान है और इस कश्फ़ के साथ कुछ मामले ऐसे प्रकट हुए जो विजय की ख़ुशख़बरी देते थे। तब मैंने उसी समय यह कश्फ़ दर्शकों को सुना दिया जिसमें से एक ख़्वाजा जमालुद्दीन साहिब बी.ए. इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल्ज़ जम्मू-व-कश्मीर थे और बहुत से जमाअत के लोग थे। फिर इसके बाद ऐसा हुआ कि वह हिन्दू तहसीलदार अचानक बदल गया और उसके स्थान पर मियां ताजुद्दीन साहिब तहसीलदार बटाला नियुक्त हुए जिन्होंने नेक नीयती के साथ असल वास्तविक्ता को मालूम कर लिया और जो कुछ छान-बीन से मालूम हुआ उसकी रिपोर्ट डिकसन साहिब डिप्टी कमिश्नर बहादुर ज़िला गुरदासपुर में भेज दी और शुभ संयोग यह हुआ कि कथित साहिब भी दक्ष और न्याय प्रिय थे। उन्होंने लिख दिया कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब का एक ख्याति प्राप्त फ़िर्क़ा है जिसके बारे में हम कुधारणा नहीं रख सकते अर्थात् जो कुछ आपत्ति की गई है वह वास्तव में सही है। इसलिए टेक्स माफ़ और मिस्ल दाख़िल दफ़्तर हो।✷	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह ✷इस निशान के गवाह ख्वाजा जमालुद्दीन साहिब बी.ए., मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए., मौलवी अब्दुल करीम साहिब, मौलवी नूरुद्दीन साहिब, मौलवी शेर अली साहिब, शेख़ अब्दुर्रहमान साहिब

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या - 109	लगभग 1887 ई.	एक बार हमें मौज़ा कुंजरां ज़िला-गुरदासपुर को जाने का संयोग हुआ और शेख हामिद अली निवासी थह, ग़ुलामनबी हमारे साथ था। जब सुबह को हमने जाने का इरादा किया तो इल्हाम हुआ कि इस सफ़र में तुम्हारा और तुम्हारे साथी की कुछ हानि होगी। अत: रास्ते में शेख़ हामिद अली की एक चादर और हमारा एक रुमाल गुम हो गया उस समय हामिद अली के पास वही चादर थी।	लगभग 1887 ई.
भविष्यवाणी संख्या - 110	लगभग 1900 ई.	एक बार डॉक्टर नूर मुहम्मद साहिब मालिक कारखाना हमदम सेहत का लड़का बहुत बीमार हो गया। उसकी माँ बहुत बेचैन थी उसकी हालत पर दया आई और दुआ की तो इल्हाम हुआ "अच्छा हो जाएगा" उसी समय यह इल्हाम सब को सुनाया गया जो पास मौजूद थे। अन्तत: ऐसा ही हुआ। वह लड़का ख़ुदा की कृपा से बिल्कुल स्वस्थ हो गया।✷	लगभग 1900 ई.

देखने वाले ज़िन्दा गवाह

✷बहुत से मर्द और औरतें इस निशान के गवाह हैं। जैसे मौलवी नूरुद्दीन साहिब, मौलवी अब्दुल करीम साहिब, मौलवी शेर अली साहिब, शेख़ अब्दुर्रहमान साहिब क़ादियान इत्यादि।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या - 111	लगभग 1898 ई.	एक बार हमारे लड़के बशीर अहमद की आंखें बहुत ख़राब हो गई थीं, पलकें गिर गई थीं और पानी बहता रहता था। अन्तत: हमने दुआ की तो इल्हाम हुआ- बरق طفلی بشیر अर्थात् मेरे लड़के बशीर अहमद की आंखें अच्छी हो गईं। इस इल्हाम के एक सप्ताह बाद अल्लाह तआला ने उसे रोगमुक्त कर दिया और आंखें बिल्कुल स्वस्थ हो गईं। इससे पूर्व कई साल अंग्रेज़ी और यूनानी इलाज किया गया था परन्तु कुछ लाभ नहीं होता था अपितु हालत बिगड़ती जाती थी।✷	भविष्वाणी के एक सप्ताह बाद
भविष्यवाणी संख्या - 112	लगभग 1898 ई.	एक बार इल्हाम हुआ "बेहोशी, फिर मूर्छा फिर मौत" समझाया गया कि हमारे बड़े निष्कपट मुरीदों में से किसी को ऐसी घटना का सामना होगा। अर्थात् पहले बेहोशी होगी, फिर मूर्छा छाएगी, फिर मर जाएगा। यह इल्हाम यहां रहने वाले दोस्तों को सुनाया गया। और पत्रों द्वारा बाहर भी लिखा गया था। अन्तत: एक दो सप्ताह के अन्दर हमारे निष्कपट मुरीद डॉक्टर बूढ़े खान साहिब असिस्टेण्ट सर्जन क़सूर बिलकुल इल्हाम के शब्दों के अनुसार	लगभग 1898 ई.

देखने वाले ज़िन्दा गवाह

✷इस इल्हाम के बहुत से मर्द और औरतें क़ादियान में गवाह हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
		अचानक बेहोश होकर फिर मूर्छा में पड़कर तुरन्त मृत्यु पा गए और उनकी मृत्यु का तार आया।✷	
भविष्यवाणी संख्या - 113	लगभग 1888 ई.	एक बार हमें लुधियाना से पटियाला जाने का संयोग हुआ रवाना होने से पूर्व इल्हाम हुआ कि "इस सफ़र में कुछ हानि होगी और कुछ रंज-व-ग़म का सामना होगा" हमने इस भविष्यवाणी की ख़बर अपने साथियों को दे दी। फिर जब हम पटियाला से वापस आने लगे तो अस्र का समय था। एक स्थान पर हमने नमाज़ पढ़ने के लिए अपना चोग़ा उतार कर सय्यिद मुहम्मद हसन ख़ान साहिब रियासत के वज़ीर के एक नौकर को दिया ताकि वुज़ू करें। फिर जब नमाज़ से निवृत्त होकर टिकट लेने के लिए जेब में हाथ डाला तो मालूम हुआ कि जिस रूमाल में रुपये बांधे हुए थे वह रूमाल गिर गया है। तब हमें वह इल्हाम याद आया कि इस हानि का होना आवश्यक था। फिर जब हम गाड़ी पर सवार हुए तो रास्ते में एक स्टेशन दोराहा पर हमारे किसी साथी को किसी अंग्रेज़	लगभग 1888 ई.

देखने वाले ज़िन्दा गवाह

✷इस निशान के गवाह यहां के बहुत से लोग तथा अन्य स्थानों के हैं। जैसे मौलवी अब्दुल करीम, मौलवी नूरुद्दीन साहिब, मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, मौलवी मुहम्मद अली साहिब, मौलवी शेर अली साहिब।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 113		मुसाफ़िर ने केवल धोखा देकर अपने लाभ के लिए कह दिया कि लुधियाना आ गया है अतः हम सब उस जगह उतर पड़े और जब रेल चल दी तब हमें मालूम हुआ कि यह कोई और स्टेशन था। और एक बियाबान में उतरने से सब जमाअत को कष्ट हुआ और इस प्रकार कथित इल्हाम का दूसरा भाग भी पूरा हो गया।✷	
भविष्यवाणी संख्या - 114	लगभग 1887 ई.	एक बार मेरी पत्नी के सगे भाई सय्यिद मुहम्मद इस्माईल का (जिनकी आयु उस समय दस वर्ष की थी) पटियाला से पत्र आया कि मेरी माँ का देहान्त हो गया है और इस्हाक़ मेरे छोटे भाई को कोई संभालने वाला नहीं है। और फिर पत्र के अन्त में यह भी लिखा हुआ था कि इस्हाक़ की भी मृत्यु हो गई है और बड़ी जल्दी से बुलाया कि देखते ही चले आएं। इस पत्र के पढ़ने से बड़ी घबराहट हुई क्योंकि उस समय मेरे घर के लोग भी तीव्र ज्वर से बीमार थे। ऐसी अचानक दो मौतों की ख़बर मैं उनको सुना न सका और मैं अत्यन्त बेचैनी में पड़ गया कि जिनको बुलाते हैं वह स्वयं ख़तरनाक ज्वर में	लगभग 1887 ई.

देखने वाले ज़िन्दा गवाह

✷इस निशान के गवाह शेख़ हामिद अली साहिब, शेख़ अब्दुर्रहीम साहिब निवासी अंबाला छावनी और फ़त्ह ख़ान एक अफ़ग़ान हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	**जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।**	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 114		ग्रस्त है। और मैं डरता था कि यदि मैं इस पत्र का निबंध इस बीमारी की हालत में उनको सुनाऊं तो प्राण का भय है। रात को इस चिन्ता से मेरी नींद जाती रही कि क्या करूं और मैं इस पत्र को गुप्त भी नहीं रख सकता था। जब रात का एक भाग गुज़र गया तो सोचते-सोचते मेरा दिल अत्यन्त बेचैन हो गया जिसका मैं अनुमान नहीं कर सकता। तब मुझे इस परेशानी में अचानक ऊंघ हुई और यह इल्हाम हुआ- ان کید کنّ عظیم अर्थात् हे स्त्रियों तुम्हारे छल बहुत बड़े हैं और इस हालत में हम उनको पत्र का निबंध भी नहीं सुना सकते थे। इस संकट को सुनकर उनकी जान का भय था इसलिए साथ ही समझाया कि वास्तविकता के विरुद्ध बहाना बनाया गया है। तब मैंने बिरादर मौलवी अब्दुल करीम साहिब के सामने जो उस समय क़ादियान में मौजूद थे यह घटना वर्णन की और साथ ही गुप्त तौर पर शेख़ हामिद अली को जो मेरा नौकर था पटियाला रवाना किया जिस ने वापस आकर वर्णन किया कि इस्हाक़ और उसकी माँ दोनो ज़िन्दा मौजूद हैं और कुछ दिन की बीमारी और घबराहट और मुलाक़ात के शौक़ के कारण यह	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष 114		वास्तविकता के विरुद्ध पत्र लिखाकर भेजा गया था।*	
भविष्यवाणी संख्या - 115	लगभग 1898 ई.	एक बार हमारे एक निष्कपट दोस्त सेठ अब्दुर्रहमान साहिब ताजिर मद्रास अपनी किसी घबराहट में दुआ के याचक हुए जब दुआ की गई तो इल्हाम हुआ- "क़ादिर है वह बारगाह टूटा काम बनाए, बना बनाया तोड़ दे कोई उसका भेद न पाए।" यह एक ख़ुशख़बरी उन का ग़म दूर करने के बारे में थी। अतः कुछ सप्ताह के बाद ही ख़ुदा तआला ने उनको उस आने वाले ग़म से रिहाई प्रदान की। फिर एक लम्बे समय के बाद इस शेर के दूसरे चरण के अनुसार एक और बड़ा इब्तिला आया जिससे आशा है कि किसी समय ख़ुदा मुक्ति देगा जिस प्रकार चाहेगा।*	लगभग 1898 ई.

देखने वाले ज़िन्दा गवाह

*इस निशान के गवाह मौलवी अब्दुल करीम साहिब, शेख हामिद अली, मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब, उनकी माँ तथा अन्य कई पुरुष और स्त्रियां।

*इस निशान के गवाह स्वयं सेठ साहिब, मौलवी अब्दुल करीम साहिब, मौलवी नूरुद्दीन साहिब, मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, मौलवी मुहम्मद अली साहिब, मौलवी शेर अली साहिब तथा अन्य बहुत से लोग हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या - 116	1885 ई.	मियां अबदुल्लाह सिन्नौरी जो इलाक़ा पटियाला में पटवारी हैं एक बार उनको एक काम आया जिसके होने के लिए उन्होंने हर प्रकार से कोशिश की तथा कुछ कारणों से उनको उसके हो जाने की आशा भी हो गई थी। फिर उन्होंने दुआ के लिए हम से याचना की। हमने जब दुआ की तो अविलम्ब इल्हाम हुआ "ऐ बसा आरज़ू की ख़ाक शुदा" तब मैंने उनको कह दिया कि यह काम कदापि नहीं होगा और वह इल्हाम सुना दिया और अन्तत: ऐसा ही प्रकटन में आया और कुछ ऐसे अवसर आए कि वह काम होता-होता रह गया।*	1885 ई.
भविष्यवाणी संख्या - 117	1888 ई.	एक बार हमें संयोग से पचास रुपये की आवश्यकता पड़ी और जैसा कि अल्लाह के वलियों पर पर कभी-कभी ऐसी हालत गुज़रती है। उस समय हमारे पास कुछ न था। जब हम सुबह के समय सैर के लिए गए तो इस आवश्यकता के विचार ने हमें यह जोश दिया कि इस जंगल में दुआ करें। तो हमने एकांतवास में जाकर उस जगह के किनारे पर दुआ की जो क़ादियान से तीन मील की दूरी पर बटाला की ओर है।	1888 ई.

देखने वाले ज़िन्दा गवाह

*इस निशान के गवाह शेख़ हामिद अली और अब्दुल्लाह सिन्नौरी हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 117		जब हम दुआ कर चुके तो दुआ के साथ ही एक इल्हाम हुआ जिसका अनुवाद यह है- "देख मैं तेरी दुआओं को कैसे जल्द स्वीकार करता हूँ।" तब हम प्रसन्न होकर क़ादियान की ओर वापस आए और बाज़ार की ओर चल पड़े ताकि डाकख़ाने से मालूम करें कि आज हमारे नाम कुछ रुपया आया है या नहीं। फिर हमें एक पत्र मिला जिसमें लिखा था कि पचास रुपया लुधियाना से किसी ने भेजे हैं और संभवत: वह रुपया उसी दिन या दूसरे दिन हमें मिल गया।✷	
भविष्यवाणी संख्या - 118	1900 ई.	एक बार मुझे मधुमेह के कारण बहुत कष्ट था। कई बार दिन में सौ-सौ बार पेशाब आता था दोनों कन्धों में ऐसे लक्षण प्रकट हो गए थे जिन से कारबंकल (मुहबंद फोड़ा) की आशंका थी तब मैं दुआ में व्यस्त हुआ तो यह इल्हाम हुआ- والموت اذا عسعس अर्थात् क़सम है मौत की जबकि हटाई जाए। अत: यह इल्हाम भी ऐसा पूरा हुआ कि उस समय से लेकर हमेशा हमारे जीवन का प्रत्येक सेकेण्ड एक निशान है।	1900 ई.

देखने वाले ज़िन्दा गवाह

✷इस निशान के गवाह शेख हामिद अली साहिब हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या - 119	13 अप्रैल 1899 ई.	मेरे चौथे लड़के मुबारक अहमद के जन्म से दो माह पूर्व यह इल्हाम हुआ था- ربّ اصحٖ زوجتی ھذہ अर्थात् हे मेरे रब्ब! मेरी इस पत्नी को बीमार होने से बचा और बीमारी से रोगमुक्त कर। जिस समय यह इल्हाम हुआ उस समय मेरी पत्नी बिलकुल स्वस्थ थी जैसे इस इल्हाम में इस ओर संकेत था कि किसी बीमारी की आशंका है परन्तु बाद में रोगमुक्त हो जाएगी। अत: दो माह के बाद यह इल्हाम हर दो पहलू से पूरा हुआ। अर्थात् मेरी पत्नी को एक सख़्त रोग ने घेरा और ख़तरनाक हालत हुई परन्तु अन्त में अल्लाह तआला ने रोगमुक्त किया।✷	13 जून 1899 ई.
भविष्यवाणी संख्या - 120	1901 ई.	एक बार मुझे इल्हाम हुआ- ربّ ارنی کیف تحی الموتٰی رب اغفر و ارحم من السماء हे मेरे रब्ब मुझे दिखा कि तू मुर्दा क्योंकर ज़िन्दा करता है और आकाश से अपनी क्षमा और रहमत उतार। इस इल्हाम में यह ख़बर दी गई कि कभी ऐसा अवसर आने वाला है कि हमें यह दुआ करना पड़ेगी	1901 ई.

देखने वाले ज़िन्दा गवाह

✷इस के गवाह मौलवी अब्दुल करीम साहिब, मौलवी नूरुद्दीन साहिब, मौलवी मुहम्मद अली साहिब, मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, मौलवी शेर अली साहिब व अन्य लोग हैं और दूसरे शहरों में पत्रों के माध्यम से ये भविष्यवाणियां लिखी गईं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 120		और वह स्वीकार होगी। अतः ऐसा हुआ कि एक बार हमारा लड़का मुबारक अहमद ऐसा सख़्त बीमार हुआ कि सबने कहा कि वह मर गया है हम उठे और दुआ करते हुए लड़के पर हाथ फेरते थे तो लड़के को सांस आना आरंभ हो गया था। इसके अतिरिक्त यह इल्हाम इस प्रकार से भी पूरा हुआ कि अल्लाह तआला ने अब तक हमारे हाथ से हज़ारों रूहानी मुर्दे ज़िन्दा किए हैं और कर रहा है।✷	
भविष्यवाणी संख्या - 121	लगभग 1878 ई.	लगभग पच्चीस वर्ष का समय गुज़रा है कि मुझे गुरदासपुर में एक स्वप्न आया कि मैं एक चारपाई पर बैठा हूँ और उसी चारपाई पर बाईं ओर मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी (स्वर्गीय) बैठे हैं। इतने में मेरे दिल में तहरीक पैदा हुई कि मैं मौलवी साहिब को चारपाई से नीचे उतार दूं। अतः मैंने उनकी ओर खिसकना शुरू किया यहां तक कि वह चारपाई से उतर कर पृथ्वी पर बैठ गए। इतने में तीन फ़रिश्ते आकाश की ओर से प्रकट हो गए जिन में से एक का नाम ख़ैराइती था। वे तीनों भी ज़मीन	भविष्यवाणी के कुछ वर्ष पश्चात

देखने वाले ज़िन्दा गवाह

✷इस निशान के गवाह बहुत से पुरुष और स्त्रियां हैं। उनमें से मौलवी नूरुद्दीन साहिब, मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब, साहिबज़ादा सिराजुलहक़ साहिब, शेख अब्दुर्रहमान क़ादियानी साहिब और मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, शेख़ हामिद अली साहिब, मौलवी

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 121		पर बैठ गए और मौलवी अब्दुल्लाह भी ज़मीन पर थे और मैं चारपाई पर बैठा रहा। तब मैंने उन सब से कहा कि मैं दुआ करता हूँ तुम सब आमीन कहो। तब मैंने यह दुआ की- ربّ اذهب عنی الرجس و طهرنی تطهیرًا इस दुआ पर तीनों फ़रिश्तों और मौलवी अब्दुल्लाह ने आमीन कही। इसके बाद वे तीनों फ़रिश्ते और मौलवी अब्दुल्लाह आकाश की ओर उड़ गए और मेरी आंख खुल गई। आंख खुलते ही मुझे विश्वास हो गया कि मौलवी अब्दुल्लाह की मृत्यु क़रीब है और मेरे लिए आकाश पर एक विशेष कृपा (फ़ज़्ल) का इरादा है। और फिर मैं हर समय महसूस करता रहा कि एक आकाशीय आकर्षण मेरे अन्दर काम कर रहा है। यहां तक कि ख़ुदा की वह्यी का सिलसिला जारी हो गया। वही एक रात थी जिस में अल्लाह तआला ने पूर्ण रूप से मेरा सुधार कर दिया। और मुझ में एक ऐसा परिवर्तन हो गया जो इन्सान के हाथ से या इन्सान के इरादे से नहीं हो सकता था।	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह

अब्दुल करीम साहिब, मौलवी मुहम्मद अली साहिब, शेख़ याकूब अली साहिब, मुंशी ज़फर अहमद साहिब, मीर नासिर नवाब साहिब, ख़लीफ़ा नुरुद्दीन साहिब, मुंशी ताजुद्दीन साहिब, शेख़ रहमतुल्लाह साहिब, मीर हामिद शाह साहिब, हकीम हुसामुद्दीन साहिब, शेख़ याक़ूब अली साहिब एडीटर अलहकम, मियां मुहम्मद जान साहिब कपूरथला, मियां फ़त्हदीन साहिब, मियां अब्दुल्लाह साहिब पेशावरी, ख्वाजा कमालुद्दीन साहिब इत्यादि लोग हैं।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 121		मुझे मालूम होता है कि मौलवी अब्दुल्लाह ग़ज़नवी इस नूर की गवाही के लिए पंजाब की ओर खिंचा था और उसने मेरे बारे में गवाही दी और उस गवाही को हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ और उनके भाई मुहम्मद याक़ूब ने वर्णन भी किया। परन्तु फिर दुनिया का प्रेम उन पर विजयी हो गया और मैं ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूँ जिसकी झूठी क़सम खाना लानती का काम है कि मौलवी अब्दुल्लाह ने मेरे स्वप्न में मेरे दावे की पुष्टि की और मैं दुआ करता हूँ कि यदि यह क़सम झूठी है तो हे क़ादिर ख़ुदा मुझे इन लोगों के जीवन में ही जो मौलवी अब्दुल्लाह साहिब की संतान अथवा उनके मुरीद या चेले हैं कठोर अज़ाब से मार अन्यथा मुझे विजयी कर और उनको शर्मिन्दा या हिदायत प्राप्त। मौलवी अब्दुल्लाह साहिब के अपने मुंह के यह शब्द थे। कि आपको आकाशीय निशानों और दूसरे तर्कों की तलवार दी गई है और जब मैं दुनिया पर था तो आशा रखता था कि ऐसा इन्सान ख़ुदा की ओर से दुनिया में भेजा जाएगा यह मेरा स्वप्न है- العن من كذب و ايّد من صدق	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
भविष्यवाणी संख्या - 122	लगभग 1878 ई.	जब मौलवी साहिब ग़ज़नवी हमारे उपरोक्त वर्णित स्वप्न के अनुसार मृत्यु पा गए तो जैसा कि मैंने अभी लिखा है थोड़े दिनों के बाद मैंने उनको स्वप्न में देखा कि मैं अपना एक स्वप्न उनके आगे वर्णन कर रहा हूँ और वह एक बाज़ार में खड़े हैं जो एक बड़े शहर का बाज़ार है और फिर मैं उनके साथ एक मस्जिद में आ गया हूँ और उनके साथ एक भारी गिरोह है और सब सिपाहियों वाले रूप पर अत्यन्त मोटे, सुदृढ़ वर्दियां कसे हुए तथा हथियार बन्द हैं और उन्हीं में से एक मौलवी अब्दुल्लाह साहिब हैं जो एक सुदृढ़ और मोटा ताज़ा जवान दिखाई देते हैं। वर्दियां कसे हुए हथियार पहने हुए और तलवार म्यान में लटक रही है और मैं दिल में महसूस करता हूँ कि ये लोग एक महान आदेश के लिए तैयार बैठे हैं और मैं सोचता हूँ कि शेष सब फ़रिश्ते हैं परन्तु तैयारी भयानक है। तब मैंने मौलवी अब्दुल्लाह साहिब को अपना एक स्वप्न सुनाया। मैंने उन्हें कहा कि मैंने स्वप्न देखा है कि एक अत्यन्त चमकीली और रौशन तलवार मेरे हाथ में है जिसकी नोक आकाश में है और दस्ता मेरे पंजे में और उस तलवार में से एक अत्यन्त तेज़ चमक निकलती है जैसा कि	यह भविष्यवाणी हमेशा पूरी हो रही है।

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 122		सूर्य की चमक होती है और मैं उसे कभी दायीं ओर और कभी बाईं ओर चलाता हूँ और प्रत्येक वार से हज़ारों लोग कट जाते हैं और मालूम होता है कि तलवार अपनी लम्बाई के कारण दुनिया के किनारों तक काम करती है और वह एक बिजली की तरह है जो एक पल में हज़ारों कोस चली जाती है और मैं देखता हूँ कि हाथ तो मेरा ही है परन्तु शक्ति आकाश से और मैं हर एक बार अपने दायीं और बायीं ओर उस तलवार को चलाता हूँ और एक सृष्टि (मख़्लूक़) टुकड़े-टुकड़े होकर गिरती जाती है। यह स्वप्न था जो मैंने मौलवी अब्दुल्लाह के पास वर्णन किया। और जब मैं स्वप्न को वर्णन कर चुका और उन से ताबीर पूछी तब मौलवी अब्दुल्लाह ने उसकी ताबीर यह बताई कि तलवार से अभिप्राय इत्माम हुज्जत, और तब्लीग़ की पूर्ति है और मेरे ठोस तर्कों की तलवार है और जो देखा कि वह तलवार दायीं ओर ज़मीन के किनारों तक मार करती है इससे अभिप्राय आध्यात्मिक तर्क हैं जो विलक्षण रूप तथा आकाशीय निशानों के होंगे और यह जो देखा कि वह बांयी ओर ज़मीन के किनारों तक मार करती है इससे अभिप्राय बौद्धिक तर्क इत्यादि हैं जिनसे प्रत्येक फ़िर्क़े पर इत्माम हुज्जत (समझाने का अंतिम प्रयास पूर्ण होना	

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 122		अनुवादक) होगी। फिर उन्होंने यह भी फ़रमाया कि जब मैं दुनिया में था तो प्रत्याशी था कि ऐसा इन्सान ख़ुदा की ओर से दुनिया में भेजा जाएगा। इसके बाद मेरी आंख खुल गई। इस स्वप्न के एक भाग के हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब और उनके भाई मुहम्मद याक़ूब ने भी पुष्टि की है। शायद मैंने इस स्वप्न को सौ से अधिक लोगों को सुनाया होगा। अतः वह भविष्यवाणी आज पूरी हो रही है और रूहानी तलवार ने एक लाख से अधिक लोगों को विजय कर लिया है और करती जाती है।	
भविष्यवाणी संख्या - 123	17 फ़रवरी 1883 ई. व जनवरी 1884 ई.	सय्यिद अब्बास अली लुधियानवी को हम ने अपने प्रारंभिक पत्रों में अपने कश्फ़ों के द्वारा इस बात से समय से पूर्व सूचना दे दी थी कि आप का अंजाम अच्छा मालूम नहीं होता है हालांकि वह उस समय स्वयं को इसी मार्ग में फ़ना हो चुके व्यक्त करते थे। अतः उन पत्रों के कुछ वाक्य निम्नलिखित हैं-“कश्फ़ की दृष्टि से आप के दिल में संकोच मालूम हुआ” “आप किसी नए मामले के सामने आने पर व्याकुल न हों आप इब्तिला से बच नहीं सकते” “नेक ग़ुमान रखने वाला बनना आसान है परन्तु निभाना कठिन” “नितान्त दुर्भाग्यशाली वह	पत्रों के लगभग नौ वर्ष बाद

क्रम संख्या	भविष्यवाणी के वर्णन करने की तिथि	जिस वह्यी से मैं सम्मानित किया गया हूँ उसी वह्यी ने निम्नलिखित विलक्षण भविष्यवाणियां बताई हैं जो दुनिया पर प्रकट हो चुकी हैं।	भविष्यवाणी के प्रकट होने की तिथि
शेष भविष्यवाणी संख्या - 122		इन्सान है जिस का अंजाम प्रारंभ का सा जोश नहीं रखता।" इससे साफ प्रकट था कि उसका अंजाम अच्छा नहीं। इसलिए कुछ वर्षों के बाद वह मुर्तद हो गया। मेरा पत्र उनके विशेष हस्ताक्षर किया हुआ मौजूद है जिसमें इस भविष्यवाणी के कई साल बाद उसका अंजाम बुरा हुआ। यह पत्र उनकी मृत्यु के बाद उनके कुतुबख़ाने से मिला। इस पत्र के देखने से प्रत्येक को मालूम होगा कि दुनिया एक इब्रत (सीख) का स्थान है। जब इन्सान पर दुर्भाग्य के दिन आते हैं तो वह देखते हुए नहीं देखता। जिस व्यक्ति को पहले से ख़बर दी गई थी कि तू उद्दण्ड हो जाएगा और ठोकर खाएगा। वह उद्दण्ड होकर इस भविष्यवाणी से कुछ लाभ प्राप्त न कर सका।	

देखने वाले ज़िन्दा गवाह

इन निशानों के गवाह मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब, हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब, मुहम्मद याक़ूब साहिब, मुंशी महम्मद ख़ान साहिब, अब्दुल्लाह सिन्नौरी इत्यादि।

प्रकाशन

यह पुस्तक नुज़ूल मसीह छपने के अन्तर्गत थी कि मौलवी करमदीन निवासी भीं ने जिसके पत्र इस पुस्तक में दर्ज किए गए हैं एक मुक़द्दमा अदालत में दायर किया कि मुझ को कज़्ज़ाब और लईम पुस्तक मवाहिबुर्रहमान में (जो हज़रत हक़्दस अलैहिस्सलाम की अरबी पुस्तकों में से है) लिखा गया है। और इस पुस्तक में मेरे जो पत्र लिखे गए हैं वे जाली हैं और उसकी एक प्रति किसी माध्यम से प्राप्त करके उसे अदालत में प्रस्तुत किया जिसके कारण पुस्तक के छपने में रोक आ गई। यह मुक़द्दमा अन्य मुक़द्दमों के साथ दो-ढ़ाई वर्ष तक जारी रहा और अन्त में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणियों (मुक़द्दमों के अंजाम की निस्बत) के अनुसार ये मुक़्द्दमें निर्णय पाए। और हज़रत अक़्दस-व-अत्हर ने उनके फ़ैसले के बाद एक पुस्तक और लिखनी शुरू की जिस का नाम नुसरतुलहक़ रखा जो बाद में बराहीन अहमदिया भाग-पंचम के प्रतापी नाम से नामित हुई। और उसके अन्दर मुक़द्दमों में जो-जो ख़ुदा की सहायताएं आपके साथ रहीं उनका वर्णन करते हुए पुस्तक के प्रारम्भ में ही वादी करमदीन के बारे में यह शेर लिखा कि -

कज़्ज़ाब उसका नाम दफ़ातर में रह गया,
चालाकियों का फ़ख़्र जो रखता था बह गया।

पुस्तक "नुसरतुल हक़" अभी छप ही रही थी कि एक फ़ित्नः डॉक्टर अब्दुल हकीम पटियालवी के मुर्तद होने का उठा जिसे रोकने के लिए आपने हक़ीक़तुल वह्यी एक मोटी पुस्तक जो सात सौ पृष्ठों की है लिखी। उसमें दो सौ आठ निशानों का आपने वर्णन भी किया जो आपके सत्यापन में ख़ुदा तआला की ओर से क्रियात्मक गवाही के तौर पर प्रकट हुए। उसके समाप्त करने पर इरादा था कि यह पुस्तक और नुसरतुलहक़ को पूर्ण किया जाए कि उन्हीं दिनों में आपका एक निबंध आर्यों के जल्से में पढ़ा गया जिसके मुक़ाबले पर आर्यों की ओर से गालियों से भरा हुआ लेक्चर हज़रत के सेवकों की उपस्थिति में

सुनाया गया। इसके उत्तर में पुस्तक चश्मा-ए-मारिफ़त जो साढ़े तीन सौ पृष्ठों की मआरिफ़ (अध्यात्म ज्ञान) से भरपूर पुस्तक है आपने प्रकाशित की। अभी उसको प्रकाशित किए दो-तीन दिन गुज़रे थे कि पैग़ाम सुलह के लिए लिखने पर समय की आवश्यकता ने हुज़ूर को ध्यान दिलाया वह लिख ही रहे थे और समाप्त किया ही था कि ख़ुदा तआला की ओर से आपकी तलबी (बुलावे) का सन्देश आ पहुँचा और पुस्तक 'अलवसीयत' 1906 ई. की भविष्यवाणियों के अनुसार- الرحیل ثم الرحیل (अर्थात एक के बाद एक, कूच करने वाला है-अनुवादक) का नगाड़ा बज गया।

इन परिस्थितियों के अन्तर्गत इस पुस्तक का प्रकाशित होना विलम्ब में रहा। चूंकि इसके प्रारंभ में तथा कश्ती नूह में आपने उसके अन्दर डेढ़ सौ भविष्यवाणियों के लिखने का और सम्मिलित करने का वादा किया है। इसलिए यह बात बता देने के योग्य है कि हक़ीक़तुल वह्यी पूर्वोत्तर पुस्तक हज़रत ने इसके बाद लिखी थी जिसमें आप ने दो सौ आठ निशान लिखे हैं और कुछ के रोयत के गवाह भी लिखे हैं। इसलिए जो व्यक्ति हक़ीक़तुल वह्यी का अध्ययन करेगा और भली भांति समझ लेगा कि डेढ़ सौ निशानों को पूर्ण करने के स्थान पर दो सौ आठ निशान आप ने इस पुस्तक में लिख कर वादे को पूरा कर दिया है। और हक़ीक़तुल वह्यी नुज़ूलुल मसीह का पूरक है अपितु نأت بخیر منھا (अर्थात हम पहले वाली से बेहतर ले आते हैं) के अनुसार बढ़-चढ़ कर बदला है। इसलिए अब आवश्यकता नहीं कि उन निशानों को लिखकर यहां एक सौ पचास पूरे किए जाएं। क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद के हाथ की लिखी हुई पुस्तक "हक़ीक़तुल वह्यी" में आवश्यकता से बहुत कुछ अधिक मौजूद हैं। इस पर दृष्टि डालते हुए हज़रत अक़्दस के समय में यह पुस्तक जितनी प्रकाशित हुई थी उसी को पब्लिक के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है और बहुत कम मूल्य इस विचार से रखा गया है कि प्रत्येक सामर्थ्यवान और सामर्थ्यहीन इसे ख़रीद कर पढ़ सके। अल्लाह तआला पढ़ने वालों को समझ और विवेक अपनी ओर से प्रदान करे। और चूंकि मसीह[अ॰] जिसके उतरने की इसमें चर्चा है वह दुनिया से चला गया है और बहुत से ज्ञानों तथा वरदानों के ख़ज़ाने छोड़ गया है, पाठकों

के दिलों को उन ज्ञानों और वरदानों की ओर रुचि प्रदान करे। आमीन

وآخر دعونا ان الحمد للہ ربِّ العالمین

उपदेशक

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निम्न सेवक
महदी हुसैन, हुज़ूर के पुस्तकालय का प्रबंधक
क़ादियान, दारुल अमान
ज़िला- गुरदासपुर, पंजाब

25 अगस्त-1909 ई. 8 शाबान 1327 हिज्री

❊❊❊

पारिभाषिक शब्दावली

अर्श- सिंहासन। वह स्थान जहाँ पर अल्लाह का अधिष्ठान है।

अह्ले किताब- यहूदी और ईसाई जो तौरात नामक ग्रंथ को ईशवाणी मानते हैं।

अज़ाब - अल्लाह की अवज्ञा करने पर मिलने वाला दंड। ईशप्रकोप, कष्ट, विपत्ति।

अबजद - अरबी अक्षरों का वह क्रम जिसमें हर अक्षर का एक मूल्य होता है। इन अक्षरों की सहायता से लोगों के मरने और पैदा होने का समय निकाला जाता है।

अलैहिस्सलाम- उनपर अल्लाह की कृपा हो। नबियों, रसूलों और अवतारों के नामों के बाद यह वाक्य कहा जाता है।

आयत- पवित्र क़ुर्आन की पंक्ति अथवा वाक्य।

इस्राईल- अल्लाह का वीर या सैनिक। हज़रत याक़ूब अलै. का एक गुणवाचक नाम, जिस के कारण उनके वंशज को बनी इस्राईल (अर्थात इस्राईल की संतान) कहा जाता है। फ़िलिस्तीन का एक भू-भाग जिस में यहूदियों ने अपना राज्य स्थापित करके उस का नाम इस्राईल रखा है।

ईमान- अर्थात विश्वास और स्वीकार करना। जैसे अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करना।

उम्मत- संप्रदाय। किसी नबी या रसूल के अनुयायिओं का समूह उसकी उम्मत कहलाता है।

उम्मती नबी- किसी नबी की शिक्षाओं को आगे फैलाने के लिये उसके अनुयायियों में से किसी का नबी पद प्राप्त करना।

उलमा- इस्लामी धर्मज्ञ।

क़यामत- महाप्रलय। मृत्यु के बाद अल्लाह के समक्ष उपस्थित होने का दिन

कश्फ़- जागृत अवस्था में कोई अदृष्ट विषय देखना। स्वप्न और कश्फ़ में यह अंतर है कि स्वप्न सोते में देखा जाता है और कश्फ़ जागते में

देखा जाता है। दिव्य-दर्शन। योगनिद्रा, तन्द्रावस्था।

काफ़िर - सच्चाई का इन्कार करने वाला। इस्लाम धर्म का अस्वीकारी।

क़िब्ला - आमने-सामने। जिसकी ओर मुँह करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं। ख़ाना काबा मुसलमानों का क़िब्ला है जिसकी ओर सारे संसार के मुसलमान मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं।

कुफ्र- सच्चाई का इन्कार, इस्लाम का इन्कार करना।

ख़लीफ़ा- उत्तराधिकारी। अधिनायक। नबी और रसूलों के बाद उनका स्थान लेने वाला और उनके काम को चलाने वाला।

ख़िलाफ़त- नबी और रसूल के बाद उनके कामों को आगे चलाने वाली व्यवस्था, जिसका प्रमुख ख़लीफ़ा कहलाता है।

जिब्रील- ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता।

जिहाद - प्रबल उद्यम करना। स्वयं को सुधारने के लिये या धर्मप्रचार के लिये प्रयत्न करना। सत्यधर्म की रक्षा के लिये प्रतिरक्षात्मक युद्ध करना।

तक़्वा - निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करना और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखना। संयम, धर्मपरायणता।

ताबयीन- अनुगमन कारी। वे मुसलमान जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्ल. को तो नहीं देखा परंतु हज़रत मुहम्मद सल्ल. के साहाबियों को देखा।

तबअ ताबयीन -ताबयीन के अनुगामी। जिन्होंने केवल ताबयीन को देखा।

तौरात - यहूदियों का धर्मग्रंथ।

दज्जाल- झूठा, धोखेबाज, अंत्ययुग में लोगों को धर्मभ्रष्ट कराने के लिए उत्पन्न होने वाला एक समूह।

दुरूद व सलाम -हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए की जाने वाली दुआ।

नबी- लोगों को सन्मार्ग पर लाने के लिए अल्लाह की ओर से आया हुआ व्यक्ति, जिसे अदृष्ट विषयों से अवगत कराया जाता है। अवतार।

नुबुव्वत- नबी बनने की क्रिया। अवतारत्व।

नूर- अध्यात्म प्रकाश, ज्योति।

नेमत - अल्लाह की देन।

पैग़म्बर - अल्लाह का संदेशवाहक, नबी, रसूल।

बनी इस्राईल- इस्राईल की संतान। (इस्राईल शब्द भी देखें)

बैअत- बिक जाना, धर्मगुरु के हाथ पर हाथ रख कर उसका आनुगत्य स्वीकार करना।

मुश्रिक - शिर्क करने वाला। अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को उपास्य मान कर उसे अल्लाह का समकक्ष ठहराने वाला व्यक्ति।

मुनाफ़िक़- कपटाचारी। वह व्यक्ति जो ईमान लाने का प्रदर्शन तो करे परंतु दिल से उसको अस्वीकार करने वाला हो।

मुत्तक़ी - निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करने वाला और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखने वाला व्यक्ति, धर्मपरायण।

मुबाहलः- एक दूसरे को शाप देना। इस्लामी धर्मविधान के अनुसार किसी विवादित धार्मिक विषय को अल्लाह पर छोड़ते हुए एक दूसरे को शाप देना कि जो झूठा है उस पर अल्लाह की लानत हो।

मे'राज - आध्यात्मिक उत्थान। अल्लाह की ओर हज़रत मुहम्मद सल्ल. की अलौकिक यात्रा जो सशरीर नहीं हुई।

मोमिन - अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करने वाला निष्ठावान् व्यक्ति।

याजूज-माजूज-अंत्ययुग में उत्पन्न होने वाली दो महाशक्तियाँ।

रसूल- अल्लाह का भेजा हुआ अवतार, दूत।

रज़ियल्लाहु अन्हु- अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के पुरुष सहाबियों के लिए प्रयुक्त होता है। अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ।

रहिमहुल्लाहु- उन पर अल्लाह की कृपा हो। यह वाक्य दिवंगत महापुरुषों के नाम के साथ प्रयुक्त होता है।

रूह- आत्मा।

रूह-उल-क़ुदुस-पवित्रात्मा। ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता।

रूह-उल-अमीन-जिब्रील, जो ईशवाणी लाने वाले फ़रिश्ता हैं।

ला'नत - अभिशाप, अमंगल कामना।

वह्यी - अल्लाह की ओर से प्रकाशित होने वाला संदेश, ईशवाणी। ईश्वरीय ग्रन्थों का अवतरण वह्यी के द्वारा होता है। पवित्र क़ुर्आन हज़रत

मुहम्मद सल्ल. पर वह्यी के द्वारा ही उतरा है।

शरीयत- इस्लामी धर्मविधान।

शिर्क- अल्लाह के बदले दूसरे को उपास्य मानना, किसी को अल्लाह का समकक्ष ठहराना।

सलाम - शांति और आशीर्वाद सूचक अभिवादन।

सलीब - सूली, जिस पर लटका कर मृत्युदंड दिया जाता था।

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- उनपर अल्लाह की कृपा और शांति अवतरित हो। हज़रत मुहम्मद स० के नाम के साथ यह वाक्य कहा जाता है।

सहाबी - हज़रत मुहम्मद सल्ल. के वे अनुगामी जिन्हें आपकी संगति प्राप्त हुई।

सूरः / सूरत- पवित्र क़ुर्आन का अध्याय। पवित्र क़ुर्आन में 114 अध्याय हैं।

हज़रत - श्रद्धेय व्यक्तियों के नाम से पूर्व सम्मानार्थ लगाया जाने वाला शब्द।

हदीस - हज़रत मुहम्मद सल्ल. के कथन जिन्हें कुछ वर्षों के पश्चात इकट्ठा करके ग्रंथबद्ध किया गया। इन में से छः विश्वसनीय हदीस ग्रंथों को **सहा-ए-सित्ता** कहा जाता है। इनके अतिरिक्त और भी हदीस के ग्रंथ हैं।

हिजरत - देशांतरण। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के मक्का से मदीना जाने की घटना हिजरत के नाम से प्रसिद्ध है।

हिदायत- सन्मार्ग प्राप्ति।

* * *